

राधाविषाद मोचनावली ॥

जिसको

जिलाअलीगढ़ मुकाम सिकन्द्राबाद निवासी पं० रामभजन त्रिवेदीने बड़े परिश्रमसे बनाया व मुंशी [illegible] अध्यापक व ब्रांच पोस्टमास्टर सिकन्द्राबाद की सहायता से छपवाकर प्रकाशित किया ॥

प्रथमभाग

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर (सी. आई. ई.) के छापेखानेमें छपी

सन् १९०७ ई० ॥

श्रीगणेशाय नमः ॥



अथ राधाविषादमोचनावलीमारभ्यते।

श्रीगणेशं दिनेशं हरिं शंभुमग्निं
शिवांस्वं गुरुंचाशुकृत्वा प्रणामम् ॥
चकार स्वयं रामभजनत्रिवेदी
बिषादघ्नग्रन्थं हितं तत्वसारम् ॥ १ ॥
न जातं यदाज्ञान मन्यत्र शीघ्रं
तदा राधिकायाः कृतं यत्तु शास्त्रम् ॥
विषादघ्नमत्र प्रपाकं क्रियाणां
चरित्रंच विष्णोः पुराणस्यवार्ता ॥ २ ॥
श्रीरामचन्द्रप्रकृतप्रसादः
पितामदीयश्च पितामहो मे ॥
नाम्नाभवान्यास्तु कृतप्रसाद
स्तदात्मजश्चाकृतपुण्यगाथाम् ॥ ३ ॥

कृष्णस्याज्ञांपुरस्कृत्य व्रजमागत्य सोब्रवीत्
ज्ञानाध्यात्मं गोपगोपीनन्दादिभ्योःस उद्धवः॥ ४॥
पुनःप्रबोध्य श्रीराधां जगाम मथुरां च सः॥
व्रजस्य सर्ववृत्तान्तं हरये सन्यवेदयत्॥ ५ ॥
तच्छ्रुत्वाराधिकादेवी वियोगभयविह्वला॥
निपपात महीतल्पे हरिध्यानैकतत्परा॥ ६ ॥
समायजुः सर्वतएव सर्वे
नन्दादयोज्ञायविषादहेतुम्॥
तस्याःसमीपंह्युपविश्यतेक्षणं
पृथक्पृथक्वाग्भिर्बोधयन्तिहि॥ ७ ॥
तेषांप्रसङ्गं प्रथमंहि भाषया
निरूप्यतेलोकहिताय सोपि॥
राधाकृतं यत्र विषादमोचनं
श्रुत्वा न रोगात्तु विषादहीनताम्॥ ८ ॥
अथातो लिख्यतेसूचीमध्यायान्तांयथाक्रमम्॥
यांज्ञात्वाज्ञायतेवार्ताविपाकस्यप्रयत्नतः॥ ९ ॥
प्रथमेयत्रनन्दस्य संवादश्चयशोदया॥
उपनन्दस्यश्रीदाम्नःशापाद्गोकागमोभवत्॥ १० ॥

दो० राधा माधव ध्यानधरि गणपति गौरि मनाइ॥
रामभजन वरणनकियो श्रीगुरु आशिष पाइ॥ १ ॥
श्रीकन्दरपुर में बसौं भरद्वाज मम गोत्र॥
त्रैवेंदी कुल विदित है कृत भवसागर पोत॥ २ ॥
न्याय सांख्य वैशेषिका पाणिनि कृत वेदान्त॥
मीमांसादिक मत कहौं भक्ति ज्ञान एकान्त॥ ३ ॥

नन्द यशोदा गोप सब गोपिन को समुझाइ ॥
उद्धव मथुरा कृष्ण सन कही कथा सब जाइ ॥ ४ ॥
ब्रजबासी सब बिकल ह्वै गये राधिका तीर ॥
कृष्ण बिरह व्याकुल परी भूतल कृशित शरीर ॥ ५ ॥

क०। कोमल कुन्दकली समअङ्ग लता बनकी दव सो मुरझानी। जीवन कृष्णबिना गतदेखत मीन मनौ जलसे बिलगानी ॥ नेत्रन नीर बहै कुचबीचन कम्पउरू कदली थहरानी। सो गति देखि भई मतिभोरि ब्रजेश प्रिया यशुदा बिलखानी ॥ ४ ॥

दो० ब्रजबासिन की लखि दशा राधासों कहैं नन्द ॥
जीवनकेहि विधिहोयगो सुन्दरिबिन ब्रजचन्द ॥ ५ ॥

नन्दउवाच ॥

क०। राधे के हाथन के कँगना ढुलरी दधि माखन कौन चुरावै। नूपुर कंकण किंकिणि ताल दै सोवत बालक कौन जगावै ॥ बरषत मेघ महाब्रजऊपर लै गोवरधन कौन बचावै। धीरज कैसे बिना मुरलीधर लै मुरली बन कौन बजावै ॥ ६ ॥ अस्तनक्षीर के पानसमय मुख खोलिकै तीनों लोक दिखावै। मायामयी गति दुर्घट टारिकै निज पुरुषोत्तम रूप लखावै ॥ जब जैसी चहै तब तैसी करै बछरा हरिकै विधिको भरमावै। सो हरि हाय बिहायहमैं मथुरागये आनिकै कौन दिखावै ॥ ७ ॥

दो० नन्दकहत हरिकी कथा व्याकुल भयो शरीर ॥
मुख सूखो गल रुँधिगयो देखि राधिका पीर ॥ ८ ॥
यशुदा बोली धीरधरि मृदु प्रिय पावन बैन ॥
बचन सुनौं बृषभानुकी खोलौ पंकज नैन ॥ ६ ॥

यशोदोवाच ॥

स० । ऐसे भये बिन पीर सुनौ सुतलै नवमास मैं गर्भ बसायों ।
लागि जिनै विधि रुद्र उमा हरिहाय रमा कुलदेव मनायों ॥
जन्मतही धन धान्य बिभूषण पात्र मही दधि दूध लुटायों ।
लै अक्रूर गयोसुत सूरहि जातसमय नहिं देखन पायों ॥१०॥

क० । घर घर धाइ जाइ माखन चोरायखाय भोरहे ते सांझ लगु करै औरही नया । टुमुकि टुमुकि चलै अति बरजोरी करै सुसुकि सुसुकि मोसों मांगैरि बतनियां ॥ लालि लालि आलि आँखी जलदासि मानौ माखी बिसद सुखद नीकी लगै चितवनियां । करै नहिं पावों धंधा खेलन को मांगै चन्दा मो से कहैं मैया तु तो लेले मोको कनियां ॥ ११ ॥

स० । यहि भांति ते कान्ह सयानभये मैं सेवनमानकरे सगरेरी ।
प्रीति प्रतीत करी उनकी नहिं कान्ह करे तुमरे झगरेरी ॥
कारेन की परतीति कहा अहि कज्जल भृंग प्रसङ्ग परेरी ।
मोरीभईतिमिआनि दशाजिमिकोकिलबालककाकछलेरी॥१२॥
देखु बिचारि तुहू चित में ऋषिराज कही सो सही सगरीरी ।
ये मातु पिता सगरे जगके बिधिहोइ इनहीसब सृष्टि रचीरी ॥
होइ विष्णु सदा प्रतिपालकरै हरहोइजगीती संहार करीरी ।
व्यापकब्रह्म चिदानँदरूप सोजोतिसदासबहेके परेरी ॥ १३ ॥

दो० ऐसे सुतको पाइके संग गमन नहिं कीन्ह ।
दारु लोष्ठ सोचित्त कै दुसह दुःख विधि दीन्ह ॥ १४ ॥
गोपवृंद उपनंद पुनि बोले बचन रसाल ।
राम भजन में रमि रहौ सुनि मम गोपी ग्वाल ॥ १५ ॥

उपनंदोवाच ॥

क०। अवधपुरी जेहि जन्म लियो सोइ गोकुलमें तुम्हरे अव-
तारो। सरयू तटमें जेहि ख्यालकियो यमुनातटमें सो बकासुर मारो॥
जानकी प्राण प्रिया जिनकी पति राधे सोई तव प्राण पियारो।
जेहि रावण बंधु समेत हनो सोइ कंस महाभट आनिपछारो १६॥
अवधपुरी जेहि राज़ कियो सोइ माधव यादवको रखवारो। गौ-
तम नारिको तारि सोई पयपेइ बकी को उधारनहारो॥ जेहि-
भक्त विभीषण कीन्ह सखा तेहिउद्धव ज्ञानबिरागसम्हारो। ताको
लखो विषयीजनि भूलुसोई हरि जो जगसिरजनहारो॥ १७॥

दो० यमला अर्जुन इंद्र मख बत्सक बक अघनास॥
ए लीला हरि ब्रजकरी तहू न मन विश्वास॥ १८॥

दो० श्रीदामा श्रीकृष्ण को परम सखा सोइ गोप॥
संग संग डोंलति फिरो बोलो हरि पद चोप॥ १९॥

श्री दामोवाच॥

क०। श्याम सलोने विना मृगलोचनि प्रातहि गोधन कौन
निकारिहै। लै मुरली अधरान धरै स्वर ताल बजाइ कै कौन
हकारिहै॥ लै लकुटी कर कामरि कांध को मोर सिखा सिर ऊपर
धारिहै। धारिहै मोर सखा विन धीरज वीर जो कौन सो दुष्ट सँहारि
है॥ २०॥ है उनसे जग कौन बड़ो जिन नीरके तीर बकासुर
मारो। मारो अघासुर कोप कियो मख भंग सुरेश महा जल डारो॥
हारो विचारो करी वर्षा दिन सातकैलौं नखपै गिरिधारो।
सुख सारो हमारो तुम्हारो तवै मृदु मूरति सूरति नैन निहारो॥२१॥

दो० आदि करौ गोलोककी सुनु ममसुमुखि सयानि॥
हरि बिछुरन भा जन्म तव मोरि साप से आनि॥ २२॥

क० । संग सतकोटि गोप इन्द्रमणिजटित मुकुट मुक्ताहल अलक झलक झालरी बिराजैरी। कण्ठमणिमाल उरमाल बन-माल सोहै दाहिने भृगुलात जैमाल बीच बायें लक्ष्मी लक्ष्म भ्राजैरी॥ पंकज से नयन अरुण नाशिकाग्र मुक्तागयन्द मकराकृतकुण्डल करण कपोलपर साजैरी। बृन्दावनबिहारी बंसी पीत-पट धारी पँवरिआयो तिहारी कीन्हो प्रतिखेद गोपी नेक नाहिं लाजैरी॥ २३॥

दो० जबलगि मज्जन तू करो केश सुखै शृङ्गार॥
असन बसन कज्जल तिलक तबलगि लागीबार॥ २४॥
बारबार प्रभुकहेउ जब आवन भवन न दीन्ह॥
तब बिरजा के जाइ गृह द्वारपाल मोहिं कीन्ह॥ २५॥

क०। फूलनकी सेज सोइ जागी मयङ्कमुखी आइ कोई सेवकी बसन भूषण सरझायो है। कोई जल आनि देइ ब्यजन चमर चन्दन कोई कोई फुलेल अगर दर्पण दरशायो है॥ सोहत चन्द्र-हार उर लटकन नकबेसरि नाक सीस फूल पत्र भाल अलक लट लटकायो है। सूरति जब कीन्ही मनसिज मनभीनी तब राधा बिरजागृह जानको बिमान भासत मगायो है॥ २६॥ सुवरण के आर केवार बज्र देहली बिद्रुम मणिकील फुलिया पद्मराग मणि जड़ाई है। हरित मणि बन्दनवार किनार ओर पारलरकै झलकै झालरी लगी मुक्तान की सोहाई है॥ चांदनी पटवास पट लागे आस पास दरदामरि किनारदार दर्स चन्द्र चन्द्रिका सी दरसाई है। कहै रामभजन गोपी षोड़श सहस्र शीघ्र राधा महरानीजूको बिमान बिरजा गृह लाई है॥ २७॥

कुं०। भवन जात रोक्यो जबै तब तुम दीन्ही साप।

दैत्यभयों यक रूप मैं यह तन कृष्ण प्रताप ॥
यह तन कृष्णप्रताप शाप दीन्ही हम प्यारी।
सत वर्षण के गये तुम्है मिलिहैं गिरिधारी ॥
धीरज मन तुम धरौ बहुरि बृज मैं बृजनारी।
रामभजन जगसार सांचसिख मानुहमारी॥ २८॥

इति श्रीराधाविषादमोचनावल्यांरामभजनविरचितायांप्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

द्वितीयेसुवलाख्यानं बंशीमाधवमहोत्सवम् ॥
सुबुद्धेर्ज्ञानकथनं वैराज्ञं च विरक्तितः ॥ १ ॥

दो० श्रीदामा के बचन सुनि बोले सुबल प्रवीन ॥
हरिलीला लवलीन मन कृष्ण बिरह दुखदीन ॥ १ ॥

सुबलोवाच ॥

स०। बंशीबजी जबहींहरिकी तब ब्योम बिमानचढ़े सुरगावै।
किन्नरी किन्नर देवबधू सुधि भूलीं शरीर न काम सतावै ॥
पट भूषण छूटिपरे तन के मनभूलो तहां सुधि नेक न आवै।
धन्यसोईजग पूजनयोग्य सहीरि महीधुनियों सुनिपावै॥२॥
जाके सुने यमुना उमहै जलधूमि तरंग भुजा भैलाइकै।
मानो सप्रेम प्रवाह मनोभव शांत करै हरिको उरलाइकै ॥
लाइकै अम्बुज नीरके तीर गहै हरिके पद आतुर आइकै।
पाइकै दर्श महासुख होत थँभै तब धार रहै थहराइकै ॥ ३ ॥
ध्यान छुटै मुनि सिद्धन के नहिं जंगम योग.समाधि लगावै।
निर्गुण ते सर्गुण मनुजाइ बिहाइ बिराग सोई मनभावै ॥
ज्ञानिन ज्ञानतजेउ तेहिकाल बेहाल भये जग जे सुनिपावै।
गोप बोलावत गोवन हेत जबै नँदनन्दन वेणु बजावै ॥ ४ ॥

सोई बृजभूमि चहै अज शंकर देख सोई जो भयानक लागै।
वही यमुना औ वही गिरिराज सोई तुम गोपी दहीहरिमांगै॥
नंद यशोदा सही सब गोप नहीं बृजचन्द बिना तम भागै।
कौन उपाय करौं बृजनारि जो आइ मुरारि तेरे उरलागै॥५॥
दो० सुबल गिरा सुनि बिहँसि मन कह सुबुद्धि गुणखानि॥
तजहु सोच सब गोपगण हरि घट घट पहिचानि॥६॥

सुबुद्धिरुवाच॥

स०। बालकुमारकिशोर औ मध्य युवा पुनि बृद्ध शरीरमयी है।
अन्न औ तन्न बिनोद विहार विवाहमें बुद्धि सो भूलि रही है॥
जाग्रत स्वप्न सुषुप्तिक नौ सुत वित्त कलत्रमें मोहमई है।
भरमत बीतिगये दिन राति भजौहरिको बड़िबार भई है॥७॥
कर्मकी जाति है तीन प्रकार की सञ्चित जन्म अनेक कहेहैं।
सब ज्ञानते कर्म बिचारि करै प्रारब्धि ते आनिकै देह धरेहैं॥
शुभ कर्म ते मोक्षलहै सब जीव कुकर्म ते सम्भव भूलिपरेहैं।
भरमत बीतिगये दिन राति ये मायारचे सगरे झगरेहैं॥८॥
ब्रह्मकी शक्ति महाद्वइभाँतिकी बिद्या अबिद्या बिचारिकेजानौ।
बिद्याते ज्ञान बिराग बिवेक सुषुप्ति सुकर्म ते मोक्षहि मानौ॥
मानौ सबैमहँ ब्यापक ब्रह्म सो आतम ध्यातम सो पहिचानौ।
हंस सो हंस उधारि भली बिधि पारगये यहिपार न आनौ॥९॥
माया के कर्म करै गुण तीनि सतोगुण उत्तम लोक बसावै।
मध्यमलोक बसै रजसों तमसों करि कर्म अधोगतिपावै॥
मानै जबै मैं आपु किये तब मोहते जीवहि कर्म लगावै।
त्याग ते मोक्षलहै बिषयी नर बन्धहै फल संग्रहलावै॥१०॥
रामभजन कवि एक भनै थलहा फल पक्ष बिलक्ष त्रिमूले।

रस चारि बिचारि कहे विध पंच षड़ातमसप्तत्वचाअनुकूलै॥
बिटपाष्टक ज्ञान ते जानिपरै नवअक्षन तक्षनही सुखफूलै।
पक्षीदुइभांति दशाक्षद आदि महातरुजानुनिशादिनफूलै॥११॥
संपति दुइ भांति किहै जगमें तिनसों तुम बंधन मोच्च विचारो।
दैवीते निर्भय सत्त्वकी शुद्धि औ ज्ञानहि योग विरागहि सारो॥
दम दान औ यज्ञ स्ववेद तपस्या कोमल ताहि नशा परिहारो।
सत्य औ त्याग अवैसुन शांति दया पुनिक्रोधहि लैसंहारो॥१२॥
लज्जा तेज क्षमा धृति शौचन द्रोह न मान सो संपति दैवी।
ज्ञानिन को यह मोक्ष के हेतु लहै पद उत्तम आतमसेवी॥
संपत आसुरि दंभ औ क्रोध कठोरनिलज्ज मति भ्रम हेवी।
ममता मोह औ मान अयान परो भवबंध प्रपंचनिषेवी॥१३॥
दो०। मुनि सुबुद्धिकरवचन सुठि कह विरक्त समुझाय।
मोह प्रबल नटनागरी विन विराग नहिंजाय॥१४॥

विरक्तिरुवाच।

दो०। जब आवै बैराग मन ज्ञानौ करै प्रकाश।
जैसे सुकृत पुरुष की तजै पिङ्गला आश॥१५॥
क०। मातु पिता अरु बंधु सहोदर नेह नओ इनसे उपजावै।
भूषणभोजनभामिनिभूमिकोभरमतहीनिशिनींदनआवै॥१६॥
कबहुँकमन मरो समुझै न भलोबुरो द्विजगुरु देवसाधु करै अपमानरी। जानत न बेदसार बिरति विचार पार कहत पुराण श्रुति करत न कानरी॥ तन धन सुत नारि डारत भुलाइ चारि सारै सुखजातु जहु स्वपन समानरी। कहत भजन कवि मोहकवि राग पवि हरिपद जपि नरपावै निर्वाणरी॥१७॥
कुं०। ब्रह्म सनातन कृष्ण ब्रज भए गोप तवहेत।

आदिशक्ति तोहिं आय हरि सोवत दरशन देत ॥
सोवत दर्शन देत हेत सब पूरणतोरे ।
बिहरहु नित उरलाय शोच नहिं कछुमन मोरे ॥
कहत भजन कबिराय दरश देहैं यदुराई ।
मनक्रम वच दृढ़नेम भक्ति निहचय जियआई ॥ १८ ॥

इति श्रीराधाबिषादमोचनावल्यांरामभजनविरचितायांज्ञानबिरागोनाम द्वितीयोऽध्यायः २ ॥

सो० । सुनहु वचन ब्रजनारि संत कहेउ हरिपद सुमिरि ।
भक्ति पंच अरु चारि बिधि पुराण श्रुति निगम कह ॥ १ ॥

श्लोक । तृतीये नवधा भक्तिः संत गोपेन कथ्यते ।
हंसेन कथिता तत्र कथा द्वादश भावयाः ॥

संतोवाच भक्तिकीर्तनम् ॥

क० । वेद देव बिप्र गाइ त्रासदेखि कालपाइ जन्मलेइ आइ हरि साधु हितलाइकै । शुभशुचि करैलीला बिमल बिशद शीला मुनि जन भवनिधि पारजाइगाइकै ॥ कहैं शुकव्यास शेश शंभु शारदा गणेश वेद शास्त्र पारजाय कीर्तन भक्तिआइकै । ताते सब गोपी गोप हरिपद कर चोप गाइ गाइ गाइ लोक जाइ सुखपाइकै ॥ २ ॥

श्रवण भक्ति ।

क० । जस जाको अठासीहज्जार सुनै ऋषिनैमिषमें मनसों चित चीन्हों । बिनतासुतजाइसुन्यो खग पै गिरिराजसुता पतिसों हित पीन्हों ॥ मुनिवृन्द सुनै बदरी बनमें तट गंग परीक्षितको शुक दीन्हों । भक्तिसदा हरिकी श्रवणामृत पानकरै पय पान नकीन्हों ॥ ३ ॥

शरणागतभक्तिः ।

लै प्रहलाद पिता प्रहलादै जाय सकोप सो यूपमबाँधै । रूपधरो

नरसिंह हतोखल सुमिरणही जब बालक साधै ॥ सीतहि लीन्ह उबारिकृपानिधि बूड़तही गजबारिअगाधै। संकट कैसे हरै ब्रज नारि सुधारि मुरारि समाधि न साधै ॥ ४ ॥

अथ पादसेवन भक्तिः।

सेवन पाद दधीचि कियो हरिचंद मयंद मृकंडको जायो। शिवि बाल तनय हनुमान बिभीषण लक्ष्मणभालु सुतीक्षणपायो ॥ श्रीयमुना यम मैथिलराज सियापियपाद निषाद धोवायो। सो हरिपाद सबै ब्रजनारि हुऔ करलै कुचबीचलगायो ॥ ५ ॥

अथ दास्यभक्तिः।

दो०। दास्य भक्त उद्धव बिदुर औ निमिदेव प्रवीन।
अंबरीष सौभरिशबरि कुबरी नारिनवीन ॥ ६ ॥

अथ अर्चनभक्तिः।

दो०। कुँभयोनि अर्चनकियो अरु बसिष्ठ मृगुजीव।
पुंडरीक भीषम सकल भक्त शिरोमणि सीव ॥ ७ ॥

अथ बन्दनभक्तिः।

क०। बन्दनके पदकी रज नारि अहिल्या सही हरिलोक सिधारी। बन्दनके अक्रूर लहेउपद स्यंदन से महिमाँझ निहारी ॥ अंकुश औ जव वज्र ध्वजा लखि लोटत प्रेमभयो उरभारी। पाद सरोज उरोज धरे सोइ मान करेउ बृषभान दुलारी ॥ ८ ॥

अथ सख्यभक्तिः।

क०। अर्जुन सख्य करी हरिसों सुग्रीव सनन्दन भे ब्रतधारी। नरसाख्यायन गोप गिधेश सुरेश निधेशं सबै ब्रजनारी ॥ सो हृदसख्य ते प्राण तज्यो दशरत्थ गिधेश भरत्थ पमारी। शीशधरेउ उरकंस ते संभ्रम बंधन कृष्ण पिता महतारी ॥ ९ ॥

अथ आत्मनिवेदन भक्तिः ।

बटु वामन रूप अनूपकियो हरि तीनों लोक लई महिनापी ।
पद ऊनते आत्मनिवेद कियो बलिगोप पृषध्र भए गुरु शापी ॥
नवभांति कि भक्ति कही तुमसों तिनमा करिएक रहैनहिं पापी ।
ताते सुनौ व्रजनारि विनातेहि रूखोलगै मोहिंज्ञान कलापी॥१०॥

इति भक्तिः । अथ भावनिरूपणम् ।

दो० । शरणागत परपन्नहठ आरत स्वारथ काम ।
वैरभाव भय भावना नवधा मन अभिराम ॥ ११ ॥

अथ शरणागतभावः ।

क० । कौरव माँझसभा दुःशासन पांडवनारि उघारिनहेरी । खैंचत चीर दुओंकर बाढ़त राशिसमान भयो पटढेरी ॥ द्रौपदी देखिसमर्थ सबै नहिं आपन हेतु तबै हरि टेरी । तवशरणागत दीनदयालहौं राखौलाज कृपाकरि मेरी ॥ १२ ॥

अथ प्रपन्नभावः ।

दो० । ऐप्रपन्न कवि हरि बहुरि अंतरिक्ष परबुद्ध ।
पिप्पलान आविर्हुतोइमिलचमसकर शुद्ध ॥ १३ ॥

अथ हठभावः ।

दो० । अंतिदेव शालोंछनी वृत्ति करै दिनतीन ।
चौथेदिन अर्पणकरै हरि को परम प्रवीन ॥ १४ ॥

क० । एकदिना परसाद विभागकै पुत्र त्रिया सह जेमन हेतू । कीन्हअरम्भतबै द्विजरूपकै जात भये प्रभु हेतसमेतू ॥ राजहि दीन्ह स्वभागहि तृप्ति बिलोकि त्रियासुत देतू । दिन सप्तम सो पुनि कीन्ह विभाग यती होइते सब भोजन लेतू ॥ कीन्हो हठ तीसरि बार पुनः हरिलोकगए त्रिय पुत्रसमेतू ॥ १५ ॥

अथ आरतभावः ॥

क०। बालि बली सुग्रीव त्रिया गृह संपति लै बालि सो सब छीन्हीं।
मारन को जब कीन्ह विचार भजेउ तिहुँलोकन बैठक कीन्हीं ॥
आरत होइ हनुमान बसीठि सों रामकृपा करि सो सब दीन्हीं।
आयो अधिकार गुरू लखि तत्त्व कही निज शिष्यहि चीन्हीं॥ १६ ॥

स्वारथभावः ॥

क०। स्वारथ सों मखरक्षक रामहिं गाधितनय दशरत्थहि जांचो।
नन्द यशोदा सबै ब्रजगोप औ गोपी सबै जिन में हरि नाचो ॥
पारथ ने निज स्वारथ हेतु सु श्याम को स्यन्दन दीन समाचो।
स्वारथौ पाय रचै हरिसों मन होयतबै परमारथ सांचो ॥ १७ ॥

अथ कामभावः ॥

क०। सूपनखा होय काम के वश्य रचेउ शुभ वेख रमापति हेता।
पंचवटी महँ पर्णकुटी लखि जांचत रामहिं प्रेमसमेता॥ कीन्ह विरूप
भई कुबरी यदुनन्दन चन्दन दै ठगिलेता। कामते गोपबधू हरिके
पदपंकज लै कुचबीच न देता॥ १८ ॥

दो०। राम भजन मन कामना उपजै हरिपद जोर।
करि निहोर मांगौं तुमहिं दीजै नन्दकिशोर॥ १६ ॥

अथ बैरभावः ॥

क०। रावण बैर कियो हरिसों न कियो कछु प्रेम न नेम सगाई।
जोग न जाग बिराग कियो तप ज्ञान न भक्ति समाधि लगाई ॥
केवल राम बसे उरमें खल बैर के भाव महागति पाई। ताते सुनौ
ब्रजनारि जबै मन भाव सो आनि बसै यदुराई ॥ २० ॥

अथ भावः।

क०। कंस जबै पट देवकि के सुत जनमतही भय भाव सों मारे।

तैंतिसकोटि लिये सुरसाथ पयोधितटे बिधिजाय पुकारे॥ बन्दतही यदुनन्द भये हरि बंदनते बसुदेव उधारे। कीटते भृंगभयो तिमि रूप जबै नँदनन्दन कंसपछारे॥ २१॥

कुं०। शिलाधातु मृदकाष्ठकी प्रतिमा में हरिभाय।
पूजत प्रेम समेत नर भक्तिभाव को पाय॥
भक्ति भावको पाय आय हरि निज जन लागी।
राधे तोहिं तिमि मिले काष्ठते प्रगटे आगी॥
रामभजन कबि कहैं भयन हमहूं बड़भागी।
हरिपदकमलपरागमधुपजिमित्यौंलड़लागी॥२२॥

इति श्रीराधाबिषादमोचनावल्यांरामभजनविरचितायांभक्तिभावोनाम तृतीयोऽध्यायः॥ ३॥

श्लोक॥ चतुर्थेराधिकाध्यानं त्यक्तातत्रोपतिष्ठिता। विनोदंकथितंराश्यमुपचारंसखीजनैः॥

दो०।संत गिरा पीयूषरस राधा श्रवण मराल।
रामभजन दृग भ्रमर जनु पुष्परूप नँदलाल॥१॥
कृष्ण बिरह दोषा सरस संत गिरा जनु भानु।
राधामुखदृग कमलसम बिकसतहोत बिहानु॥ २॥

क०। गोपऔ गोपी घनेरेबिलोकिकै राधेउठीं मुखअंचलडारे। दंतनकी द्युति कुंदकली रचिगूंधी त्रिबेणी मनोअहिकारे॥ रत्नक भूलक बाकलसै सिरबेंदी बनीजनु चन्द्रछटारे। श्रुतिकुंडल सर्प मनौलरकै हर हेरिके मान मनोभव हारे॥ ३॥ नाक नकबेसर जड़ित चुनीचन्द्रकेसारि स्फटिक मणिटोरवा टोरवा बज्रकी खारी है। लटकन गजमुक्ता सीपी सूकरअहिमुक्ता मानौ हंसबाहन निजबाहन समारीहै॥ ललकि मुखललकै झलककपोलनपर

झलकै नयनन में कज्जलरेख भौंहनबीचकारी है। ओढ़े चित्र-सारी वृषभान की दुलारी गोलोक रहनहारी गिरिधारीकी पियारी है ॥ ४ ॥ जबजागीं महरानी गुणशीलरूपखानी ब्रह्मायणी रुद्रायणी वाणी इन्द्रायणी ते अधिकाई है। सखी आई पात्रहस्ता व्यंजन चमरहस्ता सुमनहस्ता अगरबसनचन्दन कोइलाई है ॥ भूषण करवन्दन अतरकज्जल मुखमण्डल जावकदरशधारी गीता पनलै धाई है। सबैठाढ़ीरूखदेखै बिभव कड़न गनिलेखै सोइराधा यदुराई रामभजन के सहाई है ॥ ५ ॥

पात्रहस्तोवाच ॥

क०। विष्णुके पादतरंगिनिको जलआनो भरायसखी हिततोरे। सेवतजाहि सदामुनि भूपति पीउगए तरि पानके भोरे ॥ सोलै चन्द्रमुखधोवहु मानन त्यागेहु कहे हितमोरे। फिरितोहि आनि मिलैं नँद नन्दन मानस सत्यसनेहकेजोरे ॥ ६ ॥

व्यजनहस्तोवाच ॥

क०। एकदिनासुखसेज बिछायकै सोयरही बृषभानदुलारी। सुंदरि नारिकोरूप किये तहँ आयके मोहिं कहेउ गिरिधारी ॥ उतजाय रि बेनालियो करते कुचदेखे उड़ोपटलागि बयारी। मुख चूमिदुऔकुच चापिचले तुमसोवतिते जब आँखिउघारी ॥ ७ ॥

चमरहस्तोवाच ॥

क०। एकदिनासुखसेजपै सोवहु हौंहीतहां ढिगसोइ गईरी। बेपहमारे तुम्हारे करै हरि चामर मोकर छीनलईरी ॥ पट्टारि कपोल दुऔ मुखचूमि पयोधर कंचुकि टारिदईरी। मोहिं देखत भाजिगयउ ठगिआ मनमोहन सों मैंरातिठगीरी ॥ ८ ॥

तांबूलहस्तोवाच ॥

पानखवावत आपुहिआनि विभूषणबस्तरलै पहिराए । मज्जन चन्दन शीतलतोय सिंगारिकेहार हिये पहिराए॥ सहेलीनआवन पावततीर तुम्हैंरचिफूलन सेजबिछाए। ताहूपै मान कियो ब्रजनारि मुरारिअरी यहिभांति मनाए॥ ६ ॥

प्रेमके भूखे हैं नँदनन्दन तंडुललै द्विजके जिनखाए। जूंठलए फल सेवरि के हरि कूबरि चन्दनके उरलाए॥ तोहिंतजे ब्रजकुञ्जन में जिन दासी के भाल सोहाग चढ़ाए। रानी भई जगजानत बात जबै यदुनन्दन कण्ठलगाए॥ १० ॥

सैहस्तोवाच ॥

जो मरजी ठकुराइनि की रचिकै शिरसेंदुर मांगसँवारों। ऐंछिकै केश भलीविधि गूंधिकै मोतिनकी पटियांशुभपारों ॥ भावतभावतिहै मनभावनको बिरहातव लै कुबरी शिरडारों। सुन्दरता सब लोकनकी सजनी मुखबंदन बुंदपै वारों॥ ११ ॥

कज्जलहस्तोवाच ॥

तेरे दुऔलोचन पंकज द्युतिमोचन रोचक मृग खंजन दीरघ चंचलगति पाई है।लगत जाहीविनरूखे तेहिरूपके भूखेसकुचिसहमि सूखेरहीनेकहू न लोनाई है॥यशुमति के बारे तवदृगनबसनहारे सजलजलदकारेश्यामी अतसीते सवाईहै।सोइलीजिये महरानी दृगनशोभाकीखानीसरसरसउज्जल कज्जल दासीलैआईहै॥ १२॥

सुमनहस्तोवाच ॥

सीतल मन्द सुगन्ध चले तहं वायु लगै अति कामबढ़ावै। गुंजत भृंग विहंग करै रव कोकिल कोकल हूक उठावै॥ फूलिरहो बनबाग सबै जनु देखतही हियदाह लगावै। लैकर लालन

फूलत माल बिना मोहिं लालन गूंधि न पावै ॥ १३ ॥

वस्त्रहस्तोवाच ॥

स० । सेतते हेत बिना सजनी दिन बादि बृथा जल धावै ।
लालम रजनी लीन जो नेह न लागत जागतहू निशि मोहमें सोवै॥
प्रीति पितम्बर ओढु सखी नित पीतम की उठिकै मगजोवै ।
साँवरो रंग नहीं कल पावत तू कलपै भ्रम में मतिहोवै ॥ १४ ॥

चंदनहस्तोवाच ॥

स० । अंतर दाह बरै सजनी रजनी दिन तोको काम सतावै ।
बैरिनि बैर कियो कुब्री डुबरी मुख बोलत बात न आवै ॥
जब श्वास चलै तब कृष्ण कहै कोइहै हरिको आनि मिलावै ।
देखु बिचारि बिना जगबंदन चंदनको फिरि अंग लगावै ॥ १५ ॥

भूषणहस्तोवाच ॥

स० । ये तव भूषण देखि सुरेस महाधनदै रुचिसों गठवाये ।
विष्णु बिरंचि महेश धनेश बने न तबै निज हाथ बनाये ॥
ताहूपै ते उपमेज भये कवि ढूंढ़ि फिरे उपमा नहिं पाये ।
तें ब्रजनाथ अनाथके नाथ सो हाथन लै तुमका पहिराये ॥ १६ ॥

जावकहस्तोवाच ॥

स० । एक दिना नँदनंदतना बनिरूप सखी नख काट तुम्हारे ।
आंपु रची पदपै पुतरी करसों हँसि जावक लीन्ह हमारे ॥
मींजत पीठि कपोल छुये कुच भूषण हार सिंगार सुधारे ।
जावक पावक सो तोहिं लागै गये जबते तबतेतव प्राण पियारे १७॥

दर्प्पण हस्तोवाच ॥

स० । दर्प्पणमें जिमि है प्रतिबिंब अजागुणते जगमें हरिव्यापै ।
कीरति पुष्टि गिरा पुनि तुष्टि इलोर्जा कांति रमापर मापै ॥

विद्या भक्तिकृपा विमला उत कर्षिणि शक्तिसो ज्ञान परावै ।
तीषति षोड़श शक्तिमयी तुम कृष्ण बिना क्षण एक न तापै ॥ १८ ॥

गीतायणहस्तोवाच ॥

स० । ढोल मृदंग उपंग औ बेणु बजै बनमें मुँहचंग रसाला ।
शंख सितार सरंग सरोद विपंचि मजीर बिजै इक ताला ॥
गाइनि गोपबधूनके साथ औ नांचिनि रहस रच्यो नँदलाला ।
सो सुधिहोइ सखी नित तोहिं बरै बिरहानल ज्वाल कराला ॥ १९ ॥

गोप्यऊचुः ॥

स० । एक समय सब गोपकुमार सो नाचत ताल बजावत बेनू ।
गावत गीत लगै अति प्रीतिसो दाबिरही तृण देखत धेनू ॥
यमराज स्वसा थहराइ रही नहिं डोलत धार सो घूमत फेनू ।
ताहि समय सुर देविन साथ सो देखतही भयो काम नवेनू ॥ २० ॥
ताहि समय ब्रजनारि घनेरी लिये बृषभान दुलारी नवेली ।
चूनरि चारु सो ओढ़ि बहोरि लसै कुच बीचन माल चमेली ॥
सेंदुर मांगभरी शशिभाल नवीसबै नारि न राधि अकेली ।
गई ततकाल जहां नँदलाल सो गावत गीत समेत सहेली ॥ २१ ॥
आवतही सब नारि निहारि कहेउ गिरधारी कहां सबै आईहो ।
देखनको बन नारि न योग्य न भालु कपीशन देखि डराईहो ॥
ताते सुनौरि सबै ब्रजनारि सो मानो हमारि घरै फिरि जाइहौ ।
आवो इतै मन भावै बितै सो घरी दुइचारि महा सुखपाइहो ॥ २२ ॥
सुनतै बात सबै हरषात चली हरि साथ सो यूथ बटोरे ।
बाढ़त अंग अनंग प्रचण्ड कियो हरिसंग न मान घटोरे ॥
गावत नाचत तोरत तान नचावत फाटत पाट पटोरे ।
गोपिनकी गति देखि बेहाल तबै नँदनंदन साज सजोरे ॥ २३ ॥

कुं०।।निजकर कंकण कंचुकी भूषण बसन सम्हारि।
हरि निहार लखि मान मन हमसम जगको नारि॥
हमसम जगको नारि फिरै प्रभु निजसँग लीन्हे।
ब्रह्मादिक मुनिजाइ बिपिन जेहि लगितप कीन्हे॥
रामभजन कवि कहै जगतपति वंश जिनकेरे।
अन्तरहित हरिभये मात मन लखि सब केरे॥ २४॥

इति श्रीराधाविषादमोचनावल्यांरामभजनविरचितायांशृंगाररसवर्णनं
नामचतुर्थोऽध्यायः॥ ४॥

पंचमेलाडिलीवाक्यतोकृष्णलीलारहस्यंतथांतर्गतेरामगोप्या॥
सर्वतीर्थाटनंलोकलोकाटनंजाम्बवत्योविपाकानघस्यार्जुनस्य॥५॥

दो०।ब्रजबासिनके वचन सुनि राधा धरि मन धीर।
मन भावन पावन सरस बोली गिरा गँभीर॥ १॥
सो०।सुनौ सकल ब्रजनारि हरिचरित्र बरणन करौं।
सो जानौ त्रिपुरारि गुप्तचरित ब्रजनाथके॥ २॥

राधोवाच॥

स०।श्रीबृन्दाबन कुंजनते सखि श्यामहिंमैंलै संग सिधारे।
मानभरी लखि गोपिन को इतते बदरीबन में पगुधारे॥
दरशनदै मुनिबृन्दनको कैलास में शंकर जाइ निहारे।
करिसंभाषण ज्ञान कथा अलका लखिकै सुख होत हमारे॥ ३॥
अम्बकदम्ब मधूक लसै बिच मन्दन चन्दनके तरुराजै।
गंग तरंगन केसिक रागहिमा मुत मन्द बसन्तहि साजै॥
जा क्षण यक्ष किलोलकरै रव कंकण किंकिणि नूपुर बाजै।
रतिनाथ मनोरति साथ लिये मनमें अतिमान मनोभव गाजै॥ ४॥
दो०।मैं पूंछेउ नटनागरे नगर को कौन नरेश।

कही कथा बिहँसि हरि यहिँ पुर नृपति धनेश ॥ ५ ॥

श्रीकृष्णउवाच ॥

क० । विष्णु कि नाभि सरोरुह की रज सो अज विश्वरची तपतापी । भयेविधि के भृगुआदिक तामें पुलस्तिके विश्रवजापी ॥ ताकेभये सुतचारि कुबेर औ रावण कुम्भ विभीषण चापी । लङ्क छड़ाय लई जबते खल दै अलका शिवकीन्ह प्रतापी ॥ ६ ॥ ताके तनय नल कूबर औ मणिग्रीव लिये रम्भादिक नारी । शङ्ख सितार सरंग बजैं त्रिय गान अनङ्ग उठेउ तन भारी ॥ बिन वस्त्रन यक्षवधून के साथ करैं रतिरास रचेउ ब्रजमें फुलवारी । ऋषिनारद शाप दई तिनको द्वौ वृक्ष भये ब्रजनारी ॥ ७ ॥ सर राधे बिलोकु महेश्वर को पद्माकर भृङ्ग करै रवभारी । पुष्प सदा युत विष्णु निमित्तहि नेमकियो गिरिजा त्रिपुरारी ॥ नारिके हेत विभास्वतये छलियो तेहि पुष्पसमूह उतारी । शापते दैत्य भयो अघरूप अघासुर नाम महाअघकारी ॥ ८ ॥

राधोवाच ॥

सो० । कहहु मोहिं समुझाय प्राणनाथ हिमिगिरि कथा ।
जन्मेउ धरणी आय कौनदेव कारण कहा ॥ ९ ॥

श्रीकृष्णउवाच ॥

दो० । अनसूया अरु अत्रिगृह शशिबिधि को अवतार ।
दक्षशापते जाइ सोइ गिरिवर भयो तुषार ॥ १० ॥

क० । मैन को मान मथे मनमें रतिहू सकुचै यहु रूप निहारी । मुख की दुति चन्दहिमन्द करै अरु नयनन सों मृग नैनजुहारी ॥ हंस गयन्द लजैं गति देखि भई पितृमानसते गिरिनारी नामपरो मैना तबते हटक्यो तबको गिरिराजदुला

री ॥ ११ ॥ हिमवान तनय मैनाकभयो अरु गङ्ग उमा दुहिता जगजानी। श्रीगंगा बिवाहि दई हरिको शिवको तपकै पतिकीन्ह भवानी ॥ जब रामचन्द्र अवतार लियो सो कीन्ह सहाय महा बलखानी। हिमवन्तहु तो यमवन्त भयो दुहितोमा यामवती जग जानी ॥ १२ ॥

दो०। ममहित जामवतीकरै तप राधे गुण खानि।
पटरानी होइहि बहुरि सो सब कहौंबखानि ॥ १३ ॥

जाम्बवत्युवाच ॥

क०। राम सिया हित कानन खोजत जात तहाँ छल कीन्ह भवानी। जानकी रूप कियो बनमें कछु रामहिं कामहिं आनी॥ सो सब जानि दियो शिव शाप चहौ हरिको हरिकी होइरानी। सोसुनि प्राणप्रिया प्रिय भाषित जाम्बवती तनु सो तपठानी॥

दो०। गङ्गा विपाक गंगालक्ष्मी सरस्वती विष्णुप्रिया यकबार॥
कीन्ह कलह वैकुण्ठ में सरिता भई अपार॥ १४ ॥

राधोवाच ॥

दो०। प्राणनाथ हमहूँ सुनी गङ्गातिपथग नाम।
जौनधार यहिलोकमें सोबरणौ घनश्याम॥ १५ ॥

श्रीकृष्णउवाच ॥

स०। पातक नाशकरै क्षणमें मनमें मन्दाकिनि नामसँभारै। स्वर्ग में जाइ बसै तेहि पास भगीरथ कै तपलै महि डारै ॥ भागीरथी यहि नामपरो शिवशङ्कर की लट सो जल धारै। तौलै प्रभावति को जो रसातल में क्षण में पगुधारै॥ १६ ॥

राधोवाच ॥

दो०। भरतखण्ड भागीरथी गंगा सम को आन।

नदीपुनीत विमुक्तिदा दोषचहौ भगवान ॥ १७॥

राधोवाच ॥

क०। करि परसन गंगोदकहू कावेरी नर्मदा नीर नहाये। गोमती गोदावरी यमुना अरु सिन्धु तपीपरसी श्रुतिगाये ॥ वेद-मती औ सरस्वति रोदस माधव लै हमका अन्हवाये। भारतखण्ड प्रभाव प्रचण्ड ये तीरथहै सब दरश कराये ॥ १८॥ सखि जम्बुक द्वीप बिलोकि भलीबिधि दीप बिलक्षण प्लक्ष निहारी। कुश अरु क्रौंचहि शाकशाल्मलिहै दुगुनौ क्रमसों व्रजनारी ॥ पुहकर दीप महायक राजित पद्मजहांबिधि को पुरभारी। पुरआठ बसैं दिशि आठहु में दिगपाल बिलास करैं सहनारी ॥ १९ ॥ सुरेस पुरी दिशिपूरब है अग्नेय में अग्नि पुरी जो निहारी। दक्षिण संय-मनी कहिए नैरितिमें निरितन को पुरभारी ॥ बरुण बसै दिशि पश्चिम में वायव्य में वायुबसै सुखकारी। कुबेर कहै दिशि उत्तर में ईशानमें ईश्वर हैं त्रिपुरारी ॥ २० ॥ दिक्पालन के महिपालन के लोकेशन के सबलोक दिखाये । ऐहि वृन्दाबन आइ सखी हरिअंतर होइ हमका भरमाये ॥ आइरहस्य कियो यमुनातट बैठनको पटपाट बिछाये। सो हरिहाय बिहाय हमें कुबरी कटिकूबर सो मनलाये ॥ २१ ॥ है ब्रजमें कोइ मेरो हितू कुबरी पतिको आनि मिलावै। दासी हती सो भई पटरानी दुवोकर लै हरिको उरलावै ॥ कौड़िउके मोलन घुँघुची चढ़ि तोलन कुन्दनको तौ-लावै। सो मुनिकै मोंहिंलाज लगै मनमोहन को फिरि लाज न आवै ॥ २२ ॥ ईश्वर अंसौ जीव चराचर पावन निर्मल आतमची-न्हों।ज्ञान कला अपने बलकारण सो इनकी ठगिनी ठगिलीन्हों ॥ आप ठगो हमको ब्रजमें मथुरापुरको ठगिया पगुदीन्हों। है ठगि-

नी भगनी यह कूबरि सो ठगिया ठगिकै वशकीन्हों ॥ २३ ॥ लै बरदान ठगो मधुकैटभ जाकी बसात्रसुधातल कीन्हों। दानदियो बलि ब्राह्मणजानि कियो ठगई सबियां हरिलीन्हों ॥ नारद याचत रूप त्रियाहित लीन्हींरमा कपिको मुखदीन्हों। दैत्यठगे जेहि मोहनि रूप सोई ठगिया ठगिनी ठगिलीन्हों ॥ २४ ॥ सिन्धु को पुत्र प्रचण्ड भयो जालन्धर नाम सुरासुरजीते। युद्धकियो शिव सों जेहि दारुण मानै न हारि महाबलहीते ॥ ताकी त्रिया पतिवर्तकरै सो छलीछलिया छलकै रतिहीते। ताकोभयो व्रतभङ्ग जबै शिवसंगर मैं बलसों तेहिजीते ॥ २५ ॥

कुं०। माया पतिके चरितते जानै विविध प्रकार।
मातपिता भ्राता सुहृद जिनके नहिं संसार॥
जिनके नहिं संसार कर्म्म शुभ अशुभ न लागै।
मोहनिशा जग शयन तहां योगीजन जागै॥
रामभजन कविकहैं ज्ञान सोई में पावै।
होइ प्रसन्न भूदेव चरणपङ्कज मनलावै॥ २६॥

इति श्रीराधाविषादमोचनावल्यांरामभजनविरचितायांराधासँवाद वर्णनन्नामपञ्चमोध्यायः ॥ ५ ॥

ईजत्तेषटतमेनन्दप्रश्नं च राधा विराटञ्चगोलोकलीलांचविर्या। विपाकन्तुलस्यास्तथा राधिकायाविषादंविमोचंहरेर्वाक्यतःस्यात्॥

दो०। श्रीराधाके बचन मृदु सुनि सबगोपीग्वाल।
न्यायसांख्य वेदान्तयुत ज्ञानभयो तत्काल॥ १ ॥
प्रथमहिं जो गोलोकको दरशनपाइनिगोप।
सोसुधिकरिहरि भक्ति यह अतिशयबाढ़ीचोप॥ २ ॥
तेहिऔसर उपनन्दयुत उठिकरजोरे नन्द।

अस्तुतिकरत प्रसन्नमन उमगित परमानन्द ॥ ३ ॥

नन्दउवाच ॥

क०। सक्तिसमूहयहै पगमैसविपान्तुमहीं निजरूपसम्हारी। महत्तमादिरच्यो निजरूपते तैजसतामस औ बैकारी ॥ देविन इन्द्रिन तत्त्वनको गए बर्ष सहस्रबसावत वारी। अण्ड अनेक विराट के रोम यथा उँमरी फल आकर चारी ॥ ४ ॥ पूरण ब्रह्म सनातन कृष्ण अनादिअनन्त अपारनिहारो ॥ मायाशक्ति सुबिद्यातुही रचिसात्वत राजसतामससारो। त्रिगुणते बिष्णु विरञ्चि महेश रचौ जग पालन करिसंघारो। भूमिको भार उतारन हेतु सदाजग में तुम्हहीं अवतारो ॥ ५ ॥

दो०। राधे अबमोसों सकल दिव्य लोक के देव।
तुम्हरी आज्ञा अजतरे बरणौ सब के भेव॥ ६ ॥

राधोवाच ॥

सो०। सुनु ब्रजेश चितुलाय निज बिभूति बरणन करै।
जाते भ्रम मिटिजाय लोक लोक गतिलखिपरै॥७॥

क०। सबलोकनमें भूलोक बड़े त्रिगुणात्मक कर्म किये फल पावै। तामस कर्म अधोगति योग्य अरु राजसलै भुव लोक बसावै॥ कर्म सतोगुण स्वर्ग में बास सतोगुण शुद्ध महर्गृति जावै। जनलोक बसै सतसंगति ते तपके बल सो तपलोक सिधावै ॥ ८ ॥ संयमनेम औ योग तपस्या तीरथ दान करै नरकोई। मन बच कर्मते सत्यक्रिभाव सदा परस्वारथमें मन होई॥ कर्मशुभा शुभको फलत्याग स्वभाविक ज्ञान परे गति जोई। सत्यहि लोक में बास करै सतआत्मक योगिन की गतिसोई ॥ ९ ॥ इनतीनिउ ते बैकुण्ठपरे दहिने शिवलोक बसै शिवजामें। ब्रह्माबसै वह लोक

है ब्रह्म तरे दश लक्षसो योजन वामें ॥ अण्डन खण्डन लक्षित हैं विधि शंकर विष्णु लगे निजकामें। यहिभांतिते अण्ड विराट के रोमन कोटिलगे उमरी उपमामें ॥ १० ॥ बिराटको नाम परो नारायण वासकियोजलमें जबहींते। चितचैतन्यमें कृष्णको धाम विराट उठो जलसोंतबहींते ॥ ब्रह्मकी शक्ति विराट रचो अरु ईश्वर जीव रचो मनहींते ॥११॥ कृष्णको षोड़श अंश विराट कला पुनि षोड़श अंशकीजानौ ॥ विष्णु विरश्चि महेशभए तिनके कल अंश ते देवन मानौ। शक्तिसमूह भई ममअंशते देविन देवनकी पहिचानौ ॥ मैं अरधांगहौं कृष्णकीशक्ति सोमाया ब्रह्म सदा अनुमानौ ॥ १२ ॥ कोटिन भानु समान प्रकाश सो तेज मयी गोलोक बखानो। चमकतचन्द्रकी चंद्रिकया चपला जनुकानन पत्र समानो ॥ १३ ॥ विरजापरिखाइवशोभितहै गोलोक के बाहिरही चहुँओरा। तटमें शुभकानन राजित है पच्छी कलकूजित नाचत मोरा ॥ हंसकरंडव चात्रिककोकिल सारिक पारवताशुक शोरा। भृङ्ग तरङ्ग उठैजल उज्ज्वल नीरगँभीर प्रवाहके जोरा ॥ १४ ॥

नन्दउवाच ॥

दो०। बिरजाकेहिकारन भई नदी बही चहुंओर।
सोकहिये वृषभानुकी मम कौतूहल जोर ॥ १५ ॥

राधोवाच। बिरजाबि० ॥

दो०। श्रीदामा प्रथमै कही बिरजा कृष्ण बिहार।
मोरे भयते होय नदी बही मनोहरधार ॥ १६ ॥

तुलसी बिक ॥

दो०। जब विरजा के बिरहहरि व्याकुल बिलपत तीर।
तटिनी तटघूमत फिरै हासखिकहत अधीर ॥ १७ ॥

तबमैं बिरजा कांतकोसमुभायउँ बहुभांति ।
समुझाये समुझैनहीं तटमें आवत जाति ॥ १८ ॥
चौ०। मैबिरजासन कहेउबहोरी । प्रगटहु नाथ हेत नहिंखोरी ॥
एकरूपरहु नदी सोहाई । दूजेहरिहित प्रगटहु आई ॥
सो सुनि दिव्यरूप तेहिदीन्हा । कृष्ण उठाय लाय उरलीन्हा ॥
लैबिरजा बृन्दावन आये । तुरतै कोटिन गोप बोलाये ॥
रहस हेत आज्ञा प्रभु कीन्ही । घर घर गोपिन को सुधिदीन्ही ॥
सुनि प्रभु शासन ते सब नारी । पहिरहिं भूषण करें तयारी ॥
त्रो० । मणिमयपटियाँशुभ राजितहैं। तापै बहुरँग पटभ्राजितहैं ॥
दमकैं टिकुली जनुदामिनिसी । चमकैंकजरा जनुयामिनिसी ॥
सिंदुरा बिचभौंहन में ललकै । मुक्तागज नासा पै झलकै ॥
नथुनी मुखतीर किलोलकरै । चुन्नी द्युति दांतन बीचपरै ॥
मनसिज मनमोहि कटाक्ष करै । बिम्बा फलकी रुचि ओटचरै ॥
श्रुति में दुइ कुण्डल मण्डितहैं । झलकैं जग मोहन पण्डितहैं ॥
दोउ गोल कपोलनकी रुचियों । बिकसैपुनि दाड़िमके फलज्यों ॥
गरमें हरवा कुचबीच बढ़ो । त्रिबली सिढ़ही जनुकामचढ़ो ॥
कुचगोल कठोर निरन्तर में । उपमा जनु श्रीफलकी जगमें ॥
कटिमें लघु किङ्किणिबाजिरही । जनुकाम जगावत सोवतही ॥
ऊरूयुग योग्य मनो कदली । गतिवेग गयन्द मराल चली ॥
पगमें रवनूपुर बाजति है । रति नाथ मनोअति गाजतिहै ॥
यहिभांति सबैगई कृष्णजहां । प्रभु दरशन पाय अनन्दमहां ॥
दो० । राजित वृन्दाविपिनि हरि रसिक बिहारीलाल ।
हरषितमुख निरखैसकल प्रमुदित गोपीग्वाल ॥ १६ ॥
त्रो० । कोटिन प्रभुगोपनसंगलिये । मुरलीअधराधरबीचदिये ॥

मकरा कृत कुण्डलहै श्रुति में। दमकैं बिजुली जनु द्वै घनमें॥
मणिमय हरिमाथे मुकुटधरे। मुक्ता हल झलकत बीचपरे॥
कृत केसर तिलक ललाटतटे। दुति मोतिन मोतिन बीचघटे॥
मुक्ता गजनासा बीच लसै। इन्दीवर शोभा नयन बसै॥
लखि अतसी फूलनकेरिदुती। पटकाम कमान समान हुती॥
मणिकौस्तुभ कण्ठ विराजिरही। वक्षस्थल में बनमालसही॥
त्रिवली गुण बोधक है उदरे। सुठिवर्त्तुल नाभि गँभीर तरे॥
कटिमेपटपीत बिराजित है। काछा पट नटवर राजित है॥
सँगशोभित गोपिनकी अवली। जनुभेट तमालहि कुंदकली॥
विहरैं बृन्दावन कुञ्जन में। शशिबृन्द मनो झलकै घनमें॥
धुनि कंकण किङ्किणिनूपुरकै। मुरली रसपाक बिरागपकै॥
यहिभांति बिहार उछाह सही। मोहिं नन्दविनोद सोहातनही॥

दो०। तुलसी मनहिं प्रमोद लखि ताहि शाप मैं दीन्ह।
होहु असुर घर नारि तुम हरि बिहार रसलीन्ह॥
मोहि व्याकुल लखिसाँवरो तजि निजरहस अधीर।
चढ़ि बिमान आये तुरत मम मन्दिर बलवीर॥

राधोवाच॥

चौ०। श्रीदामाकी शापकराला। देखिबिकलमोहि दीनदयाला॥
कहेहुमोहिं सुनु सुमुखि सयानी। तुम सन कहब अगोचरबानी॥
प्राणपिया तुम प्राणसमाना। माया ब्रह्मबीच कछुमाना॥
तुमते सकल सृष्टि मैं कीन्ही। निज विभूति क्रीड़ा लगुदीन्ही॥
पृथ्वी अप अरु अनलसमीरा। गगन तत्त्व रचि सकल शरीरा॥
ईश्वर अंश जीव अविनासी। माया वश्य तत्त्व घटवासी॥
उच्च अवच घट लख चौरासी। त्रिगुण कर्म कृत जीव उदासी॥

निज कृतकर्म जनित फलपावै । उच्च अवच योनिन में आवै ॥
दिव्ययोनि नरयोनि सोहाई । बिन तव कृपा कहौ किन पाई ॥
दुर्लभ नर शरीर जगआवै । चारिवरण दुर्लभ तनपावै ॥
वरणन में द्विज देह अनूपा । तिनमें ब्राह्मण वेदस्वरूपा ॥
वेदतत्त्व अरु अर्थहि जानै । ईश्वर अंश चराचर मानै ॥
तिहिमा अधिक विषयरसत्यागी । त्यागिउतेपुनि अधिकविरागी॥

सो० । ज्ञानी अति प्रिय मोहि यद्यपि है विज्ञान युत ।
सकल कहौं अब तोहिं प्राणप्रिया भाषित सुनौ ॥

स० । राजसके सुत काम औ क्रोध महाबलसे सगरो जगजीते । मद औ मोह लिये चतुरंगिनि सेन सजे सैनापति हीते ॥ धन दार सुतादिक एकहैं रसगंधौ रूपऔ बाहनहींते । शब्द निशान जुझेउ बजाइके स्पर्श में बंधनरज्जुमयीते ॥ स्मित मन्द कटाक्षके वाण चलै मृगनयनी के नयननहीते ॥

कुं० । सतयुग में व्यापै नहीं विषय विषमता जोर । त्रेतायुगमें कछुक पुनि द्वापर अधिक अघोर ॥ द्वापर अधिक अघोर जोर कलियुग विपलागै । धर्मचरण घटिजाय पाप घटघट में जागै ॥ राम भजन कवि कहै राम सुमिरन करि लीजै । कामक्रोध मद लोभ मोहमें पांउ न दीजै ॥

इति श्रीराधाविषादमोचनावल्यांरामभजनत्रिवेदीविरचितायांराधाकृष्ण संवादोनामषष्ठोध्यायः ६ ॥

कृतासप्तमेजन्मवार्ताच राधापुनर्बालकात्पूतनायाविनाशम् ।
तथाचाहतस्याविमोक्षंविपाकंकथावामनस्यपुराणस्यविष्णोः ॥

कृष्णोवाच ॥

दो० । तुम जन्मौ वृषभानु के बरसाने में जाइ ।

कलावती के गर्भ में तेज पुंजको पाइ ॥ १ ॥

राधोवाच ॥

दो०। मैं पूंछेउ ब्रजराज सों कलावती को आइ।
जेहिके गृहमें कृष्णजू जन्म लेउँ मैं जाइ ॥ २ ॥

श्रीकृष्णउवाच ॥

स०। पूरण चन्द्रकलासम अंग स्वधातनया बहुभांतिसुहाई।
कोटिन वर्ष कियो तप दारुण तेजमयी पितृ ते उपजाई ॥
देखत छोभ भयो दुरबासहि शाप दई जन्मी महि आई।
नाम कलावतिसे यहि मातु सुता वह सुबल की सुखदाई ॥३॥
गोप सुचन्द भये वृषभान कलावति के पति प्राण पियारे।
गोवृषभा वृषभानु के लक्ष अहीर हजार चरावन हारे ॥
कांचन के सब धाम बने मणिमाणिक चौक विचित्र सवाँरे।
सो वरथान में थान करो सुन प्राणप्रिया प्रिय बोलहमारे ॥४ ॥
गोपिनकी सगरी अवली ब्रजमें जन्मी होइहै सखि तोरी ।
बिरंजातटमें जिमि केलिकरो यमुनातटमें तिमि केलिबहोरी ॥
दधिमाखनको नित चाखनहै मुरलीधुनि सो सुनिहौनितमोरी।
जाग्रतमें तोहिं शापभई सुख सोवतमें मिलिहो मोहिंगोरी ॥५॥
बिरजागृह द्वारमें शापदई श्रीदामारहै प्रिय मित्र हमारो ।
तेहिका अपराध करी तुमरी हमरी अनुशासन पालन हारो ॥
होइहि दैत्य हरिरहि जब तोहिं भजै जब उत्तरको बलभारो ।
शाप उद्धार करो हतिके तेहिं लयमणिचूड़सिंगारं तुमारो ॥६॥
मैं महिभार उतारन के हित शूरके सूनुको सूनु कहैहों।
बसुदेवते देवकि गर्भ बसौ मथुरापुर ते ब्रजको फिरि ऐहों ॥
एकादश वर्ष चरित्र करो तब गोप औ गोपिन में सुख पैहौं।

मारिकेदैत्य निकारिके नाग बधौं खलको मथुरा फिरि जैहौं॥७

दो० । या विधि भार उतारि मैं चरित करौं बहुभांति ।
फिरि गोलोकहि आइहौं तोहिं लहि शाप सिराति॥ ८
यहिविधि मोहिं समुझाइहरि मथुरा जन्मे जाइ ।
प्रभु अनुशासन ते भइउ बरसाने में आइ ॥ ९ ॥

नन्दउवाच ॥

दो० । कहु राधे सर्वज्ञ तू घटघट शक्ति स्वरूप ।
लीला कृष्णकुमारकी आइभयो सुरभूप ॥ १० ॥

स० । कश्यपते बसुदेव भये अदिती भइ देवकराजदुलारी ।
जन्म लियो तिनके गृहमें हरि गोकुलको ततकालतैयारी ॥
बसुदेव चले लय कंसते शंकित भादौंमास निशाअँधियारी ।
नीर गँभीर बहै रविनंदिनि हूँकतही तेहि पार उतारी ॥
नंदकी सेज सुवाइ सुतै औ सुतालै गोद प्रियापौढारी ॥ ११ ॥

घनाक्षरी । सुनि बालध्वनि उठिधाये सब द्वारपाल हाल बाल जनि महिपालका सुनायो है । सुनि निज काल है बेहाल तत काल उठि माल उरमाल मणिमाल बिसरायो है॥ हाल हाल धावै महितल पादलावै लघु ललकि लपकि बालगृहको सिधायो है । पूछो भयो बाल कानभई नृप बालिकाहि गहिपदमहि तेहि नभमें दिखायोहै ॥ १२ ॥

दो० । भई सुभद्रा रूप इक अर्जुनकी प्रिय नारि ।
दूजे विंध्याचल बसी सब जग यशविस्तारि ॥ १३ ॥
कही कथा सब कंससो नभमण्डल में जाइ ।
सुनि प्रसंग हरिजन्म तेहि पठयो दैत्यबुलाइ ॥ १४ ॥
जन्मे बालक हालके घरघर मारहु जाइ ।

ग्राम नगर पुर घोष ब्रज पुनिपुनि निरखहु धाइ॥ १५॥
स०। घरघर गोपी औ गोपसुनो सुत नंदकी यशोमतिजायो।
सब आये अनन्दभयो मनमें धन धान्य विभूषण पात्रलुटायो॥
बाजने बाजिरहे बृजमें नभ देवन बाजन की धुनिलायो॥
नंद अनंद कहो नहिं जाय सनातन सो जेहि वेदनगायो॥१६॥
दो०। बोलि विप्रवर वेदविधि जातकर्म सब कीन्ह।
गोहिरण्य तिल धान्य घृत दान द्विजन कहँ दीन्ह १७॥
स्नान शौचकरिदशम दिन और सुमङ्गलकीन।
कहैं सूत मागध विरद गावत गान प्रवीन॥ १८॥
क०। ब्रजमें सुमृष्ट सिक्तद्वार गृहांतर चित्र होत चैल तोरण पताका फहरातुहै। गो वृषवत्स लै हरिद्रा तैल भूषित किहौ दीन्हे बुलाय सब बस्त्र भूषण सिंगारि साजु समाजुहै॥ कंचु कोटि बहु मोल उरमाल जामा पहिर सब गोप करि उपायन पाणि नंदगृह जातुहै। गोपी सुमृष्ट मणि कुण्डल निःकमाल कंठ चित्र वस्त्र कंकण पहिरि पथि शिखाच्युत माल्यवर्षातुहै॥ १६॥
स०। उरहारलसै कुचकंचुकिमें शुभदाड़िम बृंदक श्रीफलसै।
श्रुति कुण्डल लोल कपोल छुवै अधरारस लटकन सों परसै॥
नंदालय गोपिन की अवली बलि गोरस केसरिलै बरसै।
श्रीकृष्ण के जन्ममहोत्सवमें तब रामभजन फलपाइ हँसै॥२०॥
दो०। दानमान करि मधुपुरी गये नृपहि करदीन्ह।
बसुदेवहि परितोषि पुनि सुनत त्यारी कीन्ह॥
चौ०। प्रेषित कंस पूतना आई। जरतह बधिं बालक समुदाई॥
अतिबल प्रबल भयंकर घोरा। बालघातिनी चित्र कठोरा॥
ग्राम नगर पुर बालक मारे। सुनु ब्रजेश गृह गई तुम्हारे॥

कामचारिणी रूप बनावा। केशबंध मल्लिका लगावा॥
सूक्ष्ममध्य पयोधर भारी। रतिसम वृहनितंब सुकुमारी॥
कंपित कर्णफूल छविदेई। चितवनि चारुचोरि चितलेई॥
वल्गुस्मितापांगकरि बाना। ब्रजबासी मनहरि विधिनाना॥
गोपिन लखेहु इंद्रिराताई। निज दर्शन हित कृष्णबुलाई॥
अति सकोच कछुकहिन सेराई। हरिके निकट पूतना जाई॥
देखितल्प सोये यदुराजा। भस्ममध्य जनु अग्नि बिराजा॥
लीन्ह अनंत अंग में गोरी। सर्परज्जु जिमि भै मतिभोरी॥
सास्तनगरल नाथ मुखदीन्हा। गहिकुच कलश प्राणपयपीन्हा॥
अवना पूतपियहु पयमोरा। परी धरनि चिकार करिघोरा॥

नंदउवाच॥

सो०। राधेकहु समुझाइ पूरुब जन्मनिकवन यह।
भई पूतनाआइ हरिदर्शन सुभगति लही॥

राधोवाच॥

त्रो०। दिति कश्यपते सुतप्रबलभये। जिनदेवनकेसबलोकलये॥
हरिबराह हिरण्याक्षहिमारो। धरणि आनि फिरि जगविस्तारो॥
बन्धुनिधन सुनि दुखित भयो। करिकोप बनै तप हेत गयो॥
सत बर्ष दिव्य तपकीन्ह महा। विधि देवन संगसिधारे तहा॥
मन भावित तेहि बरदान भयो। सब देवनकी तेहि राज्यलयो॥
हिरएय कश्यपके प्रह्लाद भये। तेहि बैरि कियो हरिराखिलये॥
नरसिंह भये जेहि हेत हरी। तेहि मारिस्वभक्तहि राज्यकरी॥
सुत धर्मधुरीन विरोचन ये। तन दान दिये द्विजदेवलिये॥

दो०। तनय बिरोचनके भये धर्म धुरी बलिबीर।
दान ज्ञान गुण तप व्रती यज्ञकर्मरणधीर॥

त्रो०। सबदेवनको अधिकारलियो। अपने वश भूपन जीतिकियो॥
बहुदान दियो महिदेवन को। तेहि कीन्हं अरम्भ सतक्रतको॥
तब देवनको हरिमन्त्रदयो। तेहि सम्मत सिन्धु मथाइ लयो॥
बिष शम्भु पियो हय सूर्य्यलियो। ऋषिगाइ महेन्द्र गयन्ददियो॥
लक्ष्मी संग नाथविहार कियो। मणिकौस्तुभ कण्ठमें बांधिलियो॥
हरि मोहनि रूप अनूपलयो। अवलोकतलोकबिमोहभयो॥
ठगि दैत्यन पानदियो मदिरा। सुरअमृत राहुको काटिसिरा॥
करिकौतुक विष्णु गये जबहीं। देवासुर युद्ध भयो तबहीं॥
जब दैत्यनको दल जूझिमरो। बलिवानसमेत सनाथ परो॥
संजीवनिते तबजीव परो। बलि शुक्र महातप घोरकरो॥

दो०। तपप्रबाल बलतेज सब बलिहि दीन्ह भृगुनाथ।
जीति समर सुरनायकहिं करिमखभये सनाथ॥

त्रो०। देवनदेखि अनाथ जबै। अदिती हरि सुमिरनकीन्हतबै॥
अवतार लियो हरि वामनही। बलियज्ञ गये यांचोतबही॥
सुन्दर रूप अनूप निहारि। गये तब मोहि तहां नरनारि॥
योगिन परम तत्त्व लखिलीन्ह। विदुपन ब्रह्म सनातन चीन्ह॥
रही मनमें अभिलाष जिसै। मन वाञ्छित दर्शन दीन्हतिसै॥
कोउ संपति भुक्ति विमुक्तिमती। कोउ मांगत देवमनाइ पती॥
यहि भांति मनोरथ लोग किये। सबके हरि वाञ्छित पूरिदिये॥
दनुकी तनया हरि देखिरही। लखिके खचरी यह बातकही॥
शिवशंकर मोरि सहायकरै। इसबालक सों ममगोद भरै॥
हरि मोर पयोधर पानकरै। कुचपै दोउ पंकजपाणि धरै॥
यहि भांति सुतै अभिलाषकरी। खचरी मन होइ प्रमोद भरी॥

कुं०। खचरी दूसरजन्म यह बकी भई ब्रजनाथ। पेइ पयोधर

तासु हरितुरतै कीन्हसनाथ ॥ तुरतै कीन्ह सनाथ मातुगति खचरी पाई। चढ़ि विमान शुभरूप परमपदपहुँची जाई ॥ रामभजन कवि कहै कृष्णप्रभु दीनदयाला। भजहुसदा मनुलाय भजन फलहै ततकाला ॥

इति श्री राधाविषादमोचनावल्यांरामभजनत्रिवेदीविरचितायांवामनपुराण नामसप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

श्लोक ॥ दध्निकंसस्यमुंडागमंचाष्टमेसत्कथायाःप्रभावंकृतंदैत्य मोहम् तयोर्युद्धमुद्वेगमानंजगादसचीदेवकीपुत्रनाशंचमोक्षम् ॥

दो०। सुनी पूतनाकी कथा नंदहि भयो अनन्द।
बाल कृष्णलीला सुनै काटै भवके फन्द ॥१॥

क०। लीला सुधा हरिकी नर जो करणाञ्जलि में भरिघोरि पियावै। नित्यही भक्तिसमेत भलीविधि पानकरै अरु पान करावै ॥ पण्डित रामभजन नरसो भव संभव दुःखहि दूरि बहावै। भास्वत शुभ्र विनहुये सुखसों हरि मंदिर मांझ सिधावै ॥ २ ॥ व्रजनाथ सुनौ। हरिगाथ गुनौ ॥ यह गुप्त कथा। हरि कीन्ह यथा ॥ जो बधी खचरी। सो सुनी सगरी ॥ होय कंस दुखी। लखिदेव सुखी ॥ अवतार लियो। यह शोच कियो ॥ द्विजरूप करो। तहँ पांउ धरो ॥ गोकुलपुर में। तुमरे घरमें ॥ जय जीवकरी। तेहि पाँयपरी ॥ सादर यशुदा। लय कृष्ण मुदा ॥ द्विज गोददयो। तेहि हर्षिलयो ॥ द्विज खाहु दही। यह बात सही ॥ आनौ जल ठंड। गहौ दधिभंड ॥ चली यशुदा। जल लेन मुदा ॥ गहि कृष्ण गले। तब कंस चले ॥ गहि कंस शिरं। निजहाथ चिरं ॥ दधिभांड़ लियो। तेहि छांड़ि दियो ॥ व्याकुल मनमें। लपटे तनमें ॥ सदना ङ्गणमें। पटकै दधिमें ॥

दो०। देखि यशोदा कहेउ हँसि ब्राह्मण धीरजहीन।
जबलगु आनौपात्रजल भांडमध्य मुखकीन्ह ॥
स०। कृष्ण छुड़ाइलियो यशुदा अरु कंसभजे शिरभाँडनसूझै।
व्याकुल कौनदिशा विदिशा निजबात कहै न कह्यो जेहि बूझै ॥
धोतीकहूं अरु पोथी कहूं कहुँमाल झँगा उरमाल अरूझै।
भग्न कपाटभयो दधिभांड गेरे हरवा जनु स्वान समूझै ॥ ५ ॥
दो०। बालकृष्ण बलप्रबललखि कंसगये निजगेह।
बधकारण अवतारहरि जानि सो मनसंदेह ॥

नंदोवाच ॥

दो०। माता पितासुधर्मरत कंसदुष्ट केहिहेत।
राधेकहुकारण यथा कांकर कांचनखेत ॥

राधोवाच ॥

चौ० ॥ सुनहु नन्द एककथा सुहाई। वेदविदित संतनसुख दाई॥
जो यह कथा श्रवण सुनि पावै। अघसंभव दुख निकट न आवै ॥
प्रथमै नवधा संत बखानी। जेहिमा आदि श्रवण गुणखानी॥
जिन हरिकथा श्रवण नहिं कीन्हा। वृथाजन्म विधि तिनकहँ दीन्हा॥
अहिमंदिर सम तिनके काना। जो नहिं श्रवणकरै गुण गाना॥
जिह्वा दादुर जीभ समाना। हरिचरित्र जिन कीन्ह न गाना॥
रूप न सादर सुमिरण कीन्हो। हृदय पषाण सदृश तेहिचीन्हो ॥
हरि के पाद पद्म नहिं सेवा। संत विप्र गुरु शंभु न देवा ॥
तिन के कर शवभुजा समाना। हरि.पूजेउ परस्वार्थ न जाना ॥
नयनन हरिप्रतिमा नहिं देखा। ते दृग मोरपंख सम रेखा ॥
शिर न कीन्ह हरि दंड प्रणामा। भार सदृश सहमुकुट ललामा ॥
ते द्रुम सम पदहैं जग माहीं। जे तीरथ प्रति नहिं चलिजाहीं॥

जिनहिं कथा पर प्रेम न भावा। तिनको मन कुशलकर आवा।
जिनकी मति नहिं स्थिर मानौ। तिनकी बुद्धि स्वैरिणी जानौ॥
जिनको चित्त न सुनि ठहराना। हर्ष हीन सोइ जानु पषाना॥६॥
दो०। लागत त्रेता के भयो युद्ध सुरासुर घोर।
सो बरणौं यें वीररस खोवै संशय तोर॥
चौ०। अमृत हेत देवासुर बीरा। मथिनि सिंधु सबमिलिरणधीरा॥
रत्न चतुर्दश प्रगटित भयेऊ। अमृत कुंभ असुरन करगयेऊ॥
देवन तब हरि सुमिरण कीन्हा। नारि अनूप रूप प्रभु लीन्हा॥
देखिय रति शतकोटि समाना। उपमा तासु न जग ठहराना॥
देखि दनुज मोहे सब नारी। अति विचित्र तेहि रूप निहारी॥
धाये सकल न मन ठहराना। काम वश्य सब भे बलवाना॥
पूछत सकल वचन तुम नारी। जनु विरंचि निज हाथ सँभारी॥
देव दनुज किन्नर गंधर्वा। नाग सिद्ध चारण नृप सर्वा॥
सकल लोक लोकेशन धामा। निरखी नयन ऐसि नहिं बामा॥
बड़ी भाग्य तव दरशन पावा। पुण्य पुराकृत फल मन भावा॥
जेहि पर कृपा करहु तुम आजू। सो सब लायक सहित समाजू॥
कश्यप तनय सकल हम भारी। मथो सिंधु कीन्हों श्रम भारी॥
प्रगट पियूष भयो गुणखानी। करत विभाग बनत नहिं रानी॥
सो यह कलस सुधा कर लेहू। यथा योग्य सब काहुन देहू॥
यह सुनि बचन मोहनी रानी। गहि कर कलस बहुतमुसुकानी॥
बोली मधुर बचन रस बोरा। तिरछे चितै नयन की कोरा॥
तुम सब कश्यप सुत गुणखानी। नारि चित्तकी गति नहिंजानी॥
नहिं विश्वास योग्य त्रिय माहीं। पंडित तासु निकट नहिं जाहीं॥
कालदण्ड हरि चक्र करांला। इन्द्रवज्र हर शूल विशाला॥

इनके लगे न कछु सन्देहू। नारि नयन लागै जनि केहू ॥
दो०। असकहि सबलय सिन्धुतट बैठारे दुइ पांति।
बिलग बिलग सुर असुरकरि सनमानेसबभांति ॥
तबहरि अमृत कलसकरलीन्हों। नाचति देवपंक्ति पगदीन्हों ॥
देवन सुधा पान करवाई। गे बैकुण्ठ देव सुखदाई ॥
तेहिअवसर नारदमुनि आये। समाचार सब बलिहि सुनाये ॥
सुनि मुनिवचन क्रोधभा भारी। परिचारक सबलीन्ह हँकारी ॥
तल अरु अतल सुतल तुमजाहू। दैत्यन जाइ कहेउ सबकाहू ॥
मय त्रिपुरासुर आदिक बीरा। सहित ब्योम आनहु रणधीरा ॥
अस्त्रशस्त्र युत अनीअपारा। मालि सुमालि सहितपरिवारा ॥
माल्यवान सन कहेउ बहोरी। युद्ध लालसा जिनहिं न थोरी ॥
आवैं सकल रुहित परिवारा। देवन अनुचित कीन्हहमारा ॥
फिरि दुरदन्तहि आयसु दीन्हा। मधुबन गवन ततक्षणकीन्हा ॥
केहरिनादहि तुरत बोलावा। महिषासुरहि सँदेश पठावा ॥
शुम्भनिशुम्भहि खबरि जनावहु। कहि बृत्तान्त बेगितुम आवहु ॥
बिकृत वेष तारक पहँ जाहू। कहेउ मोरि बिनती सबकाहू ॥
अमृतपान सब देवन कीन्हा। दैत्यनसकलविष्णुछलिलीन्हा॥
राहुकीन्ह कछु अमिय अहारा। ताकर शीश काटिमहिडारा ॥
मरा न अमृत पानते सोई। धरते केतु राहु शिर दोई ॥
पुनि प्रहलादहि खबरि पठाई। सत्यलोक ते लेहु बुलाई ॥
यहि विधि परिचारक सब धाये। कहिसुधिसकुल तहांचलिआये॥
दो०। इन्द्रलोक नारद गये कहीकथा सब जाय।
राजाबलि चतुरङ्गिणी सेना सजी बनाय ॥
सात द्वीपके भूपति भारी। राजाबलि सब लिये हँकारी ॥

राक्षस दनुज वंश जे कोई। बलिहित चढ़े समरते सोई॥
पद्मपचासी यूथप बीरा। बलिहित चढ़े महारणधीरा॥
सेतद्वीप पयसिन्धु समीपा। भाग तुरीय पूरि त्यहि दीपा॥
पेइ पियूष मानमनमाहीं। हमसनजगजीतिहिकोउनाहीं॥
यह सुरेश बलिकेर सँदेशा। की हमसन रण करै सुरेशा॥
की ऐरावत देहि पठाई। पारिजात अप्सरा सोहाई॥
बरुणपाश अरु यमको दण्डा। विष्णुचक्र हर शूल प्रचण्डा॥
उच्चैश्रवा सूर्य्य के घोरा। देहु पठाय भागहै मोरा॥
यह सुनि शक्र क्रोधभाभारी। तुरतै मरुतन लीन्ह हँकारी॥
भाई तुरत सकल दिशिजाहू। आनहु बेगि बीर सबकाहू॥

दो०। अलकापुरी कुबेरसन कहेउकथा सब जाय।
यक्षन सँग नलकूवरहि आगे देहु पठाय॥

अस्त्रशस्त्र धनधान्य समेता। आवहि पुष्पक चढ़िदलजेता॥
पुनि कैलासजाहु तुम भाई। बसहिं शम्भु देवन सुखदाई॥
करि बिनती कहि काजहमारा। पठवहिं गणपति संगकुमारा॥
दुर्गासन बिनतीकरि मोरी। कालीसहित आनुकरजोरी॥
भृंगी वीरभद्र अरु नन्दी। भूत रुद्रगण डाकिनि बन्दी॥
सबसन कहेउ निहोर हमारा। आवहिं शम्भु सहित परिवारा॥
बहुरि पवन पश्चिम दिशिजाई। खबरि जलेशहि देहु सुनाई॥
बसें बिभारिपुरी में देवा। जलचर सकल करैं जेहि सेवा॥
स्याहकरण घोड़ा शतलक्षा। ममहित सजैतुरन्त सपक्षा॥
मकुनाहाथी लक्ष पचासा। सजैतुरन्त युद्ध की आसा॥
मणिमय रथ सुवर्ण सन्धाना। कोटिएक दुइकोटि बिमाना॥
नानाबाहन नाना जाती। सजि जलचर आवहिंसबभांती॥

पुरि हरि दक्षिण पवन पठाये। धर्मराज पुरका ते धाये॥
कहेउ जाय सब काज हमारा। संयमनीपति परम जुझारा॥
गणन समेत संगलै काला। चित्रगुप्त अरु मृत्यु कराला॥
राजरोग आठौ ज्वर संगा। यकृत विसूची अरु चितभंगा॥
खंज सन्नि बाई चौरासी। शून्य कुष्ठ प्लीहाबलरासी॥
दो०। सब दल साजि श्रवणा सहित महिषापर असवार।
यमराजा आवहिं तुरत लैकर दण्डकुठार॥
अपर पवन प्रेरे सुरराई। नाग लोक कहँ दीन्हपठाई॥
बासुकिसन कहियो यह मोरी। बासत्र कीन्ह यादि अब तोरी॥
तक्षक कर्कोटक सब नागा। कामरूप पावैं मखभागा॥
ते सब तुरत युद्ध के हेता। आयुध बाहन सेन समेता॥
पुनि तुम तुरत रसातल जाई। स्वेत धनंजय कुलिकहि भाई॥
तक्षक कर्कोटक अरु काली। शंखपाल आनहु अरिघाली॥
सुरसा सन कहियो करजोरी। मातु सुरेशहि आश न थोरी॥
मनचिन्ता आवैं सब नागा। आठकुरी निज सेन विभागा॥
कद्रूसन कहियो कर जोरी। मातु सुरेशहि आशन थोरी॥
माता विनता गरुड़ पठावै। पक्षीसंग साजिदल आवै॥
अस कहि सुरपति पवन बोलाये। आठौवसु पहँ तुरत पठाये॥
विश्वेदेवा पितर समेता। औ किम्पुरुष साध्यगण जेता॥
किन्नर सकल महाभट भारी। सजैंयुद्ध की करैं तयारी॥
विप्राचित्ति हूहू अरु हाहा। अस्त्रशस्त्र महिरहिं सन्नाहा॥
शीघ्र संगलै सब गंधर्वा। चित्रकेतु आदिक जे सर्वा॥
विद्याधर आवहिं जे काला। संगयुद्ध हित अलीकराला॥
काम तुरंत शुभ्ररथ साजा। मधु अरु तोक वसंत समाजा॥

दो०। मोहन मारण वश्यता उच्चाटन उद्येतु।
सुमन धनुप त्रय पवनयुत क्षोभ वारिचरकेतु॥
चौ०। ब्रह्मलोकपहुंचौतुमजाई। कश्यप मुनिसन कथा सुनाई॥
वाग्रासन कहियो करजोरी। ऋषि मरीचि विनती यकमोरी॥
उरणा गर्भ पुत्र षटजाये। बलअरु बुद्धि विवेक सोहाये॥
कन्या जंभित विधिकहँ देखा। हँसेज्ञान अभिमान विशेखा॥
ते निरबुद्धि भये षटभाई। होइहै शुरू युद्ध में जाई॥
शाप अनुग्रह जब विधि कीन्हा। तब यहबात तिनहि कहिदीन्हा॥
युद्ध सहाय इंद्रकी करि है। कालनेमि सुत रण संहरि है॥
ते पुनि कालनेमि के मारे। जन्महिं देवकि गर्भ विचारे॥
जनमत मरत दुःख नहिं पावै। विधिके वचन सत्यपुर आवै॥
असकहि पुनि पत्तिन सनभाखा। साजहु दल बिलंब करि राखा॥
देखहु दैत्यन केरि ढिठाई। राज्य करत जिन मृत्यु बोलाई॥
गणपति चरण पूजि करिध्याना। उठे इंद्र मन में हरषाना॥
गुरुगृह गये चरण शिरनाई। आगे हाथजोरि रहिजाई॥
इंद्रहिदेखि महामुनि ज्ञानी। आसन दीन्ह बहुत सनमानी॥
दो०। कह मुनिवर सुरनाथ सुनु होइहि विजय तुम्हारि।
सजौ सेन शुभ लग्न यह भूबल प्रबल विचारि॥
छं०। दंति पंक्ति अश्वपंक्ति भांति भांति साजिलै। लक्ष लक्ष शूरसाजि वाहनी अनीचलै॥ चारिभांति औषधी विशल्य सांग कारिणी। जीवनी महौषधी अजीव प्राण धारिणी॥ द्रोणते मँगाइ शीघ्र अश्विनीकुमार कौ। दीजिये सुरेश आशु काज वैद्यसारकौ॥ वज्र औ त्रिशूल शक्ति भिंदिपाल लीजिये। तूण औ कृपाणवर्मचर्म पाणि कीजिये।

साजिले सराशनै महाकराल बाण ये । ब्रह्मरुद्र विष्णु शक्ति मन्त्र यज्ञते भये ॥ पवित्र पाणि मार्जनी बहोरि पाणि में लई। खिंचि खिंचि वारिलै मुनीश आशिषा दई ॥ चली तुरंत बाहिनी संजाव तासु को गनै। क्षोहिणी पचास साथ देवराज के भनै ॥ वारुणी विशाल सैन्य सिन्धुनांघि के गई। सँभार तासु कीजिये पचीस क्षोहिणी भई ॥ धनेश संग दक्षलै अशेष युद्ध को गये। जुझार शूर वाहिनी पचीस क्षोहिनी नये ॥ द्वादशौ दिनेश आसु सेन लै तहां चले। क्षोहिणी द्विषष्ट साथ युद्ध काज ये भले ॥ धर्मराज की अनी घनी कराल धाइकै। पचास क्षोहिणी बनी सो युद्ध भूमिजाइकै ॥ शम्भु की अनी चली विशाल शूरको गनै। कालिका गणेश साथ बीर क्रात्तिका तनै ॥

दो०। बसुकिंनर किम्पुरुष मनु नागसाध्य गन्धर्व्व।
ब्रह्म पुत्र मारुत शकल असी क्षोहिणी सर्व्व ॥
कुं०। असी क्षोहिणी सर्व देवदल सब जुरिआवा।
वाहन विविध प्रकार सेन ले सुरपति धावा ॥
रामभजन कविकहै देव उद्योग बखानी।
मनवच क्रम भजिराम मुक्तिपद पावै प्रानी ॥८॥

इति श्रीराधाविषादमोचनावल्यांमष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

श्लो० । अङ्केदेवासुरेयुद्धेकालनेमिसुतच्छयम् ॥
मारीचानांशापापक्षंजयन्तस्यचबन्धनम् ॥ १ ॥

दो०। राधा माधव ध्यानधरि गणपति गौरिमनाय।
रामभजन वर्णनकियो श्रीगुरुआशिष पाय ॥

चली अनी कछु वरणि न जाई। जनुबहि चली समुद्र तोराई ॥
बाजहिं गजघण्टा घनघोरा। रथ घहराइ होय दल शोरा ॥

गरजहिं सुभट घोर रणमाते। चित्रित ध्वज पताक फहराते॥
यहि बिधि युद्ध हेत दल साजा। श्वेतद्वीप पहुँचे सुरराजा॥
वरुण कुबेर पवन यमकाला। सूर्य शम्भु गणपति सब व्याला॥
देखि देव ऋषि गे बलिपाहीं। अति प्रसन्न बीणा करमाहीं॥
होहु सजग आवा दल भारी। सुरपति सँग सब देव गुहारी॥
ठाढ़े समर भूमि सब बीरा। रण तीरथ उठि तजहु शरीरा॥
यहि सम योग यज्ञ व्रत नाहीं। जो तन तजै बीर रणमाहीं॥
उत्तम मृत्यु दोइ मुनि गावै। योग युद्ध नर धन्य जो पावै॥
योगते मृत्यु कठिन जगमाहीं। रणतीरथ में सुलभ सराहीं॥
तेहिते द्वन्द युद्ध नृप कीजै। शकल नरेशन आयसु दीजै॥
निजनिजदल सजिलेहिं लराई। बिलग बिलग देवन सन जाई॥
सुनि बैरोचन नारद बानी। कही कालनेमिहिं सनमानी॥
सेनापति तुम परम जुझारा। करहु सपद कछु कहा हमारा॥
दैत्यन जाय कहौ सबपाहीं। निज निज दललै युद्धकराहीं॥

दो०। असकहि बलिनिज शङ्खलै दीन्हो तुरत बजाय।
साजि सेन चतुरङ्गिणी सम्मुख पहुँचे आय॥

स०। शङ्ख औ तूर्य्य मृदंगघने रण ढोल नफीरी बजींसहनाई।
धौ धौ भेरी बजै घहरै भोभकै नरसिंहन की धुनि छाई॥
धुकु धुकु धुधुकु बजै कंडाल नगारे रहे रणमें घहराई।
युद्ध सुरासुर नन्द गँभीर रही नभ मण्डल में रजताई॥ १॥
कोइ गजपै कोइ अश्वचढ़े कोइ ऊँटचढ़े खर बैल बिराजे।
मृग ऋक्ष कपी बट कङ्कन गीधन बाज तिमिंगिल बाहन साजे॥
महिषा शिवा अरु मूषक श्वानन सारस हंस मयूर समाजे।
शूकर सूक गवेश औ सिंह चढ़ेरणकाज महाधुनि गाजे॥ २॥

छं०। चढ़े विहाय से विमान कामरूप मयरचे। कहूं अदृश्य कहुं देखाइ अश्व दैत्य होयमचे॥ विराज दैत्यराज मध्य अस्त्रशस्त्र को सजे। व्यजनवाल छत्र माल मुकुट किंकिणी बजे॥ द्विमूर्धिन कलनाभ साथ प्रहेति हेति इल्वल। वज्र दंष्ट्र शकुनि भूत ताप साथ विल्वल॥ विरोचना स्वग्रीव शंकु शीर्ष मेघ दुन्दुभी। कपील तारकासुरो निशुम्भ शुम्भ जृम्भभी॥ चक्र दृष्टि उत्कलो अरिष्टनेमिमय महा। त्रिपुर कालकेय जे पुलोम कव च काजहा॥ अलब्ध भाग सोमको प्रकोप चित्त में बढ़े। बहुतवार इन्द्रजीति फेरि युद्ध को चढ़े॥ देवराज अति विराज नागराज पै चढ़े। अंशुमान के समान उदय पर्वते कढ़े॥ तासु संग लोकपाल युद्ध लागि गाजहीं। भुशुण्डि तोपदीर्घ अस्त्र साजि साजि राजहीं॥ विराज हव्यवाट से समाज विप्र बृन्दलै। चले जो शुक्र युद्ध को स्वपृष्ठि दै निजैदलै॥ कहां सुरेश के गुरू प्रवाह वाणमें भरौं। करै जो आजु आइ युद्ध मारि गर्भको हरौं॥ सुनी जो शुक्र की गिरा महाप्रकोप धाइयो। प्रचण्ड शस्त्रअस्त्र लै बृहस्पतीश आइयो॥ कही जो शुक्र सों अबै जो जाहु घूमिसैनलै। तहांइ काज सिद्धि बेगि मृत्युते बचै दलै॥ अशेष दैत्य संहरौं जे आइ युद्ध में चढ़े। करौं तुरन्त युद्ध आपु अग्र भाग में बढ़े॥

दो०। सुने शुक्र गुरु के वचन माषे द्विजन समेत।
कीन्ह प्रतिज्ञा देवदल जो ना करौ अचेत॥

स०। गुरकी सेज चढ़े नरजे अरु मात पिता अनुशासनत्यागै। गोद्विज बन्धु त्रिया शरणागत बालवधे दै दानहिं माँगै॥ लेहि चुराइ वेदबुध निंदक वंचक साधु त्रिया रस पागै। जो न करौ प्रण सत्य सुनो जेमोंहिं सदा सब के अघलागै॥

चौ०। असकहिभृगुपतिशंखबजावा । महाकठोर घोर घहरावा ॥
धवलोदर धुनिसुनि अतिघोरा । देवसैन्य जहँतहँ भा शोरा ॥
तेहि औसर सुर गुरु करिलीन्हा । फूंकि महोदर शंखहि दीन्हा ॥
बाजो शंख भई धुनि भारी । दानव बधिर भये सब झारी ॥
बहुरि देवगुरु गणपति ध्याये । लीन्ह शरासन वाण सोहाये ॥
देव दैत्य गुरुहौ रनठाना । करै युद्ध नहिं जाहि बखाना ॥
करे सकल जोरीसन जोरी । निज निज सैन समाज बटोरी ॥
द्वन्दयुद्ध बलिइंद्रहि भारी । तारक षणमुख भिरे प्रचारी ॥
वरुण प्रहेति संगरन कीन्हा । हेतिहि युद्ध मित्र तहँ दीन्हा ॥
काल नाभसन प्रभु यमराजा । विश्वकर्म मय युद्ध समाजा ॥
लरै शम्बरासुर बलवाना । त्वष्टासन गुणज्ञान विधाना ॥
बलिके पिता विरोचन नामा । सविता जाइ कीन्ह संग्रामा ॥
अपराजित जो देव प्रवीना । नमुचि दैत्य तासों रन कीन्हा ॥
जो अश्विनी कुँअर बलवाना । व्रषपर्वा तिनसों रन ठाना ॥
बाणासुर बलिसुत बलवाना । लरै सूर्य्य द्वादश चढ़ियाना ॥
राहु चन्द्रमा सन रन होई । पवन पुलोमन अतिबल दोई ॥
शुम्भ निशुम्भ प्रबल दुइ भाई । दुर्गा सम्मुख फौज चलाई ॥
महिषासुर दानव रनभारी । काली सम्मुख भिरी प्रचारी ॥
इल्वलवल्वल अरु बातापी । ब्रह्मपुत्र रन करै प्रतापी ॥
कामदेव रन करत अपारा । दुराधर्ष राक्षस बलसारा ॥
उत्कल संग मातृ गणभीरा । रुद्र क्रोध गण युद्धगँभीरा ॥
नरकासुर निज शयन हकारी । लरै शनैश्चरसन बलभारी ॥
कवचनिपात सैनसजि आये । मारुत सम्मुख सकल बुलाये ॥
दो०। आठौ वसुकालेय सन करै महारन धीर ।

विश्वदेव प्रलोम सन होत युद्ध गंभीर॥
बलिके सुतशन प्रबल रन कबहुँन मानै हारि।
लरै नागसब संग लै बासुकि आदि प्रचारि॥
स०। तीक्षण बाण चलै रनमैं नगशैल भुशुण्डि शतघ्नि प्रहारैं।
धूम घनेरे घटा घहरै घनघूमै निशान लरैं ललकारैं॥
तालतमूर नगारेन की धुनि बीरसुनै तब बीर प्रचारैं।
शूर गिरै उठिफेरि लरै रन भीर परै तड़ औकर मारैं॥ १॥
चक्रगदा असि पट्टिशलै प्रहरै रन में औ महा धुनिगाजै।
शक्ति त्रिशूल प्रहार करै कोइ पास परश्वध आयुध साजै॥
उल्लूक चलै, परिघाचटकै फटकै महि शीश कबंध बिराजै।
रनमें उमगे मन बीरलरै लखिभीर अधीरसों कायर भाजै॥ २॥
निस्त्रिंस चलै गचकै मचकै लपकै मुनि भालनकी चमकै।
श्रोणित धार बहै छत से भभकै प्रण शूरन के फफकै॥
लपकै धमकै घनसे मोगरा घटकै शिरकूंडिन पै चटकै।
.हंटकै वटकंक शकलको भरि योगिनि धूपटलै घटकै॥ ३॥
फटकैं रन भूमि परे गज कोटिन सूँड़कटे तन ढह से लागे।
अश्व कटे खर ऊंट कटे कटिगे शिर शूरकबंधहि जागे॥
बांहकटे करपादऔ मध्य कटे शत खण्डनलै रन आगे।
सम्मुख युद्ध जयंत गये बलिसो रन द्वंद्वक दागहि माँगे॥ ४॥
चौ०।कालनेमि बलि तुरत बुलावा। सुनि जयंत सम्मुखहोइधावा॥
तीनि कोटि योधा सँग लीन्हे। रनचढ़ि पीठि कबहुंनहिंदीन्हे॥
अस्त्रशास्त्र बर्षहिं सब भारी। सम्मुख लरैं प्रचारि प्रचारी॥
प्रबल देव सेना रन धाई। कटे दु औदिशि भट समुदाई॥
चलै भुशुण्डि पाशसर गोला। तोमर मुगदर फरस खटोला॥

परबत वृक्ष शक्ति असिबाना। लरै सुभट नहिं जाइ बखाना॥
देखि जयंत क्रोधकरि धावा। कालनेमि सम्मुख चलि आवा॥
कह सुरपतिसुत सुनु खलबानी। तुमहिं न सूझ लाभअरु हानी॥
बृथा सेन रन सकल नशावै। मोसन काहेन युद्ध मचावै॥
युद्ध बलाबल करै न बीरा। जे सुधर्मरत अति रनधीरा॥
असकहि गदामाँझ उरमारी। कालनेमि निज गदा प्रहारी॥
लागी शीश शत्रुसुत कोपा। मस्तक तासु गदानिज रोपा॥
चटपट शब्द पादशिर बाहू। उर कटि उदर बाहु सबकाहू॥
हनैगदा नहिं मानै हारी। बाम सव्य होइ लरै प्रचारी॥
रविमण्डल सम गदा देखाही। चटपट लगै घोर घहराही॥
दोनौप्रबल बीर रणमाते। तड़पितड़पिभरि भिरि बिलगाते॥
चापहिं अधर नयन अरुणारे। पीसहिं दशन गदाके मारे॥
चूरण अंग रक्तकी धारा। जनुजहँतहँ गिरिगेरु पनारा॥
कहँजल में थल में रणकरहीं। कहुँ नभजाइ बीर द्वउलरहीं॥
देखहिं रणनभ चढ़ीबिमाना। देवबधू अपसरा सुजाना॥
नागबधू किन्नरी नवीना। निरखहिं विद्याधरी प्रवीना॥
विधि आदिक सुतलै संगा। चढ़ि बिमान निरखैं रणरंगा॥
नरनारायण ऋषिगण संगा। लक्ष्मी विष्णु सरस्वति गंगा॥
निरखैं गगन ऋषेश्वर भारी। तहँ ऋषि सप्त रुंधती नारी॥
तेहि अवसर मरीचि सुधाये। भाई छइउ तहां चलिआये॥
रनसन्मुख लखि बिकल जयन्ता। अस्त्रशस्त्र लै लरै तुरन्ता॥
असमर उदगीथा परिष्वंगा। क्षुद्रभुक घ्रणी और पतंगा॥
षट भ्राता अति कीन्ह प्रहारा। कालनेमि दल सब संहारा॥

दो०। जंबूकालनेमि सुत अतिबल तहँ ऋषिजाइ।

नारद सब वृत्तान्त कहि तुरतै दीन पठाइ ॥
जम्बू कालनेमि सुतबीरा। मायाधर बहुधरै शरीरा ॥
तब जम्बू धावा बलवाना। सन्मुखगयउकृतान्त समाना ॥
सुनहु सकलमुनि तुमअज्ञाना। देव दैत्य सब तुमहिं समाना ॥
ऋषि मरीचि सुत कश्यप भाई। इन्द्र सहाय कीन्ह तुम आई ॥
अनुचितकीन्ह न कीन्हविचारा। बिन अपराध कटक संहारा ॥
अस कहितेहि छांड़ेशरलक्षा। छुटेनाग जनुउड़े सपक्षा ॥
देव सैन प्रविशे तेजाई। जनु टींड़ी बनसघन समाई ॥
पुनिपुनि लक्षलक्ष शरत्यागे। एक एकके सौसौ लागे ॥
दिशिअरुविदिशिभूमिनभ छाये। मारिइंद्रदल सकल भजाये ॥
भजी जयंत सेन रण त्यागी। जिमिपतितजैकुनारिअभागी॥
दुष्टशिष्य गुरु तजि मनभाये। करै और गुरु कपट पढ़ाये ॥
क्षुटभुक क्रोध कीन्हतेहिकाला। मुखते प्रगटि बह्निकी ज्वाला ॥
क्षणमहँ बाण जाल सबजारे। देखि सकलसुर भये सुखारे ॥
तेहि अवसर जंबूबलवाना। लय धनुलक्ष बाणसंधाना ॥
धरणिकाटि धनु बाण निवारे। तेहि त्रिशूलगहि जाइ प्रचारे ॥
आवत देखि त्रिशूल प्रचंडा। शरनकाटि कीन्हो शतखंडा ॥
शक्ति पाश असि गदा चलाई। काटिभूमि परिष्वंग गिराई ॥
जंबू दीख प्रबल मारीचा। अंतर ध्यान भयो रणनीचा ॥
तब तेहि खलमाया विस्तारा। बर्षत धूरि कीन्ह अँधियारा ॥
विष्ठा मूत्र हाड़ अरु बारा। वर्षैमांस रक्त मदधारा ॥
गर्जै प्रबल मेघकी नाहीं। नग पर्वत बर्षैं दलमाहीं ॥
गिरै सर्प महि सिंधु तोराना। मायाकरै न जाइ बखाना ॥
क्षुटभुक ब्रह्मबाण कर लीन्हा। माया सहित भस्म तेहि कीन्हा॥

देव सैन सब भई सुखारी। सूखत कृषी पाइ जनु बारी॥
यह सुधि कालनेमि जब पावा। माया करि जयन्त बौराबा॥
बांधि पाश रण में तेहिडारा। गा तहँ जहां मरीचि कुमारा॥
तिनसन विविधभांतिरणकीन्हा। कल्पितमय कृपाणकरलीन्हा॥
करि माया तिनके शिर काटे। करगहि गदा देवदल डाटे॥
फिरे सकल दल सन्ध्या पाई। निज निज सेन सँभारिबसाई॥

कुं०। ते ऋषिसुत षट देवकी गर्भ जन्मले नंद।
कंस बधेगे सत्यपुर कृपाकरी ब्रजचंद॥
कृपाकरी ब्रजचंद मंदते उत्तम कीन्हे।
यद्यपि विधिकी शाप पाप सब हरि हरिलीन्हे॥
रामभजन कवि कहै भक्ति हरिकी मैं पावौं।
कृपा करौ गणनाथ सदा हरिके गुणगावौं॥

इति श्रीराधाविषादमोचनावल्यांरामभजनत्रिवेदीविरचितायांपद्मपुराणे बीररसवर्णनोनामनवमोऽध्यायः॥

श्लोकः। दशमेंशुभनन्दविपाकमथो त्रिपुरेकृतवासुकियुद्धमतः।
कथितंगुरुशुक्रणंहरतो हरिध्यानकृतज्ञलजातकथा॥

नन्दोवाच॥

दो०। कथा देवकी सुतन की सुनि मम गा संदेह।
राधे मम अरु कंसको जन्म कर्म कहिलेह॥

जेहि के हेत कृष्ण अवतारा। परे ब्रह्म महिपै पशुधारा॥
कृष्ण कृष्ण नर जो नित ध्यावै। सो वैकुण्ठ जाइ सुखपावै॥
राधा कृष्ण कहै नर जोई। तेहि सायुज्य मुक्ति गतिहोई॥
है जग कृष्ण अंस महरानी। देव दनुज नर नाग सयानी॥
धरै जो विविध रूप सुरत्राता। लीलाहेत संत सुखदाता॥

तासु चरित गावै नर जोई। हरिके निकट बास तेहि होई ॥
सुनै जो कृष्णकथा मनलाई। अघ पहारसम जाहि बिलाई ॥
विष्णु चरित देवासुर करनी। मोसन कहौ सकल विधिवरनी ॥
ऐसा प्रश्न नंद जब कीन्हा। हर्षि राधिका उत्तर दीन्हा ॥

राधोवाच ॥

धन्य धन्य तुम नंद गोसाईं। यहिजग तुम समान कोउनाईं ॥
ब्रह्मगिरा सुनि तुम तप कीन्हा। पूरब जन्म मांगि वर लीन्हा ॥
तब तुम द्रोण धरा वसुदोऊ। हरिके भक्तभेद नहिं कोऊ ॥
सदा करहु हरिके गुणगाना। संयम नेम योग तपठाना ॥
विष्णु प्रसन्न भये तपदेखा। आये तहँ चढ़ि गरुड़ सुवेखा ॥
शंख चक्र गद पद्म विराजै। चारिभुजा श्रुति कुण्डलराजै ॥
उर बनमाल कंठमणि सोहै। ग्रीवा कंबुदेखि मन मोहै ॥
कुंतल झलक ललक मुक्ताना। मुकुट चंद्रिका चंद्र समाना ॥
जातरूप अंगद भुज सोहैं। बिंबाधर स्मित मन मोहैं ॥
केसरि तिलक नयन अरुणारे। भृकुटी सुखद दशन शशि तारे ॥
नाभिगँभीर त्रिबलि पट पीता। उर भृगुलात लक्ष्म उपवीता ॥
शुक्ल वरण खगपति छबिराजै। जनु मंदर गिरि मेघ बिराजै ॥
निरखि हरषि दंपति उठिधायहु। अस्तुति करि आसन बैठायहु ॥
विष्णु कहा सुनुद्रोण प्रवीना। माँगहु बरजो कुछ मन कीन्हा ॥
मोहिं अदेय न कछुजग माहीं। संतसरस यह तन प्रिय नाहीं ॥
बाल चरित माँगेहु तुम ताता। एवमस्तु कहिगे सुरत्राता ॥

दो०। द्विभुज चतुर्भुज रूपयक विष्णु लोक गोलोक।
विष्णु कृष्ण मम इंदिरा भेदन करै बिशोक ॥

चौ० अब यह कथासुनो तुम सोई। पूरुब जन्म कंसजो होई ॥

कालनेमि सेनापति सोई। गा जयंत पहँ सैन बिगोई॥
तेहि खलपुनि हरि लीन जयंता। त्रिपुर मध्य लै गयहु तुरंता॥
सुबरण पुरमें राखेहु जाई। करि रक्षक दानव समुदाई॥
इहां देवपति सेन सँभारा। नहिं देखो कहुँ शचीकुमारा॥
भे अति बिकल इंद्र मन माहीं। संभ्रम खोज कीन्ह सबपाहीं॥
गुरु पहँगये विकल सुरनाथा। कह बृत्तांत चरण धरि माथा॥
सुनिमुनिगणपतिसुमिरणकीन्हा।पुनिधरिध्यानसकलकहिदीन्हा।
वासुकिधरै बिप्रकर रूपा। त्रिपुर जाइ यांचहि सुरभूपा॥
कामरूप निरखै पुरनारी। तहँ मिलिहै जयंत असुरारी॥
अश्वरूप धरि पीठि चढाई। आनहिबेगि नागपति जाई॥
यह सुनि तुरत इन्द्रतहँ धाये। सचिवन सहितनागदल आये॥
कहिस तेहि बृत्तांत सुनावा। तेहि च्छण वासुकि इन्द्र पठावा॥
अहिपति द्विजतनुधरिपुरगयऊ। द्वारपाल सन असतेहिकहेऊ॥
जाइकहो आशिष मय पाहीं। ब्राह्मण ठाढ़ न देरकराहीं॥
देखन चहै त्रिपुर कै शोभा। अद्भुत सुनि मुनिवर मनलोभा॥
द्वारपाल यह खबरि जनाई। मयकहँ द्विजहि देखावहुजाई॥
अस सुनि वासुकिकीन्ह प्रवेशा। तहां ठाढ़ देखे सब देशा॥
तीनि कोटि राक्षस बलवाना। बसैं तहां नहिंजायँ बखाना॥
नाना आयुध नानारूपा। समर भयंकर विकृत विरूपा॥
तेहि पर अस्त्र शस्त्र नहिंजाई। कहुँ प्रकटै कहुँ जाइ छपाई॥
सो पुर वासुकि सकल निहारी। कामरूप राक्षस जहँ भारी॥
तेहिपर रजत रचित पुर देखा। रचना कहत न बनै विशेखा॥
जो वरणौ तेहि पुरकै शोभा। बाढ़ै कथा होय मन क्षोभा॥
दानव तहां बसैं सब भारी। तीनि कोटि इच्छा तनुधारी॥

शक्ति भुशुंडि शतघ्नि अपारा। नानाआयुध गनैको पारा ॥
देखो पुर नहिं देख जयन्ता। सुबरण पुर कहँ चले तुरन्ता ॥
चढ़ि सोपान जाय पुर देखा। सुरपुर ते कछु रचित विशेखा ॥
अमृतकूप देखो अहिराजा। कोटिनरक्षक चहुँ दिशिभ्राजा ॥
मय मन्दिर देखो तेहि काला। इन्द्र धामसम सभा विशाला ॥
सभा विचित्र सिंहासन सोहै। वरणै कबि उपमा जग कोहै ॥
तेहि ऊपर मय राज बिराजै। चामर मुकुट छत्र शिर राजै ॥
चहुँ दिशि दैत्य वीर भटभारी। आयुध अमित गहे करहारी ॥
तहँ शत कोटि दैत्य बलवाना। तीन लोक जीते चढ़ियाना ॥
त्रिपुर सदृश नहिं आन बिमाना। दृश्य अदृश्य न जाइ बखाना ॥
तीन वर्ष शंकर रण कीन्हो। जीते नहिं पिनाक धरिदीन्हो ॥
कीन्ह यज्ञ विधि हरिहर जाई। धनु शायक रथ कवच उपाई ॥
विजयमन्त्र बिधि विष्णु पठाये। युद्धयतन सब भांति सिखाये ॥
रथ चढ़ाइ शंकरहि पठाये। बिधिहरि निजनिजलोकसिधाये॥
सो.पुर सकल वासुकी हेरी। जहँ जयन्त तहँगे पुनिफेरी ॥
कामग अश्व रूपनिज कीन्हा। बन्धन काटि जयन्तहि लीन्हा ॥
सपदि ताहि निज पृष्ठि चढ़ावा। नभ मारग निज दल लयधावा ॥
सो सुधिपाय सकल मय टेरा। आगे त्रिपुर सहित तेहिघेरा ॥
कह मय सुनु वासुकि मम बानी। चोरी कान्ह त्रिपुरमें आनी ॥
जान चहो पैजान न देहौं। तोहिं रणजीति जयन्तहि लेहौं ॥
असकहिमय त्रिशूलकरलीन्हा। वासुकि दश हजार फलकीन्हा ॥
छोंड़ै लाग गरल की धारा। जरि जरि दैत्यभये बहुछारा ॥
नभ मारग गर्जा अतिघोरा। देवदैत्य दलंभा अति शोरा ॥
सुरसा सकल नाग लैधाई। नभ बिमान घेरो तिहिआई ॥

अति वन प्रबल लोह गढ़केरे। राक्षस भिरे काल के प्रेरे ॥
नाना रूप निशाचर धरहीं। तै सोइ रूप नाग करिलरहीं ॥
कोइ गज व्याघ्र सिंह बृषकोई। कोइ नर भाल श्वान कपिहोई ॥
बिबिध रूप धरिकरैं लड़ाई। छल बलकरहिं बराणि नहिं जाई ॥
श्वेत धनंजय करहिं प्रहारा। कुलिश शंख बरषै शर धारा ॥
कटैं निशाचर प्रबल घनेरे। हारिन मान लोह गठ केरे ॥
सुरसा जाय जयन्तहि लीन्हो। वासुकि कांचन पुर रण कीन्हो ॥
बिषमायुध रण दैत्या धारे। मयपर अस्त्र शस्त्र लै डारे ॥
कोटिन दैत्य लरैं रणभारी। बासुकि एक न मानै हारी ॥
वासुकि जेते दैत्य नशावै। मय पियूषदै तुरत जियावै ॥
त्वष्टादीख बिकल त्यहिराजा। धावा लै गंधर्व समाजा ॥
सोगुनि मय सन करै लड़ाई। छुटै न दुर्ग परम कठिनाई ॥
बीरभद्र रूपागढ़ घेरा। तहँ दानव रण करै घनेरा ॥
नन्दी भृंगी चहुँ दिशि धावैं। शरन मारि रण दनुज गिरावैं ॥
लरैं रुद्रगण ताल बजाई। दनुज प्रबल भिरिलेहिं लराई ॥
भिरेबहुत जोरी सन जोरी। युद्ध लालसा जिनहिं न थोरी ॥

दो०। यहि बिधि त्रय पुर घोर रण करैं सकल बलबीर।
मरैं दैत्य ते घटैं नहिं जरजर भये शरीर ॥

छं०। अवनन्दसुनौ पुनियुद्ध भनौ। फल तान कथा मुनि
कीन्हयथा ॥ जो गई सुरसा उर लय परसा। लै इन्द्र सुते चलि
दीन्ह उतै ॥ सोगई दलवै जरु दैव सबै। सुत इन्द्र निहारि सुखी
सब झारि ॥ मुनीश कही भ्रम तोहि सही। सुतआउ इतै भ्रम
जाइ विते ॥ शिर हाथ किये पढ़ि मन्त्रदिये। जब सुद्ध भय
तब पादनवा ॥ पुनि युद्ध करौ धनु हाथ धरौ। यह बात कही

सुत जाहु सही ॥ धनुबाण दियो तनु पुष्ट कियो । सुरसाथ अनी चतुरंग घनी ॥ रथ रूढ़ जयन्त चले जो तुरन्त । जहां रणघोर लरैं सुर जोर ॥ तहां गयबीर महारन धीर ॥

दो० । युद्ध इन्द्र बलि सन करै गुरुसन शुक्रप्रचारि ।
बरषहि आयुध विविधरण परिघशतघ्नि कुदारि ॥

छं० । चलैं नराचअर्घ चन्द्र खंड खंड होइ कटैं । गयन्द वाजि बीर जयन शूर युद्ध ते हटैं ॥ करैं प्रहार षड्ग लै चमा चमी सड़ा सड़ी । झुके जो बीरयुद्ध मारु चक्र की खड़ाखड़ी ॥ बजैं जो युद्ध बाजने महा घने धमाधमी । नमान देव दैत्यहारि युद्ध में समा समी ॥ त्रिशूल शक्ति भल्लये शरीर में खचाखची । सुभारु मारुको नहीं सो मारु मारु होयमची ॥

शुक्रोवाच ॥

कहां जयन्त इन्द्रहै कहां सो सैन्य बारुणी । कहां सो आजु यक्षराज सूर्य चन्द्र अश्विनी ॥ कहा महा मुनिश्वरो बृहस्पतीस आइके । सहाय साथ देव सैन्य युद्धहेत लाइके ॥ करौअचेत हो सचेत आइ युद्ध को करौ । करौ सहाय इन्द्रकी त आइ सम्मुखे लरौ ॥ कही प्रचारिशुक्रने सुधारि के शरासनै । गहे जो बाणतूण ते सँभारु तासुको गनै ॥ असीहजार सातलाख देव सेन पैपरे । सवाउ लाख इन्द्र पै प्रचंड बाणजेखरे ॥ देखिदेव के गुरू अशेष बाण खंडियो । अग्निबाण धनुषतानि अति प्रचण्डछंडियो ॥ दग्ध देखि दैत्य सेन मेघबाण त्यागिये । अशेषजोर ताप घोर शांत नीरके पिये ॥ जृंभबाण कान तानि छोड़ि शुक्रने दियो । अचेत भूमिमें परे सुरेश आदि सोइयो । तबै विशाल बाण तानि मंत्र तन्त्र ते चलो । उड़ान शुक्र को बिमान वायु लोकमें भलो ॥

दो०। बाण बृहस्पति को चलो लै बिमान जनु माल।
मानसरोवर पार तेहि पहुँचायहु ततकाल॥
चौ०। लोकालोक शुक्र पहुँचाई। लिये मुनीश्वर देवजियाई॥
उठे सकल सुर भये सुखारी। हरषित मीन पाइ जनुबारी॥
तब अति कोप देव गुरुकीन्हा। दुइ शत लाख छांड़ि शरदीन्हा॥
चले बाण कछु बरणि न जाई। जनु अहिसेनारएय समाई॥
दैत्यन दल प्रविसे शर घोरा। कटै बीर रणभाअति शोरा॥
कटैं वीररण उठैं सँभारी। धावहिं घायल गिरैंप्रचारी॥
कोटिन रुण्ड मुण्ड बिन धावैं। पुनिपुनि मुनि सुरलच्चचलावैं॥
खण्ड खण्ड खण्डै शरचण्डा। कोटिन शूर होहिं शतखण्डा॥
फरर फरर फरकै तृणफारे। भवकै श्रृंग गिरिगेरु पनारे॥
मारुमारु धरु धरु धुनि करहीं। लपट झपट करिकरिमहिपरहीं॥
श्रोणित सरिता बही अपारा। जनु भादउं घन जल महिधारा॥
रण सागर कटिपरे गयन्दा। दीप सदृश मणि भाजनुचंदा॥
कोटिन शीश कमण्डलु राजैं। यक्ष सदृश जनु बाहु त्रिराजैं॥
केश शेवार बाण धनु भंगा। रण सागर जनु उठत तरंगा॥
देव दैत्य गुरु जनु दोउ कूला। विग्रह तत्वधरा प्रतिकूला॥
मुकुट पाग फूले जनु कंजा। समुद फेन सम देखिय गंजा॥
तृषित रटै चात्रिक कसबानी। घायल कर हनि भेक बखानी॥
स्यन्दन नाव बिमान जहाजा। द्रोण गिद्धजनुबणिकसमाजा॥
स्वानशृगाल भूत बैताला। रन सागर तट जन्तु बिशाला॥
सो०। बलिदल सागर पारगे मुनि बर संघारकरि।
वर्षहिं सुमन अपार देव बधू जय जय करहिं॥
चौ०। फिरिपहुँचेभृगुपतितेहिकाला।देखहुदैत्यअनीकव्यहाला॥

परेभूमि सुर गुरुके मारे। बलिआदिक सब दैत्य बिचारे॥
चढ़ि बिमान दल ऊपर गयऊ। मन्त्र सजीवन साधत भयऊ॥
कर मार्जनी कमण्डल नीरा। छिरकेहु मुनिवर सकलशरीरा॥
रुण्डमुण्ड कर पद कटिकेशा। जल परसाति सठहोहिंसुवेशा॥
यहि विधि सकलसेन मुनिराई। छिरकिनीर पढ़ि मन्त्र जियाई॥
उठे बीरपहिरहिं तन त्राना। बाजहिं दल गह गहे निशाना॥
नारद कहेउ देवदल जाई। जेहिविधि भृगुपतिसेनजियाई॥
तब सुरेश निज गुरु पहँ गयऊ। माथ नाइ भाषत सब भयऊ॥
सुनि मुनिवरतब कीन्ह बिचारा। अबहरि बिन को करै सहारा॥
लय सब इन्द्र शम्भु पहँ जाई। अस्तुति कीन्ह चरण शिरनाई॥
कह महेश सुनुबासव मोरा। बहु बिधि कीन्ह युद्ध हम घोरा॥
त्रिपुराधिप सब कीन्ह लराई। छुटै न दुर्ग परम कठिनाई॥
बीरभद्र बासुकि सब बीरा। लरिलरि जर जर भये शरीरा॥
दैत्य दनुज राक्षस जे मारे। रणमह परे महाबल भारे॥
दैपियूष मयतुरत जिआवै। खलदल प्रबलमरन नहिं पावै॥

दो०। दुरगा शुंभनिशुंभ सन करै प्रबल रणघोर।
सेनानी सन प्रबलरण तारक दैत्य कठोर॥

चौ०। महिषासुर काली संग्रामा। निशिदिनयुद्धनकरै बिरामा॥
गणपति सबदल की सुधि लेई। बिचरति सेन सहारा देई॥
नंदी बीरभद्र गणलीन्हे। रूपागढ़ बासिन रणदीन्हे॥
बीरभद्र आदिक बलभारी। आरत शरण पुकारत भारी॥
मैं करिहौं तेहि सन रण जाई। हतौं त्रिपुर हरि होहिं सहाई॥
सब मिलि करौ विष्णुकर ध्याना। तबतुम्हार होइहि कल्याना॥
शुक्रमहा लक्ष्मी ब्रत कीन्हा। लक्ष्मीकवचबालिहिभृगुदीन्हा॥

लक्ष्मी कवच प्रभाव प्रचंडा। सन्मुख अस्त्रहोहिं शतखंडा॥
देखत शत्रु पराजय होई। विद्या एक चलै नहिं कोई॥
तीनों लोक राज्य बलि करि हैं। निज बल सुरसेना संहरि हैं॥
अभय कवचकेवल भृगु दीन्हा। साधनमंत्र ध्यान नहिं कीन्हा॥
विद्या महासिंधु जब होई। ताके वश्य होइ सब कोई॥
यह सुनि सकल विष्णु व्रतकरहू। आसन साधि ध्यानअनुसरहू॥

अथ ध्यानम्॥

जव अंकुश पदशब्द सोहाये। बज्रध्वजा दक्षिण छबिछाये॥
निरखत नखचंद्रिका सोहाई। मनते शोक मोह भ्रमजाई॥
पदपद्मांगुलि दल शशि हांसे। ध्याता सकल शैल कुलिसासे॥
प्रपद सरोरुह रेख रोहाई। निरखत मानसरोग नसाई॥
जव जञ्जाल जाल अपहारी। सुस्थिरमन जे धरहिं सँभारी॥
काम क्रोध मद लोभ अपारा। माया सृष्टि प्रबल विस्तारा॥
देखत बज्रहि जाहि पराई। रविसन्मुखजिमितिमिरनजाई॥
अंकुश सर्बकर्म अधिकारी। मनचितहृदय दोष अपहारी॥
नखशिष अंगरूप हरि केरे। अंकुशडारि खैंचि उरघेरे॥
अंकुशते मनकुपथ न जाई। चंचल होइरहै थिर आई॥
बुद्धि विकल्प करै नहिंपावै। अंकुश लय हरिध्यान बढ़ावै॥

॥ दो०। जव अंकुश सनि ध्यान मैं साधै इंद्रप्रवीन।
ध्वजबिशाल हियराखिये रेखाशुभ्र नवीन॥

॥ स०। ध्वजको करि स्थाणु स्वप्रेम रसीगहि बुद्धिरसीमनको दृढ़बांधै। गुरुके पदकीरज अंजनलयनिज ज्ञान दशा शुभ मंजन साधै॥ सूझिपरै हरि ध्यानजबै तब चित्त प्रसन्न न आन उपाधै। दल अष्ट सरोरुह चित्तधरै योगानल सों दोषादल रांधै॥

त्रो०। तवपद्म प्रफुल्लप्रकाशमहा। शशिसूर्यहु ताशनराखितहां॥
श्रीकेशर केशरमें बिलसै। शुभमध्य महामणि पीठलसै॥
तेहिऊपर विष्णुको ध्यानकरै। क्रमसों नखते चित आनि धरै॥
नखचक्र चंद्रिका भास हिया। प्रभुरूप सुधा दृढ़ज्ञान दिया॥
हरिकी द्वौ पार्ष्णि लसै उरयों। रंगलाग नरंगी के फल ज्यों॥
जंबू फलसी गुल्फैं बिलसैं। हियआनि धरै चित सोपि बसैं॥
सितपक्ष दुऔ विनतासुत पै। हरि जंघधरी घन ज्यों शशिपै॥
ऊरो कदली तरु गोल फबै। निरखै हियमें धरि ध्यान तबै॥
कटिपट पीत नितंबनवै। कांची गुणतीनि निहारिजिवै॥
पुनि वर्तुल नाभिको ध्यानकरै। त्रिवली त्रयरेखहि चित्त धरै॥

दो०। वनमाला निरखौ बहुरि तापर शुभ जयमाल।
लक्ष्मी लक्षहि बाम उर इत मुनिपाद विशाल॥

चौ०। कंठकंबुशुभरेखविराजै। कौस्तुभमणिदिनमणिछविछाजै॥
योगी निरखहिं ध्यान लगाई। शोक मोह भ्रम तिमिर नसाई॥
भुजविशाल करिवर समचारी। योगी चितमें धरहिं संभारी॥
बामसरोरुह कर में कंजू। शंख द्विय सोहत अति मंजू॥
दक्षिण पाणि चक्र शुभराजै। सुमिरत सकल दोष दल भाजै॥
तत्र गदा निरखै मुनि जोई। संसृत ताप दूरिसब होई॥
कर अंगुली मुद्रिका चारी। निरखत सकल ताप अपहारी॥
तापर जड़ित सोह नवरतना। जातरूपमय रचित विरचना॥
कंकण मणिमय विशदनिहारै। ध्यान प्रकोष्ट योग विस्तारै॥
अंगद चारिभुजन में राजैं। सूर्य्य चंद्रकांता छविछाजैं॥
उच्चकंध शुभचिबुक विशाला। गोलकपोल अधर अतिलाला॥
ओष्ठ पक्व बिंबाफल शोभा। निरखतसकल मुनिनमनलोभा॥

दन्तपंक्ति जनु दाड़िमबीजा। मंद हँसनि मुनिबर चितचीजा॥
शुकचुंचा नासिका सोहाई। तापर गजमुक्ता छबिछाई॥
मकराकृत कुंडल श्रुतिसोहैं। चमकललक झलकनि मनमोहैं॥
नयन बिशाल सुखद अरुणारे। चितवनि प्रियहियबसत हमारे॥
पलक ललक प्रियसूचक हेतू। उतपति पालन प्रलय समेतू॥
भृकुटी निरखि होत सुखभारी। कामधनुष सम ध्यान निहारी॥
भालविशालतिलकधरिध्याना। योगसिद्धि लखि मुनिहरषाना॥
सूक्षम कुञ्चित मेचक केशा। सुस्थिरचितहिय धरहुसुरेशा॥
मुकुटकिरीट निरखिहियोगी। अजाबिरच भवताप बियोगी॥
यहिबिधि ध्यान शंभु तवभाषा। गुरु समेत बासव हिय राखा॥
जो यह ध्यान धरै चितमाहीं। तेहिकहँ जग दुर्लभ कछुनाहीं॥
कुं०। ब्रह्माशिवपर कहेउ यह विष्णु ध्यान शुभखानि।
सो सुरेशसन कहेउ हर हितू आपने जानि॥
हितू आपने जानि नन्द हमतुमहिं सुनावा।
योगी धरिधरि ध्यान विमलमन हरिपदपावा॥
रामभजन कविकहै ध्यान ऐसोइ मैं पावौं।
निरखौं भक्ति समेत सदा सुखसों चितलावौं॥

इति श्रीराधाविषादमोचनावल्यांरामभजनत्रिवेदीविरचितायांध्यानयोगरसवर्णनोनामदशमोऽध्यायः १०॥

श्लोक। दशैककेवृत्तमाहर्थिकंत्रिपुरशङ्करयुद्धमथाप्रथामतः। शिवपुराण मतं कृतकाशिकंच श्रीरामतारक मंत्र महातमम्॥१०॥

नंदोवाच॥

सो०। देत पदारथ चारि शंभुभणित हरिध्यान यह।
सुनो सो हम ब्रजनारि मन प्रमोदनहिंजात कहि॥

चौ०। अबसोइ चरितसुनावहुमोही।विष्णुप्रताप विदितसबतोही ॥
नंद गिरा सुनि मन हरषानी। बोली बहुरि राधिका रानी ॥

राधोवाच ॥

सुनहु तात सोइ कथा प्रसंगा। जो सुनि होहि सकल दुखभंगा ॥
गुरुसमेत सुरनायक जाई। बैठ सिंधु तट ध्यान लगाई ॥
मन प्रसन्न हिय बहुत हुलासा। कोटि सूर्य्य सम देख प्रकासा ॥
ज्यों ज्यों सुरपति ध्यानलगावै। त्यों त्यों प्रभा बहुत लखि पावै ॥
प्रभा मध्य मूरति यक देखी। हर भाषितते कछुक विशेखी ॥
तब सुरनायक नयन उघारे। गुरु समेत हरिरूप निहारे ॥
लगे करन दोउ दंड प्रणामा। होय प्रसन्न बोले घनश्यामा ॥
जाय चतुर्थी ब्रत तुम करहू। गणनायक पूजा अनुसरहू ॥
गणपति सकल सिद्धिके दाता। करिहैं तव सहाय सुरत्रासा ॥
कवच महालक्ष्मी बलि पाहीं। लेहौं मैं सुरेश क्षण माहीं ॥
त्रिपुरासुर शंकर रण भारा। तहां जाय कछु करब सहारा ॥
अस कहिविष्णुगये निजधामा। गुरु समेत आये सूत्रामा ॥
गणनायक पूजा ब्रत कीन्हा। होय प्रसन्न गणपति बरदीन्हा ॥
बलितें जाय युद्ध अनुसरिहौ।बिचलतिदलममसुमिरणकरिहौ॥
तब सुरेश हम करब सहाई। भृगुनायक निज लोक बसाई ॥
असकहिनिज दलगयउगणेशा।रणहित निज दल सजेउ सुरेशा॥

दो०। बाजत ढोल मृदंग डफ दुंदुभि तूर्य्य नफीरि।
नरसिंहा कंडाल धुनि सहनैया गम्भीर ॥

स०।बलिसों रणमें तबइन्द्र जुरे भृगुसों रण जाइजुरे गुरुआगे।
दैत्यनके संग देव जुरे अरु होन कराल महा रण लागे ॥
तेहि औसर शम्भु शरासन लै रथपरचढ़ि आपु विजयरस पागे।

तड़प्प तड़प्प बजै डमरू तड़कै करताल सरंगसि सागे ॥ १ ॥
दलयोगिन के घंटा ठनकै बैताल चले तलताल बजावैं ।
तरजैं गरजैं घनसे गण कोटिन शूल गदा षट्वांग नचावैं ॥
बेणु सरंग सितारनकी धुनि बीर सुनै रण नाचति आवैं ।
भूत भयानक हूह करैं किलकैं करिदांत खबीस देखावैं ॥ २ ॥
नन्दी गरजै रथ पृष्ठिधरे गिरिराज समान महा तनु सोहै ।
योजन सात प्रमाण विशाल रचो शुभ भाल बिजय पट मोहै ॥
देखि विजय रथ शङ्कर को रणमें बलवन्त कहौ भटकोहै ।
आनि लरै शिवशङ्कर सों नहिं अन्य मही त्रिपुरासुर जो है ॥
दो० । तेहि औसरलै संगबिधि कौतुक कीन्ह मुरारि ।
सुवरण गढ़में जायकै कीन्हीं यतन बिचारि ॥ २ ॥
चौ०।गायको रूप धरो सुरत्राता । वत्स रूप तब भयहु बिधाता ॥
श्वेत गऊ तन शुभ्र बिराजै । पीत वत्स सँग अति छबिछाजै ॥
भारी अयन चारि थन भारी । पय सागर सम शोभित चारी ॥
देखिनि दैत्यन गऊ सोहाई । त्रिपुराधिप सन खबरि जनाई ॥
कामधेनु आई एक नाथा । पीत वत्स शुभ ताके साथा ॥
कह मय सुनौ सकल मम सोई । गो ब्राह्मण रोंको जनि कोई ॥
इनहिं बिदूखहिं जे अघकारी । उभय लोक नहिं होहिं सुखारी ॥
हरिइच्छा बलिष्ठ ब्रजराई । कूप समीप चली तबगाई ॥
जात समय तेहि काहु न रोंका । मुख धरि अमृत कूप सबसोंका ॥
अन्तरध्यान भये तेहि काला । देखि असुर सब भयेविहाला ॥
मींजहिं हाथ शीश निज धुनहीं । अबकाकरिय बहुत मनगुनहीं ॥
तेहि औसर रूपागढ़ जाई । वीरभद्र तबकीन्ह लड़ाई ॥
लड़ैं दैत्य नहिं मानहिं हारी । अस्त्र शस्त्र लै भिरैं प्रचारी ॥

दैत्य दनुज राक्षस बहु मारे। जर्जर तन गण सकल निहारे॥
शम्भु प्रकोप कीन्ह तेहि काला। जटा मुकुट बांधे कसिब्याला॥
कटि शार्दूल चर्म कसिलीन्हा। कुण्डल सर्प कर्ण धरिदीन्हा॥
कर आजगव तूण दृढ़ बांधे। वामे षड्ग परशु कर कांधे॥
चन्द्र ललाट नेत्र त्रयभाला। अंग विभूति उरगउरमाला॥
विकृत वेष भुज प्रबल विशाला। समर भयङ्कर दशन कराला॥
पञ्चवक्र दुष्टन भयकारी। साधुन सुखद सकल भयहारी॥
भई खबरि शङ्कर रण आये। दानव दैत्य निशान बजाये॥
गहिकर दनुज निशान कृपाना। धाये समर कृतान्त समाना॥
अस्त्र शस्त्र डारैं बहुभांती। लरैं वीर नहिं बरणि सेराती॥
इत शङ्कर उत मय जयबोलैं। लरैं सुभट रण नेक न डोलैं॥
वर्षैं आयुध मुसल कुदारी। धरु धरु मारु मारु धुनिभारी॥
गिरैंवीर रण उठैं सँभारी। गहि आयुध फिरि भिरैंप्रचारी॥
वीरभद्र नन्दीश्वर गाजैं। समर भयङ्कर प्रबल विराजैं॥
जयं शङ्कर जय जय सुखदाता। कहिकहि रिपुदलकरैं निपाता॥
लरैं प्रबल दानव रणमाहीं। क्षणक्षण छिपि क्षणफेरि देखाहीं॥

सो०। जब प्रभु लीन्ह पिनाक बाण सहस दश जोरिकै।
छोड़े प्रबल सराक कटे लाग अरिदल प्रबल॥

त्रोटक। लरैं सुभट खण्ड खण्ड चण्ड बाण लागहीं। उठैं कबंध कंधक्षीण चण्डबेग धावहीं॥ उड़ैं प्रमुण्ड रुण्ड छांड़ि मारु मारु गावहीं। कहा महेश देश कौन हौं न देखि पावहीं॥ लय कृपाण पाणिमें प्रहार रुण्ड यों करैं। कोटिकोटि मुण्डहीन रुण्ड युद्ध में लरैं॥ प्रहार मार मार पै सो बार बार डारहीं। बिमान ते समूह अस्त्र शस्त्र जाल मारहीं॥ कटे जो दैत्य चैत्य पै पियूषहीन ना-

जिये। कोटि एक कोटपै सुभट्ट कंठ छीजिये॥ पिनाक शब्द नाक में ठनाक घोर सोरिये। छुटै छटा नराच आंच लोक लोक पूरिये॥ विमान जान आस पास बाण शम्भु के लगे। कराल काल जाल से बिहाल दैत्य है भगे॥ निहारि हारि मारु मय त्रिशूल घोर खण्डियो। पुरारि चारिशर प्रहारिशूल मूल खण्डियो॥ कठोर घोर जोर शक्ति रुद्रमन्त्र ते चली। पुष्पमाल होइ बिशाल सोह शम्भु के भली॥ प्रभाव यस्यभा अदृश्य शम्भुत्रास में गयो। कैलास आस पास रूख तोरणालयो॥

दो०। त्रिपुर अदृश्य निहारि हर देखेहु ध्यान लगाय।
नन्दी गमन समान जव तुरतै पहुँचे जाय॥

तुरतै शम्भु शरासन ताना। छुटे नाग सम कोटिन बाना॥
तहां विविध विधि भई लड़ाई। कहुँ प्रकटै कहुँ जाइ छिपाई॥
लोहागढ़ राक्षस बलभारे। एक कोटि शिव तुरत सँहारे॥
रूपागढ़ के सहस पचासा। दानव जूझिगये कैलासा॥
तीनि लाख सुबरन गढ़वारे। रण सन्मुख शिव दैत्य सँहारे॥
त्रिपुराधिप देखो तेहिकाला। अन्तर्द्धान भये ततकाला॥
गा सुमेरु जहँ बसै बिधाता। बर्षै बाण करै बहु घाता॥
तहँ शङ्कर पहुँचे ततकाला। शरन्मारितेहि कीन्ह बिहाला॥
यान अदृश्य भयो पुनि तहवां। पहुँच्यो काञ्चीपुर है जहवां॥
तब महेश एक शिखर खसाई। तापर कांचीपुरी बसाई॥
सो पुनि गयो नर्मदातीरा। युद्धभयो तहँ अति गम्भीरा॥
शिखर एक तहँ रुद्र गिराई। तापरलै उज्जैनि बसाई॥
त्रिपुर गयो बिन्ध्याचल तीरा। तहँ रण कीन्ह शम्भु गम्भीरा॥
कोटिन राक्षस हने महेशा। तहां बसायहु मागध देशा॥

दनुज सँहार कीन्ह कामारी। बसी कामरू गण बिस्तारी॥
यहि बिधि राक्षस दनुज सँहारे। रहे दैत्य कछु स्वल्प बिचारे॥
लरहिं तदपि नहिं मानहिंहारी। बर्षे बिबिध अस्त्र सब झारी॥
तेंहि अवसर ब्रह्मा शरदीन्हो। सोपुनि काटि महेश्वर लीन्हो॥
भाप्रकाशनहिं जाय बखाना। प्रलय कालकी अनल समाना॥
बाण महेश छांड़ि तब दीन्हा। मय महेश शरणागत लीन्हा॥
त्रिपुस्ते उतरि चरण लपिटाना। रच्छ रच्छ प्रभु मैं अज्ञाना॥
तुमरी कृपा सकल गुण पावा। अबप्रभु पाहि शरणतकि आवा॥
दीन बचन सुनि दीनदयाला। राखि लीन्ह तेहि देखि बिहाला॥

दो०। ब्रह्म बाण जारेउ त्रिपुर गिरा भूमि अरराय।
गंगा तटमें ताहि पर काशी दई बसाय॥

चौ०। नाथ धातु ये हरक्षण हेतू। बिश्व नाथ जगको जग लेतू॥
तेहिते बिश्वनाथ प्रभु नामा। काशी बास कीन्ह सुख धांमा॥
काशी बिश्वनाथ नरध्यावे। सो कैलास जाय सुखपावे॥
काशी मृत्यु जीव को पावै। शङ्कर तारकमन्त्र सुनावै॥
तारकमन्त्र लेइ उपदेशा। गुरुसन शुभ मुहूर्त्त शुभदेशा॥
ज्ञान प्रबोधबिबिधबिधि कीन्हा। बिधिहि रामतारकहरिदीन्हा॥
सनक सनन्दन सनतकुमारा। तारक लीन्ह न भा संसारा॥
बिधिसन तारक लै उपदेशू। योगेश्वर प्रभु भयहु महेशू॥
नारद मुनि कैलासहि आये। तारकमन्त्र महेश सुनाये॥
नारद बाल्मीकि कहँ दीन्हो। अधम तें मह्वामुनीश्वर कीन्हो॥
मन्त्र प्रभाव सकल जगजाना। बालमीकि भे ब्रह्म समाना॥
तारकमन्त्रहि हिय धरि राखा। बालमीकि रामायण भाखा॥
भरद्वाजमुनि कहँ मुनिदीन्हा। करि निज शिष्यअनुग्रहकीन्हा॥

वालमीक के शिष्य प्रवीना। परे ब्रह्म मुनिभे लवलीना॥
साठिहजार शिष्य मुनिकीन्हा। भरद्वाज मुनि तारकदीन्हा॥
सो जपि याज्ञवल्क्य मुनिराऊ। देखेहु तारकमन्त्र प्रभाऊ॥
पाराशर आदिक मुनि जेते। तारकमन्त्र जपैं सब तेते॥
भरद्वाज सुत परमप्रवीना। द्रोणमन्त्र तारक व्रतलीना॥
तासु तनय भे अश्वत्थामा। अजर अमर जपि तारकरामा॥
तारकमन्त्र प्रभाव बड़ाई। शारद कहि जेहि पार न पाई॥
राम भजन किमि कहै बहोरी। बहुप्रभाव मम मति अतिथोरी॥

कुं०। तारकमन्त्र प्रभाव ते ज्ञान भयो ममजोर। सो गुरुदेव प्रताप अति पण्डित नन्दकिशोर॥ पण्डित नन्दकिशोर वेदवेदान्त विचारो। सब मन्त्रन सरदार कीन्ह उपदेश हमारो॥ राम भजन कविकहै रामतारक शिवदेही। जेहि जपि तजि भवताप बिना श्रम हरिपद लेही॥

इति श्रीराधाविषादमोचनावल्यांरामभजनत्रिवेदीविरचितायांशिवपुराणे तारकमन्त्रप्रभाववर्णनोनामएकादशोऽध्यायः ११॥

अथ मार्कण्डेयपुराण॥

श्लोक। तद्द्वादशेघोरतरंरणंभवेत् महिषासुरस्यात्रचकालिकायाः। सन्ध्याप्रभावंकथितंच तत्रवैमृकण्डपुत्रस्यपुराणतःशुभम्॥

नन्दउवाच॥

सो०। दुर्लभ मानुष देह पाइ कृष्णयश सुनेउनहिं।
हरिपद भा न सनेह पशुवत गृहकूपन परे॥

चौ०। जिनभागवत सुनीनहिंकाना। भजेउ न जिनहरिपुरुषपुराना॥
जिन नहिं भूसुर नेवति जेमाये। जिनतेदान द्विजन नहिंपाये॥
जिन तीरथ व्रत नेम न कीन्हा। जिन शुभरामनाम नहिंलीन्हा॥

जिनते परस्वारथ नहिं भयऊ। ते नर देह बृथा जगलयऊ॥
राधे धन्य मोहिं तुम कीन्हो। हरियशबिमल बरणिसुखदीन्हो॥
अब सोइ कथा लाड़िली भाखो। कृष्ण बिरह बूड़त मोहिंराखो॥
गोपी गोप सकल ब्रजबासी। सबके कृष्ण बिरह की फाँसी॥
तुमते ते सब रहैं सुखारी। प्रतिदिन शशिसमबदननिहारी॥
जय जय जय बृषभानु दुलारी। जय अघ बकआरि प्राणपियारी॥
अब सोइ कथा सुनावोमोहीं। राखेहु प्रथम निहोरौंतोहीं॥
सबके मन लालसा बहोरी। कृष्णकथापर प्रीति न थोरी॥
केहिविधि इन्द्र जाइ रणकीन्हा। लक्ष्मीकवचविष्णुकिमिलीन्हा॥
केहिविधि षडमुख तारक मारा। दुर्गा केहि बिधि शुंभ संहारा॥
दो०। देवासुर रण सकल मोहिं कहु बृषभान कुमारि।
तुमहिं विदित त्रैकालगति उपजिहु जग बिस्तारि॥

राधोवाच। चौपाई॥

सुनहु नन्द सोइ कथा सोहाई। जो सुनि होइ हर्ष अधिकाई॥
गुरुसमेत बासव रण आये। युद्ध हेत सब देव बोलाये॥
बजी ढोल डफ दुन्दुभि घोरा। चलो देवदल भा अति शोरा॥
ठनकैं गज घण्टा सहनाई। हय गज रथ निशान फहराई॥
उड़ी धूरि रवि गये छिपाई। जहँ तहँ खग मृग चले पराई॥
जाना बलि सुरेश दल आये। हँकरे सुभट निशान बजाये॥
चढ़ि बिमान सब दल लै संगा। धाये दितिकुल कमल पतंगा॥
प्रथमहिं शुक्र शंख धुनि कीन्हा। सुरगुरु सन्मुखरण हठिलीन्हा॥
महिषासुर धावा बलवाना। जनु कज्जलगिरिसघनउड़ाना॥
अति कराल दानव दल संगा। चिक्षुर सँग सेना चतुरंगा॥
महिषासुर सेनापति सोई। जेहि सन्मुख रण करै न कोई॥

लै चतुरंग संग दल धावा। चामर उग्र तहां चलि आवा॥
पांच सहस दल हुनुके साथा। असिलोमा बाष्कलदलनाथा॥
चढ़ो विडाल महा बलवाना। सहस पचास संग दलआना॥
दो०। गनैको आसुर प्रबल दल गज रथ तुरँग अपार।
गर्जहिं तर्जहिं बिकट भट सन्मुख करैं प्रहार॥
छं०। महाघोर आई अनी देव देखा। सभय भे सबै हारिमानी बिशेखा॥ प्रलयकाल कीधौं महाकाल आयो। महाघोर सेना यहां कौन लायो॥ करैं चित्त तरखै हृदय मांझ कांपे। सहमिके जीभ लै लय दशन बीच चापे॥ तबै अंगिरा सूनु देवी मनाई। महासूक्रराजा जपो चित्तलाई॥ सकल देव देहात्समुद्भूत दुर्गा। चली सिंह पै हाथ स्वर्गापवर्गा॥ तेही काल काली कपाली बोलाई। सबै शक्ति लै साथ संग्राम आई॥ महारौद्र काली सरूपै धरो है। मनो मंदरै आपु नीची करो है॥ महाश्वेत कीसी भुजा आठ कीन्ही। लता वृक्ष कीसी जटा शीश चीन्ही॥ नयन कूप ज्यों पेट पाताल मानौ। जिभादेश ऐसी मुखय लोकजानौ॥ चली युद्धको शूल लय घोरगर्जी। संहारै चमू चक्रसों शक्ति तर्जी॥
चौ०।यहिविधि सकलशक्तिरणमाहीं। करैंयुद्ध नहिं वरणिसेराहीं॥
तेहि औसर काली रण माहीं। गर्जी घोर प्रलय की नाहीं॥
डोली महि दिग्गज चिक्करहीं। क्षुभित पताल कमठ अहि टरहीं॥
सहमि गये सबलोकप भारी। खलभल परो सिंधु में भारी॥
जय जय जय सब देव पुकारैं। मुनिवर बेद मन्त्र उच्चारैं॥
देखहु सकल बिकल तेहिकाला। चढ़ीसिंह असि लीन्हकराला॥
दुर्गा धनुष कीन्ह टंकोरा। खलदल बधिरभयो सुनिशोरा॥
लगी निपातन असुर घनेरे। ते खल लरैं काल के प्रेरे॥

अस्त्र शस्त्र बँधै सब भारी। लरैं बीर नहिं मानै हारी॥
तेहि औसर चिक्षुर तहँ जाई। काली सन्मुख फौज चलाई॥
बदन पसारि दीन्ह तेहि काला। जीभ भयंकर दशन कराला॥
काली सिंह हुओ रण माहीं। पकरिपकरि भट धरि धरि खाहीं॥
काली भुज पसारि गहिलेही। कोटिन असुरझोंकि मुखदेही॥
आयुध विविधभाँति रणडारै। देवी असुर समूह संहारै॥
कटैं रुंड कबन्ध बहुधावैं। मारूकाटु धुनि मूड़ मचावैं॥
चिक्षुर दल काली संहारा। सेनापति रणकीन्ह अपारा॥
दो०। कालीसन्मुख जाइके कीन्हो गदाप्रहार।
तब त्रिशूल लै कालिका कीन्ह तासु संहार॥
चौ०। चामरउग्रप्रबलदोउभारी। संगअसी लै भिरे प्रचारी॥
अस्त्र शस्त्र तिनकोटि चलाये। काली दशन कराल चबाये॥
रहे जो दल बहु तिनकेसंगा। काली गहि मरदे निजअंगा॥
तल प्रहार करि ते दोउ मारे। यद्यपि रहैं महा बलभारे॥
धावाहुतु सन्मुख ततकाला। संग सुभटवाहिनी कराला॥
धाये प्रबल कालके प्रेरे। काली केहरि हने घनेरे॥
दुर्गा एक बाण हनुजारा। केहरि तासु कटक संहारा॥
असिलोमा बाष्कल दोउ धाये। शरनमारि कालिका गिराये॥
तिनके संग महा दलभारे। करि कौतुक कालिकासंहारे॥
महिषासुर बिडाल सन भाखा। तात प्रथम बल तुम कहँराखा॥
जीतेहु सकल देव रण माहीं। यज्ञभागलीन्हों सब पाहीं॥
दो०। येहिविधि महिष बिडाल कहँ कहि बहुभांति प्रचारि।
धावाअतिबल समर खल संगलै दानवधारि॥
चौ०। देखि बिडालअनीनियरानी। गर्जासिंह महाबलखानी॥

धुतसट नख आयुध तलमारे । तड़पितड़पि बहुदैत्य संहारे ॥
मुख पसारि हय गय दल यूथा । दशनन केहरि हने बरूथा ॥
शक्तिन अस्त्र शस्त्र बहुडारे । रणमहँ दैत्य समूह संहारे ॥
काली देखा प्रबल विडाला । लंय कृपाण धाई ततकाला ॥
तेहि खल शर शत प्रथम चलाये । काली दशन कराल चबाये ॥
शक्ति भुशुण्डि गदा असिशूला । चबिकाली कीन्हे निर्मूला ॥
तब विडाल भा अन्तरध्याना । माया करै न जाइ बखाना ॥
बर्षं हाड़ मांस कच छारा । देखि न परै कीन्ह अँधियारा ॥
तब दुर्गा लै हरिशर मारा । माया हरी सहित विस्तारा ॥
काली तुरत विडाल निपाता । पुनिपुनि महिषदहै निजगाता ॥
शृंगन शैल धरे खल धावा । गर्जितर्जि रण आगे आवा ॥
खुरन भूमि खोदै रणमाहीं । गर्जै महाप्रलय की नाहीं ॥
लै लै पर्वत करै प्रहारा । मारु मारु धुनि करै अपारा ॥
लरै असुर नहिंमानै हारी । गिरै भूमि पुनि उठै सँभारी ॥
अस्त्र शस्त्र जे दैत्य चलाये । काली दशन कराल चबायें ॥
रहे जे दल बहु तिनकेसंगा । कालीगहि मरदे निज अंगा ॥
साठि सहस योद्धा क्षण माहीं । हने युद्ध नहिं बरणि सेराहीं ॥
तब धावा महिषा बलवाना । सिंहरूप धरिकै रणठाना ॥
सिंह चढ़ी दुर्गा रण आई । सिंहदैत्य दोउ करैं लराई ॥
दुर्गा असिप्रहार जब कीन्हा । पुरुषरूप खड्ग कर लीन्हा ॥
करि प्रहार गजरूप बनावा । शूंड़ि लपेटि सिंह कढ़िलावा ॥

दो० । यहिविधि विविध रूप खल धरै न मानै हारि ।
तब देवी अति कोप करि पकरो भुजा पसारि ॥

चौ० । भूमिगिराइपादधरिचापा । खड्ग प्रहार कीन्हअतिदापा ॥

तुरतै युग्मरूप खल कीन्हा। सन्मुख युद्धहेत असि लीन्हा॥
अर्द्धभाग रण करै बहोरी। अर्द्ध निपात कीन्ह बरजोरी॥
तब दुर्गा शतचन्द्र प्रहारा। मस्तक तासु काटि महिडारा॥
महिषासुर निघात सुनि काना। बाजहि नभ गहगहे निशाना॥
स्तुति करै सकल मुनि भारी। वेद मन्त्र शुभ शुक्र उचारी॥
जय दुर्गा जयजय जगदम्बे। जय विजये जय जगआलम्बे॥
जय विधिहरि हर सिरजन हारी। जय माया जग रचेहु विचारी॥
मातर भूसुर तुमहिं मनावै। सन्ध्याकरै बहुत फल पावै॥
जय गायत्री जप जगमात्री। सेवत चारिवर्ग फलदात्री॥
ऋगवेदो सोहत तव अङ्का। शम्भु शीश जनु शुभ्र मयङ्का॥
दिन मध्याह्नकाल जब आवै। शुचिहोयद्विजकुलध्यानलगावै॥
जय सावित्री जय शिव रूपा। ययुर्वेद कृत अङ्क अनूपा॥
सन्ध्या करै जे विप्र प्रवीना। निर्मल तन नितहोहि नवीना॥
सायंकाल उपास कराही। सरस्वती हरि रूप सराही॥
सामवेद उत्संगम कीन्हे। पुस्तक बीण कमण्डल लीन्हे॥
मन वच कर्म ते पातक जेते। रात्रि दोष उतपति भे तेते॥
प्रात उपासक के सब हरहू। तेज पुंज निर्मल तन करहू॥
भोजन अशुचि जूठ दुश्चरिता। मध्य उपासक के सब हरिता॥
जे कुछ पाप दिवस के कीन्हे। सायं सन्ध्या सब हरिलीन्हे॥
सो सब मातु प्रताप तुम्हारे। जपिद्विजकुल सबहोहिंसुखारे॥
अस्तुति करि करि गे द्विजवृंदा। देव वधू· आई सुनंदा॥

कुं०। देववधू वर्षे सुमन करैं मंगलाचार।
चढ़ि बिमान शुभ अप्सरा नाचहिं विविध प्रकार॥
नाचहिं विविध प्रकार सिद्ध मुनि अस्तुति कीन्हा।

मनभावित बरदान हर्षि दुर्गाजी दीन्हा॥
रामभजन कवि कहै देवि मोपर करि दाया।
देहु भक्ति बरदान दास शरणागति आया॥ १॥

इति श्री राधाविषादमोचनावल्यांरामभजनत्रिवेदीविरचितायांमार्कण्डेय पुराणेनामद्वादशोऽध्यायः॥ १२॥

श्लोक स्कन्दपुराणम्॥

त्रिदशकार्त्तिकेयस्यजन्मोत्सवंतत्पुराणात्गणेशव्रतंपुन्यकंचा
ततःशक्तिघातंविलापश्च देव्याकुमारस्यलाभंवधंतारकस्य॥ १२॥

दो०। राधाजूके वचन मृदु श्रवण सुखद सुनि कान।
यशुदा गोपी गोपयुत हर्षित नन्द सुजान॥

चौ०। बोले नन्द परम प्रियबानी। भक्ति विवेक प्रेम रससानी॥
लखि सबकी अभिलाष बिशेखी। कृष्णकथापर रुचि अतिदेखी॥
पूछत बनै न अति सकुचाहीं। मनउमगै पुनिपुनि हरखाहीं॥
कह धरि धीरज पुनि ब्रजराई। कथाश्रवण हित विनयसुनाई॥
जय जय जय वृषभान दुलारी। जयजगप्रगटिसुयशबिस्तारी॥
बरणहु विमल कथा ममहेतू। कृष्ण विरह सागरशुभ सेतू॥
केहि विधि षडमुख तारकमारा। केहिविधि जन्म लीन्हसंसारा॥
केहिविधिहर गिरिजाव्रतकीन्हो। केहिविधिदानद्विजनकहँदीन्हो
सो सब मोसन कहउ बखानी। तुम सरवज्ञ सकल गुणखानी॥
नंदबचन सुनि अति हितमानी। बोली बहुरि राधिकारानी॥
पूछेहु प्रसन्न गुप्त अति ताता। सुनहुप्रसंग सकल सुखदाता॥
तारक दैत्य प्रबल अति भयऊ। तेहिपुनि सकलजीतिजगलयऊ॥
लोकपाल सब ब्याकुल कीन्हे। तिनते दंड जीति रण लीन्हे॥
तारक त्रास सकल सुर भयऊ। इन्द्र समेत ब्रह्मपद गयऊ॥

करि विनती सब कथा सुनाई। बोले विधि देवन समुझाई ॥
उमा करै व्रत यग्य अपारा। तब जन्मय बृषकेतु कुमारा ॥
सो शिव तनय बिष्णु अवतारा। करि है रण तारक संहारा ॥
गिरिजहिब्याहि शंभुजेहिकाला। गये मगन गृह दीनदयाला ॥
तासु संग रति कीन्ह अपारा। दिन बहुगये न भये कुमारा ॥
सो तुम यतन करौ सुरराई। लय सब देव संग तहँ जाई ॥
करि रतिभंग बीज हरलेहू। गंगा मध्य डारि तुम देहू ॥
तब जन्महि षडवदन कुमारा। जाय करहु तुम कहा हमारा ॥
यह सुनि सकल देव लय संगा। गय सुरपति सब जानिप्रसंगा ॥
शंभुहि हांक दीन्ह तेहि काला। कहा करत प्रभु दीनदयाला ॥
सूर्य्य कुबेर पवन यम साथा। दरश हेत ठाढ़े सुरनाथा ॥
यह सुनि शंभु बहुत सकुचाने। रति तजि लखि सब देवपराने ॥
अगिनि प्रवेश कीन्ह तेहिकाला। शंभु वीर्य मुख लीन्ह कराला ॥
गंग तरंग डारि तेहि दयऊ। तुरतै जन्म षडानन लयऊ ॥
गंग·प्रवाह फेकि तेहि दीन्हा। सरसमीप कृतिका उठिलीन्हा ॥
पय पियाय बालक षडमासा। षडमुख नाम भये सुरत्राता ॥
लय कृतिका मन्दिरहि सिधाई। सेवन कीन्ह बहुत दुलराई ॥
यहां उमा दुख कीन्ह अपारा। फरके अधर नयन जलधारा ॥
तब शिव बहुत प्रिया समुझाई। यज्ञ नेम व्रत दीन्ह बताई ॥
हर गिरिजा मख हित संभारा। कीन्ह बहुतविधि बस्तुअपारा ॥
सनत्कुमारहि नेवति बोलाये। यज्ञ यतन सब भांतिकराये ॥
देव दनुज किन्नर नर नागा। पितर सिद्ध अप्सरा तड़ागा ॥
नद गिरिनदीविपिन खगआये। नेवति शंभु सब बोलि पठाये ॥
सब ब्रह्मर्षि देव ऋषि यूथा। नेवति बोलाये विप्र वरूथा ॥

हरिहर विधि विधान सबकीन्हा। बहुत दान विप्रन कहँदीन्हा॥
सनत्कुमार पुरोहित भयऊ। दान उमापति को तेहिदयऊ॥
बोले तब मुनि सनत्कुमारा। लेहु मोल दै शंभु हमारा॥
जो सम्पदा लोक तिहुं माहीं। शंभुमोल नहिं सदृश तुलाहीं॥
सुनि मुनि गिरा उमा अरगानी। गिरीभूमि तल अति बिलखानी॥
विधि हर विष्णु तहां चलिआये। कहि तिन धर्म बहुत समुझाये॥
परी भूमितल नेत्र न खोलै। मूख ओठ मुख बचन न बोलै॥
मूर्च्छा मध्य रूप यक देखा। सूर्य कोटि सम परै न लेखा॥
प्रभा मध्य बिम्बा शुभ राजै। तापर ब्रह्म शक्ति युतभ्राजै॥
भइ अकाश बानी तेहिकाला। मिलिहै पुत्र न होहु बिहाला॥
लय गो गोदान करो महरानी। लय पति मोल बसौ गृहआनी॥
तब होइ हौं सुत मातु तुम्हारा। पूरण कला ब्रह्म अवतारा॥
यह सुनि उमा बहुत हरखानी। बोली नेत्र खोलि उठिबानी॥
पुत्र हेत हम यह मख ठाना। पुत्र न मिलोदीन्ह पतिदाना॥
सोहम केहिविधि करियबिचारा। सपदि होइ कुछ काज हमारा॥
विष्णु कहा शिव मोल बिचारी। देहु गाइ गिरिराज दुलारी॥
तब गोदान कीन्ह महरानी। दानमान करिमुनिसनमानी॥
सुर मुनि भूसुर सकल जेमाये। मन कामना दच्छिणा पाये॥
मोदक पूप खरबुली मेवा। शंकर सकल जेमाये देवा॥
नर मृग खग जगमे रहैं जेते। भोजन कीन्ह तहां सबतेते॥
बांछित दान दीन्ह सब काहू। कहिन सकत मैं बहुत उछाहू॥
तब हर सबहि सुखासन दीन्हो। गिरिजासहितगमन गृहकीन्हो॥
हर्षि शंभु निज आसन आये। गिरिजा सहित महासुख पाये॥
तेहि औसर ब्राह्मण यक आवा। द्वारपाल तब खबरि जनावा॥

उमा सहित उठिगे वृषकेतू। करि प्रणाम पूंछत अतिहेतू ॥
अर्द्ध रात्रि आयहु तुम देवा। केहिविधि करौं नाथ तवसेवा ॥
अस कहि अर्घ दीन्ह त्रिपुरारी। पूजि बात पूंछी सुखकारी ॥
कह द्विज सुनु प्रभुदीनदयाला। मैं दुर्बल व्रत वृद्ध विहाला ॥
दिन बहुगे अहार नहिं पायउँ। तवगृह यज्ञकाज सुनि आयउँ ॥
मेवा मोदक पूप अपारा। सकल बस्तु प्रभु भरी भंडारा ॥
मोहिं जेमाइ देहु तुम ताता। रच्छा करहु होहु पितु माता ॥
यह सुनि हर गिरिजा तहँ धाये। व्यञ्जन विविधभांति लैआये ॥
नहिं ब्राह्मण देखा तेहि ठाऊँ। भये विकल गृह परै न पाऊँ ॥
विमुख गयो अभ्यागत मोरा। असकहि शंभुकीन्ह तबशोरा ॥
असकहि सबगण शम्भु बोलाये। खोजन द्विजहित सकल पठाये ॥
भई अकाश गिरा तेहिकाला। सोच तजहु तुम दीनदयाला ॥
निरखहु मंदिर मांझ महेशा। पैहौ सुत जनि करहु अंदेशा ॥
यह सुनि पुनि गृहगई भवानी। तल्पसुप्त शिशु लखि हरषानी ॥
चूमि उठाइ लाइ उरलीन्हों। स्तनबदन पान तेहि दीन्हों ॥
कहेउ सपदि आवहु ममनाथा। निरखि नयन सुत होहु सनाथा ॥
जाइ महेश लीन्ह उरलाई। सुतै निरखि सुख हिय न समाई ॥
गणन बोलि कह शम्भु सुजाना। भा सुत प्रगट बजाइ निशाना ॥
देवन खबरि देहु करवाई। आनहु विप्र व्रन्द मुनि जाई ॥
अस कहि शम्भु उमासन भाषा। पूरणभइ तुम्हारि अभिलाषा ॥
पूरण आदि ब्रह्म अविनाशी। सतचित प्रभु गोलोक निवासी ॥
ब्रह्मादिक जेहि पार न पावै। बड़ी भाग्य सो सुत गृहआवै ॥
असकहिशम्भु तिलक अनुसारा। कीन्ह उछाह को वरणै पारा ॥
बाजहिं गिरि गहगहे निशाना। देवबधू नाचहिं करिगाना ॥

जय जय धुनि तहँ होत सोहाई। वेद पढ़ैं तहँ मुनि समुदाई॥
पूजा विष्णु प्रथम तब कीन्हा। गणपति नाम तासु धरिदीन्हा॥
लम्बोदर गजमुख यकदन्ता। बहुरिनाम तब धरेहु अनन्ता॥
कह ब्रजराज सुनो हररानी। गजमुख कस हरि कहेउ बखानी॥

राधोवाच॥

पूजन करन शनैश्चर आये। तिनहिं उमा ये वचन सुनाये॥
निरखहु रूप नयन समुहाई। निरखति शीश भस्म होइजाई॥
जबहिं उमा अतिकीन्ह बिलापा। गजशिरधरि हरिकीन्हकलापा॥
फिरि हरि विधि शिवशक्रसमेता। देवदनुज ऋषिगण द्विजजेता॥
बिलग बिलग पूजे गणनाथा। करि दर्शन सब भये सनाथा॥
नारद आइ गये तेहि काला। गावत हरिगुण सुखद रसाला॥
षडमुख जन्म कथा मुनि गाई। बरणि तासु यश उमहिं सुनाई॥
पुनि गणेश यश बरणि मुनीशा। गये तहां जहँ शिव जगदीशा॥
अति हित मधुर बजावत बीना। गावत षडमुख चरित नवीना॥
बीरभद्र शिव तुरत पठाये। कृतिकहिं यांचि तनय लैआये॥
देखि सकल सुर भये सुखारी। तेजपुंज शिवतनय निहारी॥
कीन्हतिलकसब मिलितकाला। सेनापति बल देखि विशाला॥
ब्रह्मा वेद पढ़ाइ सिखाये। नेमधर्म सबभांति सोहाये॥
अस्त्र शस्त्र विद्या बहु भांती। सकल पढ़ाइ अनङ्गअराती॥
यहि विधि सुतन समेत पुरारी। बसि कैलास भयो सुख भारी॥
तब होइ बिदागये निजधामा। दान मान सुख पूरणकामा॥

कुं०। गणपति षडमुख जन्म शुभ पुण्यकवर्त प्रचार।
सुने सुनाये भवतरे होहि न फिरि संसार॥
होहि न फिरि संसार पाप दुख रोग नशावै।

ऋद्धि सिद्धि धनधान्य पुत्र त्रिय राज बढ़ावै ॥
रामभजन धरिध्यान कथा यह मङ्गल गाई।
हरिकी भक्ति रसालसुक्ख मनवांछित पाई ॥

इति श्रीराधाविषादमोचनावल्यांरामभजनत्रिवेदीविरचितायांस्कन्दपुराणो नामत्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥

श्लोक। चतुर्दशे कार्त्तिकेयो तारकेण महारणं।
शक्ति घातं विलापंच दैत्यानाशं प्रकीर्तितम ॥

दो०। राधा माधव ध्यान धरि गणपति गौरि मनाइ।
रामभजन वर्णन कियो श्रीगुरु आशिष पाइ ॥

चौ०। जबदेवासुरभासंग्रामा। शिव सहाय यांचे सूत्रामा ॥
रण करि हर त्रिपुरासुर मारा। काली महिषासुरहि संहारा ॥
षडमुख तारक युद्ध अपारा। बरणिनन्द को पावै पारा ॥
तीनि कोटि योधा संग बीरा। आवा तारक अति रणधीरा ॥
सेनापति करिकोप अपारा। युग शत बाण तासु उरमारा ॥
तारक दैत्य महा बलवाना। गहि निजधनुष बाण संधाना ॥
सत्तरि तरुवर केर उँचाई। अति कराल तनु बरणिनजाई ॥
छोड़न लाग बाणकर यूथा। शतकोटिन रण चले बरूथा ॥
देव.दैत्य दल दुहुँ दिशि धावै। मारु मारु करि गर्जति आवै ॥

छं०। कोइ धनु बाण बांधे मूसल कुदारिकांधे कोइगहेसांगि नन्द मारु मारु गावैंरे। कोइ अश्व पृष्ठिचढ़ि धावत अगारी बढ़ि कोइ गज रूढ़ शूर उमँगति आवैंरे ॥ कोइ रथरूढ़ कोइ बालक युवान बूढ़ कोइ रण शूर बीर विशिष चलावैंरे। कोइ धावै लेह देह शैलके समान देहताल ठोंकि ठोंकि द्वन्द युद्धकोबुलावैंरे ॥ कोई धाइ मारै दण्ड परिघ प्रहारै खण्ड खण्ड खण्ड कोई हाइलोक

न सिधावैरे । कोई शक्ति मारै रण खड्ग प्रहारै कोई कोई गज बाजि मारि भूमि में गिराये हैं।। कोई रुण्ड मुण्ड हीने करतल कृपाण लीन्हें कोई मारु मारु धुनि बहुत मचाये हैं । कोई कहै तात मात की पुकार करै कोई कहि हाइ दैवगृहका सिधाये हैं॥ कोइ पद बाहुहीन कटि जंघ शीश क्षीण चापि चापि ओंठ कोई दशन चबाये हैं । कोई घोर शोर जोर लगत शरीरवीर धीर नीरनीर कहि गोहराये हैं ॥ कोई बात बोलै कोई रण ते न डोलै कोई शूर बीर खेत चढ़ि कायर कहाये हैं ॥ धरु धरु मारु काटु विशिष प्रहारु डाटु गर्जितर्जि कर्षवाक्य ईशन सुनाये हैं ॥

दो०।दोउ दल प्रबल प्रहार बहु करैं परस्पर बीर।
सेनापति तारक दुवौ लड़ैं महा रणधीर॥

चौ०।शङ्करतनय देखिबलभारी।तारक बोलो वचन पुकारी॥
सुनहु कुमार बचन प्रिय मोरा। मानहु शपदि होइ हित तोरा॥
गिरिजा बहुत नेम व्रत कीन्हा। सर्वसु दान द्विजन कहँ दीन्हा॥
कलपितरसिपायहु तोहिं ताता। होइहि बहुत दुःखित तव माता॥
कृतिका नेम धर्म बहु करई। ताकहँ पुत्र शोक दुख परई॥
षडमातनके एक कुमारा। तिनहिंसदा तुम प्राण अधारा॥
दुहुँ दिशि बंश बीज तुम भाई। घूमहु राज्य करौ गृहजाई॥
पतिव्रत नेम धर्म अधिकारी। पछिहि दुख होइहि अतिभारी॥
तेहिते करौं निहोर तुमारा। अब तुम मानहु बचन हमारा॥
सुर अरु असुर सकल जगमाहीं। असको प्रबल जीति मैं नाहीं॥
सत्तरिवर्ष घोर तप कीन्हों। मोहिं वरदान विधाता दीन्हों॥
हरिहि छांड़ि रण सन्मुख तोहीं। आवै शूर विमुख सब होहीं॥
सुनि पुनि बोलेउ बचन कुमारा। तारक बचन न कहे सम्हारा॥

रण चढ़ि जे पुनि शूर पराहीं। सरचढ़ि त्रिया उतरि गृहजाहीं॥
व्रतकरि बीच छांड़ि जे देहीं। दै द्विज दान फेरि जे लेहीं॥
वचन न करैं जे नर प्रतिपाला। तिनहिं दंड यमलोक भुवाला॥
अस कहि षडमुख शक्तिप्रहारी। गिरो भूमि पुनि उठो सँभारी॥
गर्जो घोर कठोर सुरारी। धावत सन्मुख गयो प्रचारी॥
तेहि पुनि मय त्रिशूलकरलीन्हा। तेजपुंज तेहि शंकर दीन्हा॥
जब मय कीन्ह बहुत तपभारी। होय प्रसन्न तब दीन्ह पुरारी॥
सो अनिवर्त शूल जगमाहीं। लागत प्राण रहत घटनाहीं॥
सो तारकलै तुरत प्रहारा। हाय हाय ऋषि कीन्हपुकारा॥
लाग त्रिशूल मांझ उरमाहीं। परे धरणि शरीर सुधिनाहीं॥
तेहि क्षण नारद खबरिजनाई। काली तुरत तहां चलिआई॥
लीन्ह उठाइ देखि मुखरोई। राखेहु हृदय मांझ तेहिगोई॥
दशन पीसि गरजी अतिघोरा। अट्टहास धुनि भै चहुँओरा॥
पदगहि तारक भूमि पछारा। पुनिपुनि पटकि पटकिमहिमारा॥
अर्द्धावरि सम मींजि मरोरी। सिन्धु मध्य तेहि डारिबहोरी॥
तासु सेन सब करिसंहारा। शंकर पहँ लैगई कुमारा॥
देखि दशा अतिशय अकुलाने। वचन न आव बहुत बिलखाने॥
उमा देखि व्याकुल भै नारी। करत विलाप नयन बहै बारी॥
हृदय लगावत बारंबारा। पुत्र पुत्र कहि करति पुकारा॥
उठहु पुत्र व्याकुल वृषकेतू। बोलहु मधुर वचन ममहेतू॥
मैया मोदक भोजन लाई। जेमहुआइ बैठि दोउ भाई॥
आज्ञा भंग कबहुँनहिंकीन्हा। यह दुखमातपिता कहँदीन्हा॥
गणपति संग सुमनलैआवहु। माता कहिकहि मोहिंगोहरावहु॥
तुम बिन कृतिका भई निराशा। देखि तुमहिं जगजीवनआशा॥

अब को तारक करै संहारा । केहिबिधि मन थिरहोइ हमारा ॥
तेहि औसर बासवगुरु साथा । सुर समेत आये सुरनाथा ॥
देखिदशा अतिशय बिलखाना । बोले सुरगुरु बचन प्रमाना ॥
जनिकोउ शोचकरौ मनमाहीं । उठिहि कुमार एक क्षणमाहीं ॥
बैद्यराज अश्विनी कुमारा । लैसंजीवनि कीन्ह बिचारा ॥
लै बिशल्यकरणी वृणराषी । मृतकप्राण धारण अभिलाषी ॥
तब सेनापति उठे संभारी । कहँ तारक रणहतौं प्रचारी ॥
तब आगे सुर सकल निहारी । लज्जित भये महाबल भारी ॥
हरषित भये उमा त्रिपुरारी । दानदीन्ह निजबिरतिबिसारी ॥
तबलगयहिबिधि भयहु बिहाना । देवन दैत्यन हने निशाना ॥
तारक निकसि सिन्धुते आवा । दानवदलनिजसकलबोलावा ॥
बजी बिपंचि शंख सहनाई । भेरि नफेरि ढोल धुधुआई ॥
तूर्य सितार दुंदुभी घोरा । भोभकैं नरसिंही चहुंओरा ॥
गरजैं शूर प्रबल रणमाते । मत्त मतंग अश्व हिंहिनाते ॥
घहरैं रथ पहिया अतिघोरा । सजै सैन्य जहँ तहं अतिशोरा ॥
बिरदावली भाट उच्चरहीं । बन्दी करषाकी धुनिकरहीं ॥
पीत सेत कारे रँगराते । कोटिन दल पताक फहराते ॥
देखा दल दनुजनकर आवा । षडमुख शिखी सजाय मँगावा ॥
चूड़न मणि मुक्ता छबि देहीं । पक्ष चन्द्रिका मन हरिलेहीं ॥
सजा मयूर बरणि नाहिंजाही । गरुड़हंस ज्यहि देखि लजाही ॥
चढ़ि असकंध भये असवारा । देव सकलजय जयति पुकारा ॥
देव सैन सेनापति लीन्हा । कोहको शिखीशोरअतिकीन्हा ॥
उठो शिखी नभगयो छिपाई । गिरो दैत्यसेना बिचजाई ॥
गज तुरंग रथ यूथपयूथा । तुंड पक्ष नख हनै बरूथा ॥

सेनापति कृपाण करलीन्हे। कोटिन शूर शीश बिन कीन्हे॥
नाचत रणमयूर हरि केरो। कुहकि कुहकि दलहनै घनेरो॥
कोटिन दैत्यन अस्त्रचलाये। काटि शंभुसुत भूमिगिराये॥
तब लगु सब शंकर दलआवा। चारि अनी चतुरंग सोहावा॥
भूत प्रेत पिशाच बैताला। डाकिनि साकिनि रूपकराला॥
खप्पर खड्ग दुवौकर फेरी। योगिनि नाचत फिरैं घनेरी॥
किलककिलक खवीसरणआये। कोटिन योगिनि घंट बजाये॥
भैरव भीर गई रणमाहीं। श्वान प्रबल भट धरिधरिखाहीं॥
कूष्मांड श्रृंगी ध्वनि आई। सन्मुख तारक फौज चलाई॥
वीरभद्र नन्दीश्वर बीरा। धाये पर्वत सदृश शरीरा॥
दैत्य दनुज दल करैं संहारा। कहँ तारक रण करैं पुकारा॥
तारक प्रबल तड़पि रण आवा। कोटि सुभटरणहित संगलावा॥
नमुचि निवातकवच कचमाली। अस्त्र शस्त्रयुत अतिबलशाली॥
धावा नमुचि महा बलवाना। बीरभद्र सन्मुख चढ़ि याना॥
मुँगदर वीरभद्र तेहि मारा। नमुचितादि निजगदा प्रहारा॥
वीरभद्र त्रिशूल कर लीन्हा। छाती बीच धमकि तेहिदीन्हा॥
वीरभद्र बहु शूल चलाये। कटै न नमुचि त्वचाभयपाये॥
वीरभद्र करि कोप अपारा। पदगहि पटकिपटकि महिमारा॥
तदपि महाबल मरै न मारा। तब पदगहि सागर महँडारा॥
नन्दीश्वर माली संग्रामा। लरैं वीर नहिं करैं विरामा॥
तेहि अवसर तारक तहँ धावा। गर्जि तर्जि प्रभु आगे आवा॥
वर्षे प्रबल शरन के धारा। तिमि प्रहार रणकरत कुमारा॥
अस्त्र शस्त्र प्रति अस्त्रन मारैं। सहसन सहसन अस्त्र संहारैं॥
दोनों वीर प्रबल रण माहीं। बढ़े क्रोध निज दशन चबाहीं॥

तारक चित्र गदा लै घोरा। धमकी षडमुख शीश कठोरा॥
लागी शीश शंभुसुत कोपा। लै शतचन्द्र तासु शिररोपा॥
भे दुइफाल गिरे महि माहीं। हली भूमि महि सिंधुतोड़ाहीं॥
वीरभद्र आदिक गण धाये। मारि दैत्यदल सकल भजाये॥
तारक बध सुर मुनि सुनिकाना। बाजे नभ गहगहे निशाना॥
बरसहिं फूल करैं बहु गाना। नाचहिं शुभ अप्सरा सुजाना॥
अस्तुति करैं सकल मुनिभारी। जयषडमुख जय शैलकुमारी॥
जय गणेश शंकर सुखदाता। विश्वविदित तव यशसुरत्राता॥
अस्तुतिकरि मुनिसकलसिधाये। षडमुख तब शंकर पहँ आये॥
आरति साजि उमा उठिधाई। पुत्रहि देखि बहुत सुखपाई॥
विप्रन बोलि दान बहु दीन्हे। याचकसकल अयाचक कीन्हे॥
जो यह कथा सुनै अरु गावै। सुख सम्पति नानाविधिपावै॥
पुत्र पौत्र धन धान्यहि देई। रोग दोष अरि दुख हरिलेई॥

कुं०। गणपति षडमुख जन्म शुभ वरणि सुनायउ नंद। यज्ञ कथा ब्रत नेम विधि दान उछाह अनन्द॥ दान उछाह अनंद कंद प्रद बहुविधि भाखी कही सकल हमगाय कृष्णमुख जो सुनि राखी॥ रामभजन कवि कहैं शंभु यश हम सुनि गावा। निर्मल सुरुचि सुबुद्धि भक्ति प्रद जस सुनि पावा॥

इति श्री राधाविपादमोचनावल्यांरामभजनत्रिवेदीविरचितायांस्कन्दपुराणे षड्मुखयुद्धवर्णनोनामचतुर्दशोऽध्यायः॥ १४॥

मार्कण्डेयपुराणतस्तुमरखेयुद्धञ्चदुर्गोत्सिवं चंडमुण्डमथश्चधूम्रनयनं रक्तस्यवीर्यवधं। पश्चाच्छुंभनिशुम्भयोश्चमरणंमरणंबलेरिन्द्रतोमालीमालवतांश्चकालनियमे चक्रानिपातंवदेत्॥ कथापञ्चदशेस्तोत्रं शक्रगोलोकदर्शनंचण्डमुण्डवधंचैवचामुण्डानामकीर्त्तितम् १५॥

राधोवाच ॥

दो० । ब्रह्म सच्चिदानंदहरि निर्विकार गुण सिंधु ।
निर्गुणादि मध्यांत विन मात पिता गुरु बंधु ॥

चौ० । जेचर अचर जीव जग माहीं । कहौ तात केहिमाहरिनाहीं ॥
जीव ईश्वरहि भेद न जानौ । क्षिति जल गंधतरंगहि मानौ ॥
मायाजीवहि बहुत लोभावै । भयते ईश निकट नहिं आवै ॥
ज्ञान विराग योग श्रुत जोई । ईश्वर जीव भेद नहिं होई ॥
जे बेदांत शास्त्र अभ्यासी । गुणातीत जे विषय उदासी ॥
सांख्या चार्य तत्त्व निरधारी । क्षेत्र आत्मा ज्ञान विचारी ॥
पर अरु अपर पुरुष गति ज्ञाता । निर्गुण सगुण ब्रह्म चितराता ॥
जेहरि भक्त कर्म मनवानी । ते ईश्वर सम जानहु प्रानी ॥
थोरेउ मा सब कहेउ बखानी । भजहुतातजियअसहरिजानी ॥
श्रवणादिक हरि भक्ति सोहाई । ते मैं तुम कहँ प्रथम सुनाई ॥
योग बिराग ज्ञान बिज्ञाना । संयमनेम यज्ञ वृत दाना ॥
तीर्थादिक जे पुण्य बखानी । भक्ति अकेली सदृश तुलानी ॥
तेहिते सब तजु हरिभजु ताता । सुनहु सदा हितसन सुखदाता ॥
जो सुनि उमा परम सुख पावा । अति हित शंभु रामगुणगावा ॥
विष्णु चरित गाये ऋषिसूता । शौनक सँग मुनि सुनै बहूता ॥
नर नारायण धर्म कुमारा । नारद सन हरि चरित उदारा ॥
कहेउ सो सब स्थापन पाहीं । हरियश सुनहिं समुझि हर्षाहीं ॥
कथा कृष्ण यश यश सुनिराखा । तस तबं प्रेम देखि मैं भाखा ॥
अबजो आयसु होय तुम्हारा । सादर कहौ न करौ बिचारा ॥
यह सुनि नन्द बहुत सुखमाना । बोले गोपन सहित सुजाना ॥
धन्य धन्य बृषभान दुलारी । आदिशक्ति जगरचि अवतारी ॥

ब्रह्मादिक मुनि ध्यान तुम्हारा। करै सदा नहिं पावहिं पारा॥
ते तुम आय कृतारथ कीन्हा। ब्रजजनसहितशिवहिसवदीन्हा॥
यशुदाके अस मन माहीं। चहै मोहिं फिरि प्रश्न कराहीं॥
ताते कृष्ण कथा शुभ कारी। राखेउ प्रथम सो कहौ दुलारी॥
यह सुनि नंद गिरा रस बोरी। अतिसुखभयो मनहिं चहुँवोरी॥
षडमुख युद्ध कथा मैं गाई। येहि बिधि तारक कीन्ह लड़ाई॥
जब तारक वध बलि सुनिपावा। तुरतै शंभु निशुंभ बोलावा॥
देव दनुज जीतेउ नृप भारी। कहा प्रथम बन गयो सुरारी॥
सुनि बलिबचन बहुत सोइभाषा। सुनहु मोरिमनकी अभिलाषा॥
तुमका रहै भरोसा भारी। तारक समनहिं आन निहारी॥
तारक मोहिं उपचार बहूता। तेहि बल जीतेउ पावक दूता॥
तेहिकर पुरुषारथ जग जाना। निजमुख कहँलगकरौं बखाना॥
देखहु भ्रात मोर रण भाई। अब ते कहँलग कहौं बुझाई॥
लै निशुम्भनिजदलचलिआवा। रक्तबीज कहँ तुरत बोलावा॥
सेना सकल साजि तुम भ्राता। संग सहाइलेहु मम भ्राता॥
युद्ध करहु दुर्गासन जाई। आनहु जियत ताहि तुम भाई॥
धूम्रकेतु धूम्राक्ष बोलाये। चण्ड मुण्ड रण करण पठाये॥
सजी असुर सेना तेहि काला। महांघोर धुनिभई बिशाला॥
शङ्ख सितार सरंगि बजावै। ढोल नफेरि तूर्य धुधुआवै॥
बाजैगज घंटा अति घोरा। चली सेन धुनि उठत कठोरा॥
गर्जैं बीर धीर नहिं हेतू। दल फहरात पताका केतू॥
असगुन होत बहुत भयकारी। कालवश्य नहिं गनै सुरारी॥
रोवैं श्वान शृगाल कुभांती। रहकहिं राक्षस नाना जाती॥
उल्कापात रक्त कै धारा। पांशुवृष्टि नभ होत अपारा॥

टूटिगिरै तरुवर बिन बाता। ऊपर द्रोण गिद्धकरपाता॥
देखी नारि नग्नि यक आगे। तबहुँ न असगुन गनैअभागे॥
आगे चंड मुंड दोउ धाये। महादुर्ग सेना सब लाये॥
देखा दल निशुम्भ कर आवा। इन्द्र देव दल सकल बोलावा॥
बार बार वा सब समुझावे। शंभु निशुंभ कठिन दलआवै॥
करिहहु युद्ध सँभरिसब भाई। बहुत कठिन यह करहिलड़ाई॥
गजचढ़ि वासव असकहि धाये। गुरुके निकट तुरत चलिआये॥
करि प्रणाम बोले सुर राई। कह प्रभुघोर चमू जहँ आई॥
कह मुनि समुझि सुनौ सुरसाई। कारन एक कठिन यहि भाई॥
बिन दुर्गा सुर असुरजे बीरा। इनहि न जीति सकै रण धीरा॥
बिनय करहु दुर्गा सनजाई। होइहि काज सुफल सुर राई॥
यह सुनि इन्द्रादिक सुर साथा। जाय सबन मिलि नायहु माथा॥
अस्तुति करै सकल सुर झारी। जयजय जय गिरिराज कुमारी॥
जय पुरारि प्रण तारति हारी। रक्ष रक्ष जय जय सुख कारी॥
जय षडमुख जय गणपति धीरा। रक्ष रक्ष सब देव अधीरा॥
यह सुनि बहुरि भई नभ बानी। तजहुसकलभयअसजियजानी॥
सुरहित में सब असुर सँघारौं। चढ़िरणशुम्भनिशुम्भहिमारौं॥
युद्ध करौ तुम सब सुर जाई। पीछे हम तब करब सहाई॥
यह सुनि तुरत जाय सुर राजा। लरनलाग लै देव समाजा॥
छं०। लरैं देव सेनातबै दैत्यमाखे। पठैदेव आगेतबै रोंकिराखे॥
चलै बाण गोला शतघ्नी भुशुण्डी। गदा शूल पाशै कृपाणै प्रचण्डी॥ कोई शूर वृक्षै उखारै चलावै। कोई शैल लय लय प्रहारै मचावै॥ कोई परिघ लागे महाघोर गर्जा। कोई बाण लागे गहे शूल तर्जा॥ प्रहारैं दोऊ ओर से शूर कैसे। वशांते

चलैं रंग पिचकार जैसे ॥ लगे शस्त्र देहै भई रंग लालै। मनो चैत्रमासे लगाये गुलालै ॥ परी मारुभारी भजे बीर कोई। यथा काम जागे सबै लाज खोई ॥ लरै वीर आगे न टारे टरैं। कोई घाय लागे मही में परैं ॥ यथा काम के बाण लागे नरैं। मनोंयोग धारी न कामैं परैं॥ कटैं बीर आगे न पाछे भजैं। सतीदेह त्यागे न सत्यै तजैं ॥ महामोह त्यागे यथा जीव हर्षै। तथा शूर संग्राम को पाइ मर्षै ॥ करै वीर संग्राम में दैत्य देवा। सती प्राणत्यागे करै नाथ सेवा ॥ यहीभांति ते बीर संग्राम रोपे। देखो महाघोर जायन्त कोपे ॥ लिये तूण ते बाण दुइ लक्ष घोरा। पठे मंज लैलै धनुर्बाण जोरा॥छुटे सायके नायके बीर कोपे। यथा संख्यया बाण संधान रोपे ॥ दुवौ ओर ते बाण के जाल छाये। दिशा बेदिशा में चलै मूरिछाये ॥ भजी देव सेना न धीरै धरैं। नहीं दैत्य ते जीति पोरे परैं ॥ कहै देव कोई गणानाथ आवैं। दया ते हमैं काल से लै बचावैं ॥ तेही समय तत्र गजवक्र आये। महाशैल सी सुण्ड दण्डै बढ़ाये ॥ लिये रोंकि कै दैत्य सेना सबै। बचीदेव सेना सुखी भे तबै ॥

चौ०। देखे गणपति इन्हे बेहाला। कृपाकीन्ह तब दीनदयाला ॥
सूंढ़ि लपेटि शुक्र रथ लीन्हा। धरि पदशीसऊर्द्धमुख कीन्हा॥
भा बिराट सम सुण्डा भारी। शुक्र मनो विद्युत अनुहारी ॥
लै शुक्रहिं निज लोक पठाये। गोपवास गोलोक सोहाये ॥
इहां विष्णु निज हृदय बिचारा। जाइ करौ कुछ देव सहारा ॥
बिप्र रूप धरि बलि पहँ गयऊ। दै अशीस यांचत असभयऊ ॥
दैत्येश्वर मैं मांगन आवा। लेव दान आपन मनभावा ॥
यह सुनि एवमस्तु बलि कीन्हा। लक्ष्मीकवचमांगि हरिलीन्हा ॥

कवच मांगिनिजलोक सिधाये। रुद्रहि गुरु वृत्तान्त सुनाये ॥
शुक्रकवच बिन जब बलिजाना। देवन रण हित हनेनिशाना ॥
दैत्यन सुरदल आवत जाना। धाये सकल बजाइ निशाना ॥
भिरे सकल जोरी सन जोरी। युद्धलालसा जिनहिं न थोरी ॥
चले प्रचण्ड सहस्र दल माहीं। होइ समर नहिं बरणिसेराही ॥
तेहि औसर दुरगा तहँ आई। संग शक्तिदल साजुबनाई ॥
विष्णुशक्ति आई तेहि काला। गरुड़ चढ़ी कर चक्र कराला ॥
कर मार्जनी कमण्डल माला। ब्रह्मशक्ति चढ़ि चली मराला ॥
शक्ति प्रचण्ड लिये कर धाई। चढ़ि मयूर षष्ठी तहँ आई ॥
इन्द्रशक्ति गज चढ़ि रण माहीं। कुलिश हाथ दुर्गा सँघ जाहीं ॥
सकल देव शक्ती यहि भांती। वाहन आयुध नाना जाती ॥
सकल शक्ति सेना तहँ आई। काली आगे फौज चलाई ॥
सन्मुख चण्ड मुण्ड दल धाये। काली करगहि दशनचबाये ॥
पर्वत वृक्ष शस्त्र ते मारे। काली ऊपर फूल से डारे ॥
पादन मीजि अनेक नशाये। पदगहि पटकि समूह भ्रमाये ॥
भुजा पसारि खैंचि दल यूथा। मुखमें लागे गज बाजि बरूथा ॥
येहिबिधि सकल दैत्यदल भारी। काली क्षणमहँ लीन सँघारी ॥
चण्ड मुण्ड धाये तेहि काला। अतिबलद्वउशमशैल बिशाला ॥
बेंधें अस्त्र शस्त्र बहु भांती। कोइ तेइ अंग न एक बिसाती ॥
तब कालिका कोप करि धाई। विविध भांति तब भई लराई ॥
काटि शीस द्वउ शत्रुन केरे। दुर्गहि भजरिदीन्ह कर जोरे ॥
अस्तुति करत सकल मुनिवृन्दा। देखि परममन परम अनन्दा ॥
कुं०। तेहि औसर ऋषि देवगण नाग पितर गन्धर्व।
वसु किन्नर विधि सिद्ध हरि आये गणपतिसर्व ॥

आये गणपति सर्व जयति ते जयति पुकारै।
वर्षैं सुमन समूह सकल आरती उतारै॥
रामभजन शुभ अस्तुति गावत दुर्गाचरण मनाये।
रामभक्ति अरु सकल पदारथ मातुकृपा ते पाये॥

इति श्रीराधाविषादमोचनावल्यांरामभजनत्रिवेदीविरचितायांचण्डमुण्ड
बधोनामपञ्चदशोऽध्यायः॥ १५॥

दो०। धूम्रकेतु धूम्राक्ष द्वउ महाप्रबल रणधीर।
आये रणहित सपदि तहँ सँगसेना गंभीर॥

चौ०। शक्तिनदीखचमूचलिआई। लै लै अस्त्र शस्त्र सब धाई॥
तब दुर्गा कालिका बोलाई। कहि प्रियवचन बहुतसमुझाई॥
जबते चंड मुंड तुममारा। नामचंडिका धरो तुम्हारा॥
धूम्रकेतु धूम्राक्षहि मारौ। निजकीरतितुमजगविस्तारौ॥
धुतशट सिंघ सहायक लेहू। असुरन जाय सिखावन देहू॥
असमुनि महाघोर तनुधारी। धाई सन्मुख बदन पसारी॥
शक्तिसमूह लड़ै रणमाहीं। काली धरिधरि असुर चबाहीं॥
धूम्रकेतु धावा तेहिकाला। महा प्रबलरण कीन्ह कराला॥
काली केहरि द्वउरणमाहीं। पकरि पकरिभटधरिधरिखाहीं॥
शक्तिन असुर समूह संघारे। काली धूम्रेक्षण रणमामारे॥
धूम्रकेतु कोप्यो बलवाना। गहिनिजधनुपश्रवणलगिताना॥
बाणजाल छांड़ै बहुभांती। पर्बत अग्नि सर्व बलघाती॥
अंतर हित होइ धरै शरीरा। दृश्यअदृश्य होइ रणधीरा॥
काली लखि सब शक्तिव्यहाला। अतिशयकोपकीन्हतेहिकाला॥
धाइनभमें भुजा पसारी। पकरि खैंचिमहि दीन्ह पछारी॥
रहे असुर सब जे रणमाहीं। केहरि सकल हनेरण माहीं॥

विजय देखि मुनिवर सब हर्षे। अस्तुति करत पुष्प बहुबर्षे ॥
शंभुहिं क्रोध भयो सुनि भारी। रक्तबीज तन रहो निहारी ॥
असमय पाइक्रोध नहिं धरहू। यह बरदान पाइ का करहू ॥
अंससुनि रक्तबीज रणधावा। गर्जिगर्जि आगे चलिआवा ॥
काली देखाअसुर अपारा। लैकृपाण तेहि कीन्ह सँहारा ॥
तेहिके रक्तबिन्दु महि परेऊ। ततक्षण बहुतरूप तेहि धरेऊ ॥
शक्ति समूह क्रोध करिधाई। विविधभांति तिनकीन्हलराई ॥
बज्रचक्र गहि शूल कृपाना। रक्तबीज मारे तेहिबाना ॥
ज्योंज्यों रक्तगिरै महि माहीं। कोहित होइ न बरणि सेराहीं ॥
नभ अरु भूमिसकलदिशिछाये। रक्तबीज नहिं घटहि घटाये ॥
तबदुर्गा काली कहि बोलवावा। रक्तबीज बरदान सुनावा ॥
बदन पसारि जीभपर लेहू। रक्तबिंदु महि परन न देहू ॥
असमुनि काली बदन पसारा। जिह्वा कीन्ह बहुत विस्तारा ॥
तापर रक्तबीज धरि मारै। दुर्गा कोटिन समर संहारै ॥
येहिविधि रक्तबीज सबमारे। देखिदेव सबभये सुखारे ॥
शुंभ निशुंभ प्रबल रणआये। सजि चतुरंग सकल दललाये ॥
शक्तिन सन रण कीन्ह अपारा। बरणि कवनकविपावै पारा ॥
कालीदुर्गा रिपुदल मारे। शुंभ निशुंभ रहे बलभारे ॥
लैनिशुंभ करशक्ति प्रहारी। दुर्गा खण्ड खण्ड करिडारी ॥
पुनि पुनि पर्बत बहुत प्रहारै। दुर्गा मुशल फोरि महि डारै ॥
लैकृपाण भुजमे तेहि मारा। टूटीपड्ग भये रण फारा ॥
तबदुर्गा शतचंड चलाई। काटि शीश महि दीन्हगिराई ॥
अनुज निधन सुनिभादुखभारी। शुंभप्रबल रण गयउ प्रचारी ॥
मैं अकेल तुम शक्ति अपारा। अनुचित युद्धकहै संसारा ॥

यहमुनि निजतन शक्ति सकेला। सिंह चढ़ी रहिगई अकेला॥
प्रबल शुंभसन भई लड़ाई। समुझति बनै बरणिनहिं जाई॥
अस्त्र शस्त्र बहुभांति चलाये। लड़ैं असुर नहिं हटैहटाये॥
मुष्टिप्रहार कीन्ह बहुभांती। बाहुयुद्ध नहिं बरणि सेराती॥
गहिदुर्गहि नभपंथ उड़ाना। तहांयुद्ध कीन्हों विधिनाना॥
तदपि असुर नहिं मानै हारी। विलगहोइ पुनि भिरैं प्रचारी॥
तब दुर्गा तेहि भूमिगिरावा। चापिचरण शिर काटि चलावा॥
जय जयकार भई नभभारी। जयदुर्गा जय जय त्रिपुरारी॥
जय गजबदन षडानन देवा। दायक चारिबर्ग फलसेवा॥
दो०। यहिविधि स्तुति सकलमुनि करतहर्ष अधिकाइ।
दुर्गाशंकर पहँगई विश्व विजय को पाइ॥
इतिमार्कण्डेयः अथ पद्म राधोवाच॥
चौ०।नंदसुनौपुनिकथाअनूपा। हरिचरित्र बरणौं बृज भूपा॥
जो यह कथा श्रवण सुनिपावै। दुखदरिद्र तेहि निकट न आवै॥
रोग शोक दुख दूरि पराहीं। ऐसी कथा कहीतुम पाहीं॥
जो यदुपति निजबदन सँहारी। सो सुनि सुख उपजै मनभारी॥
अबसोइ कथा सुनौ ब्रजराई। देवराज बलि कीन्ह लड़ाई॥
बलिजब शुंभ पराजय जाना। सेनापतिहि बोलि सनमाना॥
तुम सब सैन सजावहु जाई। मालवान लय संघ सहाई॥
जो हरि इंद्रहेत रणआवै। लड़हु सुखेन जाइ नहिं पावै॥
यह सुनि दैत्यनशंख बजाये। गर्जिइंद्र सन्मुख सबधाये॥
इहां जयंतदेव दल संगा। वरुण कुबेर पवन पातंगा॥
भिरे आइ रण करत प्रचारी। धरु धरु मारु मारु धुनिभारी॥
चढ़ि विमान बलि आगेआये। वासव सन्मुख तुरत सिधाये॥

अस्त्रशस्त्र वर्षे बहुभांती। भारत निर्विकल्प दिन राती॥
लरय शूर रण दुहुँदिशि माचे। कोटिन रुंड मुंड बिननाचे॥
अश्व अश्वतर गजरथ यूथा। रणमहँ जूझे सुभट बरूथा॥
वज्रकृपाण पासशर गोला। शक्तिभुशुण्डी फरस खटोला॥
तड़पि तड़पि मारे रणवीरा। कटि कटि जरजर भये शरीरा॥
तदपि सुभट नहिं मानैहारी। गिरै भूमि फिर उठै सँभारी॥
फफकै घाय शूर चिक्करहीं। मारु मारु कहिकै महि परहीं॥
कायर देखि महारण भारी। भजे तुरत निजविरति बिसारी॥
वलि सन कहेउ इंद्र तब जाई। तू नट इव शठ करत लड़ाई॥
आजु बज्रशत पर्व प्रहारौं। धरते काटि शीस महिडारौं॥
दुर्लभ स्वर्ग करौ हठ तोहीं। बार अनेक खिझायहु मोहीं॥
यह सुनिपुनि सुरपतिकी बानी। बोले वलि तुम बड़ गुरुज्ञानी॥
विजय पराजय हरिके हाथा। वृथागर्भ त्यागहु सुरनाथा॥
करणी करि निज शूरदेखावै। कबहुन रण चढ़ि गालबजावै॥
असकहि सप्तबाण उरमारे। वासव सन्मुख आइ प्रचारे॥
सुरपति बाण सहस्र चलाये। वलि अदृश्य होइ सबैबचाये॥
गदाप्रहार कीन्ह बलिआई। सहित गयंद गिरे सुरराई॥
गइ मुरछा सुरपति रणजागा। मातलि टेरि तुरत रथमागा॥
रथंचढ़ि बज्रलीन्ह सुरराया। बलिबिलोकिप्रगटीनिजमाया॥
बहुत रूपकरि लय धनुबाना। कोटिन छोंड़े व्याल समाना॥
दिशिअरुविदिशिभूमिनभछाये। जनु मेघा वरषें झरिलाये॥
मायाकीन्ह भयो अँधिआरा। शूरन आपन हाथ पसारा॥
व्याकुल किये देव सबझारी। परे धरणि हरि शरणपुकारी॥
सन्मुख होइ न सकत कोइराजा। बूड़ सिंधुजनु वणिकसमाजा॥

तब हरि प्रगटभये तहँ आई। लय निजआयुध चढ़िखगराई॥
एकहि बाण सकल शरकाटे। जिमि रवि उदय घोर तमफाटे॥
कालनेमि हरि सन्मुख धावा। तेज पुंज गहि शूलचलावा॥
देखि जगतपति शूलप्रचंडा। शरनकाटि कीन्हीं शतखंडा॥
मारिसि गदा गदा हरिमारी। खंडित लखि छपि गयोमुरारी॥
गगनभपथ माया विस्तारा। बैंधूरि कीन्ह अँधियारा॥
कच नख रक्त मांसमद छारा। नग पर्वतलय करै प्रहारा॥
विष्ठा मूत्र हाड़ जल ब्याला। उपल विषाण सरीतरु ज्वाला॥
अस्त्र शस्त्र वैंर्षे बहुभांती। मायाकीन्ह न बरणि सेराती॥
नभते पर्वत करै प्रहारा। कालनेमि धुनिकरै अपारा॥
देखिअसुर बल सब सुरकांपे। दशनन बीच जीभ तिनचांपे॥
देखिप्रलय हरि पहँविधि आये। सृष्टि सँघार देखि भयपाये॥
कहविधि सुनु प्रभु दीनदयाला। हतौ वेगिसब सृष्टि बेहाला॥
तबप्रभु चक्रसुदर्शन मारा। माया सहित काटि तेहिडारा॥
गिरतहि माल्यवान तहँधावा। गर्जि तर्जि यकशूल चलावा॥
शूल समेत तासु शिरकाटा। मालिसुमालि जाय पुनि डाटा॥
तक्षण खगपति दुवौसँघारे। तबविधि हरिसन वचनउचारे॥
मथुरा कालनेमि अवतरिहै। ताकर नाम कंस अस परिहै॥
तबतहँ होइ कृष्ण अवतारा। असुर थापि हरिहु महिभारा॥
ऐसेहि विधि निज लोकसिधाये। हरिबैकुंठलोक फिरि आये॥
इन्द्रहि बलिरण भयो अपारा। बरणि कवन कबि पावै पारा॥
इन्द्रकोप करि कुलिश चलावा। काटितासु शिर भूमि गिरावा॥
बलि बध देखि पाक चलिगयऊ। इल्वल नमुचि करत रण भयऊ॥
तब वासव निज कुलिश प्रहारे। इल्वल पाक काटि महि डारे॥

नमुचि कन्धरा त्वचिन बिसाई। पुनि पुनि बज्र हनै सुरराई॥
अद्र सुकते रहित जो होई। तेहिते मरि हि जाव वर सोई॥
यहकहि जब नभ गिरा सेरानी। वासव समुद फेन तहँ आनी॥
कटो शीस नमुचि रण मारे। एहिबिधि सबरण असुर सँहारे॥
इन्द्र विजय गंधर्वन गावा। निज२गृहदल सकल सिधावा॥
तब गणेशनिज लोक सिधाये। शुक्रहि तुरत भूमि लैआये॥
देखि मृतक दल मंत्र उचारा। संजीवनि विद्या अनुसारा॥
जिये दैत्यमुनि पद शिर नाये। बलिसँगलै मुनि तपहि सिधाये॥
बलिहि उग्र भृगु तेज बढ़ाई। अमरपुरी पुनि लीन्ह छुड़ाई॥
एको नाशत यज्ञ सँभारा। बामन हरि लीन्हो अवतारा॥
बलितेलय इन्द्रहि पुनि दीन्ही। भिक्षा मांगि अनुग्रह कीन्ही॥
इन्द्रपुरी सम सुतल बनाई। तहां बलिहि प्रभु दीन्ह बसाई॥
आगें यह पर संग सुनावा। ताते स्वल्प कही मैं गावा॥
जो नर कथा सुनै अरु गावै। हरिपद बिमल भक्ति सोइ पावै॥

कुं। देवा सुर संग्रामयह तुमहिं सुनाऊं नन्द। कालनेमि रण जन्मपुनि कंसभयो जिमि मन्द॥ कंस भयो जिमि मंद तासु हित हरि अवतारा। पालत श्रुतिपथ साधु देवहरि है महिभारा॥ राम भजन कविकहै कृष्णप्रभु दीनदयाला। भजोंसदा मनलाय दरश देहैंनँदलाला॥

इति श्रीराधाविषादमोचनावल्यांरामभजनत्रिवेदीविरचितायांदेवासुरसंग्राम वर्णनोनाम षोड़सोऽध्यायः १६॥

श्लोक। अध्यायेसप्तदशकेकृष्णलीलानुवर्णनम्। सकटोत्पातेसज्ञानांनारदज्ञीतमीर्यते॥

॥ श्रीराधोवाच ॥

सो० । सुनहु नंदचित लाय हरि चरित्र बरणन करौं ।
सुनतै पाप नशाय विशद सुपद निर्मल सुरस ॥ १ ॥

चौ० । कंसकथामैंबरणिसुनाई । सुनु हरियथा शकट लौटाई ॥
जन्म नक्षत्र मास यक आवा । गोकुल घर घर बजै बधावा ॥
आये बोलि सकल ब्रजवासी । अरु द्विजबृन्दसकलगुणरासी ॥
आये बोलि सकल ब्रज गोपी । सबै गईं यशुदा चितचोपी ॥
नन्द यशोदा कृष्ण समेता । उपटन मंजन करि अतिहेता ॥
नींद नयन देखा हरिकेरी । तब यशुमति दासी निजटेरी ॥
शीतल मंद सुखद तहँ आऊ । गोष्टद्वार निकट ब्रज राऊ ॥
शकट तरे सय्या तहँ डारी । तुरत बिछाय देहु ब्रज नारी ॥
अस कहियशुमति कृष्णसोवाई । गोपिन मध्यबैठि पुनि जाई ॥
तेहि औसर जागे यदु बीरा । रोय प्रहारे चरण अधीरा ॥
शकट मध्य पग लाग विशाला । अंक दशा टूटे तत काला ॥
गिरी शकट सब बाल पराने । पयदधि घृत नव नीत नशाने ॥
भाजन सकल भग्न तहँ देखा । दधिघृतपयनहिंस्वल्प बिशेषा ॥
यह सुनि नंद कही मृदु बानी । एहिकारण मोहिं कहौ बखानी ॥
गोरस सकल कवन लैगयऊ । रिक्त भांड किमि फूटत भयऊ ॥
बिन स्वारथ प्रभु करै न काजा । रक्षाहेत भये यदुराजा ॥
नंदगिरा सुनि अति हरषानी । बोली बहुरि राधिका बानी ॥
सुनहु पुनीत एक इतिहासा । सौभरि मुनि यमुना तटवासा ॥
कीन्ह आइद्वापर युगमाहीं । काली दहतट जपहि कराहीं ॥
एकबार नारदकर बीना । गावत हरिगुण सुखद नवीना ॥
मुनिवर मुनि सौभरि पहँआये । हरिके विविध चरित तहँगाये ॥

होइहि इहां कृष्ण अवतारा। सुरद्विज पालि हरण महिभारा॥
देवकि गृह जन्मिहि सुरनाथा। आइ नंदगृह करि हि सनाथा॥
पुनिपूतना कथा मुनिगाई। शकट कथा पुनि वरणि सुनाई॥
यहिविधिव्रजनारिनसुखदीन्हा। तृणावर्त्त हति निज पदकीन्हा॥
जेहिविधि यदुपति बदनपसारी। देखैं तीनिलोक महतारी॥
कंसमुंड भांडगति गाई। देवासुर संग्राम सुनाई॥
गर्ग कथागाई मुनिज्ञानी। नाम करण विधिकहीबखानी॥
मदभक्षण अरुबाल विनोदा। विश्वरूप जिमि दीखयशोदा॥
दधि मुख कथा सकल मुनिगाई। गहीमथनिया जिमि यदुराई॥
जिमि बांधे ऊखल महतारी। यमला अर्जुन शापउचारी॥
पुनि वरणों बृंदा वन बासा। कहि मुनि वत्स वकासुरनासा॥
देव अनंद अघा सुर हानी। विधि भ्रम वत्साहरणबखानी॥
बालकहरण वर्ष यक लीला। कीन्ह यथा वरणी शुभ शीला॥
ब्रह्मास्तुति फिरि बालक आये। ब्रह्मा जिमि निज धाम सिधाये॥
जिमि काली मरदहि यदुराई। नागलोक जिमि देहि पठाई॥
गडुर कथा काली दह बासा। मुनिवरबरणीअधिक हुलासा॥

सद्योत्पाटन विपाक॥

काली सुनत क्रोधभा भारी। जन्मत कृष्ण डारिहों मारी॥
जन्म देखि काली इत आवै। गडुरय देखि महाभय पावै॥
निशि भँड़वा सब गयउ जुठारी। गडुरहि बोलि कह्यो गिरधारी॥
गोरस पान करौ सब भारी। शकट भग्न कीन्ही गिरधारी॥
अब नारद करगीत सोहावा। सुनुसौभरिऋषिसनमुनिगावा॥
वर्षा शरद केलि हरि केरी। बधप्रलंब दवदाह निवेरी॥
गोपनके हरि नयन मुदाये। वट भांडीर निकट पहुँचाये॥

गोपी गीत बहुरि मुनि गावा। चीरहरण सौभरिहि सुनावा॥
जांचाओदन द्विजनपरितापा। द्विजपति नितकर कह्यो मिलापा॥
कहि मखभंग इंद्र कर कोपा। महा वृष्टि गिरिवर कर रोपा॥
ब्रज रक्षा हरि तिलक बखाना। नाम गोविंद भयो भगवाना॥
नंदहि बरुण लोकते लाये। पुनि गोपन गोलोक देखाये॥
जेहि विधि रहस कीन्ह यदुराया। है अंतर मोहिं लोकदेखाया॥
जिमि प्रभुआइ रहसनिशिकीन्हा। सकलगोपितनको सुखदीन्हा॥
विद्याधर की शाप उद्धारी। तुम्हरी रक्षा कीन्ह मुरारी॥
शंखचूड़ वधि हमहिं उबारा। नारद सोइ हरियश विस्तारा॥
गोपी गीत बहुरि मुनि गावा। वृषभासुर कर मरण सुनावा॥
केशी वध मुनि बहुरि बखाना। मथुरहि गये सबल भगवाना॥
जेहि विधि यमुना नीर बहाये। जल अक्रूर दरश जिमिपाये॥
जिमि मथुरा देखी यदुनाथा। रजक शीस तोरेहु निजहाथा॥
बायक मालिहि दैव रहाना। कुबिजाहिदरश दीन्ह भगवाना॥
सो मोपर कहि जात न ताता। लज्जा होत कहत यह बाता॥
सो नारद वृत्तांत बखानी। जिमि धनुतोरेहु सारँग पानी॥
पीलकुबजया कर बध कीन्हा। पुनि चांडूर पटकि महि दीन्हा॥
मुष्टिक शलतोशल रण मारे। बहुरि केश गहि कंस पछारे॥
मातापितहि सुखीतबकीन्हा। यदुकुलतिलकनृपहिफिरिदीन्हा॥
सो यश नारद बहु बिधि गावा। सौभरिमुनिकह सकलसुनावा॥
पुनि उपवीत कथा मुनिगाई। बेद पढ़न जिमि गे यदुराई॥
गुरुको तनय आनि जिमि देहै। विद्या सलक सुफल करिलेहै॥
मथुरहि आइ बहुरि यदुराई। उद्धव ब्रजको देहि पठाई॥
ब्रजकी कथा सकल सुनिकाना। पुनि कुबिजा गृहगे भगवाना॥

गये बहुरि अक्रूर निकेता। गाइनि नारद प्रेम समेता॥
इन्द्रप्रथ अक्रूर पठाये। बंधु समेत पिता गृह आये॥
अस्ति प्राप्ति दोउ अति सुकुमारी। कंस मरण लखि भई दुखारी॥
जरासिंधु यह गइ बिलखानी। दशा देखि तेहि दोउ सनमानी॥
तेइस छोहनी दल लै धावा। मथुरा हरि सन युद्ध मचावा॥
सो हरि सेना सकल निपाती। पुनि पुनि लरो न वरणि सेराती॥
तेहि बलभद्र बांधिरण लीन्हा। कहि निजसुहृदछांड़िहरिदीन्हा॥
जिमि हरि द्वारावती बनाई। तहँ यदुवंशिन सकल बसाई॥
यवना सुरकर भस्म प्रसंगा। अरु मुचुकुंद कथा रसरंगा॥
जरासिंधु उद्वेग बखानी। रणछोरक भे सारँग पानी॥
भाजि प्रवरषण गे द्वउ भाई। जरासिंधु गिरि दीन्ह फुकाई॥
रैवत गृह बलभद्र विवाहू। बृद्ध रेवती कर भा लाहू॥
हरियहिविधि रुक्मिणी बिवाहा। खलदल सकल जीतिरणमाहा॥
पुत्र हेत प्रभुगे कैलासा। घंटा सुरकी मुक्ति प्रकासा॥
तपकरि पुत्र पौत्र वह पाये। शिव प्रसन्नकरि निजगृहआये॥
जन्म प्रद्युम्न केर मुनि वरणा। जिमि सूता गृहते सुतहरणा॥
रति मिलाप संवर सुरघाता। पुनि गृह आनि मिलनपितुमाता॥
मणि प्रसंग सत्राजित करणी। सकल प्रसेन कथा मुनिवरणी॥
जाम्बवान जिमि कीन्ह लराई। हरि जिमि जाम्बवती मणिपाई॥
यथा बिवाहि लीन्ह सतिभामा। सुधनु निपात कीन्ह घनश्यामा॥
इंद्रप्रस्थ जिमि गे यदुराई। मिले पांडुसुत जेहि विधि आई॥
खांडव वन यहि भांति जरावा। यहि विधिमयदानवजरतिबचावा॥
सभा सुधर्मा जिमि बनवाई। मृगया गये बिजय यदुराई॥
कालिन्द्री कर कहो बिवाहू। कुशस्थली आये यदु नाहू॥

यथामित्र बिन्दा हरिव्याही। नग्न जीति कर मिलन सराही॥
पुनि मुनि कथा लक्ष्मण केरी। बरणि सुनायहु मुनिहि घनेरी॥
ये आठौ हरि की पट रानी। षोड़स सहस भौम वधि आनी॥
पारिजात कर हनव वहोरी। रुक्मिणि हास विलास न थोरी॥
पुत्रन पौत्र जन्म मुनि गावा। पुनि प्रद्युम्न कर ब्याहु सुनावा॥
जिमि अनुरुद्ध विवाह उछाहू। रुक्मिणिमरण विजय यदु नाहू॥
पुनि अनुरुद्ध विषय रस ऊखा। हरण चित्र लेखा दुख सूखा॥
शंकर कृष्ण युद्ध ज्वर घोरा। बाण बाहु कृतन मद तोरा॥
मुनि मग कथा बहुत बिधि गाई। संकरषण बृज गमन सुनाई॥
गोपी गोप अनन्द उछाहू। यमुना कर्षण कृत यदु नाहू॥
बधिपौंड्रक जिमि हरिपददीन्हा। काशी दाह चक्र जिमि कीन्हा॥
कही सुदक्षिणकी मुनि करणी। फिरि अभिचार घातसब बरणी॥
बानर द्विविद युद्ध मुनि ज्ञानी। संकरषण गुण विशद बखानी॥
दुरयोंधन तनया हरि आनी। शाम्बयुद्ध मुनि सकल बखानी॥
इन्द्रप्रस्थ जिमि गे बल दाऊ। पुर कर्षण लखि लोक कुभाऊ॥
शाम्ब बिवाहि द्वार कहि आये। यदुपुर घर घर बजत बधाये॥
नारद देखि चरित हरि केरे। गृहगृह बिबिधभांति करि फेरे॥
सभा मध्य बैठे यदुराई। नारद पांडव कथा सुनाई॥
राजदूत भाषित सुनिकाना। यदुपति चले बजाइ निशाना॥
इंद्रप्रस्थ पहुँचे यदुराई। राजसूय हितकीन्ह उपाई॥
अर्जुन भीम कृष्ण त्रयसंगा। मागध सन रचौ रनरंगा॥
भीमसेन रणमागध मारे। नृपबंधनते सकल उबारे॥
यज्ञ कथा बरणी मुनिराई। जिमि शिशुपालबधे यदुराई॥
जलथल भांति सुयोधनकेरी। वैरभाव इतिहास घनेरी॥

सब नृप मुनिवर बिदा कराये। यहि बिधि कृष्ण द्वारकहिआये॥
मारो शाल्व क्षोभ हरितोरा। दन्तवक्त्र जिमि बधो कठोरा॥
यहि विधि नाथ विदूरथ मारा। सुमन वृष्टि नभ भई अपारा॥
कुं०। कालीदहपर हरिकथा नारद वरणन कीन्ह।
सो प्रसंग कद्रूतनय सुनत क्रोध अति कीन्ह॥
सुनत क्रोध अति कीन्ह वैर हरिसों करिभाखा।
पन्नगारि भयमानि शकट पर गोरस चाखा॥
रामभजन कविकहै शकट भाण्डव हरि फोरे।
अद्भुत कृष्ण चरित्र सदा बस मानस मोरे॥

इति श्रीराधाविषादमोचनावल्यांरामभजनत्रिवेदीविरचितायांकृष्णलीला वर्णनोनाम सप्तदशोऽध्यायः १७॥

श्लोक। अष्टादशेभारतञ्चवंश।सपाण्डवसंगमम्।
पर्वाणांत्रयमाख्यानंनारदंगीतमीरितम्१॥
दो०। राधा माधव ध्यान धरि गौरिगणेश मनाय।
रामभजन विरचितकियो श्रीगुरु आशिषपाय॥
चौ०। भारतबंशकथा मुनिगाई। सन्तन कथा कही समुझाई॥
पुनि गांगेय जन्म मुनि गावा। गंगा शान्तनु बिरह सुनावा॥
मुनि मत्स्योदरि जन्म बिहारा। बहुरि व्यास लीन्हो अवतारा॥
शान्तनु मत्स्योदरि सतसंगा। चित्रांगद कर जन्म प्रसंगा॥
भये विचित्रवीर्य्य यहि भांती। गाइनि भीषम की गुणपांती॥
काशिराज तनया त्रय हरना। कुँवर बिवाह भाति बहु बरना॥
अंबा परशुराम सम्बादा। परशुरामकर युद्ध प्रसादा॥
यहि बिधि भीषम गुणगणगाये। अम्बातप मुनिवरनि सुनाये॥
तपकरि बहुरितजे जिमि प्राणा। भये शिखण्डी वेद प्रमाणा॥

चित्रवीर्य चित्रांगद बीरा। मातृदोषलगि तजे शरीरा॥
मत्स्योदरी बंश हित ब्यासा। आनि बोलाये बहु अनयासा॥
दरशन मात्र तीनि सुत भयऊ। मुनिवर पुनि बदरीवन गयऊ॥
सुत धृतराष्ट्र अम्बिका जाये। अम्बालिका के पांडु सोहाये॥
दासी पुत्र बिदुर जग जाना। सुतधृतराष्ट्र के तनय बखाना॥
तिनमहँ दुर्योधन बलवाना। गान्धारी सुत परम सयाना॥

दो०। शूरसुता बसुदेव की स्वसा पृथा ये नाम।
कर्दम त्रियके मंत्र से सूर्य बुलाये धाम॥

चौ०। सूर्यते करणभये लरिकाईं। राखि मँजूषा दीन्ह बहाई॥
भाग्यसे गान्धारी सुत पावा। सेवाकरि बहुभांति जियावा॥
कुन्तिहिं ब्याहि पाण्डु घर आये। बहुरिजाय माँद्री हरि लाये॥
पांडु गये बन सघन शिकारा। तहँ द्विजदंपति करत बिहारा॥
मृगरूपी मुनि बध नृप कीन्हो। ताकी त्रिया शाप यह दीन्हो॥
जो त्रियअंग संग नृप करिहौ। छुवतै तासुदेह तुम मरिहौ॥
असकहि सती देह निज त्यागी। आयेगृह गलानिमन लागी॥
कुंती नृप उदास मन देखा। पूंछो सब बन चरित बिशेखा॥
कहकुन्ती नृप सन प्रिय बानी। अनसुइया की कथा बखानी॥
देवहुती कर मन्त्र सुनावा। यह सुनिके नृपके मन भावा॥
करि स्नान मन्त्र जपि बाला। धर्मराज प्रकटे ततकाला॥
तिनते जन्म युधिष्ठिर केरा। पवन ते इन्द्र भीम पुनि टेरा॥
अर्जुन भये विष्णु अवतारा। नरऋषिसोइ जोइ धर्मकुमारा॥
माद्री बहुत बिनय जब कीन्हा। मंत्र बताय ताहि पुनि दीन्हा॥
नकुल अश्विनी के सुत भयऊ। बहुरिकुमार बोलि तेहि लयऊ॥
सो सहदेव महाबल खानी। पांडु बहुरि माद्री सनमानी॥

छुवतै प्राण त्याग नृप कीन्हो। माद्रिहि सत्त्व विधाता दीन्हो ॥
कुंती पुत्रन हित तन राखा। सेये सकल बहुत अभिलाखा ॥
लोकपाल सम बल सब केरे। दुर्योधन चित सोच घनेरे ॥
भीमहि देखि महाबलवाना। दीन्ह गरल ईर्षा मन ठाना ॥
राखि गोविन्द लीन्ह तेहि जाई। पुनि लाक्षागृह बिरचि बसाई ॥
पुत्रन सहित पृथा गृह जारा। तहां जाइ हरि सबहि उबारा ॥
पहुँचे द्रुपद नगर सब भाई। राज चिह्न तन सकल दुराई ॥
यज्ञकुण्ड जन्मी महरानी। रूपवती द्रुपदी जगजानी ॥
तासु स्वयम्बर हित सबराजा। आये सजि निजसैन समाजा ॥
दुर्योधन आदिक सब बीरा। मत्स्य बेधकरि भये अधीरा ॥
कहेउ द्रुपद निज भुजा उठाई। कोइ महिवीर न परत देखाई ॥
रहिहि कुमारी कुमरि हमारी। नृप कुलुलाज भई जगभारी ॥
अर्जुन उठे सुनत नृप बानी। भेष कपरिया अतिबलखानी ॥
भिक्षुक बंश भयो सुख भारी। राखै विधना लाज हमारी ॥
विप्र रूप धरि हरि तहँ आये। अर्जुन जानि महासुख पाये ॥
ताल शब्द करि कहत मुरारी। मत्स्यवेध इति वचन पुकारी ॥
तबलगि पार्थ बाण तेहिमारा। जयतिजयतिइति कृष्ण पुकारा ॥
द्रुपद द्रौपदी कर गहि आनी। दीन्हसमर्पि जानि बलखानी ॥
लै द्रौपदिहि चले कुरु बीरा। धाये सब नृप भै अति भीरा ॥
देखि युधिष्ठिर नृप तहँ धाये। भाइन सहित तुरत चलिआये ॥
भीमसेन लै परिघ अपारा। राजन सहित कटक संहारा ॥
अर्जुन भीम नकुल के मारे। भाजे दल नहिं थँभत प्रचारे ॥
दुर्योधन आदिक सब बीरा। चले भाजि रणधरहिं न धीरा ॥
यहिविधि बिजय पांडुसुतपाये। लै द्रुपदी कुन्ती पहँ आये ॥

कुंती सुतन कही प्रिय बानी। बल मुकुला सबकी जहँ रानी॥
द्रुपद जबहिं पाण्डवनृप जाने। लै गृह बहुत भांति सनमाने॥
करि बिवाह दायज बहु दीन्हा। पाण्डवभवनगमन निजकीन्हा॥

नन्दउवाच॥

राधे द्रुपदा पंच भतारी। केहि कारण मोहिंकहौ दुलारी॥

राधोवाच॥

पूरब जन्म बेदमति नामा। यहि बरदान दीन्ह श्रीरामा॥
सो प्रसंग फिरि कहब बखानी। जेहिते पांच पुरुष यक रानी॥
यक गाई पर बृषभ समूहा। कहि कटुबचन हँसी करिहूहा॥
गाइ कि शाप पांच पति पाये। सो प्रसंग हम तुमहिं सुनाये॥
पाण्डवब्याहि गजाह्वय आये। घर घर प्रतिदिन बजत बधाये॥
दुर्योधन सुनि पुनि दुख पाये। मंत्री जन सब सदसि बोलाये॥
शकुनि करण दुश्शासनआदी। कीन्ह कुमन्त्र धर्म अपवादी॥
धर्मराज कहँ बोलि पठाये। अनुजन सहितसभाचलिआये॥
यज्ञ प्रसंग न तुमहिं सनावा। आगे कहब सुनो यह भावा॥

दो०। भीष्म द्रोण धृतराष्ट्रकहँ औ कुलबृद्ध समेत।
करिप्रणाम नृप अनुजयुत बैठे सभानिकेत॥

चौ०।तबकहशकुनिबचनरुखजानी।खेलहु नृप चौपरि तहँआनी॥
धर्मराज दुर्योधन पांसा। खेलतदोउ मन परमहुलासा॥
दुर्योधन प्रण देश लगावा।छलकरि निजपणकहिगोहरावा॥
चौदह बर्ष बास बन राखी। पण ममपरा दीन्हछल साखी॥
गृहरानी पुनि दीन लगाई। ममपणकहि यह सबहि सुनाई॥
पुनि दुश्शासन तुरत पठावा। द्रुपदिहि खैंचि महल ते लावा॥
कह दुर्योधन बस्त्र उतारी। दे मम जंघ सपदि बैठारी॥

तब पट गहे दुश्शासन जाई। भीम गदा कर लीन्ह उठाई ॥
चापे अधर नयन अरुणारे। धर्मराज करि सैन निवारे ॥
जङ्घा भंग हेत प्रण कीन्हा। करते गदा डारि महि दीन्हा ॥
धनुष बाण करगहि महिराखे। करिसङ्कल्प पार्थ मन माखे ॥
नकुलनिरखिपुनिपुनि रहिजाई। मींजहिकर निजदशन चबाई ॥
अरुण नयन पटके भुजदण्डा। भा सहदेवहि क्रोध प्रचण्डा ॥
द्रुपदी नृप मुख निरखि अजोरी। जिमिशशिबिम्बहिबालचकोरी॥
भीषम द्रोणहि कृपहि निहारी। बैठे सब गइ लाज हमारी ॥
तब हरिशरणागत मन कीन्हो। सबको छांड़ि आसरा दीन्हो ॥
अब तुम कहां द्वारका बासी। गई लाज राखहु मैं दासी ॥
खैंचत चीर दुशासन हारा। बढ़तजात नहिंजात सँभारा ॥
तबलगि तहँ आये यदुराई। कहिअनुचित नृपनीति सुनाई ॥
द्रुपदी सहित पाण्डुसुत साथा। जहँ कुंती तहँ गे यदुनाथा ॥
कीन प्रबोध द्वारकहि आये। सानुज नरपति बनहि सिधाये ॥
तबलग बन आये दुरबासा। संग सहसदश शिष्य उदासा ॥
यांचि अन्न असनानहि गयऊ। राजा मन तब बिस्मय भयऊ ॥
सकल शाप कारण भय पाये। सब तजि हरिसुमिरण मनलाये ॥
तबलगि आये कृष्ण मुरारी। कहनृप मोहिं क्षुधा श्रमभारी ॥
द्रुपदी बेगि थली लै आवहु। करिउपाय कछु मोहिंजेमावहु ॥
यह सुनि सूरजथाली लाई। शेष अन्न जेयें यदुराई ॥
करि जलपान डकारत भयऊ। मुनिन उदर अशेष भरिगयऊ ॥
क्षुधाहीन मुनि अनत पराने। तब नृप कृष्ण बहुत सनमाने ॥
गये यदुपुरी यदुकुल नाथा। बनमें बसत भये नरनाथा ॥
बन कलेश नृप बहुत उदासा। तबलगि तहँ आये मुनिव्यासा॥

अनुजन सहित कीन्ह परनामा। पूछी कुशल दीन्ह बिश्रामा॥
कहा युधिष्ठिर दोउ करजोरी। नाथ सुनो बिनती यक मोरी॥
यहि जग भये बहुत नरनाथा। मोहिंसमबिपतिअनुजत्रियसाथा॥
केहि पाई जगजात न जानी। तुम त्रिकालदरशी मुनिज्ञानी॥
कही ब्यास सुन नृपतिसुजाना। तोहिनहिं दुख सहायभगवाना॥
राजा नलकी बिपति सुनाई। जिमि बनबास कीन्ह रघुराई॥
नृप कह रामचरित मोहिंभाखौ। दुखसमुद्र बूड़त तुम राखौ॥
यह सुनि ब्यास बहुत हरषाने। रामचरित सब सुखद बखाने॥

कुं०। राम चरित जे सुनहिं नर कहैं सदा मन लाइ।
तिनके सकल मनोरथ सिद्ध होहिं कुरुराइ॥
सिद्ध होहिं कुरुराइ जाइ बैकुण्ठ बसावैं।
मन बच क्रम धरिध्यान सदा रघुपति गुणगावैं॥
राम भजन कबि कहै भक्ति हरिकी मैं पावौं।
सुमिरौं निशि दिन राम सदा प्रभुके गुणगावौं॥

इति श्रीराधाविषादमोचनावल्यांरामभजनत्रिवेदीविरचितायांश्रीभारत कथावर्णनोनामाष्टादशोऽध्यायः १८॥

श्लोक। रामायणंनवदशेकथामृतमुदीर्य्यते।
नानाकर्मविपाकेनविषादशमनंतथा १॥

सो०। सुनहु नंद चितलाइ राम चरित वर्णन करौं।
नारद गीत सुनाइ ब्यासगीत कुरुराज पहँ॥

चौ०। बालमीकिनारदसम्बादा। कही कथा मुनिक्रौंचनिषादा॥
एक पद्य रामायण गाई। जिमि नारदमुनि मुनिहिसुनाई॥

नारदउवाच॥

केहि बिधि रामायणजगजानी। बालमीकि क्रिमि कही बखानी॥

राधोवाच ॥

मित्रावरुण यज्ञ जगभारी। नाचत तहां उर्बशी नारी ॥
सकल देव मुनि कामी भयऊ। घटमँगाय बीरज डुहिदयऊ ॥
सो उर्बशी पान कछु कीन्हा। बांबी बीच नाइ कछु दीन्हा ॥
मुनिबशिष्ठ जिमि शापहि पाई। गर्भ उर्बशी जन्मे जाई ॥
लीन्ह अगस्त्य जन्म घटमाहीं। पियत सिन्धुमुनिकाश्रमनाहीं ॥
बालमीकि बांबी ते भयऊ। तेहि उपदेश देवऋषि दयऊ ॥
तारकमन्त्र जपो बहुकाला। उपजो तेहितन तेजबिशाला ॥
एक समय निषाद बन आवा। पक्षी क्रौंचहि मारि गिरावा ॥
क्रौंची देखि बिकल भै भारी। करत बिलाप नयन बहैबारी ॥
बालमीकि तेहि शापसुनाई। पद्य विचित्र सुनहु ब्रजराई ॥

श्लो०। मानिषाद प्रतिष्ठात्वमगमः शाश्वतीः समाः।
यदेकमवधीरत्र क्रौञ्चं काम विमोहितम् ॥ १ ॥

चौ०।नारदआइअर्थतेहिकीन्हा। रावण क्रौंचनाम कहि दीन्हा ॥
मानिषाद रघुवीर बताई। तब मुनिवर रामायण गाई ॥
सूर्य्यवंश जे भये नरेशा। ब्रह्माके मरीचि सुतकेशा ॥
सूर्यके वैवस्वत मनुभयऊ। मत्स्यपुराण प्रलय सुनिलयऊ ॥
तिनहिं कीन्हप्रभु अवधनरेशा। कोशलेश पाले सब देशा ॥
वैवस्वत मनुकथा बखानी। कहिइक्ष्वाकु विकुक्षि किहानी ॥
वरणि दिलीप कथा मुनिराऊ। पुनि रघुचरितकह्योसतिभाऊ ॥
अजको जन्म विवाहउछाहू। दशरथभे जिमि भयो विवाहू ॥
पुत्र उपाय बशिष्ठ बताये। जेहिविधिशृंगीमुनिहिंबोलाये ॥
रोमपाद दशरथ के मीता। शृंगिहि कन्यादई सुभीता ॥
शृंगीमुनि सुमंत लैआये। तिन पुत्रेष्टी यज्ञ कराये ॥

यज्ञ विष्णु प्रकटे हवि लीन्हे। पायसपात्र नृपहिप्रभु दीन्हे॥
रानिनभाग बाँटिनृप दीन्हे। गे मुनि सकल दक्षिणा लीन्हे॥
तबे देव त्रिथिलोक सिधाये। रावणत्रास बहुत दुखपाये॥
संग देव लैचले विधाता। क्षीरसिंधु तटगे सुरत्राता॥
अस्तुति करत भई नभबानी। हम अवतारलेब जगआनी॥
रघुकुल दशरथके गृह माहीं। जन्महु जग तुमका भयनाहीं॥
बानर ऋक्ष सहायक मोरे। राक्षस नाश करब कर तोरे॥
यह सुनि सकल देव हरषाई। बानर भालुभये महिआई॥
अब प्रभुजन्म कथा ब्रजराई। सुनहुतात तुम मन चितलाई॥
अर्द्धभाग कौशल्यहि दीन्हा। पायसभाग नृपति दुइकीन्हा॥
तेहिते रामलीन्ह अवतारा। भये अवधपुर मंगलचारा॥
अर्ध भाग लै केकयि रानी। जन्मे भरत महागुणखानी॥
दोउ निजअर्द्धसुमित्रहि दीन्हा। शेषचक्र दोउ जन्महिलीन्हा॥

श्लोक। यःकर्णाञ्जलिसम्पुटैरहरहःसम्यक्पिबत्यादराद्वाल्मीकेर्वदनारविन्दगलितं रामायणाख्यंमधु। जन्मव्याधिजराविपत्तिमरणैरत्यन्तसोपद्रवं संसांरसविहायगच्छतिपुमान् विष्णोःपदं शाश्वतम्॥

चौ०। रामजन्ममुनिबरणिसुनावा। अवध अनंद उछाह बधावा॥
लक्ष्मण भरत शत्रुहन केरा। जन्म उछाह प्रमोद घनेरा॥
बाल चरित सब भाइनकेरा। विविधभांतिमुनिबरणिघनेरा॥
अन्नकर्म मुंडन उपवीता। वेदपाठ नृपनीति विनीता॥
विश्वामित्र आगमन गावा। बहुरि ताडका निधन सुनावा॥
राम यज्ञ रक्षा जिमि कीन्ही। बधि सुबाहु उत्तमगतिदीन्ही॥
एकबाण मारीचहि मारो। तेहि पुनि लै सागर तटडारो॥

चले जनकपुर का मुनिसाथा। तारि अहल्या कीन्ह सनाथा॥
रामचरण रज ते गति पाई। अस्तुति करि हरिलोकसिधाई॥
गंगा तट पहुँचे रघुवीरा। सगरकथा बरणी मुनिधीरा॥
कुल सरिकथा सुनत अनुरागे। करि परणाम चले प्रभु आगे॥
धनुषयज्ञ आये दोउ भाई। देखि रूप सब रहे लोभाई॥
जनक सबै लै भवन टिकाये। सुमनलेन दोउ बन्धु सिधाये॥
सखिन संग सिय गईँ फुलवारी। रामहि निरखि भयो सुखभारी॥
पुनि पुनि गौरि गणेश मनाई। राम हृदय धरि भवन सिधाई॥
होत प्रात नृप चार पठाये। राजसमाज बोलि लैआये॥
रावण आनि प्रथम धनुलीन्हा। बीसौं करन बहुत बलकीन्हा॥
दबिगे कर नहिं छुटत छुटाये। बाणासुर तब आनि छुड़ाये॥
सब नृप हारे धनुष न डोला। तब नृपजनक वचन यक बोला॥
नहिंकोइ बीर अहै क्षिति माहीं। सुनत बचन तब लषण रिसांहीं॥
अनुचित जनककहत प्रभुआगे। तोरि हैं समधनुष क्षणलागे॥
तुरतै राम धनुष करलीन्हा। तोरिखण्ड युग महिधरिदीन्हा॥
धनुषभंग धुनि सुनि मुनि धाये। परशुराम तुरतै चलिआये॥
धनुष कुठार तूण दुइ बांधे। मुनिवर बेष पीतपट कांधे॥
कहु नृप जनक शम्भु धनुतोरा। देव बताइ शत्रु वह मोरा॥
तुम समेत मारौं रणमाहीं। यहसुनि पुनि तबलषणरिसाहीं॥
मुनिवर वचन न कहत सँभारी। इहां अछत रघुवीर निहारी॥
रे नृपबालक सुनें न मोहीं। ब्रह्मचर्य क्षत्रीकुल द्रोही॥
यकइसबार क्षत्र बिन कीन्हा। भूमिदान बिप्रन कहँ दीन्हा॥
कहि कटु भृगुबर परशु उठावा। रामानुज धनुबाण चलावा॥
कह लक्ष्मण सुन नृपकुलघाती। तोहि निपाति जुड़ावौं छाती॥

विश्वामित्र तुरत उठिधाये। कहिप्रियबचन बहुत समुझाये॥
जनक सिया लै चरणन डारे। पुत्र पौत्र कहि मुनिहिनिवारे॥
हर्षि जनक इइ दूत पठाये। दशरथ साजिबरात पुर आये॥
चारिउ सुत बिवाहि पुनि राजा। चलेभवननिज सहितसमाजा॥
परशुराम मग मिले बहोरी। पाँयन परे नृपति करजोरी॥
परशुराम मग मिले रिसाता। कहुनृप केहिधनुकीन्हनिपाता॥
राम प्रणाम आइ तब कीन्हा। सबै सभय लखि उत्तर दीन्हा॥
जाना मुनिवर भा अवतारा। करिजयजयति बनहिंपगुधारा॥
देखि प्रताप सुमन सुर बर्षे। दशरथ भवन गये मन हर्षे॥
अवधपुरी अति भयहु उछाहू। गुर पुरजन परिजन सब काहू॥
कौशल्यादि मातु उठिधाई। परिछन करि मंदिर लै आई॥
कुलब्यवहारसकलविधिकीन्हो।याचकद्विजन अयाचककीन्हो॥
बहुत दिवस बीते यहि भाँती। होत उछाह जात दिनराती॥
मातुल संग भरत ननिहारा। सानुज कैकय पुर पगुधारा॥
इहां नृपति मन कीन्ह बिचारा। अब आवा पन चौथ हमारा॥
गुरु सलाह करि साजि समाजू। रामहि सपदि देउ युवराजू॥
सभा मध्य सुमंत्र नृप टेरे। तिलक समाजकरहु कहि प्रेरे॥
यह सुनि सबहि भयो सुखभारी। इन्द्र जानि शारदा हँकारी॥
करु उचाट मातु मम हेतू। राम जाहिं बन अनुज समेतू॥
तेहि मंथरा आनि बौराई। कैकय सुतहि कुपाठ पढ़ाई॥
तेहि वर मांगि राम वर दीन्हा। यह नृप जानि बहुत दुखकीन्हा॥
लखि सकोच बन पठवन हेता। चले राम सिय अनुज समेता॥
राम संग सब पुर नर नारी। चले सकल सुख सदन बिसारी॥
राम बिरह दुख कहो न जाई। तेहिते स्वल्प कथा मैं गाई॥

तमसा तीर प्रथम दिन बासा। तेहिदिनसबमिलि कीन्हउपासा॥
सोवत सबहि छोड़ि रघुराई। गये निशा रथखोज दुराई॥
सुरसरि तीर उतरि रथ फेरा। गे सुमंत्र गृह दुःख घनेरा॥
तन तजि दशरथ गे सुर लोका। आइ भरत करि कर्म सशोका॥
शृंगबेरु पुर बसि दोउभाई। चले निषादहि संग लिवाई॥
सुरसरि उतरि राम गे पारा। बोटु धोइ पद निज कुरु तारा॥
पहुँचे सीता सहित प्रयागा। करि स्नान बहुत अनुरागा॥
भरद्वाज आश्रम प्रभु आये। मुनिवर दरश पाइ सुख पाये॥
करि प्रणाम सिय अनुजसमेता। चले बनहि प्रभु कृपा निकेता॥
बालमीकि आश्रम प्रभु आये। सुनि मुनिवर सादर उठिधाये॥
राम सिया गुह अनुज समेता। कीन्ह पहुनई मुनि अति हेता॥
रामायण मुनि गाइ सुनाई। आगे चले बहुरि रघुराई॥
चित्रकूट पहुँचे रघुनाथा। फिरो निषाद नाइ पद माथा॥
भरत राम दरशन लगिराजा। गुरु पुरजन सब संग समाजा॥
चले सकल सुर सरि तट आये। मिलो निषाद परम सुख पाये॥
आगे तब निषाद करि लीन्हो। पुनि तीरथपति दरशन कीन्हो॥
करि स्नान चले दोउ भाई। भरद्वाज कीन्ही पहुनाई॥
चित्रकूट पहुँचे सब लोगा। ब्याकुल कृशतन राम वियोगा॥
भरत राम मिलाप मुनि गावा। जनक आगमन बहुरि सुनावा॥
जनक राम लखि अति सुखपावा। तब सियराम लषण शिरनावा॥
तब लगि मिले बसिष्ठ बहोरी। चरणन परे राम करजोरी॥
मातन बहुरि मिले दोउ भाई। सीता सहित चरण शिरनाई॥
कृपा दृष्टि सब लोग निहारे। राम निरखि सब भये सुखारे॥
बैठारे सब करि सनमाना। कुशलप्रश्नकरि कृपानिधाना॥

तब वसिष्ठ सब कथा सुनाई। मुनि दुख कीन्ह बहुत रघुराई॥
तात तात करि कीन्ह बिलापा। करी तिलांजलि क्रियाकलापा॥
पूर्व कर्म नृप कथा सुनाई। कही वसिष्ठ सबहि समुझाई॥
औरउ एक कथा मुनि गाई। दशरथ नृपति शिकार सुनाई॥
अंधी अंध कथा मुनि बरणी। कही बहुरि पुनि सरवन करणी॥
जिमि नृप शब्दबेध शरमारा। सरवन हा पितु मातु पुकारा॥
दशरथ तुरत तहां चलि आये। सरवन मरण देखि दुख पाये॥
कह सरवन नृप जल लैजाई। मात पिता मम देहु पियाई॥
असकहि सरवन सुरपुर गयऊ। दशरथ नीर कमंडल लयऊ॥
अंधी अंध कहा सुत आवौ। सपदि नीरलइ मोहिं पियावौ॥
तात पियहु जल इति नृप भाखे। नहिंसुत स्वर यह कहिमनमाखे॥
कह मम तनय कवन तुम आये। तब नरपति वृत्तांत सुनाये॥

कुं०। पुत्र पुत्र हा पुत्र कहि बहु बिधि कीन्ह बिलाप।
पुत्र दुःख नृप मरण तब दै दोउमरे सराप॥
दैदोउ मरे सराप पुत्र दुख नृप तनु त्यागा।
बसो जाइ हरिलोक पिता तब परम सभागा॥
पंडित राम भजनयह गाइनि रामचरितशुभकारी।
राम भक्ति तेहि होइ सुनै जे नर अरु नारी॥

इति श्रीराधाविषादमोचनावल्यांरामभजनत्रिवेदीविरचितायांरामायण
विरचितायांनामएकोनविंशतितमोऽध्यायः॥ १९॥

श्लोक। ऋषीणांदर्शनंविंशे सीताहरणमेवच।
वालीवधंचलंकायां राक्षसानांवधंतथा॥ १॥

दो०। राधा माधव ध्यानधरि गणपति गौरि मनाइ।
राम भजन वर्णन कियो श्री गुरु आशिषपाइ॥

चौ०। यह सब कथा सुनै नरनारी। राम शोच कीन्ह्यो अतिभारी॥
यहि विधि सबहिं मिले रघुबीरा। जिमि कछु कही भरतमुनिधीरा॥
सो मुनि राम सकल समुझाये। लै पादुका भरत घर आये॥
चित्रकूट बसि सिया समेता। नेम धर्म व्रत करि अति हेता॥
सुनहु युधिष्ठिर कथा सुहाई। यहि विधि चरित कीन्ह रघुराई॥
करि जयंत शिक्षा बलबीरा। अत्रि भवन आये रणधीरा॥
अत्रि राम मिलाप मुनि गावा। अनसूया पतिवरत सुहावा॥
दत्तात्रेय चन्द्र दुर्वासा। कीन्ह पहुनई बहुत हुलासा॥
आगे चले बनहिं दोउ भाई। मुनि बिराध बध कथा सुनाई॥
कह शरभंग सुतीक्षण करणी। बहुरि अगस्त्यकथामुनिवरणी॥
पंचवटी जिमि बसि रघुराई। मिलेआइ तहँ गृद्ध जटाई॥
शूर्पणखा आई यहि भांती। लक्ष्मण नासा कान निपाती॥
खरदूषण रण सकल प्रसंगा। चौदह सहस सुभट दलभंगा॥
पुनि रावण पहँ गइ सुपनेखा। मुनि वृत्तान्त दशा तेहि देखा॥

उक्तञ्च बाल्मीकिये॥

प्रसीदलंकेश्वरराक्षसेन्द्रत्वंयाहिलंकाम्भवसाधुवृत्तः॥
त्वंस्वेषुदारेषुरमस्वनित्यंरामःसभार्योरमतांवनेषु॥ १॥

गा मरीच पहँ तुरत पठावा। कांचनमृगहोइ सियहिदिखावा॥
आनहु यहमृग मुनि रघुनाथा। मायामृग पीछे धनुहाथा॥
तब प्रभु जाइ दूरि मृगमारा। हालक्ष्मणकहि कीन्ह पुकारा॥
सीता लक्ष्मण तुरत पठावा। तेहि औसर रावण चलिआवा॥
भिक्षामांगि सियहि हरि लीन्हा। करतविलापगमन गृह कीन्हा॥
सुनि खगपति धावा बलवाना। युद्ध कीन्ह नहिं जातबखाना॥
चोंचन रावण अंग बिदारी। रथते सीतहि लीन्ह उतारी॥

तव रावण पावकसर मारा। जेरेपंख निजपुर पगुधारा॥
आश्रम शून्य देखि रघुराई। खोजतसकलविपिनदोउभाई॥
पराबिकल महि देखि जटाई। सिया हरण तेहि कथा सुनाई॥
असकहि खगपति गे हरिधामा। करि तेहि क्रिया चले बनरामा॥
बधिक बंध शबरी गृह आये। दै तेहि भक्ति मधुरफल खाये॥
पंपासर नारद संवादा। हनुमत मिलन कपीशप्रसादा॥
पुनि सुग्रीव मिताई गाई। बालिकथा सब बरणि सुनाई॥
दुंदुभि युद्ध बालि बरदाना। इन्द्र प्रसाद अमर फल दाना॥
शेष प्रसाद ताल जिमिजामा। बालिबैरिजान्यो जिति रामा॥
बहुरि बालि सुग्रीव लराई। बालिमरण मुनि नृपहिंसुनाई॥
जिमि सुग्रीव भये कपिराजा। रामकृपा अंगद युवराजा॥
राम प्रवर्षणबास सुनावा। कपिपतिजिमिसियखोजकरावा॥
अंगद जामवंत हनुमाना। द्विविदमयन्द कुमुदबलवाना॥
खोजतचले सिन्धुतट आये। मिलि संपाति सियासुधिपाये॥
सबमिलि तब पठये हनुमाना। लंकहि चले हरषि बलवाना॥
सुरसहि जीति निशाचर मारी। लंकहि गये महाबल भारी॥
रावण नगर सकल कपि देखा। बसै निशाचर परै न लेखा॥
रावण मन्दिर बहुरि निहारी। तहँ न दीख कपि जनकदुलारी।
मनमहँ शोच बहुत कपिकीन्हा। बहुरि बिभीषण गृहपगुदीन्हा॥
रामभक्त लखि ताहि जगाई। तासों जनकसुता सुधिपाई॥
तब अशोकवटिका सिय पाई। रामकथा कपि सकल सुनाई॥
पुनिरावण भंजी फुलवारी। खाइ मधुरफल वृक्ष उखारी॥
रक्षक बहुत तहां कपि मारे। रावणसुत फिरि अक्षय सँहारे॥
मेघनाद तब कीन्ह लराई। बहुबिधिकीन्ह बरणिनहिजाई॥

तब सोइबांधि ताहि लै गयऊ। तब रावण भाषत यह भयऊ॥
बसन लपेटि तेल लै बोरी। पूंछजराय देहु कपिछोरी॥
जारत पूंछ देखि कपि राई। चढ़े निमुकि महलनपर जाई॥
लंकाफूंकि सियापहँ जाई। चूड़ामणि लै पद शिर नाई॥
सिन्धुनांघि रघुपति पहँ जाई। जनकसुता की खबरि जनाई॥
तब रघुपति कपिपति सनभाखा। साजहुदल बिलम्ब कहराखा॥
यह सुनि कपिपति वानरयूथा। चले संगलै प्रबल बरूथा॥
उतरेदल सागरपर जाई। तुरत सिन्धु प्रभु लीन्ह बँधाई॥
मिले बिभीषण द्वौकर जोरी। तिलकराम तेहि कीन्हबहोरी॥
रामेश्वर शिवथापि पुजाई। फटिकशिला उतरे रघुराई॥
बालितनयबल प्रबल बुलावा। लंकहि रघुपति दूतपठावा॥
रावणतनय बीचकपि मारा। गये सभापुनि बालिकुमारा॥
सुतबध सुनि दशकन्ध पुकारे। पटकहु पदगहि सुभट प्रचारे॥
यहसुनि वालितनय पदरोपा। टरा न पद रावण तब कोपा॥
उठत देखि कपि द्वौ भुजदंडा। पटकिसिमहिबल प्रबलप्रचंडा॥
डोली महि सिंहासनहाला। सभादशानन गिस्यो बेहाला॥
मुकुट उठाइ चारि कपि लीन्हे। प्रभुपहँ कूदि फेंकि तेहिदीन्हे॥
कपिदल चकित देखि हनुमाना। गहिकिरीटकहँ प्रभुपहँआना॥
बालितनय रावण समुझावा। बलदिखायनिजदलचलिआवा॥
चारि अनी दलकरि सुग्रीवा। घेरी लंक महाबल सीवा॥
निशिचरअनी प्रबल रण आई। विविधिभांति तिनकीन्हिलराई॥
परवतवृक्ष पाश शर शूला। परिघ प्रचण्ड चलै प्रतिकूला॥
लरै दुनौदल प्रबल प्रचारी। धरु धरु मारु मारु धुनिभारी॥
कटकटाहिं मरकट रणमाहीं। कोटिनकोट फोरि चढ़िजाहीं॥

गहिगिरि निशिचरचलहिंपराई। करि तरभूमि गिरहिं महिआई॥
पश्चिमद्वार लरहिं हनुमाना। मेघनाद बलसम बलवाना॥
दोउबल प्रबल न मानैं हारी। करिप्रहार फिरि भिरहिं प्रचारी॥
दक्षिणद्वार बालिसुत बीरा। अंगद लरै महा रणधीरा॥
तहां नरान्तक करै लराई। छुटै न द्वार महा कठिनाई॥
पूरब द्वार सुरान्तक बीरा। तहां नील नल दोउ रणधीरा॥
उत्तर द्वार प्रहस्त लराई। द्विविद मयन्द तहां दोउ भाई॥
वानर भालु निशाचर मारैं। पटकि पटकि सागर महँ डारैं॥
रावण निजदल कीन्ह सँभारा। निजदलअर्ध कपिन संहारा॥
कुम्भकर्ण करियतन जगावा। कोटिन मदघट महिष खवावा॥
पुनि रावण सब कथा सुनाई। युद्ध करण तेहि दीन्ह पठाई॥
कुम्भकरण धावा बलवाना। कज्जल कुधर कृतान्त समाना॥
देखि भयंकर रूप विशाला। भाजे भालु कीश तेहि काला॥
तेहि सन्मुख कोइ धरै न धीरा। कहि जै जै कृपालु रघुवीरा॥
तब सुग्रीव कीश लै धाये। विहँस्यो तबै निकट कपि आये॥
पर्वत वृक्ष कीश यक बारैं। कुम्भकरण ऊपर रण डारैं॥
तदपि न हरै महा बलवाना। मर्दिकीश मुख मेलिचबाना॥
तब सुग्रीव शिला तेहिं मारा। तमकितमकिपदकीन्ह प्रहारा॥
मुष्टिप्रहार करै सुग्रीवा। पकरिकांख चाप्यो बल सीवा॥
निपुकि नाक श्रुति दशननकाटे। तेहिमहिपटकि कपीशहिडाटे॥
भजी सेन कपि भालु डराने। तब प्रभु धनुष बाण संधाने॥
रामहिं निरखि क्रोध करिधावा। गर्जितर्जि आगे चलिआवा॥
सहस भार कर गदा उठाई। रामकाटि शतखंडि गिराई॥
मुखपसारि धावा बलवाना। राम सकोप भरे मुख बाना॥

अर्द्धचन्द्र शर लै शिर काटे। देवन सुमनवृष्टि हरि पाटे॥
बाजे नभ गह गहे निशाना। देववधू नाचैं करि गाना॥
सुनि रावणहि भयो दुख भारी। रोदनकरैं निशाचर नारी॥
मेघनाद सुनि बहुत रिसाना। लैकर धनुष बाण संधाना॥
कोटिन शर छांड़े रण माहीं। भालु कीशकटि भूमि गिराहीं॥
भाजी सेन देखि हनुमाना। सन्मुखगयोरविकान्तिसमाना॥
लै भूधर धावा सुनि बाता। हृदयमांझ मारी तेहि लाता॥
भिरो प्रबल गहि गँगन उड़ाना। तब तेहि मुष्टि हनी हनुमाना॥
गिरो भूमि उठि बहुरि प्रचारा। तब कपि पटकि लंकपर डारा॥
देखिपितहिखलअतिखिसियाना। राम समीप गयो चढ़ि याना॥
कोटिनबाण जाल तेहि डारे। एक एक के दश दश मारे॥
नागफांस मन्त्रै खल साधा। सेन समेत एक रण बांधा॥
जाम्बवन्त धावा बलवाना। गहिपद पटकि भंजिधनुबाना॥
पुनि पुनि पटकत मरै न मारा। गहि भ्रमाय लंकापर डारा॥
गइ मूर्च्छा प्रयोग मख ठाना। करै हवन आमेध्य विधाना॥
यहां रमापति गरुड़ बुलाये। कौतुक नागफांस सब खाये॥
करत यज्ञ रघुनायक जाना। बोलिलियेकपिपति हनुमाना॥
लक्ष्मण संग जाहु सब भाई। मेघनाद रण मारो जाई॥
कपिन जाइ कीन्ही मख भंगा। उठिकर गहिधनुबाण निषंगा॥
छोड़न लाग शरनके जाला। कस्प्रिहार कपिकीन्ह बेहाला॥
अंगद जाम्बवन्त हनुमाना। द्विविदमयन्दकुमुदबलवाना॥
जर जर तन कपि सकल निहारे। तब अनन्त करिकोप प्रचारे॥
मेघनाद लक्ष्मण रण घोरा। बरणत थकित होत मनमोरा॥
तब लक्ष्मण शर लीन्ह प्रचण्डा। काटेशीश शिखरि इवखण्डा॥

देवन सुमन वृष्टि झरि लाई। लक्ष्मण गये जहां रघुराई॥
रावण पुत्र मरण सुनि काना। पुनिपुनिधुनेशीशबिलखाना॥
दशानन निजभुज बीस चबाये। लै दल प्रबल संग रणधाये॥
बाजे बहुत जुझाऊ बाजा। लैकर अस्त्र शस्त्र बहु गाजा॥
सुरपति निज रथ तुरत पठावा। मातलि राम हेत लै आवा॥
रथ चढ़ि राम चले रण काजा। संग अनुज कपिसेन समाजा॥
पद्म अठारह बानर यूथा। गर्जहिं अति बहुभालु बरूथा॥
लै कराल दल रावण गाजा। बाजै युद्ध अठारह बाजा॥
दिशिअरुविदिशिनिशाचरधावै। करगहि परवत वृक्ष चलावै॥
कोटिन शूर लड़ैं रण धीरा। मारु काटु धुनि उठत गँभीरा॥
लरै नरान्तक रावण केरा। नील संग रण करत घनेरा॥
राम राम जयराम पुकारा। पूंछ लपेटि ताहि संहारा॥
अनल समान क्रोध नल कीन्हा। गहिभुजादपटकिमहिदीन्हा॥
गर्जि नरान्तक आगे आवा। नलपदगहिमहिपटकिचलावा॥
देखि प्रहस्त क्रोध करि धावा। बीशसहस्र सुभट सँग लावा॥
तब कपीश युवराज प्रचारे। निशिचरअंगदसकल सिधारे॥
तब प्रहस्त यक शक्ति चलाई। बीचहिकूदि गही कपिराई॥
सोइ प्रहार करि ताहि निपाता। रावण देखिजरे सब गाता॥
लक्ष्मण जाम्बवन्त सुग्रीवा। हनूमान अंगद बल सींवा॥
द्विविद मयंद नील नल धाये। रावण सन्मुख सब कपि आये॥
करत कोशला धीश दुहाई। निज निज दललै करत लड़ाई॥
लड़त निशाचर प्रबल घनेरे। हारिन मान काल मति फेरे॥
॥ छं०। इतकपिधावै हूहमचावै परवत वृक्ष प्रहारकरै। उतनिश्चर
भारे अतिबल भारे अस्त्र शस्त्र गहिबीर लड़ै॥ रणचलै भुशुंडीशक्ति

प्रचंडी तोमर मुगदर शूल सरा। षट्वांग प्रहारै पट्गन मारै जय
रावण राम पुकार परा ॥ कटिबीर गिरै उठिफेरिलड़ै गहिआयुध
वृक्ष प्रहार मचा। कपिला तन मारै नखन बिदारै तोरिचलै शिर
पकरिकचा ॥ रावण दलसारो कपिन सँघारो रावणकोप प्रचंड
करो। गहिदशभुज दंडा धनुष प्रचंडा कोटिन शर रणत्याग परो॥

कुं०। कोटिन बानर भालुतेहि कीन्हे मारिबेहाल।
तबकपि पतियक कुधरगहि सन्मुख गे ततकाल॥
सन्मुख गे ततकाल क्रोधकरि तेहि ललकारा।
वेसरम अधम निलजदेखु बल आजुहमारा॥
राम भजन कवि कहै राम बल जोनर पावै।
जीतै शत्रु विशाल समरमें निज गृह आवै॥

इति श्रीराधाविषादमोचनावल्यांरामभजनत्रिवेदीविरचितायां
रामरावणयुद्धवर्णनोनामविंशतितमोऽध्यायः॥ २०॥

श्लो०। एकविंशेचरामस्यरणंघोरतरंभवेत्। लक्ष्मणंशक्तिघातेन
सञ्जीवनमितीर्य्यते ॥ १ ॥

दो०। राधामाधव ध्यानधरि गणपति गौरि मनाय।
रामभजन वरणन कियो श्रीगुरु आशिषपाय॥ २॥

सुग्रीवोवाच॥

चौ०। रेमतिमंदनिशाचरकूरा। रे रावण कबतेइ भा शूरा॥
रे त्रियचोर कपूत अभागे। करु संग्राम आइ मम आगे॥
असकहिकपि पति पर्वतमारा। रथ सारथी अश्व संघारा॥
हृदय मांझतेहि मारेहु लाता। परा धरणि तल कंपित गाता॥
उठिरावण यक गदा प्रहारी। पुनि कपि नाथ लात उर मारी॥
कच गहि कपि नभपंथ उड़ाना। नभते युद्ध कीन्ह विधिनाना॥

तब लगि तहँ आये हनुमाना। यहखलरण नहिं तुमहिंसमाना॥
मुष्टि प्रहार कीन्ह हनुमाना। तब कपीश गे जहँ भगवाना॥
हनुमत रावण युद्ध अपारा। बरणि नंदको पावै पारा॥
तब अतिकोप पवनसुत कीन्हा। पूंछि लपेटि फेंकि महिंदीन्हा॥
परा धरणि तल कुधर समाना। रामचन्द्र पहँ गे हनुमाना॥
गइमूर्च्छा लंकापति धावा। गर्जितर्जि प्रभु आगे आवा॥
लच्मण कार्मुक पंत्र टकोरी। छोंड़े बाण प्रबल दशजोरी॥
रावण शीश तोरिगे बाना। तब लङ्कापति बहुत रिसाना॥
कोटिन शर रण बर्षन लागा। ह्वै सपक्ष धावै जनु नागा॥
इत लक्ष्मण शर प्रबल प्रहारै। रावण बाण काटिमहि डारै॥
सुनु पारथ रावण मनमाषा। ब्रह्मशक्ति परभै अभिलाषा॥
शुचि ह्वै ब्रह्ममन्त्र पढ़िलीन्हा। करगहिधमकि शीशउरदीन्हा॥
लच्मण भूमि गिरे अरराई। राच्चस प्रबल न सकत उठाई॥
जाम्बवान तेहि अवसर आवा। ठोंकि ताल सन्मुख ह्वै धावा॥
करि प्रहार पद पकरि पछारा। पुनि घुमाइ लङ्कापर डारा॥
जाम्बवान ब्रह्मा अवतारा। जानि पौत्र चाहत नहिं मारा॥
मूर्च्छागत लङ्कापति जागा। तेहिवलविपुल शराहनलागा॥
लक्ष्मण बिकल देखि हनुमाना। लैगे तुरत जहां भगवाना॥
राम बिलाप कीन्ह बहुभांती। मोह कथा नहिं बरणि सेराती॥
तबलग आवा बैद्य सुखेना। कह कोउ जाय सजीवनिलेना॥
द्रोणाचल सुमेरु तट जोई। तापर बहुत सजीवनि होई॥
जाम्बवान हनुमान पठाये। मगमें कालनेमि हति धाये॥
औषधचीन्हिन गिरिधरलीन्हा। नभपथसपदि गमनकपिकीन्हा॥
आवत भरत निशाचर जाना। बिन फल हनो तासु उरबाना॥

राम राम कहि गिरे कपीशा। उठि भारत कर परसो शीशा॥
गइ मूर्च्छा वृत्तान्त सुनावा। पुनिलै कुधर कटककपिआवा॥
लै विशल्य करुणा उरमाहीं। दीन्ह छुआ उठे क्षणमाहीं॥
कह अति हर्ष वचन भगवाना। सबहिं सुखी कीन्हों हनुमाना॥
होत प्रात कपिदल लै संगा। धाये रघुकुल कमल पतंगा॥
संग विभीषण द्विद मयन्ता। अरु सुग्रीव नील नल चंदा॥
कुमुद सुषेण तार युवराजा। दधिमुख जाम्बवन्त दलसाजा॥
इत रावण सब निशिचर यूथा। चल्यो संग लै प्रबल बरूथा॥
असगुन होहिं महाभयकारी। मृत्यु बिवस नहिं गनै सुरारी॥
बाजहि ढोल न फेरि जुझाऊ। सुनि सुनि सुभट होइमनभाऊ॥
कहरावण निज सचिव बोलाई। सुभटन सकल देहु समुझाई॥
रणते विमुख भिरै मैं जाना। तेहि शिर काटौं कठिनकृपाना॥
अस कहिचल्योनिशाचरनाथा। मनमहँ सुमिरि सियारघुनाथा॥
करै कुतर्क बहुत मनमाहीं। रामबिमुख सुख सपनेहुनाहीं॥
वेदसांख्य वेदान्त विचारो। ध्यानयोग तप व्रत सुखसारो॥
रामदरश सम जेहि जगमाहीं। देखिसि करि विचार मनमाहीं॥
पुनि रावणमन कीन्ह विचारा। आजु धन्यभा जन्म हमारा॥
जेहिलगि मुनिवर यतनकराहीं। सो प्रभु सुलभ मोहिंजगमाहीं॥
निजकरलै शिर काटि चढ़ावा। शङ्कर सोइ फल प्रकट देखावा॥
श्रीरघुनाथ संग रण करिहौं। निजतनुतजि हरिलोकसिधरिहौं॥
जो मैं बैरभाव नहिं करतो। कुटुमसमेत कवनविधि तरितो॥
निशिचर गो नर मांस अहारी। राम बिरोध देव सब तारी॥
हरि सन्मुख रण तीरथपावा। पुण्यपुरातन फल मनभावा॥
असमनसमुझिमगनक्षणएका। चला संग लै सुभट अनेका॥

नवविधि भावभक्ति जगमाहीं। होइ एक हरिदरश कराहीं॥
जिनके नंद भक्ति नहिं भावा। ते नर हरिदरशन नहिंपावा॥
सनक सनन्दन सनत्कुमारा। ते बैकुण्ठलोक पगुधारा॥
निरखत लोक भयो सुखभारी। अतिबिचित्र हरिधाम निहारी॥
चहुँदिशि पारिजात बनदेखा। अतिबिचित्र तरुशुमनबिशेखा॥
गुंजहिं षटपद मन्द बयारी। शीतल खगरव मधुर पियारी॥
नाचत मोर कबूतर हंसा। हंसिनि केलि बिलास प्रशंसा॥
निरखि द्वार पहुँचे सब भाई। जय अरु बिजय दीन नहिंजाई॥
हरिदरशनहितअतिअभिलाषा। रोकत मुनिन भयो मनमाषा॥
बसि बैकुण्ठ बिषममति आई। तेहिते तीनिजन्म महिजाई॥
जन्महु असुरयोनि दोउ बीरा। हरिसन्मुख रण तजहु शरीरा॥
मुनिन बहुरि हरिदरशन पाये। धरिहरिहिय बिधिलोकसिधाये॥
तब जय बिजय कही यहबानी। जन्महु संग आइ मुनिज्ञानी॥
ते द्वउ जन्म लीन्ह महि आई। कश्यपसुत तन बलअधिकाई॥
नाम कनककश्यप जगजीता। हिरण्याक्ष तन बिपुलअभीता॥
धरि नरसिंह देह द्वउ मारे। रावण कुम्भकरण अवतारे॥
सनतकुमार भये प्रहलादा। नरहरि दरशन शमन बिषादा॥
भये बिभीषण मुनि फिरिआई। जिन नयनन देखे रघुराई॥
जे दोउ बहुरि जन्म महिपैहैं। दन्तबक्र शिशुपाल कहैहैं॥
ते पुनि कृष्णचक्र के लागे। जैहैं हरिपुर सपदि सभागे॥
होइ हैं उद्धव सनतकुमारा। कृष्णभक्त अतिबिमल उदारा॥

॥ कुं० ।कृष्णकथा पर प्रेम अति कृष्णभाव गंभीर।
॥ कृष्णनाम सुमिरै सदा बसै कृष्णके तीर॥
॥ बसै कृष्णके तीर ज्ञान निर्मल हरिदीन्हो।

निर्मल परमपवित्र सखा अपनो करिलीन्हो ॥
रामभजन कवि कहे सख्य ऐसी मैं पावों।
करौ कृपा यदुराय चरण पंकज मनलावों ॥

इति श्रीराधाविषादमोचनावल्यांरामभजनत्रिवेदीविरचितायांरामचरित
वर्णनोनामएकविंशतितमोऽध्यायः ॥ १२ ॥

श्लोक। एकविंशेचरामस्यजयंलङ्काविभीषणम्।
वैदेह्यासार्द्धमागत्यरामराज्यमितीर्यते ॥ २२ ॥

राधोवाच ॥

दो०। नारद सौभरि सन कह्यो व्यास नृपति परसंग।
सुनहु नंद हरि विशद यश रामचंद्र रण रंग ॥

चौ०। अस्त्रशस्त्ररथसाजिबनाई। रावण सन्मुख फौज चलाई ॥
तव लगिमिले विभीषण आगे। करिप्रणाम पुनि चरणनलागे ॥
रावणलीन्ह हरषि उर लाई। भक्त जानि अतिकीन्ह बड़ाई ॥
निश्चर कुल राखेहु मर्यादा। जिमिभे दैत्य वंश प्रहलादा ॥
वल बिवेक ज्ञानी जग माहीं। जेहिजगतुमसमानकोउनाहीं ॥
ताते मोसन करौ लड़ाई। देखे भालु कीश रघुराई ॥
असकहि गदा मांझ उरमारी। वहुरि बिभीषण गदा प्रहारी ॥
द्वउ बल प्रबल नमानहिं हारी। बिलगहोहिं फिरिभिरहिंप्रचारी॥
गर्जहिं द्वउ भ्राता अतिघोरा। हालैभूमि भयो अति शोरा ॥
दिग्गज बिकल भार अरिआरी। खलभल परो सिन्धु में भारी ॥
सकल लोक लोकेसन धामा। व्याकुल सकल न मन विश्रामा॥
तब रावण अस मन अनुमाना। राम प्रताप प्रबल तेहिजाना ॥
ब्रह्मसांगि लै तुरत चलाई। पीछे मेलि सही रघुराई ॥
तब रावण निजगृह चलिगयऊ। शुक्रमन्त्र साधत मप भयऊ ॥

राम भालु कपि तुरत पठाये। करि मष भंग नारिगहिलाये॥
अंगद यहि विधि शाप सुनाई। कहत मदोदरि पुनि अकुलाई॥
तुमहि जियति यहु हाल हमारा। रावण लखि धनुबाण सुधारा॥
सब कपि गये जहां रघुराई। रावण सम्मुख फौज चलाई॥
तब रावण दश धनुष सँभारे। चढ़िरथ कोटिन विशिषप्रहारे॥
तब हँसि राम धनुष टंकोरा। खलदल बधिरभया सुनिसोरा॥
द्वउ दल लरै प्रचारि प्रचारी। धरु धरु मारु मारु धुनिभारी॥
रावण राम युद्ध अतिभारा। बरणि नंदको पावै पारा॥
जितने रावण विशिष चलाये। काटिराम सब भूमि गिराये॥
अर्द्धचन्द्र लै तेहि शिर काटे। दिशि अरु विदिशिक्रोधकरिपाटे॥
शिरबाढ़ी लखि निशिचरनाहू। मरण भूलमन भयो उछाहू॥
तब यकतिस शर रामचलाये। काटिशीशकर भूमि गिराये॥
हृदयमांझ शरलाग प्रचण्डा। गिरयो भूमि तन है दुइखण्डा॥
रावणमरण सुरन जब जाना। बरषिसुमन नभहने निशाना॥
मन्दोदरी आदि सब रानी। करैं विलाप न जाइ बखानी॥
सबकी क्रिया विभीषण कीन्ही। क्रमसोंउचिततिलांजलिदीन्ही॥
लक्ष्मण जाइ तिलक अनुसारा। कीन्ह विभीषण लंकभुवारा॥
हनुमत जाय सियहिसुधिदीन्ही। बूड़त विरह सुखी तेहि कीन्ही॥
लङ्कापति कपिपति तहँ जाई। सिय सिंगारि पालकी चढ़ाई॥
राम समीप सिया लै आये। सिया राम दरशन शुभपाये॥
कीन्ह प्रणाम मनहि मन सीता। बोली मृदु प्रिय वचन विनीता॥
नाथ कवन अघ पूरब कीन्हो। जो यह विरहदुःख विधिदीन्हो॥
सुन सिय विजय पारषद मोरा। दीन्ह शाप वैकुण्ठ कठोरा॥
जन्म लेहु धरणी पर जाई। हरे निशाचर तब तोहिंआई॥

अगिनि प्रवेश प्रथम तनुत्यागी। पंच भतारी होहु सभागी॥
द्रुपदराज तनया यह सोई। यज्ञकुण्ड जन्मी जग जोई॥
असकहि व्यासकथा सोइभाखी। रामकथा प्रथमहि जो राखी॥
रामवचन सुनि अनल समानी। तबलैअनलसियहिपुनिआनी॥
विप्ररूप धरि कह करजोरी। नाथ सुनो बिनती यक मोरी॥
जनकराज तनया यह सीता। लेहु सपदि पतिवर्त बिनीता॥

॥ दो०। लक्ष्मी बेदमती भई कीन्हि तपस्या घोर।
॥ रावण जांचो जाइ तेहि कीन्हो बहुत निहोर॥

चौ०। जांचा भंग दशाननकोपा। निजकर जाय तासुकररोपा॥
बिष्णुबाण छूटे तेहि काला। गिरयो दशानन भयो बिहाला॥
रावण बिनय बहुत बिधिकीन्ही। तब हरिबाण टारियहिलीन्ही॥
सो यह बेद मती मैं आनी। देवकाज हित अतिसनमानी॥
सोइ रावण फिरि हरी बहोरी। लंकहि गई देवमति भोरी॥
तेहि लै अब मैं अनल बसाई। जनकसुता प्रभु दीन्ह मिलाई॥
असकहि अनलगयेनिजधामा। शिव बिधि सुरआयेजहँरामा॥
अस्तुतिकरि निजधाम सिधाये। तबहिं बिभीषण प्रभु पहँआये॥
लै बिमान प्रभु आगे राखा। आज्ञा हेतु बहुत अभिलाखा॥
कह रघुनाथ सखा तुम जाई। भालु कीश धन देहु बिदाई॥
सुनत बिभीषण सकल बोलाये। दीन्ह ताहि जो जेहि गनभाये॥
भूषण बसन बस्तु लै नाना। आये सब जहँ कृपानिधाना॥
कृपादृष्टि करि मृतक जिआये। रामदरश करि अति सुखपाये॥
राम कहा सुमिरण मम करिहौ। अरु कपीशआज्ञा अनुसरिहौ॥
सबहि बिदा करि रामकृपाला। कह बुलाइ सुनु लङ्क भुवाला॥
तुम सुग्रीव सखा प्रिय मोरे। चलहु संग हम करत निहोरे॥

असकहि सबहि बिमान चढ़ाई। उत्तर देश चले रघुराई॥
सीतहि राम समुद देखावा। सेतबन्ध शिवदरश करावा॥
किष्किंधा पहुँचे रघुबीरा। तारारुमहि धराइनिधीरा॥
राक्षस सकल राखि रघुराया। बालिबधनपुनि सियहिसुनाया॥
पञ्चवटी देखाइ रघुबीरा। मुनिन प्रणाम कीन्हरणधीरा॥
भरद्वाज आश्रम प्रभु आये। तुरत पवनसुत अवध पठाये॥
भरतहि मिलि आगमनसुनावा। करि प्रणाम रघुपति पहँआवा॥
चलोविमान तहांते चोखा। राम निषाद आइ परि तोखा॥
भरथ अवध पुर खबरिजनाई। आवत सिय समेत दोउ भाई॥
जहँ मुनि गुरु पुरजन पुरबासी। चले हरषि निरखन सुखरासी॥
मंगल वस्तु लिए कर लोगा। कृशतन श्रीरघुराज बियोगा॥
पुष्पकअवधि निकटजब आवा। उतरि धनद पहँ राम पठावा॥
देखा प्रभु बशिष्ठ मुनि आगे। मुनिन समेत हर्षि पग लागे॥
आशिषदै पूँछा कुशलाता। कृपातुम्हारि सकल सुख दाता॥
मिले आय पुनि भरथ बहोरी। सानुज चरण परे कर जोरी॥
अनुज उठाइ राम उर लाये। एहिबिधि सबहि मिलेजेआये॥
पुर नर नारि सुखी करिरामा। आये अनुज सहित निजधामा॥
सानुज राम निरखि महतारीं। दानदीन्हनिज बिरतिबिसारी॥
भूषण बसन खजाना नाना। दीन्ह लुटाय न जाय बखाना॥
केकय सुता आदिजे रानी। करिप्रणाम प्रभु सब सनमानी॥
सासुन सबहि मिलीपुनिसीता। पद गहिआशिषपाय बिनीता॥
तेहि औसर बशिष्ठतहँ आये। अनुजन सहित रामअन्हवाये॥
यावत शुद्ध वस्त्र लै आये। जेनिज नूतन अमल सोहाये॥
ब्रह्म यज्ञ सूत्र पहिरावा। पुनिकटिबंधन परम सोहावा॥

पुनि जलेस माला पहिराई। मणि मुक्ता जयमाल सोहाई॥
चामर ब्यजन पवन लैआये। मणिमय पीठ इड़िबिड़ा जाये॥
त्र्यायुष मंत्र त्रिपुंड खचावा। शंभु आय निज हाथ लगावा॥
बिशुकर्मा लाये मणि भूषण। पहिरे प्रभु हँसिअरिखर दूषण॥
इन्द्र सिंहासन सुभ्र सोहावा। प्रभु हित पारिजात लैआवा॥
वेद मंत्र तब मुनिन उचारे। रामहि सिंहासन बैठारे॥
देविन आय सिया सिंगारी। रामबाम दिशि लै बैठारी॥
देवन हनुमत जाय सिंगारे। सादर प्रभु सन्मुख बैठारे॥
प्रभुपीछे लक्ष्मणहि सिंगारी। दहिने भरथ दीन्ह बैठारी॥
ऊपर पारिजात तरु राजै। अमृत स्राव शशि छत्र बिराजै॥
शोभित अग्नि कोण सुग्रीवा। निरिति बिभीषण अतिबलसीवा॥
बायुकोण अङ्गद युवराजा। जाम्मवान ईशान बिराजा॥
मध्ये नील सरोरुह रूपा। सिंहासन कोशलपुर भूपा॥
शिव ब्रह्मादि सिद्ध मुनि देवा। कीन्हतिलक आगे धरि मेवा॥
जंचरंत शुभ रिचा उचारी। मंगल गावें सब सुर नारी॥
अस्तुति करि पुनि भेंटइ देहीं। जाचक सकल निछावरि लेहीं॥
करैं बेद अस्तुति प्रभु केरी। नृत्य अप्सरा करैं घनेरी॥
द्विजन दान नानाबिधि पाये। अधिक देखि मनहर्षि लुटाये॥
राज समाज सकल क्षिति माहीं। लय भेंटय आये प्रभुपाहीं॥
राम तिलक उछाह अवगाहा। बरणि नंदको पावै थाहा॥

कुं०। राम तिलक करि सकलसुर जवगे निज२ धाम।
तब पुरजन सब नारि नर आये जहँ श्रीराम॥
आये जहँ श्रीराम राम दरशन शुभ पाये।
करिपूजन बहुभांति बहुत धन धान्य लुटाये॥

पण्डित रामभजनगाइ जहँ प्रभुकी कथारसाला ।
होइप्रसन्न दरशन मोहिदीजै हौ प्रभु दीनदयाला ॥

इति श्रीराधाविषादमोचनावल्यांरामभजनत्रिवेदीविरचितायांरामातिलको-
त्सवोनामद्वाविंशोऽध्यायः २२ ॥

श्लोकः । त्रिविंशेरघुनाथस्यकलाषोडशमुच्यते ।
तस्मिन्विषादशमनंविपाकंकर्म्मणस्तथा १ ॥

दो० । नारद सौभरिसन कह्यो व्यासनृपति परसंग ।
सुनहु नंदहरि विशद यश रामचन्द्र रणरंग ॥

चौ० । दरशनकरहिं सकलनरनारी । देहिंदानधन द्विजनपुकारी ॥
यहि बिधि बहुत हर्ष पुरबासी । भई अवधि सुख मंगलरासी ॥
मुनि यह कथा बहुत सुखमाना । कह्यो युधिष्ठिर वचन प्रमाना ॥

युधिष्ठिरोवाच ॥

अब मैं व्यास बहुत सुखपावा । राम कथा तुम सुखद सुनावा ॥
मोहि समुझाइ कहौ मुनिराया । जानि न जाय रामकै माया ॥
केतरी कला राम अवतारा । शक्ति सहित अवनि पगुधारा ॥
ते सब शक्ति कहौ प्रभु मोहीं । हौ सर्बज्ञ निहोरौं तोहीं ॥

व्यासोवाच ॥

एक शक्ति प्रभु शक्ति बखानी । नवधा पाय जाइ तरिप्रानी ॥
दूजी ज्ञानशक्ति नृपगाई । दश प्रकार बेदान्त बताई ॥
तीजी शक्ति बिरागी त्यागी । सतत्रित आत्मसांख्यगतिभागी ॥
बिमला चौथी शक्ति बखानी । अनुभवमनन न करतअघहानी ॥
पंचम बिद्या जीव उधारै । ईश्वर जीव ब्रह्म निरधारै ॥
छठी कला जन्म हरि केरे । मत्स्यादिक जग कर्म घनेरे ॥
सप्तमि कीरति शक्ति बखानौ । जो सुनि ब्रह्म चराचर मानौ ॥

अष्टमपुष्टि क्षीण बलवाना। निर्धन धनी यज्ञ सज्ञाना॥
नवमी गिरा वेद जगमाहीं। शक्तिप्रभाव बिदितकेहिनाहीं॥
तुष्टिशक्ति दशमी जेहि माहीं। सो शिवरूप कामना नाहीं॥
इलाशक्ति पृथ्वी तनुधारी। ग्यरहीं सुखद सुलभगतिकारी॥
उरजा उरप्रेरक द्वादशई। शुभअरुअशुभ जासुवशकरई॥
कांति त्रयोदश प्रकट प्रकाशा। सूर्य हुताशन जहँ लगभासा॥
रमा चौदहीं लक्ष्मी जानौ। शोभा राज आदि बसुमानौ॥
शक्ति पंच दश परमा जानै। तत्सदब्रह्म परे अनुमानै॥
षोड़श मायाशक्ति बखानी। जेहिवश जीवभये जगआनी॥
ते श्रीरामचन्द्र जग आये। अहो भाग्य जिन दर्शनपाये॥
जिनकी षोड़शशक्ति विशाला। सो प्रभु भा जग अवधभुवाला॥
जब यह कथा व्यासमुनिभाषा। पुनि नृपमनहिं भईअभिलाषा॥
औरो रामचरित मुनिनाथा। सुना चहों तव पद धरिमाथा॥
कहेउ अनन्त शक्ति रघुराई। भालुकीश किमि लीनसहाई॥
का अपराध रमापति कीन्हा। निशिचरतासुत्रिया हरिलीन्हा॥
रामकाज हित मरयो जटाई। जेहि जग गिद्ध देहकिमिपाई॥
रामनीति हित भये सुरभूपा। शूर्पणखा किमिकीन्ह बिरूपा॥
कारण कवन कबन्ध निपाता। शबरी के प्रभु गृह चलिजाता॥
भे जग कौन बालि सुग्रीवा। अंगद कौन महाबलसीवा॥
को जग हनूमान अवतारा। को पुनि जाम्बवान बलसारा॥
को सम्पातिकहौ मुनिराई। कौन हेतु शुभलङ्क जराई॥
को वह मेघनाद बलवाना। बांधिसि नागपाश भगवाना॥
ब्रह्मसांगि लक्ष्मण किमिलागी। को निषाद हरिभक्त सभागी॥
इनको पूरब जन्म प्रसंगा। सिय बियोग किमि यज्ञतुरंगा॥

पूछ्यौं सो सब कहौ बखानी । तुम सर्वज्ञ महामुनि ज्ञानी ॥
यह मुनि व्यासदेव मुनिभाषा । सुनहुभूप जो मनअभिलाषा ॥

॥ सीताहरणविपाक ॥

एक समय नारदमुनि ज्ञानी । कामहिं जीतिभयेअभिमानी ॥
तिनहिं महेश बहुत समुझावा । हरिमाया बलप्रबल सुनावा ॥
तदपि महाअभिमत हरि देखा । निज दासन पर कृपाविशेखा ॥
हरिमाया कृत श्रीपुर शोभा । निरखि रमापुनिमुनिमनक्षोभा ॥
नारदमुनि बैकुण्ठहि धाये । हरिको रूप मांगि फिरिआये ॥
राजसमाजहिं बैठे फूली । राजकुमारि न चितइसि भूली ॥
तेहि मेली हरिके जयमाला । लखि नारदमुनि भये बिहाला ॥
हँसि रुद्र कपि बदन बताई । निजमुख मुकुरविलोकहुजाई ॥

॥ हनुमानविपाक ॥

देखि शाप दीन्हा करिरोषा । ह्वै कपि बहुरि रुद्र परितोषा ॥
तब मुनि बहुरि शाप उद्धारा । होहु जाइ तुम पवनकुमारा ॥
बलअरुबुद्धि न तुमसनआना । रामभक्त प्रिय कपि हनुमाना ॥
होइँ रुद्रगण सब तुव सैना । रामकाज हित अतिमनचैना ॥
जब यदुवंश कृष्ण अवतारा । रुद्रअंश पुनि पवनकुमारा ॥
भीमसेन भ्राता तव सोई । जेहिसमप्रबल अपरनहिंकोई ॥
एक समय अञ्जनि मनमाहीं । केशरिसन बोली गहिबाहीं ॥
तुम पति मो सँग करहु सनेहू । रति करि प्रबलपुत्र मोहिंदेहू ॥
कह कपि तुम पर्वतपर जाई । करि सिंगार सुरलेहु लुभाई ॥
अञ्जनि तब पर्वतपर जाई । पवन रूपधरि रहे लुभाई ॥
पवन ते पुत्र जन्म जब भयऊ । मुख पसारि रविसन्मुख गयऊ ॥
अरुण पक्कफल लखिशिशुबीरा । मुखमेले रवि क्षुधित शरीरा ॥

अन्धकार लखि सुरपति धावा। है सकोप निज बज्रचलावा॥
मुखमें लगत प्रकट रवि भयऊ। तब हनुमान भूमिपर गयऊ॥
पवनपुत्र दुख देखि दुखारी। प्राणवायु रोंकी जगभारी॥
देखि प्रजा दुख सुर तहँ आये। दै पियूष कपि तुरत जिआये॥
दैवरदान गये निज लोका। पवनहरयो तब सब जगशोका॥
एक समय पर्वत पर जाई। वृक्षतोरि मुनिवरन खिझाई॥
शापते ताहि भूलि बल गयऊ। रामकाज हित आशिष दयऊ॥

युधिष्ठिरविपाक॥

विष्णु कि नाभि कमलते ब्रह्मा। तिनके हृदय मांझ ते धर्मा॥
तिनके पुत्ररूप तुम जाये। अपुनै धर्म अवनि पर आये॥
नरनारायण धर्म कुमारा। नर को अर्जुन है अवतारा॥
सूर्यपुत्र अश्विनी कुमारा। अंशन माद्रीसुत अवतारा॥
ते दोउ बन्धु नकुल सहदेवा। अब नारदको सुनु भ्रम भेवा॥

नारदभ्रम विपाक॥

नारद हरिको शाप सुनाई। तब त्रिय नाथ असुरगृहजाई॥
नारि बिरहते होहु बिहालू। तब सहाय करिहैं कपिभालू॥

युधिष्ठिरउवाच॥

नारद परम भागवत योगी। मायाकृत परपञ्च वियोगी॥
काम क्रोध मद लोभ अपारा। तिनहि न व्यापै कछु संसारा॥
ते मुनि कामहिंकेहिबिधिलागे। सो प्रसंग बरणौ मम आगे॥
अजके पुत्र पृष्ठ ते जाये। तिनको नाम अधर्म कहाये॥
मृषा तासु घरनी जगजानी। जन्मे पुत्र महाअभिमानी॥
काम क्रोध मद लोभ प्रलोभा। मत्सर हर्ष शोक भयक्षोभा॥
तृष्णा क्षुधा जरा अरु व्याधी। निद्रा मृत्यु दुरुक्ति उपाधी॥

औरहु जग अधर्म परिवारा। धर्म विरोधक बहु संसारा॥
प्रथम अधर्म बिरंचिहि लागा। जिनहि सुता परभा अनुरागा॥
निन्दक वञ्चक तेहिचित चीन्हा। ब्रह्मा शाप ताहि पुनि दीन्हा॥
तुम खल होहु चतुष्पद जाई। त्रेता ते पद बृद्धि बताई॥
कलियुग चारिपाद तुम धावौ। द्वापर अन्त जन्मि जगजावौ॥
सोइ दुर्योधन बन्धु तुम्हारा। धर्म विरोधक भा संसारा॥
अब नृप सुनहु जो पूछेउ मोही। नारदमोह सुनावौं तोही॥
बेद पढ़ाइ मुनिहिं बिधिभाषा। करुतप सृष्टिबृद्धि अभिलाषा॥
तब नारदमुनि कहा न कीन्हा। तब बिधिशाप क्रोध करिदीन्हा॥
सदा भ्रमहु बिरक्त त्रैलोका। हरिके भक्त रहित मदशोका॥
जो तुम मम आज्ञा नहिं मानी। मोह क्रोध मद होइ गिलानी॥
नारद मोह भयो तेहि काजा। अब सुन अपरकथा कुरुराजा॥
जरा अधर्म्म सुता यकबारा। गइ नारद पहँ वचन उचारा॥
हमरे पुरुष न तुम्हरे नारी। करु बिवाह मुनि इच्छाचारी॥
मुनिवर अंगीकार न कीन्हा। तब तेहिशाप कोप करिदीन्हा॥
नारि हेत हरिरूप बनावौ। मिलै न नारि अवज्ञा पावौ॥
यहौ प्रश्न हम तुमहिं सुनाई। सुन खग भे सम्पाति जटाई॥

॥ सम्पाति जटायु विपाक॥

भे धर्मज्ञ एक शिबि राजा। प्रजा तासुसम लखितपसाजा॥
इन्द्र कह्यो यमराज बुलाई। तव ममजिमिअधिकारनजाई॥
खाली परे नरक सब भारी। उत्तमगति पावै नरनारी॥
शिबिकी चलिय परीक्षा लेई। संकट धर्मदण्ड तेहि देई॥
अस कहि इन्द्र बाजतनु कीन्हो। जमराजा कपोततनुलीन्हो॥
झपटति गए नृपति के पासा। पाहि पाहि नृप हरुममत्रासा॥

असकहि पृष्ठि कपोल लुकाना। नृपकहि गिरा बाज सनमाना॥
शरण हमारि कबूतर आवा। तुमहिंअतिथिअबमैं करिपावा॥
इच्छा भोजन करु खगनाहा। मांगिलेहु मोसन जो चाहा॥
वश्य देवतन मैं कैलेहूं। पाछे मांस आनितोहिं देहूं॥
बाज कहा अधर्म नृप लेहू। मोहिं कपोत खान नहिं देहू॥
शरणागत नृप धर्म अपारा। सुनुखग तवकरमम निरधारा॥
खाहु मांस भरि उदर अहारा। सपदिआनिबनखेलिशिकारा॥
कहखग देह तजौं जेहिकाला। भोजन सपदि न देहु भुवाला॥
धर्म धुरीण नृपति हरखाना। कहिप्रियवचन ताहि सनमाना॥
खड्ग उठाइ काढ़ि नृप लीन्हा। जंघा काटि अशन तेहि दीन्हा॥
बाजकही नृप अनुचित मोहीं। अधिक न लेब निहोरों तोहीं॥
तुला मँगाइ कपोत चढ़ाई। निज धरि मांस देहु तौलाई॥
तुला मँगाइ कपोत चढ़ावा। तुला न सो नृप अवर धरावा॥
सवतन आमिष लै नृपशूरा। काटि चढ़ाइसि होत न पूरा॥
ग्रीवामध्य खड्ग नृप दीन्हा। है दोउ प्रकटभुजा गहि लीन्हा॥
मांगिलेहु वर जो मनभावा। धर्मधुरी हम पार न पावा॥
कह सकष्ट नृप तुमछल कीन्हा। क्षत्रीकबहुँ मांगि कछु लीन्हा॥
पुनि शिविनृप यह शाप सुनाई। होहु सपक्ष गृध्र दोउ जाई॥
अंसन जन्म लेहु जग आई। जरैं पंख तनदुख अधिकाई॥
अशकहि नृपति तजे निजप्राना। हरिपदगा चढ़िविमल विमाना॥
भय सम्पाति देवपति जाई। धर्मराज तेहि अनुज जटाई॥
शाप अनुग्रह जब शिवि कीन्ही। तब यहबात तिनहिं कहिदीन्ही॥
रामदूत दर्शन जब पावो। तबतुमनिजनिजलोकसिधावौ॥
सुनुजब रावण रण तोहिं मारैं। राम क्रियाकरि तोहिं उद्धारैं॥

कहत व्यास मुनि गृध्र जटाई। जन्मकथा में तुमहिं सुनाई॥
कुं०। रामराम इति बरणद्यौ कहत सुनत सुख देत।
ताते चित में राखिये सीता अनुज समेत॥
सीता अनुज समेत रामयश जो नितगावै।
सुनै सदा चितलाय रामपद सो नरपावै॥
रामभजन कविकहै रामयशजस सुनिपावा।
गुरुपद पद्म निहोरि यथामतिहरिगुणगावा॥ २॥

इति श्रीराधाविपदमोचनावल्यांरामभजनत्रिवेदीविरचितायांकुरुपांडवनारदसम्पातिजटायु विपाकवर्णनोनामत्रयोविंशोऽध्यायः २३॥

श्लोक॥ जरासुतंशुंभनिशुंभभौमविपाकमस्मिनपितारकस्थ
मत्स्यावतारंचकबन्धकंतथानानाविधंतत्रविषादमोचनम्॥ १॥

व्यासउवाच॥

दो०। राम राम इति राम इति जपौ निरन्तर नाम।
मन चंचल समुझाइ करि तबपावौ विश्राम॥ १॥
राशिऋक्षपति जासुपति ताते प्रबल नरेश।
चालिस सिंघ स्वबुद्धिसनहरिभजु मिटैकलेश॥ २॥
सप्त प्रपंचम प्रथमपद भजुतजु त्रैक सुभाय।
षट नवमे भूले कलुक एकादशकी आय॥ ३॥
चालिस हरिपंचम भजौ तजौ दशम ध्वजमोहु।
एकादश स्थिर नहीं द्वादश बिनजलहोहु॥ ४॥
जिमि द्वितीय जगमें बहौ गहौ न नवघरनाम।
एकादश रहिहै नहीं तबन आइहै काम॥ ५॥
चौ०। यहिविधिमनउपदेशै सोई। निर्मल बुद्धि जासु जब होई॥
तब मन करिप्रज्ञा सतसंगा। सुनत जाइ हरि कथा प्रसंगा॥

तब हरिके पद पद्म प्रयागा। पाइ सुरभि बाढ़ै अनुरागा॥
तब मन विषय वासना त्यागै। निर्मल ललकि रामपद लागै॥
तबयहु जीव कृतारथ पावै। हरिकी भक्ति जासुमन भावै॥
निर्मल ज्ञान प्रबोध न थोरा। तब हरिपद शशि जीवचकोरा॥
तब स्वइ ध्यानकरै शिवगावा। प्रथमनंद जो तुमहिं सुनावा॥
तब सायुज्य मुक्ति नर पावै। श्रुति अस्मृतिपुराण यह गावै॥
नारद गीत कथा मैं गाई। व्यासनृपति इतिहास सुनाई॥
जो जो प्रश्न युधिष्ठिर कीन्हा। जासुतासु उत्तर मुनि दीन्हा॥
रामकथा तुमकहे प्रिय बावा। सुनु सादर नारद जो गावा॥
बहुरि व्यास इतिहास सुनाई। जेहिबिधि चरित किये रघुराई॥
सो अद्वैत अनादि अखंडा। ब्रह्म अनामय अलख प्रचंडा॥
निराकार निर्गुण अविनासी। अज अनन्त गोलोकनिवासी॥
सो सच्चिदानन्द घनश्यामा। क्रीड़ाहेत धरो तनुरामा॥
जब बाढ़ै अधर्म परिवारा। तब प्रभु आयलेइँ अवतारा॥

दो०। मत्स्य हंस कच्छप नरहरि शूकर भृगुपति राम।
कृष्ण बौध कलकी सुमिरि होतसुफलसबकाम॥

चौ०। सुनहु नंद अब मत्स्यपुराणा। तनु चरित कीन्ह भगवाना॥

व्यासउवाच॥

सुनहु युधिष्ठिर द्राविड़देशा। वैवस्वत जहँ भये नरेशा॥
हरि हित सत्य प्रेम व्रतकामा। सत्यव्रत ताते तेहि नामा॥
श्रद्धा बहुत बिष्णुपद ध्याना। श्राद्धदेव तेहि नाम बखाना॥
तहँ यक नदी नाम कृतमाला। तर्पण करनगये महिपाला॥
अंजुलि भरत मीन यकआई। सत्यव्रत जल मध्य बहाई॥
मीन कही तुम दीनदयाला। रक्ष रक्ष मोहिं देखि बिहाला॥

निकलहि सबल जीवजलखाई। एकन के डर एक डराई॥
नृप तब मीन कमण्डल राखी। करैं हर्षि मीन जब भाखी॥
सर सरिता तेहि नृपति बसाई। बढ़त मीन नहिं सकतअँबाई॥
कह नृप कवन देव जगआगे। करि कौतुक मोहिंबहुतभ्रमाये॥
तब प्रभु मत्स्यरूप यह भाखा। सहस चतुर्युग विधि दिनराखा॥
ओतरियनिशा प्रलय निधिसोवैं। सो पहुँची सतयें दिन होवैं॥
बीज औषधी नृप मँगवाई। राखहु सकल तुरत धरवाई॥
बासुकिनाग सहसऋषि आवैं। चढ़न हेत हम नाव पठावैं॥

दो०। तापर मुनिन समेत चढ़ि औषध बीज धराइ।
विचरत जल मम संगमें बासुकि नाव बँधाइ॥

चौ०। यहकहिप्रभुभे अन्तरध्याना। सत्यव्रत सोइ कीन्ह प्रमाना॥
बीज औषधी नृप मँगवाये। बासुकि सहित ससऋषिआये॥
तबलग प्रलयकाल दिनआवा। चढ़न हेत प्रभु भवन पठावा॥
तापर औषध सकल धराई। मुनिन समेत चढ़े नृपजाई॥
योजन लक्ष प्रमाण विशाला। पृष्ठिशृंग भे प्रकट कृपाला॥
पृष्ठिशृंग प्रभु नाव बँधाई। विहरत महाप्रलय कुरुराई॥
करि अस्तुति कह वचनभुवाला। मत्स्यसंहिता कहहु कृपाला॥

मत्स्यनारायणोवाच॥

आगे महाप्रलय की बाता। मम सोवत जगभयेहुनिपाता॥
प्रथम अवर्षण फिरि अतिपाई। संवर्तक महि धोइ बहाई॥
शेशफणातपत्र हृदि सोवौं। निशावसान बहुरिजगजोवैं॥
नाभि हमारि कमल यकजामा। कानन ते दुइ असुरललामा॥
मधु कैटभ दोउ अतिबलवाना। मथैं प्रलय जल कुधरसमाना॥
तदा कमलजल ऊपर आवा। ममइच्छा प्रफुल्ल अजजावा॥

चितवत चहुंदिशि भे चतुरानन। विद्याशक्ति कीन्ह बिधिपावन ॥
तबलगि तहँ मधुकैटभ आये। गहिनालहि करकमल हलाये ॥
मांगत युद्ध बिधाता बोला। मिलहियुद्ध जनिहोहुअडोला ॥
आदिशक्ति विद्यातनु धारी। प्रलय बसत नृप आंखिहमारी ॥
ताकी अस्तुति जब बिधिकीन्हा। तब देवीजगाय मोहिं दीन्हा ॥
भिरे प्रबल दोउ मोसन आई। मल्लयुद्ध कीन्हो कठिनाई ॥
होइ प्रसन्न दोउ मोसन बोले। जोतुम मोसन भयहु अडोले ॥
पांच हजार बर्ष रण कीन्हो। हमहिं उसास लेननहिंदीन्हो ॥
मांगहु बर इति वचन उचारे। हम मांगो कर मरहु हमारे ॥
असकहि दोउकर पकरिमरोरी। तनमेदा सब लीन्हि निचोरी ॥
जलपर डारि मेदिनी कीन्ही। तबबिधिसृष्टिसकलरचिलीन्ही ॥
दो०। मधुकैटभ जन्मे बहुरि शुम्भनिशुम्भ नरेश।
बहुरि मरीच सुबाहु पुनि जरासन्ध भौमेश ॥
सुनहु युधिष्ठिर मत्स्य पुराना। फिरि जे चरित कीन्हभगवाना ॥
बिरहति प्रलय पयोनिधि बारी। मत्स्य संहिता सकल उचारी ॥
तबलागि हयग्रीव तहँ आवा। नावरोंकि करिहारिहि खिझावा ॥
तब प्रभु मन-महँ अस अनुमाना। हरि सि वेदविधि सोवतजाना ॥
अब यहु मोसन करिहि लराई। मारउँ तुरत वेद दुखदाई ॥
हयग्रीव हरि तुरत सँहारा। जागेविधि पुनि जगविस्तारा ॥
विधिहि वेद दे मत्स्य उदारा। हरिनिज लोक बहुरिपगुधारा ॥
बैवस्वत मनु अवध नरेशा। सकल बसाइनि पावनदेशा ॥
मनुते दश सुत भये बहोरी। सूर्य वंश बलबुद्धि न थोरी ॥
श्रद्धा नाम जो मनुकी नारी। कन्या हेत कीन्ह व्रतभारी ॥
भै कन्या वसिष्ठ सुतकीन्हो। मृगया हेत बनहिं पगुदीन्हो ॥

नाम सुद्युम्न संग सहचारी। इलावर्त प्रविशत भे नारी॥
लज्जा बहुत बनान्तर जाई। चन्द्रपुत्र बुध रहे लोभाई॥
बुधते पुरूरवा सुत जावा। चन्द्र वंश नृप भयो सोहावा॥
उपजे सूर्य वंश श्रीरामा। कृष्णचन्द्र उपजे घनश्यामा॥
जोवहु हयग्रीव हरि मारा। सोइ तारक षड वदन सँहारा॥

॥ कबन्ध विपाक ॥

दक्षसुता दनु कश्यप नारी। तासुतनय सोइ भा बलभारी॥
योजन सात तासु तन भारी। भुजबिशाल प्रथु योजन चारी॥
ऐरावत चढ़ि बासव आये। मन्दाकिनि जलविमलनहाये॥
तेहि अवसर दानव तहँ जाई। भुजन बीच कीन्हो सुरराई॥
हाय हाय सुरकरत पुकारा। तब सुरनायक वज्र प्रहारा॥
लागत वज्र शीश धँसि जाई। मुण्ड रुण्ड बिच गवासमाई॥
पुत्रदशा सुनि दनु उठिधाई। रोदन करत इन्द्र पहँ आई॥
ममसुतयहु प्रिय अनुजतुम्हारा। कारण कवन जो वज्र प्रहारा॥
मातहि दुखित देखि सुरसांई। करि बिनती बहुविधि समुझाई॥
पुनि लै वज्र तासु उर फारा। जीव जीव इति वचन उचारा॥
दीन्ह सजीवनि उर मुखडारी। जयति जयति कहिउठेउँभारी॥

॥ जयन्त विपाक ॥

करु दनु अङ्गहीन सुत मोरा। तिमि होइहि बासव सुततोरा॥
मातृ श्वशा पुनि पुनि समुझाई। पुनि यह बात कही सुरराई॥
जब यहु रामदरश बन पावै। तनुतजि निजममलोकसिधावै॥
असकहिसुरपति गे निजधामा। जब बनबास कीन्ह श्रीरामा॥
जाइ जयन्त परीक्षा लीन्ही। फोरि आंखि शिक्षातेहिदीन्ही॥
बहुरि कबन्ध मिलो मगजाता। बाहु लपेटि गहे दोउ भ्राता॥

तब रघुबीर न खड्ग प्रहारी। दोउ भुजकाटिकाटिमहिडारी॥
यहि विधि राम कबन्ध निपाता। सेवरी सदन गये दोउ भ्राता॥
कु०। मत्स्य विष्णु लीला विमल सुनै जो नरअरु नारि।
तिनके सकल मनोरथ सुफल पदारथ चारि॥
सुफल पदारथ चारि कथा मैं तुमहिं सुनाई।
जय प्रद सुखद बहोरि राज करिहौ पुर जाई॥
रामभजन कवि कहैं कथा हरिकी मैं गावौं।
सुनौ सदा चितलाय यहै मांगे वर पावौं॥

इति श्रीराधाविषादमोचनावल्यांरामभजनत्रिवेदीविरचितायांसुत्राहुमारीचिविपाकवर्णनोनामचतुर्विंशोऽध्यायः॥ २४॥

श्लो०। पञ्चविंशेचसावर्य्याःकथयिष्येशुभाःकथाः॥
नानाकर्मविपाकेनरामस्यदर्शनंशुभम्॥ १॥
दो०। रामभक्ति महिमा कहत वेद न पावत पार।
शेष शारदा शम्भुनित वर्णत मति अनुसार॥

सवरी विपाक॥

कहब एक पुनीत इतिहासा। सुनहु युधिष्ठिर परम हुलासा॥
धर्म धुरीण रिपुञ्जय नामा। अवध नरेश महाबल धामा॥
गये सघनबन मृगया काजा। गत युगयाम तृषित भे राजा॥
ताही समय सबर यक आवा। करि आदर नृपनिकटबोलावा॥
तासों नरपति पूंछ सो बाला। जाइ देखावा तेहिततकाला॥
टूट फूट नृप मन्दिर देखा। सर समीप बनसघन विशेखा॥
करि स्नान शम्भुपहँ आवा। पूजन कीन्ह बहुत सुखपावा॥
चिता भस्म लै लिंगलगाई। करि नैवेद्य चले रघुराई॥
अर्चनकरौ नृपति इति भाषी। आये गृहसत्ररहित हरषी॥

सवरी सहित कीन्ह तहँ बासा। पूजइ नित शिवबहुत हुलासा॥
एकदिनचिति विभूतिनहिंपावा। मनअतिदुखितसवरगृहआवा॥
सवरीपति वृतान्त सब जाना। सुनिपतिगिरा ताहिसनमाना॥
मैं प्रविशौं गृह देहु जराई। लै विभूति पूजहु सुरसांई॥
करि स्नान राममन कीन्हा। मन्दिर प्रविशि फूँकितेहिदीन्हा॥
सवर जाइ पूजे त्रिपुरारी। नारि बिरह अस्तुतिअनुसारी॥
लै भोजन सवरी तहँ आई। लखि उदास भा विस्मयपाई॥
तेहि अवसर शङ्कर तहँ आये। कहिप्रियवचन ताहि समुझाये॥

शिवउवाच॥

सुनु सवरी तू पतिव्रत नारी। पतिहितप्रविशिअनलतनुजारी॥
सवरहि शङ्कर कहो बुझाई। पूर्व जन्मकी कथासुनाई॥
आगे तुम दोउ रहो किराता। जीव हजारन कीन्ह निपाता॥
बाण धनुष गहिकर नित धावै। जीवन मारिआनि नितखावै॥
यक दिन सन्तफिरत बनमाहीं। मारग खोजत पावत नाहीं॥
सन्ध्या समय विकल सो भयऊ। तेहिकातबलग तुममिलिगयऊ॥
तुमसन निज वृत्तान्त सुनावा। तब तू निज मन्दिर लैआवा॥
आदर सकल भांतितुम कीन्हा। भीतर मन्दिर आसन दीन्हा॥
दम्पति बाहेर करि विश्रामा। तबलग रैनिगई दुइ यामा॥
सन्त भजन करि पैठत भयऊ। तबलगि एकव्याघ्रचलिगयऊ॥
चक्र सुदर्शन तहँ चलिआवा। व्याघ्रदेखि अतिशयभयपावा॥
लसिगा व्याघ्र सिंह भयमानी। बोला सभय मनोहर बानी॥
नाथ कौन तुम हरितनु धारी। तोरण देहु शिकार हमारी॥

चक्रोवाच॥

हरिको चक्र सुदर्शन नामा। जहँ जहँ सन्त करैं विश्रामा॥

रक्षा हेत तहां मैं जावौं। साधुहेत बहुरूप बनावौं॥
को तुम व्याघ्र रूप इत आये। कौनकाज तोहिं कवन पठाये॥
यमकिंकर यमराज पठाये। नाथ किरात लेन हम आये॥
जीवजन्तु जो बहुत सतावै। सो नर अधम नरकगति पावै॥
कहत सुदरशन सुनु यमदूता। एहिकी अबभै पुण्य बहूता॥
रामभक्त ब्राह्मण गृह माहीं। बास करायसि यहि भयनाहीं॥
पाप ते अधिक पुण्य यहि केरी। घूमिजाहु इत नहिं गति तेरी॥
करि दर्शन चरणोदक लीन्हा। पाप नाश अपने यहिकीन्हा॥
यह कहि दोउ भे अन्तरध्याना। उठे सकल जब भये बिहाना॥
करि हरिध्यान संत चलिदीन्हा। ते तुम आइ जन्म फिरिलीन्हा॥
होइहि अवध राम अवतारा। सुर द्विजपालि हरणमहिभारा॥
शवरी सहित दरश तुम पैहौ। चढ़ि विमान वैकुण्ठ सिधैहौ॥
असकहि निजगृह गये महेशा। शवरी शवर बसे वहि देशा॥
कुं०॥ शवरी हरिआगमन लखिशवरसहित हरखानि।
पूजनकरि अस्तुतिकरी दिये मधुरफल आनि॥
दिये मधुरफल आनि राम लक्ष्मण लै खाये।
ह्वै प्रसन्न वर दीन्ह तिन्हैं निजलोक पठाये॥
रामभजन कविकहे भक्ति बर मैं प्रभु पावौं।
निशिदिन ध्यावौं तोहिं सदा तुम्हरे गुण गावौं॥

इति श्रीराधाविषादमोचनावल्यांरामभजनत्रिवेदीविरचितायांशवरीविपाके पञ्चविंशतितमोऽध्यायः २५॥

श्लोक। षड्विंशेचरामस्य नागपाशेनबन्धनम्॥
तद्धेतुंपरशुरामस्य रामायणभितीर्य्यते॥ १॥
दो०। रामदरश शवरिहिभयो सो बरणो मुनिनाथ।

सुनौ नन्द घननाद जिमि रण बांधे रघुनाथ॥

चौ०।सुनहुयुधिष्ठिरजबभगवाना। बलिहि जाइ यांचो महिदाना॥
तीनि पाइँ पृथ्वी नृप दीजै। सुर नर नागलोक यशलीजै॥
तब बलि बामन चरण पखारे। आइ शुक्र गुरु बचन उचारे॥
रे नृप बचन मानु परमाना। बिप्र न जानु जानु भगवाना॥
ये तुम्हार सर्वस हरिलेहैं। तोहिं बेंचि इन्द्रहि लै देहैं॥
तबबलि पदगहि गुरुहिनिहोरा। बचन अमिथ्या होइ न मोरा॥
देउ दान चहु सर्वस जाई। शिवि दधीचि यश रह्यो बसाई॥
जबबलि गुरुकी कही न कीन्ही। तब मुनिशाप क्रोधकरिदीन्ही॥
सपदि सम्पदा तव हरिजाई। बन्धन होइ अधोगति पाई॥
तदपिनृपति बलि दीन्हो दाना। तब बिराट तनु भे भगवाना॥
तीनों लोक पाइँ दुइ कीन्हा। बलिहिबँधाइ बहुरि हरिलीन्हा॥
बलिपत्नी सोइ जालकमाला। पतिव्रता पहुँची ततकाला॥
पतिहिदेखितेहि अतिदुखमाना। दीन्हशाप कह सुनु भगवाना॥
तुम्हरो नाम रैन दिन लूटै। सो नर भवबन्धन ते छूटै॥
प्रकट दरश दै चरण पुजाये। सर्वस पाइ पतिहि बँधवाये॥
ताते बन्धन होइ तुम्हारा। असकहितेहिपुनिबचनउचारा॥

दो०। ममसमेत पति देहतुम नापि लेहु भगवान।
नापि देह दै सुतल तेहि बिहँसे कृपानिधान॥
कह बामन बलिसन बहुरि द्वारपाल मैं तोर।
नितउठि दर्शन पाइहौ आत्मनिवेदन मोर॥

चौ०।बलिकीत्रियाबचनफुरकाजा। बधे जाइ होइ कौसल राजा॥

इति श्रीराधाविषादमोचनावल्यांरामभजनत्रिवेदी विरचितायांरामबन्धनविपाकेषट्विंशतितमोऽध्यायः २६॥

अथ मेघनाद विपाक ॥

अब तुम कथा सुनौ सुखकारी। मेघनाद जिमि भयो सुरारी ॥
सहसबाहु लीन्हो अवतारा। रावणतनय महाबल सारा ॥
जो भृगुमुनि ब्रह्मा के जाये। तिनके पौत्र ऋची कहवाये ॥
गाधिराज तनया शुभ रूपा। यांचीमुनिनृप लखि अनुरूपा ॥
श्यामकर्ण घोड़ा शत देहू। कन्याब्याहि मुनीश्वर लेहू ॥
यह सुनि बरुणलोक मुनिजाई। आनि अश्वदै कन्या पाई ॥
सत्यवती बिवाहि घर आये। नृप कन्या प्रियवचन सुनाये ॥
नाथ पुत्र अरु भ्राता देहू। दासी जानि करौ तुम नेहू ॥
यज्ञइष्ट ऋचीक मुनि कीन्हा। पायसयुग्म भाग तेहि दीन्हा ॥
ब्रह्मतेज यक छत्र बतावा। माता आत्म भागलै खावा ॥
विश्वामित्र तनय तेहि जाये। तेजपुंज मुनि भये सुहाये ॥
दूसर सत्यवती लै खावा। तबऋचीक यह बचनसुनावा ॥
क्षत्री घोरहोइ सुत तोरा। बन्धुहोइ मुनिवर सुनु मोरा ॥
विश्वामित्र गाधिसुत भयऊ। मुनिजमदग्निऋचीकहिलहेऊ ॥
रेणुकसुता रेणुका नामा। सो जमदग्नि केरिभै बामा ॥

दो०। एकदिना भृगुब्रह्म तन आये सुतन समेत।
तब मुनिवर जमदग्नि पुनि पूजे मुदित समेत ॥

चौ०अस्तुतिकीन्हसुआसनदीन्हो।कहिपितुपितामहामहिचीन्हो॥
जन्म सफल अबभा प्रभुमोरा। पावादरश सुखद शुचि तोरा ॥
कहभृगु आठतनय तब होइहैं। छोट पुत्र यश सुर मुनि गैहैं ॥
कामधेनु यक दै भृगु गयऊ। आठपुत्र मुनिवर के भयऊ ॥
तिनमा लहुर भये श्रीरामा। विद्या विनय शील सुखधामा ॥
जन्मोत्सव बहुविधिमुनि कीन्हो। दान अनेकद्विजनकहँदीन्हो ॥

भृगु वशिष्ठ विधि कश्यप आये। देव ब्रह्मऋषि नेवति बोलाये॥
जातिकर्म नान्दीमुख आदी। नामकरणविधिकरो अनादी॥
दूसर नाम बहुरि विधि भाषी। रामब्रह्म पूरण हरि साखी॥
युग युग जन्म लेहिं जग आई। पालहिं धर्म अधर्म दुराई॥
जासु नामजपि भवनिधि घोरा। सो जगतारक भा सुत तोरा॥
अस कहि सुजनसमेत विधाता। गे निजलोक जगत सुखदाता॥
मुदित रेणुका हरिसुत पावा। लै उछंग बहु विधि दुलरावा॥
गोर बरण तन पीत झँगुलिया। अरुणनयनतनश्यामलटुरिया॥
भुजविशाल पदसरसिजलाला। कंबु कंठ उर रुचिर बिशाला॥
तितुरे बचन दशन शशि तारे। लखिकिलकनि पितुमातुसुखारे॥
अन्नकर्म मुण्डन उपवीता। वेदारम्भ अचार पुनीता॥
बेद पढ़ैं नित आठों भाई। संयम नेम धर्म अधिकाई॥
प्रतिदिन पढ़ै तेज तन आवै। गुरु प्रसन्न ह्वै बेद बतावै॥
अन्वक्षिकी त्रयी नृप नीती। अस्त्र शस्त्र विद्या अति प्रीती॥

दो०। एक दिना रेणुक सुता गई रहै जल लेन।
होम करत जमदग्नि मुनि भूलिगई घृतदेन॥

चौ०। सुरसरितीर अप्सरा गावैं। नाचैं गति गन्धर्व बजावैं॥
देखत रही गहरु अति जाना। मुनि भयते तहँ कीन्हपयाना॥
कहपुनि मुनिनिज सुतनबोलाई। बधलायक यहि मारहुजाई॥
तब सातौ सुत कहा न कीन्हा। रामबोलि आज्ञा मुनि दीन्हा॥
बधुसुत सुतन सहित निजमाता। राम सबनकर कीन्हनिपाता॥
होइ प्रसन्न पितु बचन सुनावै। मांगु पुत्र जो तोहिं मनभावै॥
तब हरिबोले राम कृपाला। जीवहिं भ्रात मातु ततकाला॥
एवमस्तु कहि मुनि हरखाना। उठे विगतश्रम प्रभु मुसकाना॥

भाइन सहित राम एकवारा। तीर्थाटन कारण पशु धारा॥
सहसबाहु बन मृगया हेता। आवातहँ निज सेन समेता॥
ताहि तहां बन करत अहेरा। अथवा दिन निशिभई अबेरा॥
सुरसरि तट सन्ध्या मुनिकीन्हा। लै जलपात्र गमन गृहकीन्हा॥
मिलो बीच नृप मुनिवर जाना। चरणलागि निजनामबखाना॥
दत्तात्रयी शिष्य में नाथा। कीर्त्तिवीर्य सुतसुनु मुनिनाथा॥
करत अहेरा भई अबेरा। सत्तरि योजन मुनिगृह मेरा॥
सेन समेत क्षुधित मोहिंजानी। दे बिश्राम महामुनि ज्ञानी॥
यह मुनि सबै साथ मुनिलीन्हा। यथायोग्य आसन शुभदीन्हा॥
शय्यापात्र बस्तु बिधिनाना। इन्द्रधाम सम बिमल बिताना॥
शीतल मन्द सुरभि जहँ बाई। सेन सहित नृपदीन टिकाई॥
मोदक शष्कुलि व्यञ्जननाना। अमृतसदृश रचिअन्नबिधाना॥
स्वादूदक फल मुनिवर लाये। सेनसहित तहँ नृपहिजिमाये॥
बहुरि दिये मेवा पकवाना। अँजये जल पाये तिनपाना॥
सबहि डासि शुभ सेज सोवाई। निजगृह गये बहुरिमुनिराई॥
होत प्रात चारक नृपबोली। देखहु मुनिगृह बस्तुअमोली॥
ते चारक मुनिवर गृह आये। देखि कुटी सुधि नृपहिसुनाये॥
छानी टूटि फूट गृह नारी। बसन रहित यक धेनु बिचारी॥
कुश अरु समिधि श्रुवाबहुफूला। भोजन तासु कन्द फल मूला॥
डासन व्याघ्रचर्म मृगछाला। बहु बिभूति रुद्राक्ष कै माला॥
यज्ञकुण्ड यक मन्दिर माहीं। शिष्यनसंग मुनि होमकराहीं॥
और बिभव हम दीख न राजा। कामधेनु कृत सकलसमाजा॥
यह सुनि सहसबाहु उठिधावा। मंत्रिन सहित तहांचलिआवा॥
करि प्रणाम अस्तुति बहुकीन्हीं। मांगी गाय न मुनिवरदीन्हीं॥

कह नृपा में अभ्यागत तोरा। देहु गाय मोहिं करत निहोरा॥
दो०। ब्रह्मा यह भृगुकादई भृगु प्रसन्न है मोहिं।
पिता पितामह धेनु यह नहिं नृप देहौंतोहिं॥
चौ०।असकहिहोमकरनमुनिलागा।नृपगहिचरणधेनुपुनिमांगा॥
कह पुनिमुनिसुनु ममनरनाहा। जेहिते सकल धर्म निरबाहा॥
कह नृप मुनिवर लेहु लराई। नाहिंत सपदि देहु मोहिंगाई॥
असकहि सहसबाहु उठिधावा। लै दल मुनिवर भवन घेरावा॥
कामधेनु लखि मुनि ब्यकुलाई। कोटिन तनते सेन बनाई॥
खुरन ते खुरासान उपजाये। एककोटि नृप सनमुख धाये॥
पृष्ठिते कोटिन भये पखाना। नृप सन्मुख तिनहनेनिशाना॥
रोमन रोम साम उपजाये। अस्त्र शस्त्र गहि युद्ध मचाये॥
मनते म्लेच्छ सयन ते सैदा। रज रजपूत भये बहु पैदा॥
गोबर ते बहु गज उपजाये। मूत्र ते घोड़ा भये सोहाये॥
शृंगन ते बहु अस्त्र बनाई। सादर दीन्हे मुनिहिं बोलाई॥
बख्तर कवच तूण दुइ दीन्हे। पन्न धनुष धारण मुनिकीन्हे॥
शिष्यन सहित चले मुनिराजा। लागे बजन जुझाऊ बाजा॥
बरषहिं अस्त्र शस्त्र दोउ ओरा। करैं सुभट रण दारुण घोरा॥
क०। चमकैं रणमें किरपाणघनी कोइ बाण त्रिशूल शतघ्नि चलावैं। परिघा चटकैं फरसा सटकैं घचकैं तनभल्ल चिकार मचावैं॥ उमँगे रणबीर प्रहार करैं गद यान दया तन मारति आवैं। फफकैं बृण रक्त प्रवाह स्रवैं रण मूड़ बिना धर कोटिन धावैं॥ १॥
गजमस्तक मस्तक घोड़न के रणमें नर मस्तक कोटि परे। मुनि नायक शायक लक्षचलैं दलनायक पायक जूझिमरे॥ शत पंच सराशत पंचन में सहस्रा सहसै भुजयुक्त करे। नभ

भूमि भुजंगम से फुफुकें रण कानन बानन बर्षिभरे॥ २॥

दो०। तब मुनिनायक कोप करि काटि सहसभुजवान।
दल समेत बध तासु करिशोचत कृपानिधान॥

चौ०।यहनृपमम अभ्यागतआवा।अनुचितकहिमुनिबहुरिजियावा॥
सेन सहितमुनि नृपहिंजिआई। सादर लै कीन्ही पहुनाई॥
कह मुनि सुभट बहुतजगमाहीं। बल विद्या यश तुमसम नाहीं॥
बहुतक अश्वमेध तुम कीन्हो। बहुगोदान द्विजन कहँ दीन्हो॥
दत्तात्रयी शिष्य तुम भाई। माहिषमती राज करु जाई॥
यहि विधि मुनिवरनृपहिप्रबोधा। गे निज आश्रम परिहरिक्रोधा॥
प्रातहोत नृप खबरि जनाई। भृगुपति गाय देहि पहुँचाई॥
की मुनि आइकरैं संग्रामा। होत बिलम्ब जाउँ निजधामा॥
सुनिपुनिमुनिमनविस्मयभयऊ। तुरतै कामधेनु पहँ गयऊ॥
तेहि चतुरंगिनि फौज बनाई। मुनिहि अस्त्रदै कह समुझाई॥
नृपसन युद्ध करौ तुम ताता। रिपुपर कृपा बहुत दुखदाता॥
तबलग सहसबाहु उठिधावा। भृगुनायक सन युद्ध मचावा॥

कुं०। चंद्रबंश भृगुवंश सन होत महारण घोर।
गर्जहिं तर्जहिं गहगहे बजैं नगाड़े जोर॥
बजैं नगाड़े जोर दुऔदल सन्मुख धावैं।
अस्त्र शस्त्र करगहे शूर रण मारति आवैं॥
रामभजन कविकहै आदिरामायण जोई।
गावै प्रेम समेत परमपद पावै सोई॥

इति श्रीराधाविषादमोचनावल्यांरामभजनत्रिवेदीविरचितायांआदिरामायणे नामपष्ठविंशोऽध्यायः २६॥

श्लोक। सप्तविंशेजमदग्नेर्देहत्यागोचरेणुका।
सतीभूत्वाचरामस्यसंकल्पंकथ्यतेततः॥

छं०। राजा रथते तुरत उतरिके मुनिहि दण्डवत कीन्हीं। प्राण दान तब यांचो राजा यहै आशिषादीन्हीं॥ करन लगे दोउ युद्ध परस्पर बाणन वर्षा लाई। देखि महाबल रिपु मुनिनायक पावक शर समुदाई॥ छोड़िदिये सहसा निजदल लखि जरतै फौज बचाई। राजहिं मेघबाण वर्षाकरि पावक दीन्ह बुझाई॥ तब मुनिनायक बायुबाण लै नृपकी फौज उड़ाई। उड़त देखिदल पर्वत बर्षे निजदल लीन्ह बचाई। मुनिवर बाण पासुपति साधो सेनसहित नृपमारो। मुनिकेचित्त दया तब आई धनुष हाथतेडारो॥ पढ़ि संजीवनि मन्त्र तन्त्रते तुरतै सकल जियाये। करिसनमान बसन भोजन दै आश्रम शयन कराये॥ राजा मन्त्र जपो आकर्षण गुरु दत्तात्रय आये। अपनी सकल व्यवस्थानृप ने कहि गुरु को समुझाये॥ अस्तुति विविधभांति नृप कीन्ही शक्ति घातिनी पाई। दत्तात्रिय कही तुम अनुचित मुनिसन कीन्हलराई॥ क्षत्रियवंश नाश विधि कीन्ही कुमति कहां ते आई। द्विजतेहारे लाभ बहुत है जीते नहीं भलाई॥ साठिहजार सगर पुत्रन की मुनिवर कथा सुनाई। तीनि जन्मलग मुक्ति न तोरी द्विज कर मरन बताई॥ दत्तात्रेय गये सतिमण्डल नृप पुनि कीन्ह लराई। मुनिसन युद्ध कीन्ह नृप दारुण करगहि शक्ति चलाई॥ मुनिके लगी शक्ति छाती बिच भूमि गिरे अरराई॥ राम राम हा राम राम कहि तनुत्यागे मुनिराई। कामधेनु ततकाल जाय तहँ रामहिंखबरिजनाई॥ तीनि बार परिकरमा करिकै ब्रह्मलोक गइ गाई। राजा कामधेनु नहिं पाई घरहि गये सकुचाई॥ समरभूमि जूझे

निजपति लखि तुरत रेणुका आई। प्राणनाथ हा प्राणनाथ कहि विलपति अतिव्यकुलाई॥ बन्धुन सहित राम तहँ आये मुनिभृगु मुनि समुदाई। कहत ज्ञान उपदेश विविध विधि रामहिं शोचन जाई॥ करि आचमन प्रतिज्ञा कीन्ही कहि प्रभु सबहि सुनाई। तीनिसप्तक्षत्री बिन पृथ्वी करब सुनौ चितलाई॥ गो द्विज घात आदि जेतरे अघ मोहिं लगैं सबआई। जो ना करौं अकच्छक्षत्र कुल भृगुकुल लाज लजाई॥ सुनि सुतबचन रेणुका निजउर रामहिंलीन लगाई। नृप कुल कठिन सरल ब्राह्मणकुल दया धर्म अधिकाई॥ करि पितु क्रिया नेम संयम करु जो मुनिभृगुहि सुहाई। अस कहि पतिहि राखि चित ऊपर आपु चढ़ी हरषाई॥ आठौ तनय काष्ठ घृत डारत पावक दीन्ह लगाई। सत्यलोक पहुँचे जब दम्पति भृगु विधि सकल कराई॥ सप्तऋषीश्वर मण्डल जैहैं भृगु कहि कथा सुनाई। ब्रह्मलोक तुमका लै चलिहौं रामहिं चले लिवाई॥ रामभजन पण्डित यह गाई रामकथा सुखदाई।

युधिष्ठिरउवाच॥

पूरब कस अघ कीन्ह गोसांई। क्षत्री हाथ मृत्यु मुनि पाई॥

व्यासोवाच॥

सुनु राजा जमदग्नि प्रसंगा। जबशिवकीन्ह दक्षमख भंगा॥
नन्दीश्वर यह शाप सुनाई। कश्यपजन्म लेहु महि जाई॥
क्षत्री कर फिरि मृत्यु तुम्हारी। तब अनुमत अपमान पुरारी॥
कश्यपलीन्ह जन्मजग आनी। भे जमदग्नि महामुनि ज्ञानी॥
कद्रू भई रेणुका आई। जेहिपतिसँग निजदेह जराई॥
कुं०। ब्रह्मलोक भृगुपतिगये मन प्रसन्न भृगु साथ।
कीन्ह दण्डवत दूरि ते पुनि पुनि नाइनि माथ॥

पुनि पुनि नाइनि माथ हरषि आसन बिधिदीन्हो।
कहिकहि प्रियसुत वत्सपुत्र आदर अतिकीन्हो॥
रामभजन कवि कहै रामयश जस मुनि पावा।
मानस सुखद रसाल मोक्षप्रद लखि कै गावा॥

इति श्रीराधाविषादमोचनावल्यां रामभजनविरचितायांआदिरामायणेरामचरित वर्णनोनामसप्तविंशतितमोऽध्यायः २७॥

श्लोक। अष्टाविंशेवरंलब्ध्वा परशुंचशिवाज्ञया॥
रामेणक्षत्रभंगश्च त्रिसप्तमितिकथ्यते १॥

व्यासोवाच॥

दो०।राम प्रतिज्ञा सकल भृगु पितहि सुनाई जाय।
दशन अंगुली चापि बिधि सुनतगये मुरझाय॥

ब्रह्मोवाच॥

चौ०।रेसुतमन्दबुद्धिकसकीन्ही। दुर्लभ कठिन प्रतिज्ञा लीन्ही॥
चाहत कीन्ह सृष्टि संहारा। वृथा मनोरथ पुत्र तुम्हारा॥
तप हित विप्र बदन ते जाये। बाहु ते पालक क्षत्रि कहाये॥
क्षत्रिन सौंपो राज भँडारा। तुम चाहत मम सृष्टि उजारा॥
सुनि बिधिगिराराम बिलखाना। वृथा मनोरथ गत मम प्राना॥
बिधि भृगु देखि राम ब्यकुलाई। करि सलाह रामहि समुझाई॥
कह बिधि तुम शङ्कर पहँ जाई। करि प्रसन्न निजकथा सुनाई॥
शङ्कर दीनदयाल सुजाना। तुमपर कृपा करहिं भगवाना॥
तुमरो तात विष्णु अवतारा। पालहु सृजहु हरहु महिभारा॥
जो कछुअनुचित कहेउ गोसाईं। अनजाने तव लखि लरिकाईं॥
फरसा धनुष कवच शिव बाना। मिलइजो तोहिं होइ प्रणठाना॥
काली दुर्गहि बहुत मनाई। कारज सिद्धि करहु सुतजाई॥

सुनि बिधि गिरा बहुत हरषाने। भृगु रामहिं शङ्कर पहँ आने॥
भृगुकहँआवतलखिशिवधामा। उठिआगे चलि कीन्ह प्रणामा॥
राम शम्भु पद नायहु शीशा। आसनदीन्ह हरषि गौरीशा॥
कुशल प्रश्नकरि आदर कीन्हो। मोपर कृपा गमन करिचीन्हो॥
भृगु हँसि बोले बचन रसाला। सुनहुसुखद शिवदीनदयाला॥
मम कुलमुनि जमदग्नि प्रवीना। तासुदुःख सुत दुखी मलीना॥
आरत शरणागत यहु आवा। करहु शिष्य दै मन्त्र सुहावा॥
दो०। असकहिरामहि बाहुगहि दीन्ह शिवहि पकराइ।
चरण मेलि निजलोक गे शिवलीन्हो उरलाइ॥
चौ०सुनहुराम तुममोहिं पियारे। जिमिगणपति षडबदनदुलारे॥
अस कहिशम्भुतिलकतेहिसारा। लै निजसँग पुहकर पगुधारा॥
करि स्नान त्रिपुण्ड्र खँचावा। रामहिं तारकमन्त्र सुनावा॥
पुनि निज मन्त्र षडाक्षर दीन्हों। दै पुनि परसनाम तेहिकीन्हों॥
बांटि प्रसाद शम्भु गृह आये। नृत्यगीत बहु बजे बधाये॥
धनुष आनि रामहिं यक दीन्हो। पनचचढ़ाइ टूक दुइ कीन्हो॥
अन्य धनुष शङ्कर मँगवाये। राम तोरि दुइटूक चलाये॥
जानो शिव भा प्रभु अवतारा। जयतिजयतिइति बचनउचारा॥
तब आजगव धनुष शिव दयऊ। राम चढ़ाइ टकोरत भयऊ॥
ज्याध्वनिअतिप्रचण्डभा शोरा। पाशुपात सुरदीन्ह अँकोरा॥
तूण कवच आयुधविधि नाना। मोहिंदीन हँसि शम्भुसुजाना॥
परशुराम जब आयुध पाये। सब शिवते बृत्तान्त सुनाये॥
सुनि दुर्गा बोली करजोरी। नाथमोहिं जनि दीजियखोरी॥
क्षत्री बहुत होम नित करहीं। नेम धर्म पूजा बलि धरहीं॥
कोइ गणेश सेवक कोइ मोरा। कोइ काली सेवक कोइ तोरा॥

सूर्य्य विष्णु लक्ष्मी व्रत धारी । तिनकहँकोउ किमिसकैसँहारी ॥
यहु द्विज मूढ़ वृथाप्रण कीन्हा । यहिकानाहक पशुपति दीन्हा ॥
जबलग करसत चन्द्र हमारी । क्षत्रिन तन को सकै निहारी ॥
सुनि समुझायहु बहुत पुरारी । पायँन परशुराम लै डारी ॥
परशुराम तब अस्तुति कीन्ही । हँसि दुर्गा अशीश तब दीन्ही ॥
होइ जाहु प्रण सत्य तुम्हारा । तुमसुत जिमिगजवदनकुमारा ॥
कालिहि बहुरि कीन्ह परणामा । करि परिक्रमा चले गृह रामा ॥
भाई मिले राम गृह आये । तब भृगुबंशी सकल बुलाये ॥
पितृ शिष्य दल लै सब संगा । चलतसगुनशुभ फरकतअंगा ॥
कर पुस्तक दुइ द्विजवर आवैं । जय होइहि जनुप्रकट बतावैं ॥
दधि कर एक गोपिका आई । मीन पीन मगदीन्ह देखाई ॥
रोदन हीन एक शव देखा । जनु कारजभा सिद्धि बिशेखा ॥
षोडश द्वादश भूषित नारी । परशुराम मग जात निहारी ॥
यहिविधि सगुनहोत मगजाता । रेवातट पहुँचे सुरत्राता ॥
बटतर उतरि खबरि पहुँचाई । आये राम सँग सब भाई ॥
सहसबाहु सुनि सबहि बोलावा । युद्ध हेत निज सैन सजावा ॥
क्षोहनि द्वादश सुभट अपारा । नृप आयसु सुनि भये तयारा ॥
सो सुनि खबरि रमा जब पाई । नृपहि महलबिच लीन्हबोलाई ॥
पायँन परि बहुविधि समुझावा । परशुराम अवतार सुनावा ॥
शङ्कर शिष्य कथा तेहि भाषी । अस्त्रदान दुर्गा जिमि माषी ॥
पुनि दुर्गा जिमि दीन्ह प्रसादा । कहीकथा तेहि सहितविषादा ॥
जिमि जमदग्नि बिप्र रण मारा । ब्रह्मघात अघकीन्ह अपारा ॥
अब जनि जाहु रमा कह रोई । जन्मतीनि निस्तार न होई ॥
बहुविधि रमा ताहि समुझावा । सहसबाहु मन एक न आवा ॥

व्याकुलहोइ समाधि तेहिकीन्हा। प्राणचढ़ाइ छांड़ि तनु दीन्हा॥
देखा पतिव्रता तनु त्यागा। तियबियोग दुख दारुणलागा॥
मरतिबार तेहि शाप सुनाई। रावणतनय होहु पति जाई॥
अवध रामलैहैं अवतारा। तासुनारि पितु हरिहि तुम्हारा॥
तब दारुण होइहै संग्रामा। बांधहु नाग फांस तुम रामा॥
लक्ष्मण शेषनाग अवतारा। तासुहाथ पतिमरण तुम्हारा॥
वरबल होइ मरिहै बलजाई। मुनिनृप ताका शाप सुनाई॥
जोतजि मोहिं प्रथम तनुत्यागी। होहु निशाचरअधमअभागी॥
पति हित रामचन्द्र पहँ जैहौ। होइ विरूप अपमानहिं पैहौ॥
तीसर जन्म कूवरी केरा। तहां कृष्ण सतसङ्ग घनेरा॥
दो०। तासुक्रियाकरिबहुतधन नृपति द्विजन कहँदीन्ह।
साजिसेन चतुरङ्गिणी गमन रामपहँ कीन्ह॥
रेवापार सेन जब आई। परशुराम उठि लीन्ह लराई॥
द्वीप द्वीपके क्षत्रिय बीरा। सहसबाहु हित तजे शरीरा॥
अस्त्रशस्त्र लै कोटिन धावैं। फरसन हति मुनिभूमि गिरावैं॥
करैं महारण आठो भाई। बिलग बिलग होइ लेहिंलराई॥
परशुराम रण जेहि दिशिधावैं। काटिसुभट खरिहान लगावैं॥
सौ लरिका नृपके बलभारी। करैं युद्ध नहिं मानैं हारी॥
ते सब प्रथमै राम सँहारे। सहसबाहु रण जाइ प्रचारे॥
उतरि प्रणाम सहसभुज कीन्हा। रामभरण हितआशिषदीन्हा॥
कह कर जोरि सुनो मुनिराई। क्षत्रिन धन संग्राम सोहाई॥
ब्राह्मण क्षमा दयायुत जोई। तेहिका खोरि अहै नहिंकोई॥
मैं तुम्हार अनुचर पदसेवी। जिमि सुमनाशिव दुर्गादेवी॥
क्षत्रिय रणतजि अनत पराई। तेहि कपूत जग जानहुभाई॥

एक समय इत रावण आवा। जलक्रीड़तमोहिंबहुतखिझावा॥
तब मैं पकरि बांधि जल लीन्हा। ब्राह्मण जानिछांड़ितेहिदीन्हा॥
चलतबार मोहिं शाप सुनावै। ब्राह्मण हाथ मृत्यु तू पावै॥
तापर रामा मम गृहनारी। यहै बात कहिमरी बिचारी॥
मोहिं हाल तुम मारि न पैहौ। कोटिन दुर्घट अस्त्र चलैहौ॥
दत्तात्रयी वर्म शिव दीन्हा। सो मैं मुनिवर धारणकीन्हा॥
जाहुभवन कुल कुशल विचारी। नत रेणुहिं होई दुख भारी॥
तीनिलोक महँ भूपति जेते। निज बशकीन्ह जीतिमैं तेते॥
दत्रात्रयी तंत्र मैं जानौ। तृण समान विद्या सब मानौ॥
दिनकी रैनि रात्रि दिनकरऊं। मैं रणचढ़ि कालहि नहिंडरऊं॥
करि परणाम चढ़ो रथ जाई। धनुपलीन्ह निजशङ्ख बजाई॥
धनुशत पंच बाण शत जोरा। छुटे चले फुफकति करिशोरा॥
राम आजगव तब सन्धाना। छांड़ि विशिष काटे रिपुबाना॥
सहसबाहु पुनि विशिष चलाये। राम काटि सब भूमि गिराये॥
कोटि कोटि शर एकहिबारा। अस्त्रशस्त्र बहु करै प्रहारा॥
दिशिअरुबिदिशिचलेसबओरा। भृगुबंशी ब्याकुल भा शोरा॥
क्षण महँ रणमहँ सकल गिराये। रामदेखि अतिशय भयपाये॥
बिप्र रूप धरि शिव तहँ गयऊ। दै अशीश मांगत तेहिभयऊ॥
ब्राह्मण जानि कही तेहिदेना। तब शिववर्म कही शिवलेना॥
कवच उतारि शम्भुकहँ दीन्हा। रामजाइ दारुण रण कीन्हा॥
लै कुठार ताकी भुज काटी। लतासमान सकल दिशिपाटी॥
काटैं प्रभु पुनि होइँ नवीना। तब लै परशुराम शिरछीना॥
परा भूमितल कुधर समाना। हनो असुरदल लै धनुशाना॥
एक सहस भट तासु सँहारे। देश देशके भूपति मारे॥

मृत्युञ्जय पढ़ि बन्धु जिआये। पुनि भृगुबंशी सकल उठाये॥
क्षत्रिय शोणित सरितन माहीं। तर्पण राम सभ्रातृ कराहीं॥
करि बहुदान चले प्रभुरामा। पहुंचे अवध न मन विश्रामा॥
रुक्माङ्गद कहँ खबरि पठाई। मिलु अकच्छ नहिं लेहु लराई॥
तब नृप मनमहँ बहुत विचारा। इष्टदेव गुरु विप्र हमारा॥
द्विजकर मरे नरक मोहिं होई। मारे ताहि होतगति सोई॥
क्षत्रिय तनुधरि रणहिं डेराई। जग अपयश कुलधर्म नसाई॥
अस असमंजस मनकरिराजा। चलोसाजिदल युद्ध समाजा॥
चलत कहा पुत्रहि समुझाई। द्विज बिरोध नहिंहोत भलाई॥
मिलेहु अकच्छ जाइ ममपाछे। अवध राजकरिहौ तुमआछे॥
मोरेचलत छींकभइ बांये। असगुन अशुभदेखिभयपाये॥
ताते तुमहिं कहत मैं बाता। युद्ध बरण जनि आयहुताता॥
असकहि चले सेन लै राजा। बाजनलगे जुझाऊ बाजा॥
विप्र वृन्द वशिष्ठमुनि साथा। रथते उतरि चरणधरिमाथा॥
विविध भांति मेवा पकवाना। लै रामहिं नृपमिले सुजाना॥
रामवशिष्ठहि मिले बहोरी। चरणन परे दुऔ करजोरी॥
रामहिं लै वशिष्ठ उरलाये। कहि प्रियवचननयनजलछाये॥
अहो तात कीन्हो प्रणभारी। पिता दुःख नहिं कहोसँभारी॥
क्षत्रिन एक धर्म बरियारा। रणते विमुख न जेहिसंसारा॥
ब्राह्मण दया धर्म व्रतनेमा। तपआचरण देवपद प्रेमा॥
वेद यज्ञ समाधि अरु ज्ञाना। यज्ञसूत्र लक्षण अस्थाना॥
द्विजहि नृपहि अन्तर बहुनाथा। देखु बिचारि पाद कहँ माथा॥
राम वशिष्ठहिं पुनि शिरनावा। आज्ञाहोइ करौंसोइ बाबा॥
तब वशिष्ठ मन बहुत बिचारा। असमंजस लखि बनपशुधारा॥

रामरूप हिय धरिनृप लीन्हा। करि बिनतीधनुगहिरणकीन्हा॥
सरयूतट रणभयो अपारा। रामतासु दल सब संहारा॥
रुक्माङ्गद भृगुवंश सँहारी। परशुरामसन लरो प्रचारी॥
परशुराम जे अस्त्र चलाये। मुखपसारिकाली सब खाये॥
लै त्रिशूल नृप दीन्ह चलाई। रामगिरे महिमूर्च्छा आई॥
कोसलेशलखि भृगुकुल नासा। मींजहिंकर मन बहुतउदासा॥
नृपहि आइ काली समुझावा। लै संजीवनि सबहि जियावा॥
नृपसन कवचलीन्ह निजमांगी। रामहिंलखि निजमारगलागी॥
परशुराम रण कीन्ह अपारा। दल समेत रुक्माङ्गद मारा॥
तासु तनय पितु बधसुनिकाना। लै दल आयतुरत रणठाना॥
द्विजन सहित तेहिआठौ भाई। खड्गमारि रणदीन्ह गिराई॥
तब तेहि पिता वचन सुधिआई। बिलपति भूमि गिराअकुलाई॥
मूर्च्छा मध्य रूप यक देखा। कोटिसूर्य सम शुभ्र विशेखा॥
दुर्गा बिहँसि कही तब बानी। उठुकरुयुद्ध छांड़ि गिल्यानी॥
पिता बिराध होइ नृप तोरा। तू बातापी दैत्य कठोरा॥
तुमहिं अगस्त्य भस्म जबकरिहैं। फिरिप्रलम्ब बलभद्र सँहरिहैं॥
तब शुभ मुक्तिहोइ नृप तोरी। सुनहु पितागति नृपतिब्रहोरी॥
अवध नरेश राम अवतारा। करिहैं बन बिराध संहारा॥
शाल्व दैत्यहोइहहि पितु तोरा। कृष्ण मारि तारहिं सुनुमोरा॥
ऐसेहि भृगुकुल सकल जियाई। दुर्गा कवच खड्ग निजलाई॥
नृपसुत परशुराम दोउ बीरा। बहुत भांतिरण कीन्ह गँभीरा॥
परा भूमि फरसा शिर मारा। परशराम मागध पगु धारा॥
कुं०। राम चरित वर्णन करै पावै पद निर्वान।
तातै मनमें राखिये प्रभुपद पद्मसुजान॥

प्रभुपदपद्म सुजान ज्ञान उत्तम मनआवै। सदाकरै हरिध्यान तबै उत्तम गतिपावै॥ रामभजन पण्डित बर्णत हरिलीला। बरणै प्रेम समेत सदा दायक शुभशीला॥ १॥

इति श्रीराधाविषादमोचनावल्यांरामभजनत्रिवेदीविरचितायांश्रादि रामायणेऽष्टाविंशतितमोऽध्यायः॥ २८॥

श्लोक॥ पूर्वरामंगतस्तत्रदक्षिणंचदिशंव्रजेत्।
पश्चिमाशांतरौगत्वारावणादिजयंकृतम्॥ १॥

व्यासउवाच। दोहा॥

राधा माधव ध्यानधरि गौरिगणेशहि ध्याय।
रामभजन बर्णन कियो श्रीगुरु आशिषपाय॥

होइ अकब तब मागध राजा। मिलोजाय लय विप्र समाजा॥
काशिराजकहँ दूत पठावा। लै दल दारुण युद्ध मचावा॥
भैरव मन्त्र साधि लै बाना। मूर्च्छितकरि गृहगवासुजाना॥
तीनि वर्षकर पुत्र बोलावा। मुण्डन करि तुरतै अन्हवावा॥
दै निज राज छांड़ि तन दीन्ह्यो। करिसमाधिशिवपुरपगदीन्ह्यो॥
उठे सकल द्विज मूर्च्छा जागे। कारू होय लरन तब लागे॥
तब मुनिनृपहिजीतिनहिं पावा। कामेक्षा सुमिरन मनलावा॥
कहदेवी रामहिं समुझाई। ब्रह्मबीज जहु सुनौ गोसांई॥
जहि सन नाथ मिताई कीजै। मोर भक्त लखिअभयकरीजै॥
असकहि देवी दीन्ह मिलाई। चले रमापति शङ्ख बजाई॥
तिरहुति जनहीं खबरि पठाई। छोरहि कच्चाकि लेहि लराई॥
तब बिदेह अस मन अनुमाना। संकट धर्म विप्र अपमाना॥
चूड़ा कर्म बिना शिशु आनी। सौंपहु ताहि सकल रजधानी॥
करि समाधि छोड़े नृप प्राना। विष्णुलोक चढ़ि चले बिमाना॥

हरिपारखदन नृपहि समुझावा। क्षत्री तनु धरि युद्ध बरावा॥
दूजे पर क्षेत्रहि परगाई। दीन्ह रहे तुम ताहि भजाई॥
करि यम दरशन हरिके लोका। चलहुवसौगत विषयविशोका॥
जनकराज तब नरक निहारे। नरकी नरकनते भय न्यारे॥
जय जय शब्दकरैं सब भारी। रक्ष रक्ष इति वचन उचारी॥
राजा गये जहां यमराजा। करिप्रणाम लखि धर्म समाजा॥
बोले मधुर वचन रस बोरा। नाथ धर्म राखहु तुम मोरा॥
रक्ष रक्ष सब जीव पुकारैं। करु कछु कृपा नरक निरधारैं॥
कह हँसि सौरि जगत यश लेहू। प्रातकाल सुमिरन तुम देहू॥
ताते नरकी होहिं सुखारी। एक दिनाकी पुण्य तुमारी॥
यह सुनि जनक प्रतिज्ञा कीन्ही। पुण्य जन्म भरिकी सब दीन्ही॥
नरकी तारि बिमान चढ़ाये। फिरि यमराजहि वचन सुनाये॥
परशुराम जे क्षत्री मारैं। तिनका नरक दूत जनिडारैं॥
ते सब असुर योनि जगजावैं। हरिके हाथ मृत्यु फिरि पावैं॥
लेहैं रामकृष्ण अवतारा। सुर द्विजहेत हरण महिभारा॥
शेष पुण्य तेऊ मम पावैं। हरिकर मरि हरिलोक सिधावैं॥
अस कहि नृप फिरि शंख बजाई। नरक अशेष जीव निकसाई॥
गे बैकुंठ मुनिन यश गावा। परशुराम यश सुनहु सोहावा॥
तहांते राम ओड़ैसहि आये। अस्त्र शस्त्र गहि क्षत्री धाये॥
तिनहिं मारि दक्षिण दिशि जाई। रावण भृगुपतिकी सुधि पाई॥
संग पुलस्त्य पितामह लीन्हा। दशमुख आइ दण्डवत कीन्हा॥
राम पुलस्त्यहि कीन्ह प्रणामा। बोले दशमुख कहि निजनामा॥
इष्टदेवके शिष्य गोसाईं। तुम षट्मुख गणपतिकी नाईं॥
करहु कृपा मोहिं सेवक जानी। तुममोहिंकहँजिमिशम्भुभवानी॥

चलौं संग जो आयसु पावौं। भुजबलसकल जीति जगलावौं॥
परशुराम कह तुम सब लायक। पौत्र पुलस्त्य शम्भुके पायक॥
अस कहि द्राविड़देश मँझावा। क्षत्री खोजि जहांलगि पावा॥
तिनहिंनिपातिसकलदिशिधाये। मत्स्यदेश भृगुपति जब आये॥
मत्स्यराज सुनि लै दल संगा। अति जुझार राच्यो रण रंगा॥
कीन्ह युद्ध कछु वरणि न जाई। रामसमेत मारि सब भाई॥
भृगुवंशी सब समर गिराये। मत्स्यराज निज धाम सिधाये॥
तब भृगुगये सूर्यके धामा। कश्यपसहित न मन बिश्रामा॥
अस्तुतिकरि तिन सूर्य्य मनाये। विप्ररूपसन तुरत पठाये॥
सूर्य कवच मांगी नृप दीन्ही। तब रबि जाइ सजीवनि लीन्ही॥
सबहि जिआय सूर्य्य गे धामा। पुनि उठि शंख बजायहु रामा॥
मत्स्यराज सन कीन्ह लड़ाई। परशु काटि महि दीन्ह गिराई॥
लड़े जाय फिरि केकय राजा। जूझे रणमहँ सहित समाजा॥
नैषद राम संग रण कीन्ही। जियतै नेक पीठि नहिं दीन्ही॥
सजिदल कुशस्थलीपति आवा। काटि परशु रण राम गिरावा॥
चन्द्रवंश नरपति बलवाना। इन्द्रप्रस्थ भृगुपति रण ठाना॥
आपुहि प्राणछांड़ि नृप दीन्हो। सुरपतिभवन गवन तेहिकीन्हो॥
तिनहिं निपाति राम ततकाला। तुरतहि पहुंचे नगर विशाला॥
वैसालीपति परम जुझारा। रघुवंशी रण टरै न टारा॥
तासों तहँ रण भयो अपारा। तब आये तहँ धर्मकुमारा॥
नर नारायण दोनों भाई। कहि प्रिय वचन बहुत समुझाई॥
यहु नृप सुत मुनि हमरो दासा। सब तजि एक मोर विश्वासा॥
तासों तात मिताई कीजै। दास जानि निज अभय करीजै॥
यह सुनि राम ताहि उरलाई। कुशिकवंश रण जीतेहु जाई॥

विश्वामित्र मिले तव आई। सत्यवती की कथा सुनाई॥
पितु मातुल जानो जव रामा। कुशल प्रश्न कहि कीन्ह प्रणामा॥
कौशिकवंश अभय करिआगे। चले राम पशु पति पग लागे॥
यहिविधि भृगुपति इकइस बारा। क्षत्रिन बंश जाइ संहारा॥
कुरुक्षेत्र पितु कर्म बनाई। कीन्ह तिलांजलि आठहु भाई॥

दो०। प्रथम प्रभासक क्षेत्रमें क्षत्री क्षतज निचोरि।
पंच स्यमन्तक कुण्ड में करि असनान वहोरि॥

भाई सब निज धामं पठाये। भृगुनायक शिवधाम सिधाये॥
ड्योढ़ी सात नांघि जब गयऊ। गणपति पड् मुख रोंकत भयऊ॥
भीतर भवन जाहु जनि भाई। सोवत मात पिता जहँ जाई॥
बहुत दोष रति मन्दिर देखे। निंदक लोक बेदके लेखे॥
ताते मानो वचन हमारो। उभयलोक हित होइ तुम्हारो॥
यह सुनि बोले भृगुपति बानी। गणनायक सब लायक मानी॥
सुनहु तात पुत्रहि पितु माता। सदालखत शिशु पिछली बाता॥
माता पुत्रहि दूध पियावै। अस्तन देत लाज नहिं आवै॥
बहुत दिवस बीते मोहिं भाई। मात पिता पद देखौं जाई॥
अस कहि चले महाबल भारे। गणपति करगहि वचन उचारे॥
मातु पिता आज्ञा मोहिं भाई। भीतर भवन देहुं नहिं जाई॥
तुम क्षत्रिन कुरु कीन्ह संहारा। द्विजकुल धर्म न यहु संसारा॥
तीर्थाटन सब करि फिरि आई। दरशन बहुरि करहु फिरिभाई॥
बांह छड़ाइ चले मुनि नाथा। सूंड़ि लपेटि नाइ शिवमाथा॥
सप्तसिंधु में बोरि बहोरी। सब तीरथ वोरे बरजोरी॥
पुनि गणनायक शुण्डि बढ़ावा। मानसरोवर लै अन्हवावा॥

दो०। परशुराम को भूमि के सातबार चहुं ओर।

लै घुमाय रुद्रलोक में लोकान्तर बरजोर॥
ब्रह्मलोक बहु भांति देखाई। फिरि वैकुण्ठ दीख मुनिराई॥
बढ़ी ऊर्ध्व गति सूंड़ि प्रचण्डा। मुनिहिं देखाये सब ब्रह्मण्डा॥
जनतप आदि लोकजहँजेते। मुनिहि देखाये गणपति तेते॥
पुनि गोलोकजाइ देखरावा। विरजातटतल मुनिहिंभ्रमावा॥
पुनि शिवलोकमुनिहिं लैआये। ताकेचहुंदिशि बहुत भ्रमाये॥
फिरभृगुलोक डारि मुनिदीन्हो। पापरहित निर्मल तनुकीन्हो॥
उठि भृगुपतिधाये तेहिकाला। करगहि शंभु कुठार कराला॥
पहुँचे गणपति सन्मुख आई। कहत बहुत दुर्वचन सुनाई॥
पुनि मुनि बहुरिकुठार उठावा। गणपति सूंडि लपेटि फेंकावा॥
गिरेआइ मुनि निजगृह माहीं। लज्जितहोइगणपति पहंजाहीं॥
करि अतिकोप कुठार प्रहारा। दन्तभंग बह शोणित धारा॥
हाहाकार करत गणझारी। तहँआये गिरिजा त्रिपुरारी॥
देखि दशा गिरिजा मनमाखी। बोलीं वचन धर्मदै साखी॥
गुरुके तुल्य जानि गुरुपूता। तुम गुरुसेवा कीन्हि बहूता॥
फलदीन्हो अनिर्वतक तोहीं। यहै दक्षिणा दीन्हेहु मोहीं॥
गुरुते उऋणहोन तुम आये। सोऋणगणपतिके शिरलाये॥
दुर्गा कही शाप सुन मोरी। क्षत्री करे पराजय तोरी॥
तबलग तहां विष्णु चलिआये। हरगिरिजहिबहुविधिसमुझाये॥
विघ्नराज गणपति यकदंता। तासु नाम तब धरेहु अनंता॥
चरणन परशुराम लैडारे। शिव दुर्गा तब कीन्ह सुखारे॥
तब शिव परशुराम उरलाये। गणपतिको फिरि जाइमिलाये॥
यहिविधि सबहिसुखी प्रभुकीन्हा। फिरि बैकुंठलोक पग दीन्हा॥
कछुदिन परशुराम शिव सेवा। करतरहे जिमि दिवि हरिदेवा॥

आज्ञा मांगि राम गृह आये । भारत सहित बहुत सुखपाये ॥
परशुराम गृह बसि कछुकाला । पुनितपहित चलिगयेविशाला॥
परशुराम के चरित सोहाये । ते कुरुपति मैं तुमहिं सुनाये ॥
जो यह कथा सुनै अरु गावै । हरिके निकट बास सोइपावै ॥
कुं० । नारद सौभरि सों कही राम कथा सुखरूप ।
राधानंद प्रसंग यह तुमहिं सुनायन भूप ॥
तुमहि सुनायनभूप राममश विमलसोहावा ।
सरस्वतीके तीर महामुनि हमहिं सुनावा ॥
पंडित रामभजन मानस निज समुझि२ सोइगावै।
हरिके चरणसरोरुहकीरति भक्तिलाड़िली पावै ॥

इति श्रीराधाविषादमोचनावल्यांरामभजनत्रिवेदीविरचितायांपरशुराम गुणवर्णनोनामएकोनत्रिंशतितमोऽध्यायः ॥ २९ ॥

श्लोक । त्रिंशेपतिव्रतावार्ता लंकंजांववतोस्तथा ।
नानाविपाकविधिना गाडुरंकथितंशुभम् ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥

दो० । सुनहु व्यास तव कृपा ते रामचरित बहुभांति ।
सुने सुखद मनहर्षप्रद जिनते विपति विलाति ॥
चौ० । जामवानकोनाम प्रसंगा । पुनिमोहिं कहौ लंककर भंगा ॥
यह सुनि व्यास बहुत सुखमाना । कहनलगे पुनि कृपानिधाना ॥

व्यासउवाच ॥

सुनु नरेश मनकी अभिलाषा । पूछो नंद लाड़िली भाषा ॥
जो नारद सौभरिहि सुनाई । सो नरेश सुनु मन चित्तलाई ॥
एक समय नारदमुनि धीरा । गावत हरियश पुलक शरीरा ॥
पहुँचे विष्णुलोक हरिधामा । करि दर्शन भे पूरणकामा ॥

प्रथमै गायत्री गुणगावा। दुर्गा सुयश विशेष सुनावा॥
लक्ष्मी चरित कहे बहुभांती। गाइनि राधा गुणगण पांती॥
अनसूया यश पुनि पुनि गावा। बार बार कहि रमहिं सुनावा॥
तब लक्ष्मी बोली मुसकाई। ऋषितिय कहेउ धर्मनिपुणाई॥
पतिव्रता जग बहुत बखानी। तिनमहँकवनअधिकमुनिज्ञानी॥
कह नारद सुनु लक्ष्मी बयना। पतिव्रता सब अधिक सुनयना॥
अनसूया सम नहिं जगमाहीं। देखी नारि दूसरी नाहीं॥
असकहि नारद गे बिधिधामा। लक्ष्मीमन न लहै बिश्रामा॥
केहिबिधि तासु परीक्षा लेऊं। पठवउं काहि सिखावन देऊं॥
पुनि पुनि करि बिचार मनठाना। पठवौं तहां जाइ भगवाना॥
फिरि गायत्री बोलि पठाई। दुर्गा सपदि बोलि तरु आई॥
लक्ष्मी सब वृत्तान्त सुनावा। नारद चरित जवन बिधिगावा॥
बैठि सबन एक मंत्र दृढ़ावा। लेब परीक्षा असमन भावा॥
ब्रह्म विष्णु शिव मुनि गृहजाई। लेहिं परीक्षा करिय उपाई॥
असकरि शक्ति गई निजधामा। पूजिनि पतिन परीक्षाकामा॥
एक समय बिधि सुतहि बोलाई। अत्रिहि बहुबिधिकहसमुझाई॥
करहु तपस्या सुतहित ताता। बंशवृद्धि कुलजग बिख्याता॥
अत्रिपिता आज्ञाधरि शीशा। चले बनहिं तप हेत मुनीशा॥
चित्रकूट आये मुनि नाथा। कर्दम सुता चली पियसाथा॥
आइ सुनंदा तट तप कीन्हों। पढ़ि संकल्प छांड़ियहु दीन्हों॥
पालै सृजय हरै जग जोई। हमरो तनय आइ सोइ होई॥

दो॰ असकहि कीन्हों घोर तप इन्द्र बहुत भयपाइ।
ब्रह्मलोक गे देव सब विनय सुनाई जाइ॥

चौ॰ लय संगदेव शंभुपहँ आये। शंभुसहित बैकुण्ठ सिधाये॥

हरिसन सब बिधि कहेउ प्रसंगा। अत्रितीर आये सुर संगा॥
विष्णु स्वयंभू शंभु सुवानी। बोले निकट सुनौ मुनि ज्ञानी॥
चौदह सहस वर्ष तप कीन्हों। ऊरधबाहु बारि नहिं पीन्हों॥
अब पूरण संकल्प तुमारा। असकहिनिजनिजपुरपगुधारा॥
एक समय लक्ष्मी यह भाषा। पुरवहु प्रभु मनकी अभिलाषा॥
तीनौ देव अत्रि गृह जाई। जब अनसूया नग्नअन्हाई॥
ताकर सत्य परीक्षा लेहू। मिटै हमारो मन संदेहू॥
लक्ष्मी वचन सुने भगवाना। कहतबहानि न तेहि अपमाना॥
यहिविधि निज पति सबन पठाये। तीनौ देव अत्रि गृह आये॥
अनसूया जब वस्त्र उतारे। तब तीनौ जन तहां सिधारे॥
आवत देखि फेंकि जल मारा। भये बाल ततकाल कुमारा॥
परेभूमि तल तीनिउँ भाई। करिस्नान अत्रि पहँ जाई॥
तीनौ देव पुत्र होय मोरे। आये भवन अनुग्रह तोरे॥
आज्ञा होयतो दूध पियावौं। लैउछंग बहु बिधि दुलरावौं॥
तब मुनि तुरत तहां चलि आये। तीनों सुत उठाय उरलाये॥
अनसूया लै दूध पियावै। पेलना पलँग राखि दुलरावै॥
मुनि आँगन महँ तीनौं भाई। किलकहिं मात पिता सुखदाई॥
तिनके नामकरण मुनि भाखे। बिधिकर नाम चन्द्रमा राखे॥
दत्तात्रयी विष्णु अवतारा। तासु नाम बिधि कीन्ह उचारा॥
सुनु मुनि शंभु भये दुर्वासा। सेये मुनिते परम हुलासा॥
शक्तिन निजनिज पतिनहिंपाये। बीते मास घरहि नहिं आये॥
सोच करैं सब घर घर देवी। कोउ एकदूत पठाइय भेवी॥
तब लगि नारद तहँ चलिआये। घर घर सब वृत्तान्त सुनाये॥
सब मिलिगई अत्रि अस्थाना। निज पति कारण स्तुतिठाना॥

अनसूया कह निज गृह जाहू। पैहौ पति जनि मन पछिताहू॥
लक्ष्मी आदिक निज गृहआई। देखिनिनिजपतिअतिसुखपाई॥
पूछेहु नरपति अब सोइ हालू। भये जाइ ब्रह्मा जिमि भालू॥
कन्या साठि दक्ष जग जाई। तिन मह तेरह कश्यप पाई॥
एक शंभु लय सती बिवाही। स्वाहा एक अग्निगृह माही॥
षोड़स धर्महि दीन्ह त्रिवाही। मूरति आदि विदित जगमाही॥
पितरन स्वधा वषट ऋपिनारी। त्रिनव चन्द्रमा प्राण पियारी॥
तिनमा अधिक रोहिणी मानै। नितउठि तासु संग रति ठानै॥
यकदिनकनिकादिक अनुराधा। सबमिलि बैठिमंत्र यक साधा॥
जेठासन बोली कर जोरी। हमहिं सबै जनि दीजियखोरी॥
उडुपति रोहिणिके रस राते। कबहुन पूछय हमरी बाते॥
कही बिशेषा सुनहु पियारी। पिता भवनको करहु तयारी॥
सब मिलि गईं दक्ष अस्थाना। तिनको मर्म प्रसूती जाना॥
तेहिते दक्ष सुनीसब बाता। आय चंद्रमहिं बहुत रिसाता॥
सुनु मतिमंद शशांक अभागे। समता छोड़ि एक रस पागे॥
यक्ष्मा रोग होइ खलु तोहीं। श्रवै तेज तुषार उप लोही॥

दो०। होहु हेमांचल जाय जग राज महा रण धीर।
रामहेत फिरि ऋक्षपति जाम्बवान बलबीर॥ २॥

चौ०। यहकहिपुनिमनदक्षबिचारा। शशिबिनहोइजगतसंहारा॥
तब तहँ शाप अनुग्रह कीन्हो। पुनिसमुद्र उतपतिकहि दीन्हो॥
जबहरि सुर पय उदधि मथावै। बिषहित शंभु तहां चलिआवै॥
खाये गरल ताप अति जोरा। तब शशि होइ जन्म पुनि तोरा॥
अमृत सीत द्वइ कला तुम्हारी। माथे राखि सुखी त्रिपुरारी॥
सुनो चंद्र रबि मित्र तुम्हारो। एक कला नित देइ बिचारो॥

पूरण मंडल पूरणमासी। कृष्णे पक्ष कला यक नासी॥
अस कहि निज गृह दक्ष सिधाये। त्रिन सहित घूमि शशि आये॥
यहु नरेश विधि चरित बखाना। सोइ जग जाम्बवान बलवाना॥
सुनु नरेश पुनि आन प्रसंगा। जिमिकपि कीन्हलंककरभंगा॥
कद्रू विनता कश्यप नारी। तिनका विनता बहुत पियारी॥
विनता अरुण गरुड़ सुतजाये। सूर्य सारथी अरुण स्वहाये॥
दो०। विष्णुके वाहन गरुड़भे बेगवंत रणधीर।
योगी ग्यानी अति प्रबल शुक्ल बरण गंभीर॥
चौ०। कद्रू तनय नागबलरासी। विपहा महा रसातल बासी॥
एँक समय विनता गृह आई। कद्रू मिलि बैठी सुखपाई॥
कद्रू मन महँ करत बिचारा। विनता समनहिं विभवहमारा॥
गरुड़हि देखि महा बलवाना। तब कद्रू मन महँ यह ठाना॥
विनतहि वस्य करों केहि भांती। करिसोइ यतन जुड़ावहु छाती॥
गरुड़हि पन्नग देखि डेराहीं। सर्प अनेक गरुड़ नितखाहीं॥
यदपि न कीन्ह मोर अपकारा। तदपि गरुड़ है शत्रु हमारा॥
अस मन करि विनतासनभाखा। सुनु अचरज ए मैं सुनिराखा॥
सुनु बहिनी तुम मनिहौ नाहीं। तदपि सकोच कहौं तुम पाहीं॥
प्रातहि सूर्य श्याम लखिपरई। जाम एक भरि प्रभा न करई॥
कहविनतातुम अस जनि कहहू। मानहु वचन मष्ट करि रहहू॥
कह कद्रू कछु होड़ लगावहु। विनताकहजनि गालबजावहु॥
कबहु न भवा कबहुँ नहिं देखा। रविके निकट श्यामता रेखा॥
जोना होहि श्याम रविकाली। दासी मोहिं जानु निजआली॥
नतु तुम दासी होउ हमारी। साखी धर्म पवन महिवारी॥
सुनि कद्रूको प्रण विनताहू। एव मस्तु कहि हानि न लाहू॥

तब कद्रू फिर निज गृह जाई। काली सन बोली मुसुकाई ॥
पूत एक कुछ काज तुम्हारा। कीन्ह सिद्धि जोकरहु सहारा ॥
श्वेत धनंजय अरु करकोटा। सबमिलिरविहियामभरिओटा ॥
करहु तात तब मम प्रण होई। जेहिविधि रबिहि न देखैकोई ॥
यह सुनि काली लय सब नागा। पूरुब दिशि रवि सन्मुख लागा ॥
तब कद्रू विनता पहँ जाई। रवि मण्डल नहिं परत देखाई ॥
अब तुम चलौ हमारे धामा। चउका टहल करौ ममकामा ॥
असकहि निजमन्दिर लैआई। गृहकारजमहँ दीन्ह लगाई ॥
दासी दास बहुत जेहिकेरे। रहत समीत जासु रुख हेरे ॥
कश्यपमुनि की वहहै नारी। तिनमाविनताअधिकपियारी ॥
जब खुरपति मातन पहँ आवै। प्रथमहिविनतहि शीशनवावै ॥
गरुड़हि देखि महाबलवाना। दूजे विष्णु पारषद जाना ॥
असकोउ तीनिलोक मा जाई। गरुड़ संग जो लेइ लराई ॥
तासु मातु विनता सुकुमारी। कबहुँनकठिन अवनि पगुधारी ॥
सो कद्रू आज्ञा नित करई। रात्रि दिवस ताकहँ श्रमपरई ॥
कृशा शरीर तेहि बदन मलीना। देखी गरुड़ मातु निजदीना ॥
पूंछयो तेहि सब कह्यो प्रसंगा। खानलगे तब गरुड़ भुजंगा ॥
काली करकोटक सब भागे। जाइ लुकाने कद्रू आगे ॥
तब कद्रू गरुड़हि समुझाये। करिनिषेध सब नाग बचाये ॥
गरुड़हि कद्रू कहँ समुझाई। अमृत हेत जीतहु सुरराई ॥
अमृत पान कछु तुम करिआवो। लैकछु नागन अमृतपिआवो ॥
होइहिअदितिहि सम तवमाता। सेवा करब सकल हम ताता ॥
विनतहि दासी भाव छुटाई। जाहु तुरन्त मातु बलिजाई ॥
यह सुनि कद्रुहि कीन्ह प्रणामा। आये गरुड़ इन्द्रके धामा ॥

देवराज सन कह करजोरी। सुनहु तात बिनती यक मोरी॥
दासीभाव विकल महतारी। दुर्बल विनता अति सुकुमारी॥
अमृत देहु लै नाग पिआवौं। तात दोषते मातु छोड़ावौं॥
कह सुरेस गरुड़हि समुझाई। नागन अमृत देव नहिं भाई॥
पक्षिराज पुनि कह करजोरी। जिमिममातु मातु तिमितोरी॥
तदपि सुरेश कहा नहिंमाना। तब रिसाइबोले हरियाना॥
देहु पियूष कि लेहु लराई। असकहि गरुड़ उठे अरुगाई॥
तब सुरेस सब देव बोलाये। रणहितसकलसाजि दलआये॥
बासव ऐरावत चढ़ि धाये। पक्षिराज सन युद्ध मचाये॥
मघवा बानन की झरिकीन्ही। गरुड़हिश्वासलेन नहिंदीन्ही॥
चरण पंख अरु चोंच चलाये। गज तुरंग रथ पंख उड़ाये॥
बरुड़ मित्र दोउ करहिं प्रहारा। रण जयन्त वर्षेउ शर धारा॥
गरुड़ उसांस लेन नहिं पावै। चरण पंख अरु चोंच चलावै॥
गज तुरंग रथ पंख उड़ाये। बहुतक चोंच नोचि खग खाये॥
बहुतक देव करैं रण भारी। विनता तनय न मानै हारी॥
घायल श्रवै रक्त की धारा। पुनिपुनिवासव कुलिशसँभारा॥
तब खगपति मनमा अनुमाना। घायल क्षुधितश्रमित ममप्राना॥
इन्द्रहि पक्षन मारि गिराई। गहिगज तीनि उड़े खगराई॥
दुइ पंजन यक चोंच गयन्दा। उड़त न खात बनै जब नन्दा॥
तब सुमेरु ऊपर खग जाई। बैठि त्रिकूट खात बृजराई॥
गिरी त्रिकूट शृंग अरराई। दाबि चरण नभ चले उड़ाई॥
तबलगि तहँ रवि रथ नियराना। कीन्हप्रणाम अरुण सनमाना॥
दो०। बैठु गरुड़ मम जंघपर परबत गजन समेत।
करु भोजन श्रम दूरिकरि जाहु युद्ध के हेत॥

चौ०। बन्धुवचनसुनिमन हरषाना। बैठिजङ्घपर खग सहिताना॥
पुनि लै शृंग उड़ो खगराई। राखेहु सिन्धुमांझ तेहि जाई॥
इन्द्रहि जीति अमृत अहि पाये। दोष दूरकरि मातु छोड़ाये॥
तेहिपर लङ्का शम्भु बसाई। जात रूपमय सुभ्र सोहाई॥
परबत सत त्रययोजन भारी। योजन सत लङ्का बिस्तारी॥
सती समेत प्रवेश शिवकीन्हा। मुनिद्विजदेव निमन्त्रणदीन्हा॥
शङ्कर भोजन सबहि कराये। दिये दान सब के मन भाये॥
कह मुनि बिश्रवतनय कुबेरा। लेव दान सोइ जो मन मेरा॥
जबते ब्रह्मचर्य्य ब्रत कीन्हो। तबसे दान कबहुँ नहिंलीन्हो॥
शिव समान दाता नहिं कोई। जांचक जांचि अजांचकहोई॥
मम पितु सदा शम्भु गुण गावै। सेवन निशुदिनमोहिं सिखावै॥
अवसर आजु भाग्य ते पावा। लेब मांगि आपन मन भावा॥
विश्रवसुत कहि रहे चुपाई। शिवदयाल बोले हरषाई॥
मांगु विप्र मोसन जो चाही। मांगिलीन्ह लङ्कापुर ताही॥
देश वेश अरु फौज खजाना। अन्नबाजि गजसहित बिमाना॥
सर्बसु दै नन्दी शिव टेरा। चलौ शीघ्र जनि लागै बेरा॥
यहसुनिसती कोपअति कीन्हा। दारुण शाप कुबेरहि दीन्हा॥
राक्षस बास करै जेहि माहीं। कुछदिन लङ्करहै तुम पाहीं॥
कुछ दिन गये भस्म पुर होई। रुद्रअंश यहि डारै खोई॥
वानर भालु सकल गढ़ फोरैं। अरुअशोक बाटिक कपितोरैं॥
यह सुनि बोले वचन कुबेरा। सुनु अब सती वचन फुरमेरा॥
त्रेता राम लेहिं अवतारा। तिनहिं निरखि चितचलैतुम्हारा॥
तासु नारि लंकापति हरिहै। रघुबर त्रिया रूप तू करिहै॥
पति वियोग पुनि पितु गृह जाई। तजौ प्राण अपमानहिं पाई॥

यह सुनि शिव कैलासहिं आये। लंका राज कुबेरहि पाये॥
माल्यवान अरु मालि सुमाली। तीनौं बन्धु प्रबलबल शाली॥
संग सैन चतुरंग सोहाई। देवराज सन कीन्हि लराई॥
हारे दैत्य भजे तेहि काला। व्याकुल होइगे सुतल पताला॥
करि विचार यक मंत्र दृढ़ाये। कन्यालय विश्रव पहँ आये॥
अस्तुतिकरि कन्या निज दीन्हीं। ते मुनिवर विवाहि सब लीन्हीं॥
माल्यवान तनया सुत जाये। रावण कुंभकरण मन भाये॥
माली सुता बिभीषण पूता। अरु त्रिजटा हरि भक्ति बहूता॥
भे सुमालितनया खर दूषण। शूर्पनषा त्रिशिरा जगदूषण॥
एक बार धनेश तहँ आये। चढ़ि विमानपितुपदशिरनाये॥
माता चरन बहुरि शिरनावा। देखि पुत्र अतिशय सुख पावा॥
मातन सबहि जाइ शिर नावा। आशिष आदर बहुविधिपावा॥
पितु समीप पुनि जाइ बहोरी। विनती कीन्ह दुऔकर जोरी॥
मात पिता आज्ञा जब पावा। तब धनेश लंका फिरि आवा॥
रावण तासु विभव तबदेखा। अति संभ्रमभ्रम भयेहु विशेखा॥
भाजि कैकसी पृष्टि लुकाना। राजविभवलखिअतिभयमाना॥
कह कैकसी रोष युतबानी। जन्महु कोखि कीटमम आनी॥
यह तव बंधु महा गुण रासी। शिर प्रतापभा लंक निवासी॥
तुम पुलस्य कुल होइकुल बोरा। भ्रातन सहित क्लीव मनतोरा॥
टरु सुत जाइ बैठु मुख गोई। असकहि वचन कैकसी रोई॥
तब रावन मन अति सकुचाना। सँग भ्राता बन कीन्ह पयाना॥
करैं तपस्या तीनौं भाई। महा उग्र कछु बरणि न जाई॥
तप लखि तहाँ पितामह जाई। मांगु मांगु यह गिरा सुनाई॥
नर बानर त्रिय तीनि बिहाई। अवर हाथ जनि मरौं गोसांई॥

विश्व विजय शङ्कर बरजाना। पावों विधि मोहिं दे बरदाना॥
कहत बिभीषण दोउ करजोरी। हरिपद प्रीति होइ प्रभुमोरी॥
कुम्भकरण विधिगति मतिडासी। मांगिसिशयन नींद षटमासी॥
रांवण फिरि कुवेर पहँ आवा। लङ्काबसि कछु दिवस गँवावा॥
एकदिवस कुबेर सन भाषा। सुनौ तात मनकी अभिलाषा॥
जो कामग विमान मैं पावों। तीनौं लोक जीति घर आवों॥
लोकपाल सब अनुचर तोरे। हम सेवक सब तुम प्रभु मोरे॥
मोहिं न मारि सकै जग कोई। विधिवरदान काल किनहोई॥
सुनि कुबेर तब कहत रिसाई। कामग कबहुँ देव नहिं भाई॥
रावण कह मोहिं कामग देहू। नाहित युद्ध खेत चढ़ि लेहू॥
अस सुनिउठि कुबेरधनुलीन्हो। निकरि युद्ध रावणसन कीन्हो॥
जब धनेश रण जीति न पावा। तबपुनि शिवशङ्कर पहँआवा॥
बहु दिन शिव पूजा मन लाये। अलकापुरी बनाइ बसाये॥
रावण जीति भुवन दश चारी। करै राज्य नृपनीति बिसारी॥
जब तेहि हरी रामकी नारी। पवनपुत्र लङ्का तब जारी॥
सो प्रसंग हम तुमहिं सुनावा। जो सौभरि पहँ नारद गावा॥
कुं०। जाहि सुने सुख ऊपजे तुमहिं सुनायउँ नन्द।
सुने सुनाये नर तरै रामचरित सुखकन्द॥
रामचरित सुखकन्द फन्दभव सम्भ्रम टारै।
राम राम अरु रामचन्द्र कहि कहि उच्चारै॥
राम भजन कवि कहै राम पद पदुम सनेहू।
बाढ़ै प्रति दिन मोर कृपा करि शंकर देहू॥

इतिश्रीराधाविषादमोचनावल्यांरामभजनात्रिवेदीविरचितायांव्यासयुधिष्ठिरसंवादे जाम्ववानलंकाविपाकवर्णनोनामत्रिंशत्तपोऽध्यायः॥ ३० ॥

श्लोक ॥ एकत्रिंशत्तमेराधाभद्ररामायणंशुभम्।
कथितंनन्दप्रश्नेनमहापुण्यतमंहरेः ॥ १ ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥

दो०। राम चरित मोसन कहे क्षत्रवंश संघार।
रामचन्द्रके चरित पुनि लंका विजय प्रचार ॥
अब प्रभु रामभद्र गुण गावो। रामायण मुनि मोहिं सुनावो ॥

व्यासउवाच।

व्यास कहा सुनु नृपति प्रवीना। वरणौं हलधर चरित नवीना ॥
यह तृतीय रामायण गावों। कही राधिका तुमहिं सुनावों ॥
कहौं गरुड़ करनी नृप भाखी। प्रथमै कथा जहांते राखी ॥
शृंगत्रिकूट जलधि धरिगयेऊ। गरुड़ इन्द्र रण दारुण भयेऊ ॥
वरुण कुवेर पवन यम काला। हति चोचनसब कियेव्यहाला ॥
इन्द्रहि पक्षन दिये उड़ाई। अमृत कूप पहुँचो खग जाई ॥
कछुकपान करि भरिनिजचोचा। चले मातु दुख मन अति सोचा ॥
कद्रूसन कहि गिरा उचारी। यहुले अमृत आनि महतारी ॥
आज़ुते विनतहि अदिती जानो। आयसु तासु शीश धरि मानो ॥
अस कहि खग पतिगे हरिधामा। कद्रू मन न लहै विश्रामा ॥
एक दिवस कश्यप मुनि आये। कद्रू शुभ आसन बैठाये ॥
चरण पखारि असन करवाई। सुंदर सज्या दीन्हि विछाई ॥
बोली वचन द्वऊ कर जोरी। नाथ सुनौ बिनती यक मोरी ॥
मोकहँ कोउ यक मंत्र बतावो। जाते शेष सदृश सुत पावो ॥
कह मुनि तुम कद्रू सुकुमारी। संयम जाप धर्म अति भारी ॥
कह कद्रू सब कहो अचारा। करिहौं मुनिवर कहा तुमारा ॥
तब कश्यप बोले हर्षाई। सुनौ प्रिया तुम मन चित लाई ॥

योगके आठ अंग मुनि गावै। तेमा प्रथम अचार कहावै॥
एक याम यामिनि जब बाकी। आदि करै तब राम रमाकी॥
मही प्रार्थना शुचि अस्नाना। भोर भये आनय जल छाना॥
कुश प्रसून तुलसी दल लावे। गोमय चौका रुचिर बनावै॥
मृदा लेप करि बहुरि अन्हाई। धौत वस्त्र पहिरै तब जाई॥
लैजल शुचि कुश आसन डासै। प्रातः संध्या जाइ उपासै॥
जाय मंत्र तब जपै अचारी। इंद्री मन संयम करि प्यारी॥
योग को दूसर अंग कहावै। यम अरु नेम वेद बुध आवै॥
फिरि आसन चौरासी साधै। तिन महँ पुनि कमलासनबांधै॥
मन्त्र षड़ाक्षर जपि त्रय बारा। पूरकभरे स्वासकी धारा॥
तीनिबार कुम्भक जपि योगी। त्रय रेचक करिहैं अभोगी॥
अघमरषण आचमन बहोरी। अन्तर सुद्धिकरै इमि गोरी॥
जब षोड़स त्रिपवण बदिजाई। तले बैषरीजाप कराई॥
पुनि मुनि जपै पश्यती बानी। जपफल सतगुण अहै सयानी॥
अब तृतीय बानी में गावौं। पराजाप कहि तुमहिं सुनावौं॥
नाड़ी नवधा तब लखिपावे। योगी बानी परा बढ़ावै॥

अथाष्टाङ्गयोगनाम श्लोक॥

यमश्चनियमश्चैव पश्चादासनमाचरेत्। प्राणायामंततःकृत्वा प्रत्याहारंचधारणा॥ ततोध्यानंसमाधिञ्च अथनाडीर्वदाम्यहं। इडाचपिंगलाचैव सुषुम्णाचपयस्विनी॥ कूहूगन्धारिकानाडीक थिताशंखिनीयुभा। विलम्बिकेतिचैतेषां योगसिद्धिस्सुषुम्णया॥

चौ०। प्रत्याहार करै फिरि प्यारी। इन्द्री दशौ जीतिले न्यारी॥
तिनते पांच विषय बलवाना। योगिन करनदेत नहिंध्याना॥

अथ ज्ञानइन्द्री ॥

श्लोक। श्रवणंत्वचक्षुश्च जिह्वाघ्राणेचदेवता।
दिग्वाचर्कजुलेशाश्चपष्ठिचेन्द्रियनायकाः॥

चौ०। शब्दस्परसरूपरसगन्धा। विषया बलकरिडारत अन्धा॥

श्लोक। तस्माद्योगीकरोत्युचै प्रत्याहारंविशेषतः।
इन्द्रियाणाञ्चसर्वेषांविषयामनसासह॥

चौ०। तब तेहिज्ञानदृष्टिशुभआवै। हरिकेपदनख ध्यानलगावै॥

अथ आसनम्॥

चौ०। स्वसिक गोमुख आसन जानौ। कूर्मासन कुकुटउतानौ॥
पद्मासन धनुषा मस्तेंद्रा। भीमासन मयूर सिद्धेंद्रा॥
सिंहासन भद्रासन योगी। गोरस आसन करै अभोगी॥
बीरासन छिद्रासन धीरा। योग सिद्ध हित कसै शरीरा॥
सोरह आसन ये तुम जानौ। आठौ सिद्धि योग ते मानौ॥
अणिमा महिमा गरिमा आवै। लघिमाप्रीतिम कामापावै॥
बसीकरण ईसता बतावै। योगिहि सिद्धि आठजे पावै॥
योगी सिद्धिन निरखि न भूलै। तब समाधि साधै अनुकूलै॥
जब षट चक्र शुद्धकरि पावै। तब सुठियोग समाधि लगावै॥

श्लोक। अथषट्चक्रमाधारं स्वाधिष्ठानञ्चकीर्त्तितम्।
मणिपूरमनाहञ्च विशुद्धायेभवन्तिहि॥

चौ०। यहिविधिसब आचारबताये। कश्यपमुनि सुरलोकसिधाये॥
कद्रू नेम धर्म सब कीन्हो। करितप शेष मन्त्र मनदीन्हो॥
यहां जलन्धर शंकर मारा। मुनि लक्ष्मी मन दुःखअपारा॥
बिष्णु कीन्ह बृन्दाबृत भंगा। नारद मुनि सब कह्यो प्रसंगा॥
तब लक्ष्मी करि बहुत बिलापा। रिस करि हरिहि सुनाईशापा॥

जन्मलेहु पृथिवी पर जाई । शेष सहित तुम आठौ भाई ॥
ब्रह्मचर्य्य व्रत करहु अपारा । तहँ करिहौ क्षत्रिन संहारा ॥
जो मम भ्रात्रि त्रिया ब्रतधारो । नारि रहित अवतार तुम्हारो ॥
हरिइच्छा बलिउ कुरुराई । जेहि बस लक्ष्मी शाप सुनाई ॥
यक दिन विष्णु शेषसन भाषा । कद्रू तव तुम्हारि अभिलाषा ॥
तासु मनोरथ पूरण कीजै । जो वरमागै सो तेहि दीजै ॥
यह मुनि शेष तहां चलिआये । विप्ररूप धरि वचन सुनाये ॥
सुनु कद्रू मम बचन प्रमाना । तव तप सिद्ध मांगु बरदाना ॥
कद्रू बोली दोउ कर जोरी । नाथ न जानौं मम मतिभोरी ॥
विप्ररूप तुम कवन गोसांई । अति तनतेज बरनि नहिंजाई॥
तिलकझलक शुभशोभितभाला। उर विशाल नीलोत्पलमाला ॥
वेणदण्ड मुद्रिका राजै । पीतवस्त्र उपवीत विराजै ॥
लसत विशद श्रीद्वादश अंगा । कवनयती निज कहौप्रसंगा ॥
हँसि बोले तब शेष गोसाई । सोइ मैं जेहिलगियतनकराई ॥
तब कद्रू उठि अस्तुति कीन्हा । सुत हित बहुरिमांगिवरलीन्हा॥
कह यतिराज कीन्ह तुमयोगू । अष्ट अङ्गतजि सब सुखभोगू ॥
अष्टपुत्र हम होब तुम्हारे । असकहि शेषलोक पगुधारे ॥
एक समयं कश्यपमुनि आये । ब्रह्मलोक विधि दरशन पाये ॥
करि प्रणाम बैठे शिरनाई । तब ब्रह्मा यह गिरा सुनाई ॥
लेहैं भृगुकुल हरिअवतारा । करि कौतुक हरि हैं महिभारा ॥
तुमहूं जन्म लेहु महि जाई । ऋषिरिचीकगृह तप हितलाई॥
कद्रू होई तहँ तव नारी । धर्मशील पतिव्रत पियारी ॥
रेणुकसुता रेणुका नामा । तासु तनय होइहै प्रभुरामा ॥
आगे दक्ष शम्भु अपमाना । सभामध्य दुर्बचन बखाना ॥

नन्दी भृगुते शापी शापा । तव अनुमत भृगुकीन्हकलापा ॥
नन्दी दक्षहि शाप सुनावै । अजाबदन ताते सोइ पावै ॥
पूषा हँसे दन्त बिन होइहै । भृगु अश्मश्रु उखारे जैहै ॥
क्षत्री करहै मरण तुम्हारा । ताते भूमि लेहु अवतारा ॥
कश्यपमुनि तव मुनि विधिजानी । भेजमदग्नि महामुनि ज्ञानी ॥
प्रथम शेष लीन्हो अवतारा । संकर्षण कहि नाम उचारा ॥
तिनके अनुज सुदर्शन भयऊ । भृगुकुलचक्रजन्म जगलयऊ ॥
शंख भयउ संख्यायन जाई । गदाकुमुदमुनि तप अधिकाई ॥
पद्मभये पद्माकर योगी । सदाब्रह्मरत विषय अभोगी ॥
धनु शारंग धनुर्धर भयऊ । अर्द्धचन्द्र चन्द्रागद कहेऊ ॥
तिनके अनुज भये प्रभु रामा । विद्या विनय शील सुखधामा ॥
आठो बंधु वेद पढ़िलीन्हों । पिताकर्म विधिवत सबकीन्हो ॥
जबहिं राम कैलास सिधाये । बदरीवन संकर्षण आये ॥
नर नारायण धर्म कुमारा । जहँ तपकरत तहां पगुधारा ॥
कीन्ह दण्डवत सातो भाई । नारायण हिय लीन्ह लगाई ॥
पूंछि कुशल आसन शुभदीन्हो । सबही विधिउनकहँतहँलीन्हो ॥
कह संकर्षण दोउ करजोरी । नाथ सुनो बिनती यक मोरी ॥
बिनगुरु भवनिधि पार न पावै । पुनिपुनि जीव जन्मजगआवै ॥
ताते कृपाकरिय प्रभु सोई । जेहिते जीव कृतारथ होई ॥
सुनत बचन हरषितभे भाई । सब अचार विधिदीन्ह बताई ॥
यम अरु नेम विविधविधिभाखे । पिताधर्म मुखते मुनिराखे ॥
योग युगति बहु भांति सिखाई । मन्त्र षड़ाक्षर दीन्ह बताई ॥
द्वादश अक्षर तिलक बनावा । द्वादश अंगन बहुरि लगावा ॥
नील कमल माला उर मेला । दै तारक कीन्हे निज चेला ॥

यती धर्म सिखइनि अहिराजा। भाइन सहित करत हरिकाजा॥
कहत सुनत इतिहास पुराना। नारायण पूजन मन ठाना॥
यहि विधि करतकाल तहँ बीते। करिअचार इन्द्रीगण जीते॥
त्रेता राम लीन्ह अवतारा। बहुविधि कीन्हे चरितउदारा॥
जे प्रभु चरित प्रेम सन गावैं। सुखसम्पति नाना विधि पावैं॥
सुनहु युधिष्ठिर आन प्रसंगा। जो सुनिहोहि सकल दुखभंगा॥
भृगुकुल जन्म कथा में गाई। देहीं रघुकुल चरित सुनाई॥
यदुकुल जिमि जन्मै यतिराऊ। कहब युधिष्ठिर सकल प्रभाऊ॥
सोइ शुभ कथा लाड़िली गाई। चरितविशद रघुपतिहि सुनाई॥
सङ्कर्षण गुण जो नर गावै। हरिके निकट बास सोइ पावै॥
सोइ वैष्णव पद को अधिकारी। सोइ हरिभक्त विमल आचारी॥
कुं०। संकर्षण जेहिविधि भये योगी यती अचार।
ते पुनि लक्ष्मण आइकै रघुकुल मे अवतार॥
रघुकुल भे अवतार बहुरि बलभद्र कहाये।
यदुवंशिन महँ जन्म जासु गुणगण मुनि गाये॥
रामभजन भजिताहि सदाचीक्षित फल पावै।
मन वच क्रम दृढ़ नेम भद्ररामायण गावै॥

इति श्री राधाविषादमोचनावल्यांरामभजनत्रिवेदीविरचितायांअष्टांगयोगसङ्कर्षणा
अवतारविपाकवरर्णनोनामएकत्रिंशतितमोऽध्यायः ३१॥

श्लोक। द्वात्रिंशेलक्ष्मणाणस्य सविपाककथोच्यते॥
भद्ररामायणंप्रोक्तं श्रोतृणाञ्चमोक्षदम्॥ १॥
दो०। रघुते अज तिनतेभये कश्यप दशरथ आइ।
अदिती कौशल्या भई राममातु जग जाइ॥
चौ०। कद्रूभई सुमित्रा आई। तासु तनय लक्ष्मण दुइ भाई॥

लक्ष्मण शेष केर अवतारा। सोइयतिराज अवनिपगुधारा॥
चक्रसुदर्शन को अवतारा। नाम शत्रुहन परम जुझारा॥
भई केकयी विनता आई। भरत तासुसुत तप अधिकाई॥
सो नृप शंख केर अवतारा। सोइ सांख्यायनमहिपगुधारा॥
भरत रामपद अधिक सनेहू। भक्ति विवेक ज्ञान नित नेहू॥
भरत शत्रुहन सन अति प्रेमा। दोउ मिलिकरैं रामहित नेमा॥
एकसमय केकय सुत जाई। भरत शत्रुहन गये लेवाई॥
मातुल जहांमन्यु के काजा। जीतो रण काबुल को राजा॥
तहँ कछुकाल रहे ननिहारा। यह दशरथमनकीन्ह विचारा॥
अब आवा चउथोपन मोरा। रामतिलक संभार बटोरा॥
सुनि केकइहि बहुत रिस लागी। राम जाहिंबन नृपसन मांगी॥
राम लषण सीता बन जाई। बनदुखभा तुमते अधिकाई॥
कहौं सुनौ नृप तासु बिपाका। पूरबजन्म कर्म फल ताका॥
विनतहि जब भा दासी भावा। सेवन करत दुःख अति पावा॥
तब कद्रूसन बचन उचारा। तुम मोहिं दीन्हो दुःखअपारा॥
ताते सघन दुःख तुम पैहो। बार बार मनमा पछितैहो॥
बिन अपराध मोहिं दुख दीन्हो। ताते आजु कोप मैं कीन्हो॥
यह सुनि कद्रू कहा बहोरी। अमृत देहु छूटहु तुम गोरी॥
यह सुनि विनता कीन्ह विचारा। अदिती के मन्दिर पगुधारा॥
बहुबिधिविनता अस्तुति कीन्हा। मांगोअमृत न अदितीदीन्हा॥
तब विनताकहतुम जग जावो। पतिसुत विरह दुःखअति पावो॥
असकहिविनतागइ निजधामा। गरुड़ जाइ कीन्हो संग्रामा॥
आनि अमृत जबकद्रुहि दीन्हा। विनता बहुतभांतिसुखकीन्हा॥
विनता भई केकई आई। राम लषण बनदीन्ह पठाई॥

अस बरदान केकई लीन्हो। राम लषण मातन दुखदीन्हो॥
रामभजन मन करत बिचारा। शेष शारदा करहु सहारा॥
लक्ष्मणचरित कहौंकेहि भांती। कहि केहिभांतिजुड़ाओंछाती॥
लघुमति मोरि शेष गुण भारी। जलधि अगाधतरै किमिनारी॥
जाको यश प्रताप सोइ ताको। करि हि मनोरथ मममनसाको॥
सुनहु युधिष्ठिर कथा विशेखा। लक्ष्मणपहँ जबगइ सुपनेखा॥
रति सम सुन्दर रूप बनाई। तिरछे चितइ मन्द मुसकाई॥
भ्रू करि धनुष चक्षु के बाना। हावभाव यतिराज निशाना॥
नाचि नाचि शुभ अंग देखावै। चञ्चलदृगकरिबहुत लोभावै॥
बोली मधुर बचन रस बोरा। तिरछे चितै नयन की कोरा॥
अस्तन पीन पाणि धरिलेहू। राजन जन्म सुफल करिदेहू॥
मम सम सुन्दरि नारि न आनी। करहु भोगतुमअस जियजानी॥
जो कुच कलश गहे नहिंपानी। वृथा जन्म लीन्हो जग आनी॥
बृहतनितम्ब सूक्ष्म कटि मोरी। बिंबोष्ठी गजगति रस बोरी॥
श्रोणी तट सुन्दर सब अंगा। निरखिमोहिनहिंजगतअनंगा॥
तब तुम वृथा पुरुष जगजाये। नारिरूप कृत रस नहिं पाये॥
यह सुनि हँसि बोले यतिराऊ। हरिभक्तन चित चलै न काऊ॥
संयम नेम धर्म व्रतधारी। योग यज्ञ पर लखै न नारी॥
अतिबल कामक्रोध मद लोभा। योगिन मन करिसकै न क्षोभा॥
मैं मन वच क्रम हरि को दासा। इहां न सुंदरि तोर सुपासा॥
चौदह वर्ष नेम व्रत मोरा। ब्रह्मचर्य इत कार्य न तोरा॥
जाहु भवन सुंदरि सुनि बानी। हँसि पुनि सूर्पणखा नगिचानी॥
बोली वचन मदन वश नारी। नाथ वचन नहिं कहत सँभारी॥
धर्म शास्त्र मग त्यागे कोई। ताकहँ नाथ अधमगति होई॥

कामिनि काम बश्य होइ जाँचा। तासों पुरुष संग नहिं राँचा॥
सो परंतु पावै दुख भारी। जो नर तजै कामवश नारी॥
तुलसी गणपति सन रति माँगी। कीन्ह न भोगदीन्ह तेहित्यागी॥
दंत भंग भृगुपति तेहि कीन्हो। सहसिक रासभको तनुलीन्हो॥
रंभा सहसिक को संवादा। सुनहुनाथतजि विषमविषादा॥
सहसिक जती तनय बलिकेरे। कीन्ह योग जप ध्यान घनेरे॥
एक समय रंभा तहँ जाई। जांची रति शृंगार बनाई॥
बलि सुत ताकर कहा न कीन्हा। तबतेहि शाप कोपकरिदीन्हा॥
रासभ होहु जाइ तुम रजा। महा प्रबल खर यूथ समाजा॥
धेनुक भये ताल बनआई। नंद ताहि मारो यदुराई॥
सहसिकसाप ताहि पुनि दीन्ही। मकरी जन्म अपसरा लीन्ही॥
हनुमत चरण छुवत तरिजाई। तब कपि बहुरि सजीवनिलाई॥
पुनि लक्ष्मण सन कह कर जोरी। नारि त्याग फल सुनहुबहोरी॥
तनय सूर्यसन छाया जाये। नाम सनैश्चर रूप सोहाये॥
योगी जपी यती हरिदासा। तेजवंतहरि सदृश प्रकासा॥
तासु त्रिया रतिहितहठ कीन्हा। त्यागत ताहि शापतेहिदीन्हा॥
पंगुविरूप होहु तुम स्वामी। दुखित दृष्टि दोष दुखगामी॥
एक समय ब्रह्मापहँ जाई। मोहिं उर्वसी गिरा सुनाई॥
मोसन करहु विहार विधाता। काम अग्नि कंपित ममगाता॥
जब विधि ताकी कहीन कीन्ही। होहु अपूज्य शाप यहदीन्ही॥
मंत्र जाप मूरति नहिं पूजा। सुमिरत भजन शाप यह दूजा॥
शापते रति पति भयो अनंगा। विदितहै यहु उर्वसी प्रसंगा॥
कामहि निरखि उर्वशिहि छोहू। शापदीन व्याकुल मन कोहू॥
छाड़ि शरीर अनङ्ग कहावो। औरे जन्म जाइ रति पावो॥

अस विचारि विहरौ यतिराई। तब लक्ष्मण तेहि गिरासुनाई ॥
का तव नाम जाति का तोरी। केहिकुलजन्म कहौ निजगोरी॥
विष्णुकि नाभिकमलपंकजामा। कमल ते ब्रह्मा भे सुखधामा ॥
तिनके दश सुत ज्ञाननिधाना। तिनमहँजोपुलस्त्यगुणवाना ॥
तासु तनय विश्रवमुनि ज्ञानी। इडविड राजसुता त्रियआनी ॥
ताके तनय कुबेर कहाये। रावण कुम्भकरण फिरिजाये ॥
बहुरि विभीषण भे हरिदासा। फिरि खरदूषण जन्म प्रकासा ॥
त्रिशिरातासुअनुज फिरिजावा। मुनिते बहुरि जन्म मैं पावा ॥
शिवपूजन बहु विधि मैं कीन्हा। तबमोहिं शैलसुता बरदीन्हा ॥
अगजग नाथ तोर पति होई। ताते मोहिं लखिपरै न कोई ॥
तुमसम पुरुष अवर जगमाहीं। देखेउ करिविचार कोउनाहीं ॥
ताते मोसन करौ विहारा। सब प्रकार हित होइ तुम्हारा ॥
लक्ष्मण तब बोले हरषाई। अनुचितकहत लाजनहिंआई ॥
गुरु वशिष्ठ कुलपूज्य हमारा। बन्धु पुलस्त्य विप्र बरिआरा ॥
तासु वंश तनया तुम जाई। धिकधिक मोहिंलाजअधिकाई॥
टरु उत जाइ बात जनि बोलौ। ममसनमुख मुख बहुरिनखोलौ॥
बार बार जनि मोहिं खिझावै। तजहिं जन्म पूरुष नहिं पावै ॥
ब्राह्मण वंश जन्म है तोरा। हठके धर्म लेतिहै मोरा ॥

अथ विपाक ॥

इन्द्र अहल्या सन रति कीन्हीं। गौतम शाप कोप करिदीन्हीं ॥
ताके अङ्ग सहस भग लागा। विप्रत्रिया रति कीन्हअभागा ॥
नृप ययाति भृगुसुता बिवाही। पाई जरा युवापन माही ॥
ताते नाश दण्ड नृप पावा। जाते शुक्रसुता मनलावा ॥
ब्रह्मवंश कन्या जो होई। क्षत्री दृष्टि न देखै कोई ॥

असकहि लक्ष्मण रहे चुपाई। गइ पुनि शूर्पणखा नियराई॥
लक्ष्मण तन तेहि भुजा पसारी। खड्ग उठाइ यती ललकारी॥
क्रोधवन्त तब भये अनन्ता। आसन ते तब उठे तुरन्ता॥
नाक कान जब काटन लागे। शूर्पणखा कह सुनौ सभागे॥
ब्रह्मघातिनी छाती लागे। तीनियाम जनि मूर्च्छाजागे॥
अबकी जन्म जाइ जग पैहौ। बृद्धनारि सँग रति उपजैहौ॥
असकहि शूर्पणखा तहँ धाई। खरदूषणहिं बोलि लै आई॥
चौदह सहस राम रण मारे। खरदूषण त्रिशिरा संहारे॥
रावण आनि हरी बैदेही। राम यान चढ़ि मारो तेही॥
शूर्पणखा तप कीन्ह अपारा। तनु तजि जन्म लीन संसारा॥
भई त्रिवक्रा कुबरी नामा। चन्दन दै पाये घनश्यामा॥
कद्रू भई रोहिणी आई। रूप शील सबभांति सोहाई॥
पुनि संकर्षण यदुकुल जाये। चरित कीन्ह बहुभांतिसोहाये॥
राम चरित गावै नर जोई। तेहि सायुज्य मुक्तिगति होई॥
राम प्रलम्बासुर रण मारा। मुक्तिहेतु जगते तेहि तारा॥
रासभ धेनुक बधि जगमाहीं। तारेउ सकल एक छिन माहीं॥
हलधर मुष्टिक बहुरि निपाता। त्रियापढ़न गये सुरत्राता॥
रैवत सुता रेवती नामा। आनि बिवाही निजगृहरामा॥
कुशस्थली अति भयो उछाहू। दम्पति देखि हरष सबकाहू॥
जहँ तहँ मंगल गावैं नारी। देहिंदान निज बिरतिबिसारी॥
त्रेता जन्म रेवती केरा। रामभोग तेहि साथ घनेरा॥
ताते तासु पुत्र नहिं भयऊ। काल अनेक युवापन गयऊ॥
एकबार रथ चढ़ि बलदाऊ। आये ब्रज मन बहुत उछाऊ॥
मिले गोप गोपी सब आई। कुशल प्रश्न पूछत हरषाई॥

मधुमाधव ब्रज बसि दुइमासा। गोपिनमन अतिभयहु हुलासा॥
एक दिना यमुना तट आये। क्रीड़ा हेतु ताहि गोहराये॥
जब यमुना बोले नहिं आई। लै हल क्रोध कीन्ह यदुराई॥
यमुनाकर्षण जब प्रभु कीन्हा। तबतेहिआनिदरशनिजदीन्हा॥
यमुना स्तुति करि बहुभांती। बरणे फणिपति गुणगणपांती॥
तब हल टारि लीन्ह यदुराई। आये ब्रजहि बहुरि हरषाई॥
गोपी गोप राम गुणगाये। ब्रजते बहुरि द्वारकहि आये॥
रैवतगिरि पर करत बिहारा। अतिबलप्रबलद्विविदजिनमारा॥
एक समय नैमिषवन आये। मुनिवर सब उठिशीशनवाये॥
सूत प्रणाम न उठि जब कीनो। लै कुश तासुशीशप्रभुछीनो॥
कबहुँ न होइ ईशकहँ पापा। सब ऋषिवचन कहे करिदापा॥
हम अध्यासन इनकहँ दीन्हो। तुम कसश्रवण भंगममकीन्हो॥
जो चाहौ आपन कल्याना। काज हमार करौ भगवाना॥
बिल्वल दानव हमहिं सतावै। विष्ठा मूत्र हाड़ बर्षावै॥
ताहि निपाति तीर्थ करिआवो। करि उपाय जब कथा सुनावो॥
तब प्रभु विप्रदोष मिटिजाई। सुनि हलधर हललीन उठाई॥
बिल्वल मारि भूमि प्रभु डारा। जयतिजयतितब मुनिनउचारा॥
सूत पुत्र बलदेव बोलावा। लै निज शंख कपोललगावा॥
बांचन लागे वेद पुराना। शौनकादिमुनिअस्तुतिठाना॥
यती सङ्ग लै चले अनन्ता। तीर्थाटन हित अनघ तुरन्ता॥
गये कौशिकी तुरत नहाये। रोमहरषणहि पिंड दिवाये॥
तरपण करि पुलहाश्रम आये। सरयू परसि प्रयाग नहाये॥
गोमति गंडकि परसि विपासा। शोण गयाकरि बहुतहुलासा॥
पुनि महेन्द्र पर्वतपर जाई। परशुराम पद शीश नवाई॥

आज्ञा लै गोदावरि बेनी। पंपा भीमरथी सुखदेनी॥
गंगासागर करि अस्नाना। बहुरि तहां तेहि कीन्ह पयाना॥
पुनि स्कन्दहि कीन्ह प्रणामा। गे श्रीशैल महेश्वर रामा॥
पूजे शङ्कर सब सुखधामा। द्राविड़ विकट कीन्ह परणामा॥
कोष्णी कांची पुनि कावेरी। सरिद्वरा श्रीरंगहि हेरी॥
ऋषभ शैल मथुरा शुभ हेतू। रामनाथ रक्षे अति हेतू॥
विप्रन दीन्ह अयुत गोदाना। कृतमाला गे कृपानिधाना॥
ताम्रपरणि मलयाचल आये। कुलाचले अगस्त्य शिरनाये॥
पाइ अशीश समुद्र नहाई। दुर्गा दरश कीन्ह यदुराई॥
पंचाप्सरस नहाइ बहोरी। विष्णु दरश मन हर्ष न थोरी॥
करि गोदान केरलहि आये। मज्जन कीन्ह त्रिगर्त नहाये॥
गोकरणेश्वर दरशन पाये। अर्जादीपायनि पुनि आये॥
सूर्पारकतापी प्रभु जाई। फेरि पयोष्णी जाइ नहाई॥
दण्डकबन प्रभु गे श्रीरामा। रेवा माहिषमति विश्रामा॥
करि मनुतीर्थ प्रभासहि आये। कुशस्थली पुनि बहुरिसिधाये॥
ये तीरथन सुनै नर कोई। सब तीरथ दरशन फलहोई॥
तहँ बहु द्रव्य बिमान भराई। नैमिष नारि सहित प्रभुजाई॥
कीन्ह यज्ञ दीन्हे बहुदाना। भोजन दै मेवा पकवाना॥
तब प्रभु बहुरि द्वारकहि आये। करि नेवता सब बन्धु जिमाये॥
यहि विधि रामचरितनितकरहीं। लखि नर नारि मोदमनभरहीं॥
जहँ तृतीय रामायण गाई। विमल सुखद नृपतुमहिंसुनाई॥
रामचरण पंकज उर धरहू। जनि बनवास शोच तुमकरहू॥
कहब भविष्य कथा तुम पाहीं। सुनौ गुनौ राखहु मनमाहीं॥
कु०॥ पूरब कीन्हे चरित हरि धरि नाना अवतार।

अभयकरत करिहैं बहुरि जग मंगल दातार ॥
जग मंगल दातार चरित जो नर नित गावै।
भक्ति मुक्ति धन धान्य ज्ञान सुख सुत त्रियपावै ॥
रामभजन भजि राम विमल मनकरि सुखपाये।
राम राम शशि रामभद्र रामायण गाये ॥ १ ॥

इति श्री राधाविषादमोचनावल्यां रामभजनत्रिवेदीविरचितायां
रामभद्रगुणवर्णनोनामद्वात्रिंशत्तमोऽध्यायः ३२ ॥

श्लोक। त्रयस्त्रिंशेभविष्येण कथाभारतसंभवा।
कथितामुनिव्यासेन लाडिलीवचनादनु ॥ १ ॥
त्रयस्त्रिंशेभारतस्य सप्तपर्वाणिकथ्यते।
तत्रगीताहकृष्णेन कुरूणांयुद्धमीरितम् ॥ २ ॥

दो०। अर्जुन जैहैं तप करन करि हैं इन्द्र सहाय।
दिव्य अस्त्र तहँ पाइकै पुनि कैलासहि जाय ॥

चौ०। तहाँ विमलयकशैल सोहाई। करि हैं तप अर्जुनमनलाई ॥
ऐहैं शिव किरात के वेसा। मायाकृत बराह यक देखा ॥
अर्जुन धनुष करै संधाना। तब शिव लेहिं हाथ धनुबाना ॥
एकै छिद्रन्होइ शर घातै। दोउ मिलि जाइ बराह निपातै ॥
तब दोउ कहैं शिकार हमारी। बातैं करत बढ़ै अतिरारी ॥
शिव अर्जुन करि हैं संग्रामा। निशिदिन सात न करैं विरामा ॥
अर्जुन पुरुषारथ शिव देखी। देहिं पाशुपत अस्त्र विशेखी ॥
अर्जुन जबहि पाशुपत पावै। कालौजीति बहुरि घरआवै ॥
बारह वर्ष बास बन करिहौ। फिर बिराटपुर में पगु धरिहौ ॥
तहँ छिपि एक वर्ष दिन काटौ। कंचुकमारि शत्रु निजडाटौ ॥
पार्थ भेहँदरा रूप बनाई। कौरवदल सब देहिं भजाई ॥

पाण्डव नृप बिराट जब जाने। तब बहुभांति तुमहिं सनमाने॥
अर्जुन सुत अभिमन्यु हँकारी। देहि ब्याहि उत्तरा कुमारी॥
नगर बिचित्र बनाइ बसावै। तहँ तब सब रनिवास बोलावै॥
कुरुपति पहँ श्रीकृष्ण पठैहो। नृप कहँ बहुत भांति समझैहो॥
सूची अग्र देन नहिं भाषै। तब तुम करौ युद्ध अभिलाषै॥
निज निज दल नृप यूथ बटोरी। युद्ध लालसा जिनहिंन थोरी॥
पारथ सारथि है यदुराई। गीताज्ञान कहै समुझाई॥
अस कहि गये व्यासनिजधामा। हरपि पाण्डुसुतकीन्हप्रणामा॥
यह सुनि नन्दउ गे करजोरी। मोहिं लाड़िली कहौ बहोरी॥
सब हरि चरित इहां ते देखौ। दिव्यदृष्टि तुम सब जगलेखौ॥
जो जो चरित करै यदुराई। देखि मोहिं सब देहु बताई॥
सुनि राधा बोलीं हँसि बानी। वनचरित्र हम कहो बखानी॥
कही बिराट कथा तुम पाहीं। कौरवदल जीतो रणमाहीं॥
जिमि उद्योग युद्ध हित कीन्हो। रणहित सबहिंनिमन्त्रणदीन्हो॥
अष्टादश क्षोहिणि दलआये। दोउ दिशि बाजत युद्धबधाये॥
अर्जुन भीम नकुल सहदेवा। अरु युयुधान द्रुपद प्रभुदेवा॥
धृष्टकेतु निज दल लैआवा। चेकितान निज सैन सजावा॥
सजि दल काशिराज रणआये। पुरुजित भोज शैब्य दलआये॥
पहुँचे युधामन्यु बलवाना। विक्रान्ता बलबुद्धि निधाना॥
उत्तमौज निज सैन सँभारी। पहुँचो युद्धहेतु बलभारी॥
ठाढ़ सुभद्रा सुत बलवाना। अर्जुन सम बलबुद्धिनिधाना॥
रणमहँ द्रुपद पुत्र सब आये। द्रुपदराज निज व्यूह बनाये॥
औरहु बहुत महारथ बीरा। गये युधिष्ठिर सँग रणधीरा॥
ठाढ़े निज निज शंख बजावै। महाकठोर घोर घहरावै॥

दुर्योधन भीषम पहँ जाई। करि विनती पुनि गिरा सुनाई॥
सेनापति ह्वै प्रभु रण कीजै। कुन्ती सुतन सिखावन दीजै॥
द्रोण करण दुश्शासन बीरा। सब मिलि ममहित तजै शरीरा॥
कृपाचार्य समिंतिंजय आये। अश्वत्थाम विकर्ण बुलाये॥
सोमदत्त आदिक रण काजा। सन्मुख चढ़े सकल क्षितिराजा॥
नाना शास्त्र चलावनहारे। ममहित चढ़े समर बलभारे॥
भीम सेन पालक उन केरे। तुम सेनापति हौ प्रभु मेरे॥
यह सुनि भीषम शङ्ख बजावा। सिंहनाद सम रव नभ छावा॥
दोउ दल शङ्ख बजे अतिघोरा। भेरि नफेरि पणव रव शोरा॥
ढोल मृदङ्ग बजी सहनाई। गोमुख रव कछु बरणि न जाई॥
पांचजन्य श्रीकृष्ण बजावा। देवदत्त अर्जुन धुँधुआवा॥
यहिविधि नृपनशंखधुनि कीन्हीं। धरणि अकाश पूरि रवदीन्हीं॥
दोउ दल मध्य विश्वरथ आवा। तब अर्जुन यह वचन सुनावा॥
सब मम सुहृद ठाढ़ रणमाहीं। इन सन युद्ध करब हम नाहीं॥
इनहिं निरखि कांपत सब अङ्गा। का सुख राज्य किये कुलभङ्गा॥
देखि बिकल बोले यदुराई। यह तब कुमति कहां ते आई॥
जन्म मरण यश अपयश भाई। काल पाइ जग देहिं दिखाई॥
देहके संग मृत्यु जग जावै। सो पुनि काल कर्मगति पावै॥
ये सब शोचनयोग्य न भाई। इनकी मृत्यु निकट चलिआई॥
जैसे जीरण वस्त्र उतारै। पुनि नवीन तिमि तनुजगधारै॥
जीव न जरै मरै नहिं छीजै। यह विचारि रणयुद्ध करीजै॥
अविनाशी जीवहि तुम जानो। देह न जन्म मरण तुम मानो॥
क्षत्रिन धर्म युद्ध बरिआरा। खुले कपाट स्वर्ग कर द्वारा॥
अयश अधर्म किये बिन पावो। जेहिजग अर्जुन क्लीब कहावो॥

कर्म करौ फल त्यागौ भाई। कुशल कर्म करि संग बिहाई॥
मोहते बुद्धिहोइ जब न्यारी। तब बिराग आवै सुखकारी॥
इस्थिर बुद्धि समाधि लगावै। योग सिद्ध रत तब मोहिंपावै॥
इन्द्री मन बश जाकर होई। प्रज्ञा जानु प्रतिष्ठित सोई॥
जग यामिनि सोवै नितयोगी। इन्द्रिन संयम सदा अभोगी॥
कह अर्जुन प्रभु सुहृद कहावौ। घोर कर्म मम मति उपजावौ॥
ज्ञानकर्म दोउ कहौ गोसाई। कवन करै बोले यदुराई॥
जे वेदान्त सांख्य अधिकारी। तिनका ज्ञानयोग सुखकारी॥
योगी जपी तपी व्रतधारी। कर्मयोग करिहोहिं सुखारी॥
जनकादिक नृप भये घनेरे। करिशुभ कर्म गये पद मेरे॥
निज कृत कर्म करौ जनिमानौ। मायागुण कृत तुम सब जानौ॥
जो कुछ करौ समर्पौ मोहीं। फिरि न कर्मफल लागै तोहीं॥
अपनी जाति धर्म सुखदाता। ताते युद्ध करहु तुम ताता॥
कर्मयोग हम तुमहिं सुनावा। जो मैं वैवस्वतहि बतावा॥
ब्रह्मयज्ञ आदिक ये यागा। कर्ममयी कृत वेद विभागा॥
ज्ञान ते सकल कर्म फल छूटै। ज्ञान ते कर्मन्यास फललूटै॥
सोइ संन्यास कष्ट ते होई। ताते कर्म करै सब कोई॥
ब्रह्म में कर्मधरै नर जोई। पद्मपत्रइव लिप्त न होई॥
अपनो मन अपनो है भाई। जो अपने बश नहिं दुखदाई॥
मन अपने बश तुम करिलेहू। मोहिं लखि जगत बीचमनदेहू॥
यहु सब जगत मोर उपजावा। मोर अंश मोरी करु भावा॥
सुन अर्जुन विभूति ममजानी। भजो मोहिं दृढ़मति उरआनी॥
हौं मैं आदि मध्य अवसाना। सुवरणवत विज्ञान निधाना॥
आदित्यन महँ बिष्णु कहावौं। अंशुमान है प्रभा देखावौं॥

नक्षत्रन महँ शशि मोहिं जानू। वेदन साम वेद मोहिं मानू॥
देवन मा मैं इन्द्र कहावौं। इन्द्रिनमा मन तुमहिं लखावौं॥
रुद्रन में शङ्कर मोहिं जानो। यक्षन में कुबेर मोहिं मानो॥
नागन में अनन्त मैं भाई। लखुमोहिं जहँ जहँ तेजदेखाई॥
कह अर्जुन तुम्हरे उपदेशा। मोह गया सब मिटो अँदेशा॥
अब पुरुषोत्तम रूप देखावौ। ममम नश्रमप्रभु सकल मिटावौ॥
कह प्रभु पार्थ निरखु मम देही। योगेश्वर निरखत नितजेही॥
सूर्य सोम वसु रुद्र विधाता। निरखहु सकल देव ममगाता॥
दिव्य नेत्र देहौं मैं तोहीं। निरखहु विश्वरूप जिमिमोहीं॥
यह कहि प्रभु निज रूप देखावा। अर्जुन निरखि परम भयपावा॥
कोटिन वक्त्र नेत्र श्रुति नासा। कोटिनरविसम दीख प्रकासा॥
कह सभीत अर्जुन कर जोरे। देखो नाथ जगत तनु तोरे॥
शङ्ख चक्र गद पद्म किरीटा। अतिविस्तारुतनु बिच जगकीटा॥
सुर समूह प्रविशति जेहिमाहीं। निरखत मन मम इस्थिर नाहीं॥
रूप भयङ्कर दशन कराला। कौरव दल देखो सब गाला॥
भीषम आदि सकल जहँ सैना। तवमुखनिरखिमोहिंनहिंचैना॥
मोपर कृपा करौ यदुराई। कृष्णरूप मोहिं देहु देखाई॥
धरि निजतनु बोले यदुबीरा। निरखहु दुर्लभ मोर शरीरा॥
अबमम भजन करहु सबत्यागी। भजइ मोहिं नर सो बड़भागी॥
जि सब जरे काल के प्रेरे। देखेहु दशन बीच तुन मेरे॥
तब अर्जुन गाण्डीव चढ़ावा। हरि ते विमल ज्ञान जब पावा॥
भगवद्गीता स्वल्प सुनावा। भीषम चरित अब कहौं सुहावा॥

॥ इति श्रीभगवद्गीता ॥

तब अर्जुन यक बाण चलावा। भीषम पिता चरण छुइ आवा॥

भीषम हरिकहँ करि परणामा। मनमा सुमिरे हरि सत नामा॥
बहुरि युद्ध हित आज्ञा दीन्हा। पुनि करिकोपशरासन लीन्हा॥
बाजन लगे जुझाऊ बाजा। जहँ तहँ युद्ध करैं सब राजा॥
चलैं शतघ्नि भुशुण्डि अपारा। बर्षैं दोउ दलपर शरधारा॥
चक्र त्रिशूल गदा गहि धावैं। कोइगहिमुशल कृपाणचलावैं॥
पाश शक्ति तोमर रण माहीं। चलैंनन्दनहिं बरणि सिराहीं॥
दोउ दल भिरे प्रचारि प्रचारी। लरैं बीर नहिं मानैं हारी॥
गज तुरङ्ग रथ सुभट अपारा। गिरे समर नहिं जात सँभारा॥
अर्जुन भीष्म भीमके मारे। कटि रण परे महाबल भारे॥
भीषम कोटिन बाण चलाये। दिशिअरु विदिशिभूमिनभछाये॥
ब्याकुल सब पाण्डवदल कीन्हों। अर्जुन कोपि शरासन लीन्हों॥
अर्जुन भीषम दोउ रण माहीं। जर्जर तन भे युद्ध कराहीं॥
लखि शिखण्डि शन्तनुसुतजूझा। शरशय्या पर परे अबूझा॥
द्रोणाचार्य्य महारण कीन्हों। करि हरिध्यानछांड़ितनुदीन्हों॥
अर्जुन करण महारण भारी। दोउबल प्रबल न मानहिंहारी॥
करण बाण अर्जुन रथ लागै। पैग तीनि रथ पीछे भागै॥
करण धन्य हरिबचन उचारैं। तब अर्जुन हरिओर निहारैं॥
मम शर लगे पैग चौरासी। रिपुरथ हटइ सुनौ सुखरासी॥
कह प्रभु मोरभार रथ माहीं। ध्वजपरकपिपति भार कराहीं॥
तदपि हटै रविसुत शर लागे। मैं शर सहौं बैठ रथ आगे॥
बिन उपाय तुम जीति न पावौ। ताते कुन्तिहि आजु पठावौ॥
करणहि कवच बाण दइदीन्हें। कुन्ती जाइ मांगि सब लीन्हें॥
तब रविसुत जूझे रणमाहीं। शाल्वराजरण बहुरि कराहीं॥
यहिबिधि कौरव दल सब जूझा। सञ्जय कही नृपतिजोइ बूझा॥

गदा भीम दुर्योधन केरी। चलै घोर तन लगै घनेरी ॥
भीम कोप करि गदा प्रहारी। कुरुपति जङ्घ भङ्गकरि डारी ॥
गिरे भूमि लखि द्रोणकुमारा। सोवत द्रुपदीसुतन सँहारा ॥
अर्जुन ताहि बांधि लै आये। द्रुपदसुता करि कृपा छुड़ाये ॥
सबकी क्रिया युधिष्ठिर कीन्हीं। क्रमतेपिण्डतिलांजलिदीन्हीं ॥
तब निज राज्य युधिष्ठिर पाई। यज्ञ तीनि प्रभुदीन्ह कराई ॥
फिरि यदुनाथ द्वारकहि आये। कीन्ह विविधविधि चरित सोहाये ॥

इति श्रीमहाभारतम् ॥

अथ सुदामाचरितम् ॥

ब्राह्मण एक सुदामा नामा। बिनहरिभजनअवरनहिंकामा ॥
ग्रसित दरिद्र अन्न धन हीना। तासुत्रियाबिन बसन मलीना ॥
पतिके मित्र कृष्ण तेहि जाना। पतिसन बोली बचन प्रमाना ॥
जा पुर कल्पवृक्ष तर बासा। नाथ कहौ तेहिकवन कुपासा ॥
नाथ तुम्हार मित्र यदुराई। गोद्विज देव सन्त सुखदाई ॥
जाहु द्वारकहि पति धनकाजा। अगजग नाथ भये यदुराजा ॥
सुनु त्रिय अधिक दरिद्रसतावै। हरि भक्तनमन लोभ न आवै ॥
यक मुचुकुन्द अमेधिके राजा। तेहि बरदान देनके काजा ॥
गये कृष्ण तेहि नहिं वर लीन्हा। तब प्रभुभक्ति मुक्ति तेहिदीन्हा ॥
सबरी नारिन कछु बरदाना। निजपद दीन्हताहिभगवाना ॥
रन्तिदेव दरिद्र सहिलीन्हा। त्रियसुतसहितसिलोञ्छनकीन्हा ॥
ते सब हरिपद के अधिकारी। हरि सेवकन लोभ नहिंध्यारी ॥
भक्तिमुक्तितजि धनहि लोभाना। निज कर ग्रीवा देत कृपाना ॥
भरमत जीव जो नरतनु पावै। मूढ़ अधममन धनहि लोभावै ॥
धन सुत त्रिया ईषना लागे। नरक बास ते करत अभागे ॥

धन मद ते तरु तनय कुबेरा। धनतजि भजु हरियहुमतमेरा॥
दोष पंचदश धन महँ बासा। कहु धनवन्तहि कौन सुपासा॥
एक कदर्य विप्र धनवाना। धनमदतेकछु भजन न जाना॥
यकदिन तहँ आवा हरिदासा। द्विजटिकाइतेहिदीन्हसुपासा॥
भोजन बिन आदर बहु कीन्हा। तासुत्रियाछिपितण्डुलदीन्हा॥
सो अभ्यागत लीन्ह चत्राई। प्रातकाल यह गिरा सुनाई॥
देव पितर ऋषि बांधव पहुना। तवगृह भाग मिलय कबहूंना॥
भागीपञ्च कोप जब करिहैं। धन तुम्हार नारायण हरिहैं॥
तब कदर्य विराग तुम पई। भजिहौ हरिपद मनचितलाई॥
फिरि तुम और जन्म तनुपावौ। विप्र सुदामा नाम कहावौ॥
हरिकी भक्ति होइ उर तोरे। हरिकी कृपा अनुग्रह मोरे॥
सो फुर बचन मानु ममप्यारी। लोभितमतिजनिकरहुहमारी॥
पूरुब जन्म न हम कछु दीन्हा। ताते नाथ दरिद्री कीन्हा॥
सन्त दरशकर प्रकट प्रभावा। ताते रामभक्ति मैं पावा॥
तण्डुल दै तोषेहु हरिदासा। ताते तुमकहँ होइ सुपासा॥
किञ्चित मात्र सुपात्रहि दाना। देइत बहुत होइ कल्याना॥
ब्राह्मण एक तीर्थ ब्रत कामा। पण्डित देवदत्त तेहिनामा॥
हरिके तीर्थ अवनि पर जेते। करि पर्यटन बिलोके तेते॥
एकदिनावन गहन भुलाना। मिलैनपथद्विजअतिअकुलाना॥
सन्ध्या समय शबर यक पावा। तासों निज वृत्तान्त सुनावा॥
भरमत मोहिं सकल दिन बीता। भवा न भोजन भजनसुभीता॥
यह सुनि शबर ताहि लैजाई। विमल सरोवर दीन्ह देखाई॥
तहँ स्नान ध्यान द्विज कीन्हा। तबलगिकमलमूलतेहि लीन्हा॥
खोदि धोइ द्विज आगे राखा। आदरकीन्ह बहुतअभिलाखा॥

काष्ठ रगरि तेहि अग्नि बढ़ाई । भूँजि त्रिशा द्विजदीन्ह जेमाई ॥
बनते बहुत काष्ठ सो लावा । सकलनिशा भरिद्विजहितपावा॥
भोर भये बन बाहेर जाई । सुपथ ब्राह्मणहि दीन्ह बताई ॥
ताते सर्व परम फल पावा । भा निषाद जग प्रकट प्रभावा ॥
शृंगबेरुपुर का भा राजा । सेइनि सकल निषाद समाजा ॥
अनुज सिया सँग रघुबर आये । प्रभु दर्शन निषाद तहँ पाये ॥
शबरहि करि सुपात्र सनमाना । निज नयनन देखे भगवाना ॥

कुण्डलिया ॥ जो सुपात्र ब्राह्मण मिलै करै जो नर सनमान । तापर अति परसन्न मन कृपा करैं भगवान ॥ कृपा करैं भगवान भक्ति हरि की सोइ पावै । जन्म मरण छुटिजाइ मुक्त हरिधाम सिधावै ॥ पण्डित रामभजन गावत यह भक्तिलाड़िली लावौं । कृपा करहु रघुनाथ सदा तुम्हरेहि गुण गावौं ॥

इति श्री राधाविषादमोचनावल्यांरामभजनत्रिवेदीविरचितायांसुदामानि
षादकर्मविपाकवर्णनोनामत्रयस्त्रिंशोऽध्यायः ३३ ॥

श्लोक ॥ सुदाम्नश्चरितं पुण्यं पुनः कृष्णस्य दर्शनम् ।
कथ्यते पुनरवृत्तिधनधान्यसमन्वितम् १ ॥

दो० रामभक्ति महिमा कहत वेद न पावत पार ।
राधानंद प्रसंगयहु कहिहौं मति अनुसार १ ॥

चौ० सुनहु नंद सोइ कथा प्रसंगा । जो सुनिहोइ सकल भ्रम भंगा ॥
यहिविधिकहतविविधइतिहासा । बीते दिन दरिद्रकी त्रासा ॥
बहुरि कुचैला कह करजोरी । नाथ सुनौ बिनती यक मोरी ॥
हरिदरशन अघओघ नशावै । तासु समीप दरिद्र न आवै ॥
ताते जाहु द्वारकहि नाथा । मांगे जनि देहै यदुनाथा ॥

॥ सुदामोवाच ॥

हम श्रीकृष्ण जाइ गुरुद्वारा। सुनु त्रिय पढ़ेन एक पठसारा॥
यक संग आसन भोजन शैना। हास विलास होत नित चैना॥
एक दिना गुरु त्रिय यह भाषा। जाहु वनहि ईंधन अभिलाषा॥
हम अरु कृष्ण गये वनमाहीं। गुरुकारजहित बांधि वराहीं॥
तबलगि मेघ गगन झुकिआये। बरषत अन्धकार बनछाये॥
महावृष्टि बन भई अपारा। गे रवि अथै वहै जलधारा॥
गुरुमाता कछु दीन्ह चबेना। मैं चबिलीन्ह कहो नहिं देना॥
सो मन सोच भई गिल्यानी। हरिसन्मुख नहिं जाउँ सयानी॥
साथिहि बंचि अन्न जो खावै। तेहिकहँ अधिक दरिद्रसतावै॥
सबके उर प्रेरक यदुराई। जानहि सो हमारि चतुराई॥
तदपि तोर पठये मैं जैहौं। सर्वलाभ हरिदरशन पैहौं॥
आनहु कछुक उपायन जाई। देखौं नयन जाइ यदुराई॥
तंडुल पृथुक मांगि तेहि दीन्हा। गणपतिसुमिरिगमनद्विजकीन्हा॥
गये द्वारकहि हरिके धामा। हरषित उठि लीन्हे घनश्यामा॥
चरण धोइ उबटन लगवाये। शीतलजलनिजकरअन्हवाये॥
वस्त्र पोंछि अंशुक पहिराये। करि पूजा पलँगा बैठाये॥
रुक्मिणि तबलगि कीन्हि रसोई। व्यंजन विविध स्वादुयुतजोई॥
लै द्विज हरि चौका बैठाये। अतिआदरशुभअशन जेमाये॥
पुनि अँचवाइ सु आसन दीन्हा। कह प्रभु बहुत अनुग्रह कीन्हा॥
जबते गुरु गृहते घर आये। तबते आजु दरश हम पाये॥
हँसि कह भाभी हेत हमारे। मोहिं पठयहु कछु हाथ तुम्हारे॥
सो प्रसाद हमका नहिं दीन्हों। फिरि गुरुमातु चबेना कीन्हों॥
अस कहि कांखते लीन्ह छड़ाई। मूठीभरि प्रभु लीन्ह चबाई॥

तवलगि तहँ रुक्मिणि चलिआई। करगहि हरिसन गिरासुनाई॥
ब्राह्मण धन विपते विषभारी। बरिआई जनि लेहु मुरारी॥
नृग राजाको सुनो प्रसंगा। द्विजधनते भा गिरगिट अंगा॥
विप्र द्रव्य लखि अवध नरेशा। कीन्हा विवरण दे सब देशा॥
पुष्पक लै कुबेर का दीन्हों। ते तुम आजु विप्रधन लीन्हों॥
कह प्रभु यहु द्विज मम गुरुभाई। देखि दरिद्र दया मोहिं आई॥
धर्म के चारि पाद जगमाही। तेहिमा दान मुख्य करिजाही॥
चारि पदारथ पावै सोई। श्रद्धापात्र देश जब होई॥
इनकी नारि उपायन दीन्हीं। अपनीकांख चापिसोइ लीन्हीं॥
विनादान पावै नहिं कोई। योगी जपी तपी किन होई॥
पूरुब जन्म विप्र यक आवा। इनकी त्रिय तेहि अन्नखवावा॥
दूजे हमका दीन्हों सोई। ताते विश्व तृप्त सब होई॥
विश्वरूप मोकहँ सब गावै। यह द्विज बहुत सम्पदा पावै॥
असकहि खै शय्या पौढ़ारी। निजकर सेवन कीन्ह मुरारी॥
रुक्मिणिचमरव्यजनतेहिकीन्हों। होतप्रात गृहका चलि दीन्हों॥
मांग्यों कछु नहिं हरिउ न दीन्हो। मन अनंद प्रभु दरशन कीन्हों॥
काल्हिकीन्ह भरिउदर अहारा। दम्पति सेवन कीन्ह हमारा॥
धन मद पाइ भूलि मोहिं जाई। ताते कछु नहिं दीन्ह गुसाई॥
सुनि मोहिं दौरि कुचैला आवै। रीते हाथ देखि दुख पावै॥
धिग धिग म्वहिं मैं कीन्हअहारा। त्रिय बिहाय सन्ततिकरद्वारा॥
कहिहौं तुम ममवचन न माना। जाहु जाहुपति असहठठाना॥
ममइच्छा कछु धनकी नाहीं। लै सकेलि भरि धरु घरमाहीं॥
ऐसे बहुविधि करत विचारा। निजपुर भीतर द्विजपगुधारा॥
इन्द्रधाम सम देखि सुहावा। कहद्विजभटकिद्वारकहिआवा॥

हँसिहैं यदुकुल देवकि बेटा। परको द्विज खाइसि भरि पेटा॥
पूछहिं रुकुमिनि फिरिकस आये। जीरण पटहित यह श्रमपाये॥
तबलगि खबरि कुचैलहि पाई। सखिन मध्यआरतिसजिआई॥
कह तुम कवनि कवनकी रानी। नारिकुचैला कह गुणखानी॥
सो जीरण पट जीरण अङ्गा। नखशिखभूषण तुमसखिसङ्गा॥
कहत कुचैला सुनु ममनाथा। यहु सब दीन्ह मोहिंयदुनाथा॥
असकहि भीतर गई लवाई। चरण पखारि पलँग बैठाई॥
कह त्रिय हरि शरणागत जावै। सो धन भक्ति मुक्ति नर पावै॥
जो नर चरित सुदामा गावै। सो सायुज्य मुक्तिफल पावै॥
धन अरु धान्य राज्य फलदाता। ऐसी कथा कही मैं ताता॥
कुण्डलिया। हरि चरित्र बरणन करै सो पावै निर्बान।
तातै मनक्रम बचनतें भजिये कृपानिधान॥
भजिये कृपानिधान ज्ञान उत्तम हिय आवै।
पापपुञ्ज घटिजाय धर्म पथ जो मन लावै॥
रामभजन भजिराम रामदरशन शुभपावौं।
करहुकृपागणनाथ रामगुणनिशिदिनगावौं॥

इति श्रीराधाविपादमोचनावल्यांरामभजनत्रिवेदीविरचितायांसुदामाचरित्र बर्णनोनामचतुस्त्रिंशत्तमोऽध्यायः ३४॥

श्लोक। पञ्चत्रिंशेशुकीशापात्सीतायाश्च्यवनंपुनः।
वाल्मीकेश्चटहेव्यासःपुत्रयोर्जन्मकथ्यते १॥
दो० राधामाधो ध्यानधरि गणपति गौरि मनाइ।
रामभजन बरणन कियो श्रीगुरुआशिषपाइ १॥
राधोवाच॥
चौ० औरो शुभचरित्र हरिकेरे। पूछहु सुनो सो विशद घनेरे॥

एक समय त्रेतायुग माहीं। शुक सारिका बसैं वनमाहीं॥
बालमीकि कर तहँ स्थाना। करैं रोज रामायण गाना॥
शुक सारिका सुनैं मनलाई। ऋषिगण सकल सुनैं तहँआई॥
यहिविधि बहुतकाल चलिगयऊ। अवधराम जन्मत जब भयऊ॥
शुक सारिका अवधपुर आये। दीख राम के चरित सोहाये॥
पुनि तिरहुतितिनकीन्हपयाना। जनकबाटिका बसि सुखमाना॥
सीतहि निरखि परस्पर गावै। सोइ श्रीरामचन्द्र वरपावै॥
पुनि पुनि रामायण तिन गाई। जब जब फुलवारी सिय आई॥
सीता शुक लीन्हों पकराई। सुवरण पिंजरा दीन्ह बसाई॥
बालमीकि रामायण जेती। शुक कहि सकल सुनाई तेती॥
राम जन्म सब अवध उछाहू। पुनि बरनो सिय राम बिवाहू॥
सिय रघुबीर अवधपुर वासा। रामतिलककर कहिसिहुलासा॥
पुनि तेहि कही केकयी करनी। रामकथा भविष्य तेहि बरनी॥
बन सियहरन मरन खगनाहू। शवरी कपिपतिमिलनउछाहू॥
बाली मरण लंकपुर दाहू। जिमिसियखबरिकहीकपिनाहू॥
सिंधुबांधि रावण जिमि मारा। लै सिय अवधपुरी पगुधारा॥
राम भरतकर मिलन समाजा। बरणिसि राम भये जिमिराजा॥
कह शुक सियसन बचननिहोरी। है गर्भिणी सारिका मोरी॥
मोहिं बिना जल अन्न न खाई। मोरे बिरह दुखित मरिजाई॥
तेहि बिन अन्नपान नहिं करिहौं। बिन सारिका धीर नहिंधरिहौं॥
प्रिया बिरह दुख सहो न जाई। ताते मोकहँ देहु छोड़ाई॥
अस सुनि सिया बाटिका आई। ताहि सारिका दीन्ह देखाई॥
कह सारिका सुनो सिय बानी। प्राणनाथ बिन जीवनहानी॥
कह सिय राम दरश जब पावौं। तब तुम्हार पति तुरत छुड़ावौं॥

यह सुनि शुकिहि क्रोधभा भारी। सुनहु सिया यह शाप हमारी॥
जब तुम प्रथम गर्भिणी हैहौ। पति बियोग बनवासहि जैहौ॥
असकहिप्राण छाँड़ि तिनदीन्हा। दंपति जन्म रजकगृहलीन्हा॥
रजक विवाहि ताहि पुनिआनी। बिहरत दोउ रामरजधानी॥
रामहि राज करत बहुकाला। बीते कीन्ह प्रजापति पाला॥
एक दिना निशीथ प्रभु जागे। गृह गृह शोध लेन पुर लागे॥
कहत रजक त्रियसन कटुबानी। दूषित त्रिया भरे बहुहानी॥
पट लेखनी पुस्तकी दारा। फाट टूट दुख दूषित द्वारा॥
परगृह जाइ बसे जो नारी। संग्रह तासु न करै सोनारी॥
कह त्रिय सिया लंक कहँ जाई। आनी बहुरि ताहि रघुराई॥
धर्मधुरीण न्याय सब जानैं। तिनते अधिक आप तू मानैं॥
रजक कही वे रघुकुल राजा। जस कुछकरैं उनहिं सबछाजा॥
मैं तुमसन जो रति उपजावौं। भाइन बीच बैठि नहिं पावौं॥
जग महँ दूषण होइ घनेरो। ताते सपदि छांडु गृह मेरो॥
यहसुनि रामकीन अनुमाना। भाअपयश मोहिं सियगृहआना॥
अब करिहौं सोइ यतन बहोरी। जेहि ते लोग देहिं जनिखोरी॥
असकहिप्रभुनिजगृहचलिआये। भोरहोत लक्ष्मणहिं बुलाये॥
लै सीतहि तुम बन कहँ जाहू। मोर कहा तुम कहेउ न काहू॥
दण्डकबन सीतहि पहुँचाई। आवहुबेगि छांड़ि तेहिभाई॥
ऐसे बचन कहे जब रामा। मनब्याकुलउठिकीनप्रणामा॥
सीता चरण जाय शिर नावा। हाथ जोरि बनगमनसुनावा॥
चलहु बेगि जनि लावहु बेरा। प्रभुआयसु मोहिंहोतअबेरा॥
उठि सिय राम चरण शिरनावा। पतिआयसु निजशीशचढ़ावा॥
रामचरण निज हिय धरिलीन्हों। लक्ष्मण संग गमनवनकीन्हों॥

गर्भ एक दूजे सुकुमारी। तीजे बिरह दुःख तन भारी॥
चउथो राह चली नहिं जाई। शोचत कस बनदीन पठाई॥
मैं अपराध कबहुँ नहिं कीन्हा। काहेक नाथ मोहिं बनदीन्हा॥
लक्ष्मण सन बोलीं प्रिय बानी। तात नाथ मनकी कछुजानी॥

लक्ष्मणउवाच॥

शिव बिरञ्चि मुनि जे जगमाहीं। हरिइच्छा कोउ जानत नाहीं॥
मैं माता प्रेरक हरिकेरो। जिमि उनको तैसो मैं तेरो॥
जहँ थकिजाहु तहां सहितावौं। प्यासी होहु तो नीरपियावौं॥
आयसु देहु तहां पहुँचाई। रामचरण देखौं फिरिजाई॥

सीतोवाच॥

जेहि बन बाल्मीकि अस्थाना। तहां छोड़ि तुम करहुपयाना॥
यह सुनि लक्ष्मण तहँ पहुँचाई। शीश रामपद नायहु आई॥
सीताके विलाप सुनिकाना। बाल्मीकि देख्यो धरिध्याना॥
तुरतै सिय पहँ गे मुनिज्ञानी। नारदवचन सत्य मनमानी॥
तब मुनि निजआश्रम लै आये। पूछो सिय बृत्तान्त सुनाये॥
शुक सारिका शापमुनिभाखी। पुत्री करि निजआश्रम राखी॥
तहँ दुइ बालक सीतहि जाये। तेजपुञ्ज रविसदृश सोहाये॥
तिनके नामकरण मुनि कीन्हों। कुशलवकहि सेवनमनदीन्हों॥
अन्नकर्म मुण्डन उपनयना। वेदशास्त्र सिखये अतिचयना॥
रामायण मुनि बहुरि पढ़ाई। ज्ञानध्यान धर्नुबिशिखसिखाई॥
तेहि बन ब्याघ्र सिंह जे आवैं। लैधनु लव कुश सकलभजावैं॥
बाल्मीकि सेवन दोउ भाई। करहिंसदा नित मन चितलाई॥

कुं०। सीतापुत्र भये प्रबल गदापद्म अवतार।
विद्या विनय सुशील युत रामायण अधिकार॥

रामायण अधिकार सदा ताम्बूर बजावै ।
कोकिल कीरकंठसम ऋषि मुनिन सुनावै ॥
कथारंभके समय सो त्रिजन धावति आवै ।
रामभजन कविकहैं रामयश जो नर गावै ॥
पाप ताप मिटिजाय जाय हरिलोक बसावै १ ॥

इति श्रीराधाविषादमोचनावल्यांरामभजनत्रिवेदीविरचितायांसीताविपाको नामपञ्चत्रिंशतितमोऽध्यायः ३५ ॥

श्लोक । षट्त्रिंशेत्रच श्रीराममगस्त्येनप्रबोधितम् ॥
पुलस्तिकुलनाशाघादश्वमेधमकारयत् ॥ १ ॥

दो० । राधा माधव ध्यानधरि गौरि गणेश मनाइ ॥
रामभजन बरणन कियो श्रीगुरुआयसु पाइ ॥ १ ॥

चौ० । सुनहुनंदअबअवधकिहानी।जिमिअगस्तिआयेमुनिज्ञानी॥
द्वारपाल यह खबरि जनाई । चरणन परे राम तब आई ॥
पूछि कुशल आसन बैठाये । करिपूजन प्रिय वचन सुनाये ॥
जनकसुता मैं त्यागन कीन्हों । तबते ब्रह्मचर्य्य व्रत लीन्हों ॥
अग्निहोत्र नित करौं गोसांई । वैश्वदेव बलि नेम सदाई ॥
भूत भविष्य काल बतमाना । जानौ मुनि तुम परम सुजाना॥
रावण जाति कर्म गुण भाखौ । मोसन कछु छिपाइ जनिराखौ ॥
कह अगस्त्य सुन रामकृपाला । बिधिकुल भा जिमि लंकभुवाला॥
मुनि पुलस्त्य ब्रह्माके जाये । तिनके बिश्रव तनय कहाये ॥
तुम्हरे कुल ब्रह्मा के जाये । कश्यप पिता मरीचि कहाये ॥
कश्यपतनय सूर्य जग जानौ । तासु तनय वैवस्वत मानौ ॥
तासु नासिका ते इक्ष्वाकू । भे विकुक्षि निमि अरु दंडाकू ॥
दंडुकेर दंडकवन भयऊ । शुक्रशाप ते नृपपद गयऊ ॥

शुक्र सुता सुमती देवयानी। कच मुनिसन बोलीं मृदुबानी॥
हमरे सँग तुम करौ बिवाहू। विद्या सुफलहोइ सुखलाहू॥
तब गुरुसुत बोले कर जोरी। हौ द्वउ तुम गुरुतनया मोरी॥
मष्टकरौ अयोग्य जनि भाखौ। मम अभिलाषचित्तजनिराखौ॥
यह सुनि दोउ बोलीं सुनु मोरी। बिद्या बिफल होइ सब तोरी॥
तब कचमुनि निज शापसुनाई। क्षत्रिन नारिहोहु दोउ जाई॥
चन्द्रवंश ययाति नृप भयऊ। देवयानि बिवाहि तेहिलयऊ॥
सुमतिहिदण्डकीन्ह अभिलाषा। रथपर देखि शुक्र यह भाषा॥
रेणु बर्षि तव राज्य नशाई। सब कानन दण्डक ह्वैजाई॥
निमि कीन्हे मिथिलापुर राजा। अवध बिकुक्षिकीन्ह युवराजा॥
पुरञ्जयो कुकुत्स्थ सुत नामा। इन्द्र निमित्त कीन्ह संग्रामा॥
तासु तनय दृढ़ाश्व बलवाना। धुन्ध दैत्यसन अतिरणठाना॥
तासु तनय हर्यश्व कहाये। तिनके तनय कृशाश्व कहाये॥
भये सेनजित इडविड पूता। भे युवनाश्व तासुके सूता॥
मान्धाता पृथ्वीपति भयऊ। अम्बरीष पुनि जन्महिलयऊ॥
भे हारीत महाबलवन्ता। फिरि त्रसदस्युअनरण्यकहन्ता॥
तिन हर्यश्व अरुण सुतबंका। त्रयबन्धन शतव्रत त्रैशंका॥
तिनके सुत हरिचिन्द कहाये। तनय तुरोत चंपक जाये॥
सुतभरूक बृकबाहुक राजा। सगरतनय असमंजसभ्राजा॥
अंशुमान दिलीप भूनाथा। भये भगीरथ पुनि रघुनाथा॥
श्रुतनाभा पुनि भे रघुदीपा। अयुतायू ऋतुपरणो भूपा॥
सर्वकाम के भये सुदासा। राक्षस ह्वै कीन्हो बनबासा॥
कल्मषांघ्रि सुत दशरथ जाये। जोइ इडबिड बन तप मनलाये॥
कन्या तासु इडबिडा नामा। प्रथम भई बिश्रवमुनि बामा॥

ताके तनय कुबेर कहाये। रावण कुम्भकरण मुनिजाये॥
मुनिते तनय बिभीषण भयऊ। साधु स्वभाव बिष्णुव्रतलयऊ॥
मुनिते खरदूषण पुनि भयऊ। त्रिशिरातनय बहुरिमुनिलयऊ॥
धनद रावणहि वेद पढ़ाये। संयम नेम धर्म सिखलाये॥
रावण तंत्र करन जब लागे। कह मुनि राक्षस होहु अभागे॥
करि तप जब बिधिसन बरपाई। धनद ते लङ्का लीन्ह छड़ाई॥
अब सोइ राम कथा मैं गावौं। तुम्हरी उतपति तुमहिं सुनावौं॥
इडविड के भे बिश्व सहाई। फिरि खट्वांग भये महिआई॥
तिनके दीर्घबाहु बलखानी। राजारघु तिनके भयआनी॥
तिनके अज दशरथ तिन जाये। तिनके सुत तुम राम कहाये॥
एक समय रावण इत आवा। अनरण्यक सन युद्ध मचावा॥
पूछि बशिष्ठ बिप्रकुल जाना। हारि जीति लखि छांड़ेप्राना॥
मान्धाता सन भई लड़ाई। बिप्र जानि तिन दीन्हबचाई॥
तुम रावण कुल कीन्ह सँहारा। लेहौ यदुकुल में अवतारा॥
बिप्र दोषकुल सकल नशाई। तेहिते यज्ञ करहु रघुराई॥
यज्ञते वंश क्षीण नहिं होवै। सकल दोष दुखदारुण खोवै॥
मुनि प्रभुसुमतिहि लीन्हबोलाई। यज्ञबस्तु सब लीन्ह मँगाई॥
घोड़ा श्यामकर्ण मँगवावा। वेदशब्द शृंगार करावा॥
सुमति शत्रुहन पालक कीन्हे। पुहकर भरत तनय सँग लीन्हे॥
सेनापति जो प्रतापा आवा। लै चतुरंगी सैन सजावा॥
तब लगि तहँ बशिष्ठ चलिआये। यज्ञहेत मुनि नेवति बोलाये॥
कोटिन धावन दीन्ह पठाई। यज्ञवस्तु सब लीन्ह मँगाई॥
सिय प्रतिमा हित आयसु पाये। सोरह सहस दूत लै आये॥
राम कहा गुरुसन कर जोरी। त्यागी सिय जनि मिले बहोरी॥

रघुको चरित सकल तुम जाना। तदपि कहब दै तासु प्रमाना॥
ब्राह्मण एक जाय रघु गेहू। जांचा कीन्ह नारि मोहिं देहू॥
राजा सब रनिवासु बोलावा। रानिनकर शृङ्गार करावा॥
तंब नरेश ब्राह्मण सन भाषा। इनमालेहु जो मन अभिलाषा॥
एकते एक सुन्दरी देखा। ब्राह्मण उरभा लोभ विशेखा॥
राजन मोहिं दे सब रनिवासू। करब सदा हम भोग बिलासू॥
सब रनिवास विप्र का दीन्हा। आपु बास पुर बाहर कीन्हा॥
तिनके कुल कपूत हम जाये। नारिहेत द्विज बंश नशाये॥
तेरह सहस्र बर्ष प्रण मोरा। बिन त्रियरहब बचन फुर मोरा॥
एकनारि ब्रत हम तनु लीन्हा। सोरह सहसनारि कस कन्हिा॥
प्राण प्रतिष्ठा देहु कराई। सकल भूमिबिच जाहिं समाई॥
जब यदुबंश लेब अवतारा। भौमासुर रण करब संहारा॥
सोरह सहस नारि कर लाहू। तब हम इनसन करब बिवाहू॥
सुनि बशिष्ठ कुश तुलसी लाई। नींबी बंधन दीन्ह कराई॥
लक्ष्मण भरत यज्ञ के काजा। लीन्हे सकल जीति रणराजा॥
चलो अश्व पूरुब दिशि जाई। कोउ राजा नहिंसकेहु बँधाई॥
प्रथम सुबाहु घोर रण कीन्हों। पुहकरसमर जीति तेहि लीन्हों॥
बाँधो अश्व वीरमणि राजा। जीतिसमरदल अतिरणगाजा॥
शम्भु तासु रण कीन्ह सहाई। जामवान सन कीन्ह लराई॥
अंगदादि बानर बल भारे। युद्ध बीरमणि सकल संहारे॥
तब सुग्रीव कीन्ह अति जूझा। परे समर तन बिकल अबूझा॥
पुहकर सन तेहि कीन्ह लराई। मारि शस्त्र रण दीन्ह गिराई॥
फिरि शत्रुघ्न संग रण कीन्हा। हतिरण शङ्खफूँकिनिज दीन्हा॥
तब हनुमान तहां चलिआये। बीरमणिहिं करि युद्ध गिराये॥

मुतन समेत तासु दल मारा । पहुँचे शिवपहँ पवनकुमारा ॥
जामवंत कहँ दीन्ह पठाई । रामादल चौकी करवाई ॥
लरन लाग शंकर सन योधा । मुष्टि प्रहार करै अति क्रोधा ॥
तल प्रहार लातन औ दांता । काटि डाटिनख नोचति गाता ॥
कटि लंगूर लपेटि पछारी । व्याकुल रण कीन्हे त्रिपुरारी ॥
होइ प्रसन्न बोले भगवाना । माँगहु महाबीर बरदाना ॥
राम भक्ति अरु निज पद प्रीती । माँगहु नाथ दासकी रीती ॥
औरउ एक काज करिदीजै । रामा दल की रक्षा कीजै ॥
तब लगु संजीवनि मैं लावौं । रामादलका आनि जिआवौं ॥
असकहि कपि द्रोणाचल जाई । सुरन जीति संजीवनि लाई ॥
रामादल सब तुरत जिआवा । तब कपि फिरि शंकरपहँ आवा ॥
कपि समेत शंकर तहँ जाई । सकल बीरमणि सैनजिआई ॥
तब शत्रुघ्न तीर सब आये । करिबिनती नृप बचन सुनाये ॥
मूर्च्छा मध्य राम मैं पाये । मोहिं रघुनायक बचन सुनाये ॥
शंकर सेवक मोहिं पिआरा । करिहौं कुछ उपकार तुम्हारा ॥
बिन शिव कृपा न ममपद पावै । फिरि फिरि जीवजन्मिजगआवै ॥
तुम शिवदास दास तिमि मोरे । कारज करब शीश धरि तोरे ॥
जब यदुबंश लेब अवतारा । दुष्ट निपाति हरब महिभारा ॥
उग्रसेन नृप तुम अवतरिहौ । मथुरादेश राज्य सब करिहौ ॥
राज काज हम करब तुम्हारा । अस कहि रघुनायक पगुधारा ॥
चलत संग जो आयसु होई । राम काज सम काज न कोई ॥
शिवपद गति आयसु नृपलीन्हा । सजि निज सयन तयारीकीन्हा ॥
सुरथ राज्य पहुँचो फिरि बाजी । बांधि अश्व सेना तेहि साजी ॥
राम भक्ति प्रताप बरिआरा । सुरथसदृश नहिं आजजुझारा ॥

रामानुज कहँ कीन्ह प्रणामा। कह करजोरि देखावहु रामा॥
तारक मंत्र जपौं दिन राती। मैं प्रभु रामदास सब भांती॥
रामहिं देखि जुड़ावौं छाती। मोहिं पलघरी वर्ष समजाती॥
सो प्रभु जल्दी करहु उपाई। देखौं नयन आजु रघुराई॥
जबलगु मोहिं न राम देखावौ। तबलगु अश्व कबहुँ नहिंपावौ॥
ताते प्रभु आयउँ तुम पाहीं। जनि मारवहु लवणासुरनाहीं॥
सुन्दर रेसम रसी मँगावौं। सब दल नाथ बाँधि लै जावौं॥
राम दरश बिन जान न पैहौ। मम समीप तब राम बोलैहो॥
ताते सुमति देहु समुझाई। सपदि बोलि आवें रघुराई॥
कह हनुमान दास मैं तोरा। आवहु शरणि देहु प्रभु घोरा॥

सुरथोवाच॥

क्षत्रिन धन संग्राम कहावै। रामहिं छांड़ि शरण नहिंजावै॥
जो मैं सत्य रामकर सेवक। मनबच कर्म अन्य नहिं देवक॥
सबहि बांधि लेहौं रणमाहीं। बिन प्रभु आन कामना नाहीं॥
तब हनुमान प्रतिज्ञा कीन्हीं। अपनी भक्ति प्रगट कहि दीन्हीं॥
तौ मैं अंजनि तनय कहावौं। बांधि तुमहिं हरिदरश करावौं॥
निज दलजाइ सुरथरण साजा। बाजन लगे जुझाऊ बाजा॥
दोउ दल सम्मुख भिरे प्रचारी। बर्षहिं अस्त्र शस्त्र सब भारी॥
सेनापति सन कीन्ह लराई। नारायण शर दीन्ह चलाई॥
बांधि प्रतापहि जब रण लीन्हों। पुहकर जाइ बहुतरण कीन्हों॥
तेहि पुहकर सुबाहु रण बांधा। जृंभक मन्त्र बाण गहिसाधा॥
जामवान अङ्गद सुग्रीवा। बांधे सकल महाबल सीवा॥
कह शत्रुघ्न सुमतिसन बानी। को यह मोसन कहौबखानी॥
वेद पुराण शास्त्र सब जानौ। त्रयकालिकगतिमोहिंबखानौ॥

कही सुमति यह गोपकुमारा । पूरुब जन्म धर्म अनुसारा ॥
प्रौढ़भवा तब पितहि सिखावा । गोब्राह्मण सेवन मनलावा ॥
कुं० । गोब्राह्मण सेवन करै रामभक्ति तेहि होय ।
जक्तगुरू ब्राह्मण कहत नवलक्षण युत जोय ॥
नवलक्षण युत जोय वेद वेदान्त बखानैं ।
स्थावर जंगम मध्य ब्रह्मब्यापक अनुमानै ॥
रामभजन कबिकहैं रामदर्शन सोइ पावौं ।
रामध्यान चित धरौं सदा रामायण गावौं ॥ १ ॥

इति श्रीराधाविषादमोचनावल्यांरामभजनत्रिवेदीविरचितायां
रामाश्वमेधिकेषट्‌त्रिंशतितमोऽध्यायः ३६ ॥

श्लोक । सप्तत्रिंशेचसुरथंरघुनाथस्यदर्शनम् ॥
नानाख्यानञ्चकथितंरामपुत्रस्यसङ्गरम् ॥ १ ॥
दो० सुबल सुशील बिनीत अति गोब्राह्मण पदप्रीति ।
नेम धर्म हरिदासकर आदर विनय प्रतीति ॥
एक समय कानन तट जाई । सबल गऊ अति हेत चराई ॥
तहँ विद्वान विप्रएक आवा । करमाला हरिभक्त सोहावा ॥
देखि सबल तेहिकीन्ह प्रणामा । पूछि कुशल आनोजैलठामा ॥
बिमल सरोवर देखि लोभाना । कहद्विज यहां करव अस्नाना ॥
तहँ चौकाशुभ सबल बनावा । धौत बस्त्र तेहिछांटि सुखावा ॥
कुश बिछाय आसनी बिछाई । पूजाकरन लाग द्विजराई ॥
कमल प्रसून कादि लैआवा । तुलसी लै द्विजहरिहिचढ़ावा ॥
काष्ठरगरि तेहिं अगिनि बढ़ाई । धूपदीप हरिको करवाई ॥
गाय लगाइ दूध लैआवा । द्विजबर सो नैवेद्य लगावा ॥
तबलग तासु नारितहँ आई । दधि अरु अन्न मिठाई लाई ॥

सोलै सबल विप्र कहँ दीन्हा। तासुअन्नद्विजग्रहण न कीन्हा॥
कह द्विज शूद्र अन्न जेखाही। तिनके तेज क्षीण है जाही॥
निगुरा हाथ अन्न जल खावै। बर्षएक व्रत पुण्य नशावै॥
सबल कहा प्रभु वेद बखानै। पांचगुरू जग में सब जानै॥
पिता एक उपनीता दोई। विद्या वेद पढ़ावै सोई॥
चौथो गुरु जो ज्ञान सिखावै। सत सत परे सो ब्रह्मलखावै॥
रघुकुल जन्म मोर मुनिनाथा। कहब प्रसङ्ग चरणधरिमाथा॥
एक समय सरयू भृगु आये। ख्यातिहि धौत बस्त्रपकराये॥
मज्जन जाप करन मुनिलागा। लैख्यातिहि निशिचरनभभागा॥
सरयू निकट नृपति फुलवारी। तहँ सुचन्द्रपौढ़े सहनारी॥
रक्ष रक्ष ख्याती नभ कीन्हा। नृप उठितासु न रक्षाकीन्हा॥
ख्याती कहो वैश्य तुम होहू। फिरि निश्चिरपर कीन्होकोहू॥
गर्भ चुआय भस्मतेहि कीन्हा। सुतको नामच्यवनधरिलीन्हा॥
पतिव्रता की शाप कराला। वैश्यभये तब अवधभुवाला॥
कनउज देश वशिष्ठ बताये। तिनके तनय नभंदनजाये॥
विनती करौं महामुनि तोरी। तेहिते वैश्य जातिहै मोरी॥
स्त्री सहित् करौं उपदेशा। होयज्ञान सब मिटै अँदेशा॥
दम्पति जब मुनिवर रुखजाना। मुनि पहँ गे सर करिअसनाना॥
जोरी ग्रन्थि तिलक मुनिकीन्हा। राममन्त्र तारक तेहि दीन्हा॥
करिभोजन प्रसाद तेहि दयऊ। सब आचार सिखावत भयऊ॥
मुनिकह जन्म होइ पुनि तोरा। सुरथनामनृप अति बरजोरा॥
तहँ नारदमुनि तव गृह आवैं। तुमकहँ तारक मन्त्र सुनावैं॥
रामदरश करि जब तनुत्यागौ। मथुराजन्म कृष्ण अनुरागौ॥
उग्रसेन यदुवंश भुवाला। तासु अनुज देवक महिपाला॥

असकहिद्विज निजमारगगयऊ। सोयहु आइ सुरथनृप भयऊ॥
यहिते जूझिपार नहिं पावौ। रामदास जनिबैर बढ़ावौ॥
यह सुनि सोइ रहेउ रथमाहीं। सन्मुख पवन तनय तब जाहीं॥
सुरथराज अरु पवनकुमारा। रामभक्त दोउ अतिबरियारा॥
करैं युद्ध दोउ टरैं न टारे। तब कपीशमन रामसँभारे॥
सुरथराजपर कीन्ह झपेटा। रथसमेत लांगूल लपेटा॥
कनक भूधराकार शरीरा। करि नभ उड़े महारणधीरा॥
पवनआनि तेहि कीन्ह सहाई। ऊपर अवधि हारिलैं जाई॥
कह कपीश सुरथहि समुझाई। देखहु यज्ञ थली रघुराई॥
रामहि सुरथ कीन्ह परनामा। कह हनुमान दीख तुम रामा॥
नभते उतरि भूमिपर जाई। सुरथ कपीशहि लीन्ह बँधाई॥
कहत राम आवैं गृह मोरे। छोरहिं निजकर बंधन तोरे॥
असकहि बांधि कपिहि लैगयऊ। सुन्दर पलँग बिछावत भयेऊ॥
कोमल रेशम रसी मँगाई। तेहिपर डारि बांधि कपिराई॥
कह हनुमान राम इतआवैं। नृप बंधनते मोहिं छोड़ावैं॥

छन्द॥ जय राम रमापति तापहरं। भवबंधन संत निरस्तकरं॥ जयनाथ नमामि कृपा करणं। निजदासन पाप सदाहरणं॥ जय जिन्हक मीन शरीरधरं। बधिदानव वेद उधारकरं॥ जय कच्छप मन्दर पृष्ठिधृतं। मथिसागर क्षीरकृतं अमृतं। जय मोहनिरूप अनूपमजं। निजदास हितू अमृतं व्यभजं॥ जय सूकर दन्त महीधरणं। हिरण्याक्ष विना शन्ते शरणं॥ जय भक्त उधारण सिंहनरं। हिरण कश्यप पेट विदारकृतं॥ जय हंस सनातन बोधपरं। संयुत गुण चित्त विभागकरं॥ जय बामन पावन लोककरं। त्रिपदी जगती बलिराजिहरं॥ जय राम सहस्र भुज कृत्तमलं। त्रय सप्त

विनाशन राजदलं ॥ जय राम दशानन कन्त विभुं। शरणागत हनुमत पाहि विभुं ॥

दो० यहिविधि हनुमत कीन जब अस्तुति दोउ करजोरि ।
तब रघुपति आये तुरत दीन्हे बंधन छोरि १ ॥

जो यह स्तुति सुनै सुनावै। पाठकरै बंधन नहिं पावै ॥
सुरथ आइ चरणन लपिटाना। करिपूजन प्रभु अस्तुति ठाना ॥
तासु बोधकरि दीनदयाला। जाय थली आये ततकाला ॥
सुरथ सेन सजि चले तुरन्ता। अश्व पृष्ठिपालक भगवन्ता ॥
पहुंचो बाजिशिला पर जाई। पदचारिउ तहँ गये समाई ॥
जौने शूर शिला पग देई। ताके चरण शिला गहिलेई ॥
तहां न एकौ चलै उपाऊ। तेहि भयते कोउ धरइ न पांऊ ॥
रामानुज तब सुमति बोलाये। पूंछयो सब वृत्तान्त सुनाये ॥
पूरुब जन्म वेणु एक राजा। निंदक वेद विप्र हरिकाजा ॥
यज्ञ सराध होन नहिं पावै। पुण्यकरै तेहि पकरि मँगावै ॥
हरिकी कथा सुनै नहिं काना। तीरथ करन देत नहिं जाना ॥
तासु नगर अभ्यागत आवै। देहि भजाय रहन नहिं पावै ॥
एक दिन दुर्वासा तहँ आये। देखि नृपति नहिं शीश नवाये ॥
भोजन भाव न आदर कीन्हा। तब मुनिशाप कोपकरि दीन्हा ॥
होउ पषाण शिला तुम जाई। यह सुनि नृपति गहे पदआई ॥
शाप अनुग्रह अब मुनि कीजै। जानि मूढ़ अब कृपा करीजै ॥
कह मुनि राम अश्व जब आवै। रामचरित कपि तोहिं सुनावै ॥
तब खल मुक्तिहोइ नृप तोरी। रामायण प्रताप बरजोरी ॥
असकहि मुनि कैलास सिधावा। तबते वेणु शिलातनु पावा ॥
हनुमत नाटक जाइ सुनावै। तारि ताहि प्रभु अश्व छोड़ावै ॥

तब रामायण हनुमत गाई। दिव्यदेह तेहिभई सोहाई॥
उठि शत्रुघ्न चरण लपिटाना। रामचरित महिमा तेहि जाना॥
करितप भजन छांड़ि तनु सोई। भा सात्यकी जान सब कोई॥
यहिविधि सकल नृपन गृहजाई। राम अश्व नहिं सकत बँधाई॥
चला अश्व दण्डक बन आवा। बालमीकि वन सघन सोहावा॥
विहरत लव मुनिबालक संगा। बांचि पत्रगहि लीन्ह तुरंगा॥
बांधिसाल धनु बाण चढ़ावा। तबलगि रामादल सब आवा॥
बालक निरखि रहे अरगाई। तब अरिहासन खबरि जनाई॥
तब शत्रुघ्नगये तेहि देखा। रामरूप मुनि बेष विशेखा॥
को तुम जटिल मेखलाधारी। मुनिबालक धनु गहत प्रचारी॥
हमरेकुल द्विजसन नहिं माखै। चरणरेणु निज माथे राखैं॥
कह लव सुनु रावण मैं नाहीं। मुनिपुलस्त्यिकुलनोशहुजाही॥
मांगहु भीख अश्व निजलेहू। कहु द्विजहेरि दक्षिणा देहू॥
बांचोपत्र अश्व मैं बांधा। तब करिकोप शरासन सांधा॥
सुनु बटु प्रभु अनुशासन करऊं। बालक नारि प्राण नहिं हरऊं॥
कह लव साधु कथा मुनिभानी। शूर्पनखा ताड़ुका किहानी॥
सुनु नृप उनहिं कौसिलालाये। विजयी जगमहँ राम कहाये॥
मातु हमारि मूल फल खाई। जन्मिसि मोहिं दुसह दुखपाई॥
मुनिप्रताप एहु सब दल तोरा। जीतब रण सुनु नृप प्रण मोरा॥
मम लव नाम बतावों तोहीं। लवणासुर जनि जानेहु मोहीं॥
बानर भालु संगलै आये। मोहिं निशाचर अधम बनाये॥
सँग सुग्रीव बिभीषण क्रूरा। बन्धु मराइ भये दोउ शूरा॥
अंगद बालितनय कुल बोरा। फिरि सुग्रीव पिता भा तोरा॥
सो वहु पूत कपूत कहावै। जो जग पितु बदलो नहिं पावै॥

आउ इतै मैं करौं सहाई। रामहिं जीति लेहु रण माहीं॥
असिमति कुमति केकई कीन्हा। जेहि बनबास राम कहँ दीन्हा॥
दशरथ प्राण घातिनी नारी। तासु पौत्र पुहकर धनुधारी॥
आवहु समरकरौ मम संगा। सहउवशिष्ठ दारुणनिजअंगा॥
असकहि षोड़शबाण चलाये। ध्वज पताक रथ अश्व गिराये॥
पुहकर उतरि भूमि महँ ठाढ़े। दोउमिलिकीन्हमहारण गाढ़े॥
अस्त्रशस्त्रपति अस्त्र चलाये। दिशिअरुविदिशिभूमिनभछाये॥
सीता चरण ध्यानलव कीन्हा। भरथतनय मूर्च्छित करिदीन्हा॥
पुनि सेनापति मूर्च्छितभयऊ। जूम्भन बालितनय तब गयऊ॥
बाणन हति नभदीन्ह उड़ाई। गेंदुकइव नभपरत दिखाई॥
महिके निकट बालिसुत आवै। पुनिपुनि लवनभ पंथ उड़ावै॥
देखि महाबल अचरज माना। अंगदतीर गये हनुमाना॥
हरिपारषद पद्म अवतारा। सीता तनय भये संसारा॥
इनहिं समरकोउ जीति न पावै। बिन शत्रुघ्न कालकिन आवै॥
यह सुनि अंगद प्रष्ठि देखाई। तबसुबाहु रणकीन्हेहु जाई॥
सुरथवीर मणि मूर्च्छा पाई। वानर कटकहिं सकल नशाई॥
महा युद्धकरि कपिपति हारे। तबहिं विभीषण जाइ प्रचारे॥
हतिबाणन रण दीन्ह गिराई। तब शत्रुघ्न भिरे रण जाई॥
लवसँग रण दारुण जब कीन्हा। व्याकुल भे रघुपति शरलीन्हा॥
जेहि सायक लवणासुर मारा। रामबाण सोइ कीन्ह प्रचारा॥
गिरे धरणि लव मुर्च्छाआई। चले राखि रथ शंख बजाई॥
देखि लवहि मुनिबालक धाये। सीतासन वृत्तान्त सुनाये॥
करि विलाप कुश कुश करि टेरा। आवहु पुत्र न लावहु बेरा॥
सिय विलाप सुनि कुश तहँआये। मुनिसब बात हाथधनु धाये॥

पीछेजाइ हांक दै टेरे। जैहो कहां अनुज लै मेरे॥
सेन सहित तोहिंमारि गिरावौं। तौ मैं सीता तनय कहावौं॥
असकहि कुश बाणन झरिलाई। रामादल क्षतिदीन्ह गिराई॥
कुछ मूर्च्छित कुछ घायल कीन्हे। कुछ बांधे भगाइ कुछ दीन्हे॥
रथते लवकहँ तुरत उतारा। बालमीकि चरणन लै डारा॥
मुनि जब तारक मन्त्र उचारा। भाविशल्य उठिबैठ कुमारा॥
वहां खबरि रघुनायक पाई। तुरतै भारत दीन्ह पठाई॥
भरथ सेन सजि जब रणआये। पवनतनत तब बचन सुनाये॥
दुइ सुत लवकुश सीताजाये। बालमीकि मुनि तिनहिंपठाये॥
कुसकौमुदी केर अवतारा। रामतनयरण परम जुझारा॥
गदा पद्म दोउ सुत सियकेरे। करहु न युद्ध कहेप्रभु मेरे॥
तबलग कुशलव तहँचलिआये। देखि सेन मन रोष बढ़ाये॥
बरषहिं शर मेघन की नाहीं। भरत समेत भिरे रणमाहीं॥
भरत मनहिंमन करत विचारा। राम सरस प्रिय मोहिं कुमारा॥
सीता चरण ध्यान पुनि कीन्हे। महिपरि नेत्रमूँदि निजलीन्हे॥
तब कुशलव भूषण सब केरे। आयुधकुंडल वसन घनेरे॥
जामवान हनुमान धराये। सीता चरण शीश तिन नाये॥
दै अशीश चीन्हे कपिभालू। चीन्हिचीन्हिसियभई बिहालू॥
कह सीता कपूत तुम जाये। निजकरनिज कुल सकलनसाये
जो मैं सत्य पतिव्रत नारी। राम सयन सबहोइ सुखारी॥
सीतासती वचन फुरलागी। राम सेन सोवत जनु जागी॥
जाइ भरत सिय पद शिरनावा। अनुजसहितआशिषशुभपावा॥
पुहकर चरणनन परे बहोरी। आये सुमति आदिकर जोरी॥
भरत पालकी आगे राखा। चले भवन मन असअभिलाखा॥

राम अनुज सीता समुझाये। रामनेमकहि सकल सुनाये॥
अब जेहि जन्म न प्रभु सतसंगा। शुक्रीशाप सियकहो प्रसंगा॥
कुण्डनपुर भीषमगृह जाई। हरिहित जन्म लेब फिरिआई॥
रुक्म मूर्त्तिप्रभुहित बनवाई। ताते नाम रुक्मिणी पाई॥
आदि पट्टरानी में होइहौं। ताते नाथ समीप न जैहौं॥
मुनि समेत मुनि आयसु पाई। लवकुश कहँ तुम जाहु लेवाई॥
असकहि सीता अवनि समानी। जाइ भरत मुनि अस्तुतिठानी॥
कुश लव मुनि सब रथ बैठारे। सेन समेत अवधिपगु धारे॥
बालमीकि आवत प्रभु जाना। कुशल प्रश्न पूछी सन्माना॥
मुनिन समेत राम बैठारे। पुनिनिजनयननतनयनिहारे॥
यकटक चितै रहे रघुनाथा। कहमुनि चरणन नावहु माथा॥
तब उठाइ प्रभु हृदय लगाये। नेत्रन जल द्वौ सींचि जुड़ाये॥
कहमुनि रामायण तुमगावौ। राम चरित कहि सबहिसुनावौ॥
उठिकुशलव करिमुनिहिंप्रणामा। गाइनि ग्रंथमें रिग यजु सामा।
फिरि कुशलव तांबूर बजाई। बालमीकि रामायण गाई॥
श्यामल गात नयन अरुणारे। मुनिवर वेष तूण धनुधारे॥
मंदहँसनि चितवनि प्रिय लागे। रूपनिहारि मदनमद भागे॥
नर नारी अस जगमा कोहै। जो न मोह मुनिवरमन मो है॥
सकल लोग नेत्रनफल लेहीं। करिनौछावरि भेटइ देहीं॥
लक्ष्मण भरत शत्रुहन आये। करि नौछावरि बिप्रबोलाये॥
द्विजन दान नानाविधि दीन्हे। फिरिदोउ बन्धुलाइ उरलीन्हे॥
रामआइ माला पहिराई। करिप्रणाम कुशगिरा सुनाई॥
अनुचित मोहिं लेब नहिं दाना। राज्यबिना मोहिंसबभगवाना॥
कुशावर्त पुर देहु बसाई। तेहिमा राज्य करबहम जाई॥

माता अवध पुरी ममत्यागी। बसब न अवध कहौं पदलागी॥
राममुमति कहँ तुरत बोलावा। अवधसरिस कुशनगरबसावा॥
यज्ञकाज करि रघुकुलराई। सकलमुनिन कहँदीन्हबिदाई॥
राज समाज सकल सँग लीन्हा। लयकुश कुशावर्तनृप कीन्हा॥
कौशल्यादि मातु तहँ जाई। बहुत सम्पदा दीन्ह लुटाई॥
फिरि रघुनाथ अवध पुरे आये। भरतआदि सब बन्धुबोलाये॥
मथुरा राज्य शत्रुहन कीन्हा। प्रभु नैपाल भरत कहँ दीन्हा॥
लक्ष्मण अन्तर वेद बताई। बहुरि अवध आये रघुराई॥
राज्य करत बहुकाल सेराना। ब्रह्मादिकसुर अस्तुतिठाना॥
दीनदयाल कृपाअब कीजै। बसिवैकुण्ठ सुरन सुख दीजै॥
तब रघुनायक बन्धु बोलाये। निज निजसुतनराज्यदैआये॥
काल बिप्रतनु धरि तहँ आवा। तबरघुपतिलक्ष्मणहिंबोलावा॥
द्वार बैठि रक्षा दृढ़ कीजै। भीतर भवन न आवनदीजै॥
जो आवै तेहि डारो मारी। तेहिते रक्षा करहु सँभारी॥
तब लगिदुर्वासा तहँ आये। उठि लक्ष्मण पदशीशनवाये॥
रोंकत शाप देहिं मुनि मोहीं। भीतर गये नाशमुनि होहीं॥
यह बिचारि तहँ मुनि ठढ़ियाई। भीतर भवन गये फणिराई॥
अन्तरध्यान भये ततकाला। मनक्रोधित भयअवधभुवाला॥
लक्ष्मण क्रोधवन्त प्रभु जाना। बधते त्यागभयउ मनमाना॥
तबलग दुर्वासा तहँ आये। रामपूजि आसन बैठाये॥
करिभोजन कैलासहि गयऊ। राक्षस कपिन बोलावतभयऊ॥
भरतादिक सब लिये बोलाई। मातन निज पालकी चढ़ाई॥
लय सब सँग गुसारहि गयऊ। प्रजालोग सब धावत भयऊ॥
सुग्रीव विभीषण निज गृहजाई। भजहुमोहिंतुम मनचितलाई॥

असकहि हनुमत लीन्ह बोलाई। अवधराज्य प्रभु दीन्ह बताई॥
भालुकीश रघुपति सब टेरे। निजनिज लोकबसौकहिफेरे॥
लक्ष्मण शेष रूप तब कीन्हा। गेगुसार प्रविशिचलिदीन्हा॥
शंख चक्र गदपद्म विराजै। कौस्तुभ मणिकिरीटशुभराजै॥
गरुड़ोपरि शोभित श्रीरामा। लक्ष्मी सहितविष्णुसुखधामा॥
तेहि अवसर ब्रह्मादिक देवा। बर्षैंसुमन जनावैं सेवा॥
अवध बसैं जे जीव समूहा। प्रभुके संगचले सब जूहा॥
यहि विधि रामगये निज धामा। सुमिरत नरपावै विश्रामा॥
अश्वमेध हरिकी मैं गाई। बहुरिलवकुशी तुमहिं सुनाई॥
कोटि यज्ञ फल पावै सोई। जो यह सुनैसुनावै कोई॥
रामभजन विनवैं करजोरी। पण्डितजनमोहिंदेहु न खोरी॥
बनी न जो सोइ लेहु बनाई। ममगति यथातथा मैं गाई॥

कुं०। सीताराम चरित्र शुभ तुमहिं सुनायउँ नन्द।
जोइ सुनै भवनिधि तरै परै न माया फन्द॥
परै न मायाफन्द मन्द ते उत्तम होवै।
मोहनिशा जगशयन रामजन कबहुँ न सोवै॥
रामभजन भजिराम ज्ञान उत्तम मनआवा।
निजमति के अनुसार सियारघुवर यशगावा॥

इति श्रीराधाविषादमोचनावल्यांरामभजनत्रिवेदीविरचितायांसुबाहु
वीरमणिसुरथकुशलवविपाकोनामसप्तत्रिंशत्तमोऽध्यायः ३७॥

श्लोक। परंसत्यंनत्वाप्रथममपिप्रथमोद्भवकथाः॥
ऋषीणांसंवादंगदितमृषिसूतस्यचपुनः॥
विषादंव्यासस्यविधिसुतवचोभिर्गतमतः॥
शुकंदत्वाशास्त्रंतस्मिन्परीक्षिन्नृपकथाः॥ १॥

दो॰ सियाराम पद धरिहृदय निजमन स्थिर कीन्ह।
राधानन्द प्रसङ्ग यह रामभजन कहि दीन्ह॥ १॥

फिरि हरिके पदपद्म मनावौं। मति अनुसार भागवतगावौं॥
जो सुनि भक्ति ज्ञान वैरागा। होहि पुष्ट हरिपद अनुरागा॥

राधोवाच॥

सुनहु नन्द पुनीत इतिहासा। आये सूत शौनकन पासा॥
सब नैमिष बासी मुनि आये। करिप्रणाम आसन बैठाये॥

शौनकउवाच॥

बड़ीभाग्य दरशन तव पाये। नारायण करिकृपा पठाये॥
व्यास शिष्य उत्तम तुमभाई। सब पुराण प्रभुव्यास पढ़ाई॥
कलियुग अब अधर्म तनुआवा। हम सब देखि महाभयपावा॥
तुमसर्वज्ञ निहोरौं तोहीं। तबलगि कथा सुनावहुमोहीं॥

सूतउवाच॥

जो भागवत गोकरण गाई। अधम धुन्धुली सुतहि सुनाई॥
सात दिवस जेहि सुनी पुराना। धुन्धकारि चढ़िचलोविमाना॥
प्रेत योनि तजि हरिपद पावा। नारदको सनकादि सुनावा॥
शुकसन सूत प्रथम सुनि राखी। नैमिषशौनक मुनिसनभाखी॥
सोइ संक्षेप भागवत गाई। लेहौं चञ्चल मन बिलमाई॥
प्रथमहिं परे ब्रह्मकर ध्याना। व्यास जन्मपुनि सूतबखाना॥
सरस्वती तट वेद प्रकासा। व्यासचरित बदरी बनवासा॥
अष्टादश पुराण मुनि कीन्हे। षट शिष्यनपढ़ाइजिमिदीन्हे॥
महाभारत पुराण मुनि गाई। तदपि व्यासमन सोच न जाई॥
नारद आइगये तेहिकाला। गावत हरिगुणविशदरसाला॥

नारद कही भागवत गावौ। तबप्रसन्नमन अति सुखपावौ॥
मैं पूरुव उपवर्हण नामा। कुलगन्धर्व विषय रस कामा॥
मोह ते ताल भंग मैं कीन्हीं। ब्रह्मा शाप कोप करिदीन्हीं॥
शूद्री गर्भ जाइ तू जावै। तहँ हरिभक्तन संगत पावै॥
शूद्री पुत्र भयउँ जग आई। दासी सुत बालकपन पाई॥
वर्षाकाल चारिमुनि आये। हरिचरित्र नित सुनौसुहाये॥
चौका टहल मातु नित करई। मुनि जूंठनि मम आगे धरई॥
तबते निर्मल मति मैं पाई। जबते मुनि जूंठनि मैं खाई॥
तबमुनिवर मोहिंनिकट बोलावा। ध्यान योग अष्टांग सिखावा॥
राममंत्रदै जब मुनि गयऊ। तब्रते राम भक्त मैं भयऊ॥
जब माता सुरलोक सिधाई। तब मैं भजन कीन्ह बनजाई॥
कीन्ह ध्यान हरिरूप निहारा। भै नभगिरा न दरश हमारा॥
होइहि बहुरि शूद्र तनु धारी। मुनि होइहौ करि भक्ति हमारी॥
तबते मैं जब ध्यान लगावौं। तब पुनि राम दरश नहिं पावौं॥
गावत फिरौं राम गुण गाना। तबलग महाप्रलय नियराना॥
जीव चराचर हरि उर कीन्हे। शेष शयन लक्ष्मी संग लीन्हे॥
सूर्य चन्द्र विधि आदिक जेते। सब लय भये रहे जग जेते॥
प्रलयकालभरि हरि उर माहीं। मैं बसि भजन कीन्ह मनमाहीं॥
जागे विष्णु जन्म विधि पावा। पुनिविधितेहरि मोहिंउपजावा॥
नेम धर्म विधि मोहिं सिखाई। बहुरि भागवत दीन्ह पढ़ाई॥
श्री भागवत व्यास तुम गावौ। रचिविशालनिजसुतहिपढ़ावौ॥
अस कहि चारि पद्य मुनिगाई। गे विधिलोक महा मुनि राई॥
सहस अष्टदश व्यास बनाई। अतिआदरलै सुतहि पढ़ाई॥
शुकते सूत संहिता पाई। सोइ नैमिषवन मुनिन सुनाई॥

सूतउवाच ॥

एक समय नारद मुनिआये । कलियुग ग्रसितलोक भयपाये ॥
रहो अधर्म छाइ जग माहीं । ज्ञानभक्ति कोउ जानत नाहीं ॥
रोग दरिद्र ग्रसित जग देखा । नारद उरभा शोच बिशेषा ॥
घूमत जग वृन्दावन आये । भक्ति ज्ञान वैराग्यहि पाये ॥
भक्ति देखि मुनिवर उठि धाई । कहिनिजदशामुनिहिसमुझाई ॥
कह नारद कलियुग बहु घोरा । तव सुत वृद्धभये सुनु मोरा ॥
मुनिगीता वेदान्त सुनावा । तबहुँ न उठे परम भय पावा ॥
कह नारद बदरी बनजाई । तव हम यतन करब फिरिआई ॥
सनक सनंदन सनत कुमारा । बीचहि मिले कहां पगुधारा ॥
तब नारद सब कथा सुनाई । बोले हरषि सुनौ मुनिराई ॥
श्रीभागवत सुनत सुख पैहै । क्षशित शरीर पुष्टहोइ जैहै ॥
यह सुनि नारद मुनिन समेता । हरद्वार आये अति हेता ॥
श्रोता सकल तहां बहु धाये । सुनि भागवत महा सुखपाये ॥
भक्ति ज्ञान वैराग्य समेता । भये पुष्ट तनु भा तब चेता ॥

कुं० । श्री भागवत सुनै नर पावै पद निर्वान ।
तातें जगमें आयके सुनिये कथा सुजान ॥
सुनिये कथा सुजान व्यासमुनि सुखद बनाई ।
सब पुराणकर सार मोक्षप्रद पाप नशाई ॥
राम भजन कवि कहै ज्ञान वैराग्य दृढ़ावै ।
भक्ति विष्णु पदहोइ सदा सुख संपति पावै ॥

इति श्रीराधाविषादमोचनावल्यांरामभजनत्रिवेदीविरचितायांश्रीभागवत माहात्म्यवर्णनोनामअष्टत्रिंशत्तमोऽध्यायः ३८ ॥

श्लोक । परंसत्यंनत्वाप्रथममपिप्रथमोद्भवकथाः ॥

ऋषीणासंवादंगदितमृषिसूतस्यचपुनः ॥
विषादंव्यासस्यविधिसुतवचोभिर्गतमतः ॥
शुकंदत्वाशास्त्रंतस्मिंपरीक्षितनृपकथाः ॥ १ ॥

दो०। राधा माधव ध्यानधरि गणपति गौरि मनाय।
रामभजन बर्णन कियो श्रीगुरु आशिष पाय ॥

प्रथम ब्रह्मकर ध्यान बतावा। फिरि नारदकर जन्म सुनावा ॥
नारद व्यास कहो संवादा। फिरि द्रुपदीसुत मरण विषादा ॥
जिमि अर्जुन पत्नी समुझाई। द्रोणपुत्र रण बांधिनि जाई ॥
कृष्ण कहा तुम करौ सँहारा। सोवत पांच पुत्र जेहि मारा ॥
तब अर्जुन मन्दिर लै आये। द्रुपदसुता करिकृपा छुड़ाये ॥
चोटिया कटी देखि खिसियाना। लै षटबाण धनुष संधाना ॥
पांच बाण पांडन परमारे। एक गर्भ नाशन हित पेरे ॥
कृष्ण आनि सब लीन्ह उबारी। तब कुन्ती अस्तुति अनुसारी ॥
जे भारत जूझे तिनकेरी। करिके क्रिया भीष्मपद हेरी ॥
शरशय्या ते कृष्ण निहारी। अस्तुति करत नयन बहै बारी ॥
ज्ञान युधिष्ठिर कहँ दै दीन्हो। करि हरिध्यान परमपद लीन्हो ॥
तब प्रभु पुनि हस्तिन पुरजाई। यज्ञ तीन नृपका करवाई ॥
अर्जुनसुत अभिमन्यु कहाये। तिनते तनय उत्तरा जाये ॥
नाम परीक्षित धर्म धुरीना। जिनकलियुग प्रयाग गहि लीन्हा ॥
धर्मभूमि रक्षा नृप कीन्हा। तिनकहँशापअसितमुनिदीन्हा ॥
एक समय वन मृगया काजा। मुनिआश्रम आये फिरि राजा ॥
तृषित नृपति तहँजल नहिंपावा। मृतक उरगमुनि कांध चढ़ावा ॥
तब मुनिवर सुत शाप सुनावै। तक्षक डसै मृत्यु तू पावै ॥
अवधिसात दिनकी तेहिकीन्हा। राजा निज गृहका चलिदीन्हा ॥

सुत जनमेजय लीन्ह बोलाई। दै निज राज गंग तटजाई॥
दक्षिणकूल बैठ कुश डासी। तहँ आये बहु मुनि संन्यासी॥
व्यासदेव सुत शुक तहँ आये। करि पूजा आसन बैठाये॥
कह नृप मम अपमृत्यु निवारौ। अस कछु यत्न करौ मोहिं तारौ॥
कह शुक सातदिवस भजु मोहीं। श्री भागवत सुनावौं तोहीं॥
जाके सुने जीव तरिजाई। पाप परीक्षित सकल नशाई॥
जेती पुण्य अहै जगमाहीं। पारायणकी पटतर नाहीं॥
जो भागवत सुनै अरु गावै। सो बैकुंठलोक सुख पावै॥

श्री शुकोवाच॥

जेहि द्विजदोषते कृष्ण बचावा। सो द्विजदोष फेरि तू पावा॥
द्विजको दोष मिटै नहिं काऊ। करै चहौ नर कोटि उपाऊ॥
जो ब्राह्मणकर कोप बचावै। सो नर भुक्ति मुक्ति फलपावै॥
ब्रह्मदोष ते मरै जो कोई। राजन तासु अधम गति होई॥
ऐसेहि कहन भागवत लागे। सुनत नृपति हरिपद,अनुरागे॥
प्रथम कृष्ण कहँ कीन्ह प्रणामा। धर्म विप्र पद मंगल कामा॥
करि प्रणाम भागवत सुनावो। हरिको रूप प्रकट दरशावो॥
यहिमा ब्रह्म ज्ञान विज्ञाना। भक्ति योग वैराग्य बखाना॥
ज्यहिते मोह जाय नृप केरा। नारद व्यास प्रसंग घनेरा॥
ताते कछु विराग मन आवै। स्वल्प काल जीवन दरशावै॥

कुं०। श्री भागवत सुनै नर पावै पद निर्वान।
ताते जगमें आइके सुनिये कथा सुजान॥
सुनिये कथा सुजान व्यास मुनि सुखद बनाई।
सब पुराण कर सार मोक्षप्रद पाप नशाई॥
राम भजन कवि कहै ज्ञान वैराग्य दृढ़ावै।

भक्ति विष्णु पद होइ सदा सुख संपति पावै ॥ १ ॥

इति श्रीराधाविषादमोचनाख्यांरामभजनत्रिवेदीविरचितायांप्रथमस्कंधे एकोनचत्वारिंशतितमोऽध्यायः ॥ ३९ ॥

श्लोक। तत्रतुप्रथमेऽध्यायेकीर्तनंश्रवणादिभिः ॥
स्थविष्ठेभगवद्रूपेमनसोधारणोच्यते ॥ १ ॥

दो०। राधा माधव ध्यानधरि गणपति गौरि मनाइ ॥
रामभजन बरणन कियो श्रीगुरुआशिष पाइ ॥ १ ॥

चौ० नृपखट्वांग कीन्ह सुरकाजा। गतबहु काल कही सुरराजा ॥
तुम नृप हमरी रक्षा कीन्ही। अपनी राज्य भोग तजिदीन्ही॥
माँगहु वर तब कही भुआला। आयु मोरि बाकी कतिकाला ॥
इन्द्र कही दुइ दण्ड प्रमाना। नृप सरयू तट कीन्ह पयाना ॥
करि हरि ध्यान छोड़ि तनु दीन्हो। हरिके लोक बास नृप कीन्हो ॥
तुम्हरी सातदिवस भरिआऊ। सुनहुकथा निजचित करिचाऊ॥
योगाभ्यास करै नर जोई। ताकहँ फिरि संसृति नहिंहोई ॥
प्रथम योग अष्टांग बखाना। योगिनगतिबरणीविधिनाना ॥
योग कठिन तुमते नहिं होई। ताते सुनौं भागवत सोई ॥
नारदयोग जुगुति सबकीन्ही। देखे विघ्न टेक यहदीन्ही ॥
करब सदा हरिके गुण गाना। ब्रह्मलोक तब कीन्ह पयाना ॥
पूछ्यो पितहि चरण धरिशीशा। श्रीभागवत कही जगदीशा ॥
कहबिधि हरिसन मैं सुनिपाई। दीनजानि मैं तुमहिं सुनाई ॥
नारद जाइ व्यास सन भाखी। तिनते पढ़ि मैं हियधरिराखी ॥
सुनुअवतार चरित हरि केरे। धरि धरि तनु प्रभु कीन्ह घनेरे ॥
प्रथम विराटरूप प्रभु धारी। महदादिक रचि सृष्टि समारी ॥
तिनकी नाभि कमल अजजाये। सोई सहसशीश श्रुतिगाये ॥

जाके अंश कला ते होनी । देवादिक नर तिर्य्यग योनी ॥
तेहि प्रभुलीन्ह प्रथम अवतारा । सनक सनंदन सनतकुमारा ॥
दुष्कर ब्रह्मचर्य व्रत कीन्हा । पढ़िसब वेद ब्रह्म लखिलीन्हा ॥
दूसर हरि शूकर तनुधारी । मारि दैत्य जिन भूमिउधारी ॥
तीसर नारदकर अवतारा । परम भागवत व्रत विस्तारा ॥
चौथे नारायण नर रूपा । जिनतनुकसि तपकीन्हअनूपा ॥
पंचम कपिलदेव अवतारा । सांख्ययोग जिनजगविस्तारा ॥
छठयें दत्तात्रय भगवाना । मोक्ष शास्त्र जगहेत बखाना ॥
सतयें आकूती गृह जाये । यज्ञरूप फल प्रकट देखाये ॥
अष्टम ऋषभदेव अवतारा । परमहंस पद जग विस्तारा ॥
नवमें पृथु जन्मे जगनाथा । दुहि पृथिवीजगकीन्ह सनाथा ॥
दशयें मत्स्यरूप हरिकेरा । प्रलयवेष मनुनाव निवेरा ॥
ग्यरहें कच्छपरूप बनावा । पृष्ठराखि गिरिसिंधु मथावा ॥
बरहें धन्वंतरि तनुधारी । अमृतआनि वैद्यकअनुसारी ॥
तेरहें मोहनिरूप बनावा । मोहि दैत्य देवतन पियावा ॥
चौदह नारसिंह बपुधारयो । दैत्यमारि प्रहलाद उबारयो ॥
पंचदशे बामन तनु कीन्हो । बलिहिबंचि इन्द्रहिं पददीन्हो ॥
सोरहें परशुराम अवतारा । जिनक्षत्रिनकुलकीन्ह सँहारा ॥
सत्रह व्यास भये प्रभु आई । वेद पुराण भागवत गाई ॥
अष्टादशे राम अवतारा । बांधि सिन्धुजिन रावणमारा ॥
ऊनविंश बलभद्र कहाये । देवकाजहित तनुधरि आये ॥
विंशति कृष्ण लीन्ह अवतारा । कीन्ह चरित्र हरो महिमारा ॥
यकइस बुद्धकेर तनु कीन्हो । करि पाखण्डजगतसुखदीन्हो ॥
बाइस कल्की रूप बनावें । म्लेच्छमारि श्रुतिधर्म चलावें ॥

अजविराट गनिचौबिस जानौ। आदि ब्रह्ममय सब जगमानौ॥

कुं०। निर्गुण बीजा सगुणमहि माया थलहा मानु।
ब्रह्मा अंकुर डारशिव पत्र देव शशि भानु॥
पत्रदेव शशिभानु पुष्प फलईश्वर लागे।
भक्ति सुरस लै स्वाद संत बन तजिगे आगे॥
रामभजन शुक श्राव मधुर वेदन फलपावा।
श्रीमत ज्ञान बिराग भक्ति रस मानस गावा १॥

इति श्रीराधाबिषादमोचनावल्यांरामभजनत्रिवेदीविरचितायांद्वितीयस्कन्धवर्णनेनामचत्वारिंशत्तमोऽध्यायः ४०॥

श्लोक। तृतीयेतुत्रयस्त्रिंशदध्यायैः सर्गवर्णनम्।
ईशेक्षयागुणक्षोभात्सर्गोब्रह्माण्डसम्भवः॥१॥

दो०। द्वैपायन शुक ध्यानधरि कहब तृतीय सदर्थ।
बिदुर भक्त मैत्रेय कर कथा प्रसंग समर्थ॥१॥

चौ०। प्रथमे सर्ग कथा मैं गाई। अब बिसर्ग स्थान बताई॥
कहब बिदुरकर जन्म प्रसंगा। जो मुनिहोइ सकल भवभंगा॥
ऋषि माण्डव्य बसैं मनमाहीं। चोर बिपुल धन तहँ धरिजाही॥
अवधिराज-निज दूत बोलाये। चौर द्रव्य हित सकल पठाये॥
ढूंढ़त मुनि पहँ नृप धन पाये। बांधि नृपति पहँ ते लै आये॥
शासन दीन बिचार न कीन्हा। लै शूली चढ़ाय मुनिदीन्हा॥
पतिव्रता बनिता पुरमाहीं। पतिसेवन तजि कामनजाहीं॥
कुष्ठी अङ्ग गलित पति बोला। नृत्यराज गृहहोत अमोला॥
मोहिं देखाइ लाउ तैंप्यारी। सुनि प्रिय बचन चली लै नारी॥
कांध चढ़ाइ गई मुनितीरा। धक्कालाग भई अति पीरा॥
कहमांडव्य शाप सुनुमोरा। होतप्रात मरि है पतितोरा॥

कह वनिता सुनु मुनिवरबानी । मरिहि न पति होइहितवहानी ॥
जो प्रातहि रवि मोहिंदेखाई । उगतै सहसखंड होइजाई ॥
असकहि पतिकहँनांच देखावा । आईगृह रविउगन न पावा ॥
यहिविधि एकमास चलिगयऊ । व्याकुलजग रविउदयनभयऊ ॥
विधि हरिहरतहवाँ चलिआये । मानिसिनहिंबहुविधिसमुझाये ॥
तेफिरिगये अत्रि के थाना । सबप्रसंग अनसूया जाना ॥
तीनौं जन जन्मौ गृहमोरे । सबबिधिकरब काज हमतोरे ॥
वह वनिता है शिष्य हमारी । नेम धर्म युत पतिहि पियारी ॥
एवमस्तु तब विभुन सुनाई । अनसूया वनिता गृह आई ॥
अनसूया कह मीचहु नयना । जीहैं पति होइहै जग चैना ॥
उये सूर्य द्विज मूर्च्छा आई । चितवत दिव्य देह त्यहि पाई ॥
पतिव्रता प्रताप बरि यारी । तीनि मास मुनिकहँ दुखभारी ॥
तपबल मुनिहिं शूल नहिं लागा । प्रात होत अनरण्यक जागा ॥
मुनि पहँ जाइ चरण शिरनावा । तब मुनिवर त्यहि शापसुनावा ॥
रावण कर है मरण तुम्हारा । फिरि कलियुग हुइहै अवतारा ॥
साधु बणिक सुतयुत दुखपावौ । सत्य देव व्रतकरि तरिजावौ ॥
यहु द्विज मिश्र सहोद्रा जावै । अर्जुन सुत अभिमन्यु कहावै ॥
विनता नृप विराट घरमाहीं । देइहि अर्जुन सुतहि बिवाही ॥
सोइ उत्तरा सकल जग जानी । तनयपरीच्छित शुभगुणखानी ॥
गे मांडव्य जहां यमराजा । बिनअघ मोहिं दंड केहिकाजा ॥
यकइस जन्म मोहिं सुधि भाई । शूली कवन पापते पाई ॥
कह यम तुम बालक पनमाहीं । धुआंकीन्ह टीड़ी गृह माहीं ॥
ताते दण्ड तुमहिं मैं दीन्हों । थोरे काल अनुग्रह कीन्हों ॥
कहमुनि सुनु यम शाप हमारी । शूद्री गर्भ बिदुर व्रतधारी ॥

हुइहौ व्यासदेव सुत जाई। कृष्ण भक्त नृपकुल तनुपाई॥
पांचवर्ष कर बालक जोई। ताकहँ पाप होय नहिं कोई॥
असकहि मुनि मांडव्य सिधाये। बिदुर बिपाक जगत यमजाये॥
कुरु पांडव विरोध तेहि जाना। सभामध्य कह बचन प्रमाना॥
जाके कृष्ण सहायक मानौं। विजय राज्य ताही की जानौं॥
पांच ग्राम पंडुन कहँ दीजै। ममता कृष्ण बचन फुर कीजै॥
यह सुनि दुर्योधन रिसियाई। बिदुर सभाते दीन्ह उठाई॥
बिदुर सकल नृप चिह्न उतारे। हर्षित हरि तीर्थन पगु धारे॥
घूमत बहुत काल चलि गयऊ। कौरव दल सब जूझतभयऊ॥
एक समय यमुना तट आये। उद्धव भक्त दरश शुभ पाये॥
पूंछी कुशल सकल तिन बरणी। पुनिपुनि कही कृष्णकीकरणी॥
पुनि जिमि कृष्णगये निजधामा। उद्धव कह्यो ज्ञान अभिरामा॥
बिदुरहि ऊद्धव कह समुझाई। हरद्वार कहँ दीन्ह पठाई॥
उद्धव गयउ कलाप ग्रामा। मुनिहिंबिदुरचलिकीन्हप्रणामा॥
तब मैत्रय सुआसन दीन्हा। पूंछीकुशल गमनकहँ कीन्हा॥
बिदुर प्रश्न पूँछन तब लागे। कह मैत्रेय भागवत आगे॥
पुनि बिराट संभूति बखानी। प्राकृत वैकृत कह मुनिभानी॥
जिमि ब्रह्मांड बिराट के रोमा। कोटिन भये भये रविसोमा॥
सूक्षम स्थूल काल गति गाई। लवदिन वर्ष सकल मुनिराई॥
पद्म कल्प बिधि जन्म बखाना। स्थावर जंगम उतपति नाना॥
फिरि बाराह कल्प मुनि गाई। ब्रह्मा जो महि रची बनाई॥
तिर्य्यग् ऊर्ध्व रुद्र अवतारा। मनु शतरूपा जन्म प्रचारा॥
सनक सनन्दन सनत कुमारा। फिरिदशतनयलीन्हअवतारा॥
तिनमाँ फिरि मरीचि मुनिजाये। कश्यप तिनके तनय कहाये॥

कश्यप मुनि की तेरह नारी। तिनते सकल सृष्टि बिस्तारी॥
अदिती के सब देव कहाये। दशआदित्य आदि जेहिजाये॥
दितिके दैत्य भये बलवाना। हिरनकश्यप हिरनाक्षबखाना॥
सो हिरनाक्ष अवनि हरि लीन्हीं। तबबिरंचिहरिकी स्तुतिकीन्हीं॥
बिधिनासा बराह अवतारा। प्रविशिप्रलयजलअवनि उधारा॥
नारद दैत्यहि खबरि जनाई। प्रभुसन युद्ध कीन्ह तेहिजाई॥
तब बराह प्रभु दैत्य सँहारा। अवनि सलिल ऊपर विस्तारा॥
शतरूपा मनु दोउ तप कीन्हा। तिनका आइ विष्णुवर दीन्हा॥
सत्तरि एक चतुर्युग राजा। राज्य कीन्ह दुइसुत उपराजा॥
प्रिय व्रतोत्तानपद नामा। राजकाज सौंप्यो हरिकामा॥
कन्या आकूती तिन जाये। यज्ञरूप तेहि सुत उपजाये॥
यज्ञ कि भई दक्षिणा नारी। लक्ष्मी विष्णु जगतसुखकारी॥
मझिली देवहुती मन जाई। लहुरी भई प्रसूती आई॥
दक्ष प्रसूती के पति भयऊ। देवहुती कर्दम का दयऊ॥
ब्रह्माकी छाया ते जाये। कर्दम तपकरिहरिहि रिझाये॥
चौदह सहस वर्ष तप कीन्हा। विष्णुआइ दरशन तेहिदीन्हा॥
दै बरदान गये हरि धामा। देवहुती बोली सुत कामा॥
नाथ साथ तप कीन्ह अपारा। दुर्बल तनु नहिं भोग बिहारा॥
अपने सदृश बिरचि गृह लेहू। कुछदिन मोसन करहु सनेहू॥
यँह सुनि कर्दम योग प्रभावा। रचिविमान चढ़ि ताहिदेखावा॥
देखि विमान सुखद मनभावा। लखि दुर्बल तनमन दुखआवा॥
तब मुनि वर पत्नी तन हेरी। बिमल कुंड असनानहिं पेरी॥
जब असनान कीन्ह तेहि जाई। सहस एकदासी तहँ आई॥
तिन त्यहिका शृङ्गार बनावा। लै दर्शन शुभरूप दिखावा॥

रतिसम सुन्दर निज तन हेरी। भोगयोग्य अभिलाष घनेरी॥
कर्दममुनि निज रूप बनाई। सखियन सहित बिमानचढ़ाई॥
पारिजात बन कहँ मुनि आये। कीन्ह विहार बहुत सुखपाये॥
नन्दनबन बिहरे बहुकाला। अङ्ग संग सुखस्वाद रसाला॥
लोक लोक शुभ कामग जाई। बहुविधि मुनिहिं बिहारकराई॥
मुनिवर बहुरि बिन्दुतट आई। शुभलच्छण नव कन्या जाई॥
कलाआदि बिधितनयन पाई। निज २ आश्रम गये लिवाई॥
पाछे कपिल लीन्ह अवतारा। सांख्ययोग निजजगबिस्तारा॥
कर्दम गये बनहिं तप कीन्हा। मातहिसांख्यकपिलकहिदीन्हा॥
फिरि कहि भक्ति ज्ञान बैरागा। ध्यान योग तप तत्त्वविभागा॥
बन्धन मोक्ष जीव कहँ होई। मातहि बरणि सुनाइनि सोई॥
कामप्रबलता पुनि २ भाखी। शङ्कर नारद की दै साखी॥
क्रोध कठोर प्रबल जेहि भांती। विधिहरचरितकहिनिबहुभांती॥
मोह जीव कर सकल उचारा। जेहिते बहुरि होत संसारा॥
मोहते जीव गर्भ जिमि आवै। धन सुत नारि बहुरिचितलावै॥
शोकप्रबलता मुनि समुझाई। पुनि कपोतकी कथा सुनाई॥
भक्तियतन सब भांति बताई। तप हित गये मातु शिरनाई॥
करि सुत प्रेम योग तप ठाना। देवहूति चढ़ि चली बिमाना॥
यह तृतीय मैं बरनि सुनाई। जो सुनि पाप पहार बिलाई॥

कुं०। निर्गुणबीजा सगुण महि माया थलहा मानु।
ब्रह्मा अंकुर डार शिव पत्र देव शशि भानु॥
पत्र देव शशि भानु पुष्प फल ईश्वर लागे।
भक्ति सुरस लै स्वाद सन्तबन तजिगे आगे॥
रामभजन शुक श्राव मधुर वेदन फलपावा।

श्रीमत ज्ञान विराग भक्तिरस मानस गावा ॥१॥

इति श्रीराधाविषादमोचनावल्यांरामभजनत्रिवेदीविरचितायांतृनीस१न्ध वर्णनोनामप्रचत्वारिंशोऽध्यायः ४१ ॥

श्लोक। अथैकत्रिंशताध्यायैर्विसर्गस्तूर्यमीर्यते।
विसर्गस्त्वीश्वराधीनैर्ब्रह्ममन्वादिभिःकृतः॥ १ ॥

दो०। राधा माधव ध्यानधरि गौरि गणेश मनाइ।
रामभजन बरणन कियो श्रीगुरु आशिष पाइ ॥ १ ॥

चौ०। राजा सुन चतुर्थ मन लाई। ज्ञानपरे उपशम सुखदाई॥
कर्दमसुता कला जेहि नामा। सो मरीचि ऋषि की भै बामा॥
कश्यप पूर्णिमास दुइ पूता। कश्यपके भे तनय बहूता॥
अनसूया कर अत्रि बिवाहू। दत्त सोम दुर्वासा लाहू॥
श्रद्धाभई अङ्गिरा नारी। उतथि बृहस्पति सुत ब्रतधारी॥
मुनिपुलस्त्य हवि उर उपजाये। सुत अगस्त्य बिश्रवा सुहाये॥
गतिके पति मुनि पुलह कहाये। कर्म श्रेष्ठ बरिष्ठ सुत जाये॥
क्रतुकीक्रिया अयुत षटपूता। बालखिल्य तन तेज बहूता॥
ऊर्जासुत बशिष्ठ ते जाये। चित्रकेतु आदिक तपलाये॥
भई अथर्वमुनिकी चितिनारी। सुतदधीचि उपजे ब्रतधारी॥
भृगुतेख्याती च्यवनहिं जाये। धातविधात मृकंड उपाये॥
मार्कंडेय मृकंडते भयऊ। उशना गर्भ शुक्रतनु लयऊ॥
देवहूति कन्या सुत जाना। अब्रप्रसूति करकरब बखाना॥
दक्षते सोरह कन्या जाई। तेरह धर्मब्रह्म सुतपाई॥
श्रद्धा शुभ प्रसाद सुत मैत्री। अभयदया सुखशांति मुदैत्री॥
तुष्टिरुपुष्टि स्मय सुतजाये। क्रियायोगसुत पुलह सुहाये॥
उन्नतिदर्प बुद्धिके अर्था। स्मृति मेधा के तनय समर्था॥

क्षेम तितिक्षा हृदय कृपाला। मूर्त्तिवंश अब कहहु नृपाला॥
धर्म के नारायण नर भयऊ। बदरीबन तपकारण गयऊ॥
दक्षसुता स्वाहा जो नामा। सो पुनि भई अगिंनिकीबामा॥
पांवक पावमान हुतभोजन। तिनते भे उद्भान अगिनिसन॥
दक्ष कि सुता सुधा पितृ नारी। तिनते दिव्य पितर सबझारी॥
सती शम्भु कहँ दक्ष बिवाही। तिनके तनय भये कोइ नाही॥
विश्वासर्ज यज्ञ शिवआये। तहां दक्ष दुर्वचन सुनाये॥
नन्दी भृगुसन शापी शापू। तब कैलास गये शिवआपू॥
बहुत दिवस पीछे करिसामा। दक्षज गोमुर देखन कामा॥
कह प्रियवचन सती शिवपाहीं। देखहु नभ विमान बहुजाहीं॥
पतिन समेत पिता गृह मोरे। देखब यज्ञ संग प्रियतोरे॥
तहँ मौसी भगिनी पितु माता। मोहिं देखावहु शिवसुखदाता॥
त्रियके बचन बाणसम लागे। भूलिरहे जनु सो फिरिजागे॥
देखन योग्य न पिता तुम्हारा। जिन कीन्हो अपमानहमारा॥
जो मम वचन टारि तुम जाहू। होइ अपमान मृत्युकरलाहू॥
मुनि मनसती बहुत दुखकीन्हा। करि परणाम तहां चलिदीन्हा॥
कनखल जाइ निरादर पाई। छाड़ो तन शिवपदमनलाई॥
जबते सियकर रूप बनावा। शम्भुत्यागि हरिध्यानलगावा॥
तेहिते कछुक शोच मनपाई। हिमगिरिगृहजन्मी फिरिआई॥
बीरभद्र शिव तुरत पठाये। दक्षमारि मखभंग कराये॥
तब बिधि सकल देवलै संगा। अस्तुतिकरि निजकहिनप्रसंगा॥
जीवहि दक्षहोइ भृगुदारी। पूषादांत दस्र भुज चारी॥
यह सुनि शम्भु यज्ञ चलिआये। दै बर निजनिज धाम सिधाये॥
शिव अपमान दक्ष मुखछागा। द्विजअपमान तुमहिंतिमिलागा॥

सती दशा भृगुकी तुम जाना। कबहुँ न करै साधु अपमाना॥
तप प्रभाव कहि तुमहिं सुनावौं। ध्रुवचरित्र गुरुबल दरशावौं॥
नृपते तनय सुनीथा जाये। सुरुची उत्तम तनय कहाये॥
ध्रुवउत्तानपाद पहँ जाई। बैठि सिंहासन पितु शिरनाई॥
गहि भुज सुरुची दीन्ह उतारी। कह नहिं जन्मेउ कोखिहमारी॥
तपकरि मांगि देवबर पाई। जन्मह बहुरिकोखिमम आई॥
तब सिंहासन बैठन पावौ। नाहक मिथ्या मन दौरावौ॥
सुनि ध्रुवमातु सवति कटु बानी। गयेमातु पहँ अतिदुखमानी॥
सुनि सब कहो सुनीथा बैना। करुतप जाय राखि उरचैना॥
एक बात औरउ सुनु मोरी। गुरुबिनतातसिद्धिनहिं तोरी॥
मातु वचन सुनि ध्रुव हरषाना। ध्रुवमधुबनकहँ कीन्हपयाना॥
नारद आइगये ध्रुवपाहीं। पांच बर्ष तुम त्रिय वपुनाहीं॥
नारद बचन सुने निज काना। गिरेचरणअतिध्रुवबिलखाना॥
तब मुनि भुजगहि लीन्ह उठाई। यमुनाजल असनान कराई॥
तारक मन्त्र ताहि मुनि दीन्हों। पूजन तप बताइ चलिदीन्हों॥

स०। करि परसन यमुना जलको ध्रुवदै चौकाकुश काश बिछाये। तुलसी बिल्वकपित्थ मनोद्भव पूजन कै नैवेद्य लगाये॥
पहिले मास में नेम अचार औ मन्त्र जपो फल जूठनि खाये।
दूसरमास कियो तपघोर औ तीसरमास में ध्यान लगाये॥ १॥
चौथेमास समाधि करी पुनि पञ्चममासमें श्वास चढ़ाये। षष्ठम मासमें लोक बिहाल बिलोकिकै विष्णु तहां चलि आये॥ दै नृप बालक को बरदान बसौ ध्रुवलोककी राज्य बताये। छत्तिस बर्ष सहस्रकी राज्यकरौ क्षिति दै वैकुण्ठ सिधाये॥ २॥

छं०। तपकरि ध्रुवआये खबरि उत्तानपाद पायेहैं। आगे चलि

लाये सिंहासन बैठाये हैं॥ सौंपि राज्य दीन्हों बनजाइ तपकीन्हों। हरिनाम जपि लीन्हों हरिलोकको सिधाये हैं॥ तपको प्रतापभारी करिसृष्टि विधि सवाँरी हरिकीन्हीं रखवारी शिवसँहार पदपाये हैं॥ ३॥ ध्रुवके लघुभाई उत्तम खेली शिकारजाई यत्तनसन कीन्ही लराई जूझे खबरि ध्रुव पाई है। अलकापुर जाई बाण बर्षाझरि लाई कुबेर कीन्हे आई ध्रुवजीते विजय पाई है॥ राजामनु आये कुबेर को मिलाये ध्रुवपुत्र को बोलाये दीन्ही राज्य फिरी उत्कल की दुहाई है। वदरी वनआये ध्रुवहरिपद ध्यान लाये सुन्दर बिमान चढ़ाइ लाये ध्रुवलोक राज्य पाई है॥ ४॥

दो० ध्रुव चरित्र सुन्दर सुखद राम भजन कहिदीन्ह।
सुने सुनाये नर तरहि होहि रामपद लीन॥
राजा पृथु को चरितअब कहबसो मति अनुसार।
जाहि सुनेते नर तरहिं होइ न फिर संसार॥

चौ०। उत्तम पुत्र प्रभाव बखाने। जो सुरलोक बंशनिज आने॥
लटो पुत्र जाकेकुल जावै। बंश सहित सोइ नरक बसावै॥
राजा अंग अधम सुत जायो। तेहियहि लोक बहुतदुखपायो॥
दैत्य सुता बिवाहि घर आनी। तेहिके वेणु अधम अभिमानी॥
धर्म पुण्य मख करन न देई। द्विज हरिभक्त डाटि सोइलेई॥
मुनिन आइ बहुविधि समुझावा। नहिंमानत शिष शापसुनावा॥
दै मुनि शाप मारि तेहि डारा। राजभङ्ग लखि कीन्ह बिचारा॥
जंघा फारिनि भयो निषादा। वेणु पाप नहिं योग्य प्रसादा॥
मुनिन बहुरि दाहिन भुज फारा। तव हरि पृथु लीन्हों अवतारा॥
वामबाहु लच्मी अवतारा। अर्ची पृथुरानी तनुधारा॥
देव सकल भेटैं लै आये। राजचिह्न सब पृथुहि कराये॥

सिंहासन पृथुका बैठारे । करि अस्तुतिनिज धामसिधारे ॥

क० । वेणु अधर्म कियो जबते तबते धरणी ग्रसि अन्न संहारो ।
तनुक्षुतक्षाम प्रजा सब आइ के भोजन को नृप जाइ जोहारो ॥
तिनकी सबकी नृप देखि दशा चढ़ि स्यन्दन बाण पिनाक समा-
रो । लखि गोरूप भई पृथिवी जहँ भाजिलुकै तहँ भूप निहारो ॥
भय मानिके बात कही नृपसों शरणागत हौं दुहुदूधु हमारो १ ॥
पृथु कीन्ह तबै मनुको बछरा दुहि औषध बीज प्रजा प्रतिपाली ।
यहिभांति सुरादि तहां सब जाइ दुही पृथिवी निजबांछित शाली ॥
फिरि सतक्रतु करी नृपने हरि वासव अश्वहि कीन्ह कुचाली ।
करिपाखण्ड न पावहु पार दियो बरजाइ तबै वनमाली २ ॥ ज्ञान
दियो गुरु संतकुमार बसाये ग्रामप्रजा सुख दीन्हों । निज कुल
तारिके भूमि सुधारि विजय सुतलै निज आसन कीन्हों ॥ गये
वनको निज नारि समेत कियो तपको जिन वारि न पीन्हों ।
त्यागि के प्राण गये निजलोक कहो शुकदेव नृपै सुनिलीन्हों ॥

दो० पृथु चरित्र महिमा कहै सुनै जो नर अरु नारि ।
मुक्ति भुक्ति हरिभक्ति सुख सुलभ पदारथ चारि ॥

चौ० । अबप्रचीनबर्हिषगुणगावौं । ज्ञानमहातमतुमहिं सुनावौं ॥
बिन गुरु ज्ञान तरैनहिं कोई । चहु विरंचि शंकर सम होई ॥
ज्ञान प्रबल मायाभ्रम खोवै । आतम ज्ञान जीवको होवै ॥
यज्ञ बहुत बर्हिष मत कीन्हों । वसुधा तल बिछाइकुशदीन्हों ॥
तिनके दश सुत भये प्रचेता । पितु आयसु बनगे तप हेता ॥
मिले रुद्र अस्तुति तिन कीन्हा । गुरुकरि रुद्र गीतपढ़ि लीन्हा ॥
करें सिन्धुतट तप दश भाई । नारद कही नृपति सनआई ॥
कीन्ह यज्ञ दिग्विजय घनेरे । बलिपशु नृप मारे बहुतेरे ॥

तुमरी यमपुर बाट निहारैं। बदलो लेन कुठार सुधारैं॥
शुभ अरु अशुभ मिश्रतें भांती। कर्म सितासित लोहित जाती॥
लोहित कर्म कीन तुम भाई। सोफल यमपुर भुगतौ जाई॥
बर्हिष मत बोले करजोरी। ज्ञान देहु शरणागत तोरी॥
तब नारद हरिमन्त्र बतावा। ताको ज्ञान परोक्ष सुनावा॥
राजा एक पुरंजन नामा। अविज्ञात सख सँग निःकामा॥
बहुत काल बीते यहि भांती। हंसमित्र सब सुख दिनराती॥
एक समय दक्षिण दिशिजाई। नारिरूप लखि रहो लोभाई॥
अतिप्रिय सखा भूलि तेहिगयऊ। जाइ नारिसन पूंछत भयऊ॥
को तू मातु पिता को तोरा। केहिको पुरको सँग बरजोरा॥
सखी बहुत संग तिनहिं बखानू। नाम बताउ मोहिं सनमानू॥
प्रज्ञाहौ पितु नाम न जानौं। इनका सखा सखी करिमानौं॥
जानौं पूरि न किन बनवाई। ममपति होइ विहरौ पुरआई॥
जेहिपुर नव दरवाजे नाथा। करहु बिहार मोहिंलै साथा॥
चलौ प्रथम खद्योत देखावौं। अपनोरूप तुमहिं दरशावौं॥
चारि पदारथ हैं जग माहीं। सो गृहस्थकहँ दुर्लभ नाहीं॥
देव पितर ऋषि कर्म घनेरे। करिवा गृथि जोरी हम तेरे॥
असकहि पुर भीतर लै आई। अन्न सुरस संग जेंइ जेंवाई॥
नंलिनी द्वारगई लै नारी। सुमन सुरभियुत सेज सवारी॥
पूरब मुख बिहार रमि कीन्हा। दक्षिण उत्तरमुख पगु दीन्हा॥
नृत्य गीत रस कथा पुराना। सुने बहुत मन नारि लोभाना॥
दुर्मुदमुख दम्पति जब जावै। रतिकरि बहुत भांति सुखपावै॥
वैस समुख जब दोउ चलिजाई। करै विसर्ग रहै सुखपाई॥
भोजन शयन एक संग करई। नारि बिहाइ न कछु अनुसरई॥

करै पुरंजनि जब कछु गाना। करै गान सोइ मन हरषाना॥
सोवत नारि पुरंजन सोवै। रोवत ताहि दुखी होइ रोवै॥
हँसत हँसै देखत सोइ देखै। छुवत छुवै तेहि छांड़ि न लेखै॥
नारि अधीन पुरंजन भयऊ। यहिविधिकछुककालचलिगयऊ॥
एक बार नृप मृगया काजा। नारि विहाइ बनहिंगे राजा॥
तहँ रथ चढ़ि वराह मृग मारा। पंचप्रथ वन खेलि शिकारा॥
आये गृह अन्तःपुर हेरा। नारि बिना दुख कीन्ह घनेरा॥
सखिन देखाइ दीन्ह तेहि प्यारी। मलिन बसनयुत जाइ निहारी॥
तब नृप ताहि बहुत समुझावा। प्रिय वियोगबश बोध न आवा॥
कह नृप सुनौ पुरंजनि बानी। करि शृंगार बिहरहु संग आनी॥
तुम बिन बन शिकार करिआवा। ताते विरह दुःख तुम पावा॥
यहिविधि पदगहि बहुत मनावा। करि शृंगार नृपहृदय लगावा॥
तब गंधर्व साठिशत तीनी। औरइ नारि सितासित लीनी॥
द्वारपाल पन्नग फण पांचा। पुरघेरिनि तिनसन रण रांचा॥
एक दिशि लड़ैं सातसै बीसा। एकदिशि एकसरलरइफणीसा॥
काल कल्पका तहँ चलिआई। दुर्जय यवन सेन सँग लाई॥
पुर प्रवेशकरि शिखर गिरावै। तब भय कछुक पुरंजन पावै॥
तब प्रज्वार कन्यका भाई। फूंकि दीन्ह तेहिपुरी सोहाई॥
तस भुजंग मयूर सँदेशा। भाग पुरंजन बहुत अँदेशा॥
बहुत पुत्र कन्या बहुतेरी। कवन भांति रहिहैं त्रियमेरी॥
जेहिविधि शोचपुरंजन कीन्हा। जवने स्वरन बांधि तेहि लीन्हा॥
अविज्ञात मित्रहि नृप भूला। ताते सहे बहुत तेहि शूला॥
यमके लोक जाइ दुख पावा। नरकजायकरि फिरि जगआवा॥
कबहुंक नारि कबहुं नर होवै। कबहुँक जगै कबहुं जग सोवै॥

सो नृप वैदर्भी तनु पावा। मलयध्वज बिवाहि तेहिलावा॥
बहुत पुत्र कन्या तेहि जाये। पुनि मलयध्वजबनाहिंसिधाये॥
सँग विदर्भ तनया तप कीन्हो। करिहरि ध्यान छांड़ितनु दीन्हो॥
बिलपत वैदर्भी बहु भांती। कहिकहिनिजपतिगुणगणपांती॥
चितारेंपि चढ़िअगिनि लगाई। तब तहँ हंस सखा चलिजाई॥
हंस कही तुमहूहौ हंसा। हंस ज्ञान कहि ताहि प्रसंसा॥
तब दोउ हंस गये निजलोका। भजौ हंसपद तजि भ्रम शोका॥
यज्ञते देवलोक तुम जावौ। करिसुखभोग बहुरिफिरिआवौ॥
ताते भजन करौ दिन राती। जानेहु हंस ज्ञान सब भांती॥
बर्हिष मत पुनि कह करजोरी। नाथ न जानौं मम मति भोरी॥
सुनु नृप जीव पुरंजन राजा। नारि बुद्धिवपुनव दरवाजा॥
पंच प्राण अहिमुख श्रुतिनासा। गुदा लिंग दृग विषय प्रकासा॥
अहंकार मन बुधि चित धामा। तहां पुरंजनकर विश्रामा॥
जीव विषय रत जहँ तहँ धावै। विषयी बुद्धि ताहि भरमावै॥
जराकाल कन्या दिनु राती। है गंधर्व जवन गदजाती॥
हंस ब्रह्म अरु जीव कहावै। जानै हंस जीव गति पावै॥
जिमि एक मृगा चरै बनमाहीं। लागति प्रियखडंभ्रिधुनिताहीं॥
पाछे बधिक व्याघ्र तेहि आगे। मृगचेष्टित तोहि जग ठग लागे॥
हंस ज्ञान वर्हिषमत पावा। मुनिपदगहि नृप बनहिंसिधावा॥
नृपके सुतन तपस्या कीन्हा। रुद्रगीत जपि हरिपद लीन्हा॥
देखा राज्य उजरि बन भयऊ। अगिनि वायुमुख प्रकटतभयऊ॥
ब्रह्मा जरत वृक्ष जब जाने। दैवाक्षी नृप सुत सनमाने॥
दसौ प्रचेता वाक्षी पाई। भये दक्षसुत प्रजा बोलाई॥
सौंपि राज्य बनका पगुधारे। दक्ष राज्य सब प्रजा सुखारे॥

हंस ज्ञान देवर्षि सुनावा। तत्रते हंस लोक तिन पावा॥
सो मैत्रेय बिदुरसन गाई। सो प्रसंग नृप दीन्ह सुनाई॥
यह सुनि बिदुर गये निजधामा। मन प्रसन्न सब पूरण कामा॥
कुं०। हंस ज्ञान जे नर सुनैं हंस लोक ते जाइँ।
शोक मोह कृत दोष सब पाप पहार बिलाइँ॥
पाप पहार बिलाइ ज्ञान उत्तम यहु राजा।
परमहंस अब कहब सुनौ तुम सहित समाजा॥
राम भजन धरिध्यान कथा भगवत मतगावा।
निजमतिके अनुसार यथा गुरुमुख सुनिपावा॥

इति श्रीराधाबिषादमोचनावल्यांरामभजनत्रिवेदीबिरचितायांचतुर्थकथा प्रसंगोनामद्विचत्वारिंशोऽध्यायः॥ ४२॥

श्लोक। षड्विंशत्याधुनाध्यायैपञ्चमस्थानमीजते॥
लोकद्वीपादिमर्यादांपालनाख्यमनेकधा॥ ५॥
दो०। उत्तानपादके बंशकी कथा कही शुकदेव॥
अब पंचम मे कहतिहौं प्रियावर्त कुलभेव॥ १॥
चौ० परमहंस यहु ज्ञान बखानौ। सोहं महा वाक्य तुम जानौ॥
सोहमस्मि पद तीनि बिचारौ। ईश्वर जीव ब्रह्म निरधारौ॥
तब तुम परमहंस पद पावौ। पार जाइ एहि पार न आवौ॥
नारद ब्रह्मावर्त्त सिधाये। परमहंस मत नृपहि सुनाये॥
प्रियावर्त्त मन ज्ञान बिरागा। उपजो परमहंस अनुरागा॥
राज्य त्यागि बनका चलिदीन्हो। बदरीबन आसननिज कीन्हो॥
राजा मनु ब्रह्मा पहँ जाई। बिधि समेत बदरी बनआई॥
कह बिधि सुनु सुत बचन हमारो। उभय भाँति हित होइ तुम्हारो॥
सोम सूर्य मै शिव क्षितिधारी। लोक पाल हरि आज्ञाकारी॥

जैसे वृषभ नासिका बाँधे । बहैं ईश हित धुर धरिकाँधे ॥
ताते राज्य करौ तुमजाई । जीतहु अरि दृढ़ किलाबनाई ॥
काम क्रोध मद मोह प्रलोभा । बनहुम आइ करै मुनि छोभा ॥
शिव नारद परचोट चलाई । अपरअधिक तिनते कोउनाई ॥
जाके संग शत्रुवन आवै । ज्ञान योग वैराग्य भजावै ॥
गृह में बैठि यत्न सोइ कीजे । करि हरिकाज जीतिअरिलीजै ॥
मुनि प्रियवर्त्त मानि विधिबानी । बनतजिराजकीन्हनिजआनी ॥
माहिष्मती तासु भै रानी । तेहि सुत भये सात गुणखानी ॥
रविसम रथ राजा बनवावा । सातबार निशि तिमिर नसावा ॥
यहुजनिकरौ हटकि विधिगयऊ । रथ पथ सात सिंधु तब भयऊ ॥
सात द्वीप सिंधुन बिच कीन्हे । पुत्रन राज बाँटि नृप दीन्हे ॥
परमहंस पद नृपति सिधाये । तासु चरित हम बरणि सुनाये ॥

स० । जांबूद्वीप कि राज्य प्रियव्रत दै अग्नीधहि कानन आये । नारद ज्ञान दियो सुतको तजिकै निज राज्य तपहि मनलाये ॥ सो विधि जानि अनंग बसंतहि मारुत त्रिय गन्धर्व बोलाये । अग्नीध्रक राज्य करावन के हित छोभ करौ नृप पास पठाये १ फूलिरहो बनबाग लता नव पल्लव शीतल मन्द बयारी । कूजत कोकिल हंस मधुव्रत गुंजत नाचत मोर सनारी ॥ किन्नर किन्नरी गान कि तान बजै मिरदंगसरंग सितारी । नाचत पूर्वचिती मुखपै लटकै लटकोर कटाक्ष निहारी । राग रँगीले रसीले भली कटिहार हलै तन स्तनभारी २ कह शुकदेव सुनौ नृपकाम जबै धनुशायक लै चलिआवै । बिधि नारद शंकर साथिन के मुनि योगिन के मन छोभ बढ़ावै ॥ पारमहंस प्रशंसत संतन नामके ओटते चोट बचावै । चित्तधरै हरिकेगुण कीर्तन कामतजैहरि ध्यान लगावै ३॥

सो०।लीन्ह शरासन बाण काम क्रोध करि नृपति पर।
लाग मांझ उर आनि तप बिहाइ उठि ठाढ़नृप॥
का तुम चहति काहि वनमाहीं। मोपर कृपा करौ मुनिनाहीं॥
मैं नृप करन तपस्या आवा। तोहिंदेखि अतिशय सुखपावा॥
असकहि पूर्वचिती गृहलाये। तासु संग बहुकाल गवांये॥
भे सुत नाभि विप्रपद सेवी। रानी पतिव्रता मेरू देवी॥
विप्र बोलाइ सौंपि सुतदीन्हा। पारमहंस मन्त्र नृप लीन्हा॥
कह नारद बिचरौ निःशोका। पूर्वचिती आई विधिलोका॥
तबलग जीवन सुफल कहावै। जबलग काम क्रोध नहिंआवै॥
ब्रह्मण्यता करै नृप जोई। ताकहँ बिपति कबहुँ नहिंहोई॥
जो नृपकरै विप्र प्रतिपाला। ताहिसुलभसुख तीनिहुकाला॥
कीन्हेहु बिप्र दोष नृपनाहू। क्षीण आयु अपमृत्युको लाहू॥
राजा नाभि विप्र पद सेये। तिनहिंजेमाइ आपुफिरि जेये॥
नूतन असन बसन मँगवावै। पहिरै प्रथम विप्र पहिरावै॥
बिन आज्ञा कछु करै न काजा। द्विजभे सुखी माँगु वरराजा॥
रानी नृप हरि तनय बखाना। करि संमत विप्रन मखठाना॥
यज्ञम प्रकट भये प्रभुआई। अस्तुति करि पूजे नृपजाई॥
कह प्रभु सुनु नृप नाम हमारो। तुमहि देवसिख बचन उचारो॥
ताते ऋषभ देव गृहतोरे। लेहौं जन्म बचन फुर मोरे॥
ऋषिनके बचन सत्यमैंकरिहौं। रानी गर्भ आइ अवतरिहौं॥
पारम हंस धर्मके काजा। नाभि भवन जन्मे हरि राजा॥
कीन्ह नाभि हरि जन्म उछाहू। विप्र चरण पूजन सुखलाहू॥
नृप नारदकर ले उपदेशा। ब्रह्म लीन भे दै सुतदेशा॥
मुनि अजनाभ खंडजे भाखा। जो जस करै सो तसफलचाखा॥

कर्म प्रधान कीन्ह जेहिमाही। पुण्य क्षेत्र प्रभुऋषभसराही॥
शत सुत ऋषभदेव नृप जाये। इक्यासीभे विप्र सोहाये॥
नवभे परम हंस मुनि ज्ञानी। सनकादिक समवृत्ति बखानी॥
नवकाऋषभ देश कहि दीन्हे। भरत राजु अजनाभम कीन्हे॥
प्रजा पुत्र पुनि भूप हँकारी। शत मखऋषभ कीन्हसहनारी॥
राजनीति पुत्रन सिखराई। सहसत ब्रह्म रूप दरशाई॥
पारम हंस रूप प्रभु कीन्हा। जडवतमौनवनहि चलिदीन्हा॥
जिनके मलमलयाचल जानू। दश योजन सौगंध प्रमानू॥
एक दिवस बैठेकरि ध्याना। तनदावानल जरति न जाना॥
पारमहंस धर्म दिखराई। गे निजलोक लोकसुखदाई॥
जो नर ऋषभदेव यशगावै। सुनैजो फिरिजेहि बागनआवै॥
सुनौ भरतके चरित सोहाये। जिन जड़ परमहंस तनुपाये॥
प्रथम राज पुत्रन कहँदीन्हा। पुलहाश्रम दारुणतप कीन्हा॥
एक दिवस कृतमाल नहाई। जाप करन लागे तहँआई॥
मृगी गर्भिणी तृषित बिशेषी। पियनलागि जल सरितापेपी॥
सिंह शब्द सुनि सभयफलांकी। गिरोगर्भ बिगलित भगताकी॥
हरणी बिकल देखि मृगसावा। लीन्हउठाइ न बूड़न पावा॥
मृग शिशुनृपआश्रम लैआये। तेहि सेवत नृप तपबिसराये॥
पूजन भजन ध्यान जपनेमा। मोह बिवशगत हरि पदप्रेमा॥
हंसज्ञान गुरुसन नहिं पावा। ताते नृपहि बिराग न आवा॥
मोह बिराग बिना नहिंजाई। करहु परीक्षित कोटि उपाई॥
स्त्रीसुत धन नृपपद मोहू। त्यागहु तुरत भागवत होहू॥
वर्हिप मतको सुनेहु प्रसंगा। हंसज्ञान सुनिमय निहसंगा॥
अबमैं परमहंस गुणगावौं। भरतचरित कहि तुमहिंसुनावौं॥

मृग सेवन कीन्हो कछुकाला। बनमृग गत नृपबिरहबिहाला॥
मृगकर शोचकरत दिनराती। काल कर्मगति आनि सेराती॥
छांड़िशरीर भयो मृगजाई। पूरुब जन्म योग सुधिआई॥
संग बिहाय सूख तृणखाई। हरि प्रेरित नारद तहँजाई॥
हंसज्ञान तेहि दीन कृपाला। मृगशरीर छूटो ततकाला॥
भरतजन्म पुनि द्विजगृहपावा। वेदशास्त्र तेहि पितहिपढ़ावा॥
पारमहंस धर्म जड़ लीन्हा। जेहिविधि ऋषभदेव प्रभुकीन्हा॥
परअधीन भोजन जलपावै। सुनै न बोलै नगर न आवै॥
शूद्रहि पुरुषमेध एक माना। दूतन जड़भरतहि गहिआना॥
पूजिशूद्रजब खड्ग निकारी। चंडिहि क्रोधभयो तबभारी॥
लैकृपाण तिनके शिरछीन्हे। साधु अवज्ञा के फल दीन्हे॥
एकदिन तहां रघूगण राजा। निकरो गुरुदीक्षा के काजा॥
थके पालकी तासु कहारा। गहि जड़भरत ढोवाइनिभारा॥
शिविकाहलत नृपति जबजाना। कहदुर्वचन सबन भयमाना॥
नाथ एक बोठार मँगावा। प्लुतगतिचलितेहियानहलावा॥
कहत रघूगण रे बोठारा। वचन अमिथ्याकीन्ह हमारा॥
तुम थकिगये बहुत चलिआये। दुर्बल बहुत भार मदखाये॥
सपदि चिकित्सा करब तुमारी। बहुरि यान जो हलिहिहमारी॥
असकहि नृपति रहे अरगाई। बोलो द्विजवरतब हरषाई॥
को नृप भारवहै जगकोरे। ईशअनीश नहीं कोउ मोरे॥
कृश थूलता तत्त्व कृतभाई। सो जड़जानु कर्मकृत पाई॥
सो चैतन्य विना केहि काजा। नाहक दंड देहु तेहि राजा॥
यहसुनि नृपतिचरण लपटाना। त्राहित्राहि मोहिंकृपानिधाना॥
इन्द्रवज्र हरशूलहि नाथा। नहिं भयमोहिं कहौं धरिमाथा॥

द्विजअपमान बहुत भय मोरे। ताते विनयकरौं कर जोरे॥
तुमरे वचन सकल भ्रम मोरो। गतउपदेश लेब हम तोरो॥
सुनि नृपवचन सिद्ध हरषाना। हंसज्ञान दै मन्त्र बखाना॥
परमहंस आश्रम नृप लीन्हो। करिपरणामवनहिं चलिदीन्हो॥
आश्रम परमहंस कठिनाई। करिबहुकाल सिद्धि तेहिपाई॥
ताते भक्ति सुलभ नृप जानौ। सुनिहरिकथा कृष्णउर आनौ॥
अब स्थूल रूप हरिकेरा। सुनु जामे जग बसति घनेरा॥
जो विराट पूरबके रोमा। अण्ड अनेक कोटि रविसोमा॥
ब्रह्मा विष्णु रुद्र तिनमाहीं। कोटिनबसैं न वरणि सेराहीं॥
कहब एक ब्रह्माण्ड प्रमाना। योजन कोटि प्रमाणबखाना॥
तेहिमा अर्द्ध प्रलय जल होवै। शेष शयन नारायण सोवै॥
अण्ड मध्य पृथ्वी नव द्वीपा। सात पयोधिविविध रसजीपा॥
तिनमा सरित शैलकरिसीमा। राज प्रियव्रत तनय महीमा॥
पृथ्वी बीच सुमेरु बिराजै। तापर ब्रह्मलोक शुभ राजै॥
ऊपर शशिमण्डल विस्तारा। तेहिपर अष्टविंश मिततारा॥
तदुपरि सप्तऋषीश्वर राजैं। जनतप सत्यलोक सब भ्राजैं॥
तदुपरि विष्णुलोक बैकुण्ठा। आवागमनगतिरहितअकुण्ठा॥
दहिने रुद्रलोक शिव वासू। बायें विधिपुर अधिकसुपासू॥
सर्वोपरि गोलोक विराजै। तामें ब्रह्म शक्तियुत भ्राजै॥
सो गोलोक विराट के पारा। राजन तहँ प्रभु बसत हमारा॥
जाके परे लोक नहिं आना। तासुध्यान नृपकरु अनुमाना॥

क०। ब्रह्मकोषोड़शअंशविराटकलापुनि षोड़शअंशकि जानो।
विष्णु विरञ्चि महेश भये तिनके कलहंस ते देवन मानो॥
शक्तिसमूह भई प्रभु अंश ते देवनकी देविन पहिंचानो। यह अ-

र्द्धाङ्ग अजा हरिकी यह मायाब्रह्म सदा अनुमानो ॥ १ ॥ कोटि नभानु समान प्रकाश सो तेजमयी गोलोकबखानो। चमकत चन्द्रकि चन्द्रिकया चपला जनु काननपत्र समानो ॥ योजनलक्ष सहस्रप्रमाण विशाल सो दीरघ विस्तर जानो। जांबूनद हाटक ईटन को चपको मणिकूटन मोतिन सानो ॥२॥ तटमें शुभकानन राजत है पक्षी कल कूजित नाचतमोरा। बिरजा परिखा इव शोभितहै गोलोकके बाहरही चहुँओरा ॥ हंसकरंडव चात्रिक कोकिल सारिक पारवता शुकशोरा। भृंगतरंग उठै जल उज्ज्वल नीर गंभीर प्रवाहके जोरा ॥ ३ ॥

दो०। पृथ्वीतल अरु अतल पुनि सुतल वितल नृपजानु।
बहुरि तलातल वितल पुनि पाताल रसातलमानु ॥

चौ०। तलमें बसैं दैत्य बलभारी। अतल निपुणतामय विस्तारी ॥
सुतलबास राजा बलि कीन्हो। बामन दरश जाइ पुनिदीन्हो ॥
बितल हाटकेश्वर अस्थाना। सहितशक्ति जहँ कृपानिधाना ॥
आठउ कुरी तलातल बासा। तहँ मणिकृत नितहोत प्रकासा ॥
राज्य बासुकी करत पताला। कोटिनमणिमयफणिकबिशाला ॥
शेश रसातल में नृपराजै। पृथ्वी एक शीशपर भ्राजै ॥
आठौ लोकपालके धामा। कहब सुनौ तिनके नृपनामा ॥
इन्द्र अगिनि यमनिऋतिकहावैं। बरुण पवन कुबेर शिव जावैं ॥
पालहिं इन्द्र अगिनिहवि लेहीं। पापिन योग्य दण्ड यम देहीं ॥
कह नृप मुनि कहु नरक बखानी। पावहिं दण्ड पापकृत प्रानी ॥
सुनु नृप नरक यातना भानौ। आठ बीस दारुण तुम जानौ ॥
शुक्लकृष्ण लोहित जग कर्मा। यथायोग्य दुख सुख लखिधर्मा ॥
जो जस करै सो तस फलपावै। उत्तम अधमलोक नरजावै ॥

बत्तिस लक्षण नरक न पावै । श्रुति स्मृतिपुराण अस गावै ॥
सुकृत सुशील सत्य उपकारा । शुचि आतमाभ्यास सुविचारा ॥
शास्त्रज्ञान परमपद ज्ञाना । परत्रिय त्याग त्याग अभिमाना ॥
लोककर्म अरु दान सुविद्या । तुष्टि पुष्टि प्रियबाक न निंद्या ॥
गुरुकी भक्ति भक्ति पितुकेरी । स्वल्प काम शुभगुण मतिघेरी ॥
मातुभक्ति जितअंग सुरूपा । औरौ कहौं शास्त्र अनुरूपा ॥
पूजक निद्रा आलस जेता । अल्प अहारी भक्तिसमेता ॥
अब नृप सुनौ यातना योगू । परत्रिय बंचिकरैं जे भोगू ॥
परधन पुत्र छलैं नर नारी । यमगण नरक देहिं तेहि डारी ॥
जो तामिश्र महा दुखकारी । तप्त भूमि जहँ अन्न न बारी ॥
जो छलकरि परद्रव्य चोरावै । जेहिते जीव बहुत दुखपावै ॥
तेहि रौरव डारैं यमदूता । कृमिक्षत तन दुख होत बहूता ॥
इहा जीव मारे जे जाई । बदलो लेहिं नरक महँ पाई ॥
मारैं जीव मांस जे खाहीं । कुम्भीपाक नरक ते जाहीं ॥
तप्ततैल कड़ाह अति घोरा । डारहिं दूत तिनहिं बरजोरा ॥
जे नर मात पिता गुरु घाती । कालसूत्र नरकहिते जाती ॥
सूर्य अग्नि तप तापि कठोरा । तप्त भूमि रोवत करि शोरा ॥
वेद धर्म तजि रत पाखण्डा । वन असिपत्र सहैं नर दण्डा ॥
बिन अपराध दण्ड नृप देहीं । लोभते प्रजा डांड़ि जे लेहीं ॥
जो नृपकरै विप्र अपमाना । सूकरमुख दुख पावत नाना ॥
परजीविका हरै नर कोई । अंधकूप पावै दुख सोई ॥
पंच यज्ञ तजिजे नर खाहीं । ते पापी कृमि भोजन जाहीं ॥
जे नर विप्र द्रव्य हरिलेहीं । तिनका अग्निकुण्ड यमदेहीं ॥
जे अगम्य गमनै नर नारी । तप्त लोह लिपटैं दुखकारी ॥

सर्वागमन करै नर जोई। बज्र कंटतरु भेंटइ सोई॥
जो नृप प्रजहि अधर्म करावै। प्रजासहित बैतरणी पावै॥
बिप्र क्षत्र विट शूद्री भोगू। रेत कूप दुख पावै लोगू॥
लूटहिं ग्राम फूंकि गृह देहीं। ते नर श्वान कुण्डहिठेलेहीं॥
जे छलकरि विष देहिं खवाई। गरलकुण्ड यम डारहिं जाई॥
साखी समय झूंठ कहि देहीं। बीची शीश फोरि दुखलेहीं॥
मदिरा तीनि बरण जे खावैं। त्वचिकुंचा बैसस ते जावैं॥
बर्णाशर्म धर्म तजि देहीं। कर्दम क्षार नरक नरलेहीं॥
मख पाखण्डी आमिष खाहीं। राक्षसगण लै तिनहिं चबाहीं॥
ये विश्वासघात नर करहीं। ते दारुण सूचीमुख परहीं॥
जे सर्पादि कीट नर मारहिं। तिनका दण्डशूक मुख डारहिं॥
जो भकसी डारै नर कोई। धूमकुण्ड पावै दुख सोई॥
जेहिके अभ्यागत दुख पावैं। गिद्धकुण्ड तेहि आंखि फोरावैं॥
दै द्विजदान फेरि जे लेहीं। बायक तासु अंग सीदेहीं॥
कर्म कर्मपर नरक कहावै। नर यमलोक यातना पावै॥
पंचम कथा कही नृप भाखी। पितुमुख यथा प्रथम मुनिराखी॥
यहु स्थूलरूप हरिकेरा। स्थावर जंगम यत्र घनेरा॥

कुं०। श्रीभागवत सुनै नर पावै पद निर्वान।
तातै जगमें आइके सुनियै कथा सुजान॥
सुनियै कथा सुजान व्यासमुनि सुखद बताई।
सब पुराणकर सार मोक्षप्रद पाप नशाई॥
रामभजन कवि कहै ज्ञान वैराग्य दृढ़ावै।
भक्ति विष्णुपद होइ सदा सुख संपति पावै॥

इति रामभजनत्रिवेदीविरचितायांपंचमस्कन्धेत्रिचत्वारिंशत्तमोऽध्यायः ४३॥

श्लोक। अध्यायैकोनविंशत्यापष्ठेपोषणमुच्यते॥
अतिलङ्घितमर्यादांभक्तरक्षणलक्षणाम्॥ १॥
दो०। राधा माधव ध्यानधरि गणपति गौरि मनाय।
रामभजन बरणनकियो श्रीगुरु आशिष पाय॥
चौ०। षष्ठ स्कन्ध सुनौ मनलाई। जो सुनि नरक भीति मिटिजाई॥
स्वल्पौ अंग्नि काष्ठचय जारै। धर्म स्वल्प तिमि पाप संहारै॥
सतयुग ध्यान योग बलवाना। त्रेतायुग मख प्रबल बखाना॥
द्वापर परिचर्या हरिकेरी। नामते कलियुग पुण्य घनेरी॥
नाम प्रभाव सकल जगमाहीं। सुमिरत सदा न यमपुर जाहीं॥
कहब एक पुनीत इतिहासा। सुनहु परीक्षित परम हुलासा॥
कान्यकुब्ज अजामिल नामा। विद्या विनयशील गुणधामा॥
तासु पिता तेहि वेद पढ़ावा। नेम धर्म आचार सिखावा॥
उत्तम कुल विवाह तेहि कीन्हो। मन्दिर शुभबनाइ सुखदीन्हो॥
रूपवती पतिव्रतं सयानी। गृहकारज प्रवीण गुणखानी॥
एकदिना पितुआयसु पाई। समिध कुसुम बन तोरन जाई॥
शूद्री शूद्र नगन वन माहीं। मदब्याकुल दोउभोगकराहीं॥
कुच श्रोणी रति मन्दिर देखा। कामबाण उरलाग विशेखा॥
व्याकुल विप्र तहां चलिआवा। मोहवश्यहोइ वचन सुनावा॥
को तुम पुरुष कवन तुम नारी। मोहविवश मतिकीन्हहमारी॥
कह त्रिय मैं वेश्या धन काजा। नवनवनर बिहरौं नहिंलाजा॥
कुच कठोर कटिसूक्षम मोरी। निरखिमोहिंमतिखण्डिततोरी॥
धन दै विप्र भोग करिलेहू। देखि तोहिं मोहिं उठतसनेहू॥
यह सुनि द्विज उर लीन लगाई। राखी निजमन्दिरविच जाई॥
तासु उदर नव बालक जामा। छोटपुत्र नारायण नामा॥

लय लय हरिको नाम खेलावै। नित्यकीन द्विज पाप नशावै ॥
यहिविधिबहुतकाल चलिगयऊ। ब्राह्मणकालवश्य जब भयऊ ॥
यमके गण कर पाश कुठारा। देखिसभय द्विजकीन्ह पुकारा ॥
हे नारायण इत चलि आवो। यमदूतन ते मोहिं छुड़ावो ॥
तबलग फांस बांधि तेहि लीन्हा। काढ़िप्राणयमगणचलिदीन्हा ॥
हरिके दूत तुरत चलिआये। फांसकाटि द्विजअधमछुड़ाये ॥
कह यमदूत सुनो हरिपायक। यहु द्विजरहै नरकके लायक ॥
धर्म विहीन अधम त्रिय भोगी। मातु पिता कुलसाधु वियोगी ॥
यहु बैकुण्ठयोग नहिं नाथा। कवनपुण्य यहिकरतसनाथा ॥
कहत सुनन्दन यहि अघ नाहीं। हरिकर नाम कहत मुखमाहीं ॥
धोखेहु नारायण मुख भाखै। सो निजपाप नेक नहिंराखै ॥
अस कहि लीन विमान चढ़ाई। विष्णुलोक तेहिदीन्ह बसाई ॥
नाम प्रभाव कहो हम राजा। सुनौ तपस्या बल सुखसाजा ॥
बरहिषमत दश सुतउपजाये। शिवते विष्णुमन्त्र तिनपाये ॥
कीन्ह तपस्या ते दश भाई। आये भवन विष्णुवर पाई ॥
दशौ ते दक्षपुत्र यक जाये। करि तप ते वैकुण्ठ सिधाये ॥
हंस गुह्य अस्तव हरिकेरा। दक्षजाप तप कीन घनेरा ॥
दक्षहि विष्णु प्रजापति कीन्हा। तेहि बहुभांति सृष्टिरचिदीन्हा ॥
कन्या साठि बहुरि तेहि जाई। तेहिमा तेरह कश्यप पाई ॥
सोरह धर्म ब्रह्मसुत प्यारी। सत्ताइस उडुपति की नारी ॥
एक अग्नि यक पितरन नारी। ऋषिनएक यकत्रिय त्रिपुरारी ॥
कश्यप ते अदिती सुत जाये। दिति के दैत्य बलिष्ठ कहाये ॥
दनु के दनुज महाबलवाना। तिमि केजलचर सरभारवाना ॥
सुरभी पशू फटेखुर जाये। ताम्रा गीधादिक उपजाये ॥

मुनि की सुता अप्सरा जाई। सर्प्पन क्रोधवशा उपजाई॥
इलाके पुत्र वृक्ष जग माहीं। यातुधान जनमे सुरसाही॥
भये अरिष्टा सुत गन्धर्वा। काष्ठातनय गोलखुर सर्वा॥
कश्यपबंश कहौं समुझाई। धरम ते नरनारायण भाई॥
मूरति तनय जगत सुखदाई। भानुते ऋषि लम्बा जलदाई॥
ककुभा संकट भुव दुर्गानी। स्वर्गायाम्या सुत गुणखानी॥
विश्वेदेवा विश्वा जाये। साध्या साध्यो गण उपजाये॥
मरुती के सुत भये जयन्ता। जो खगजन्मलीन्ह भगवन्ता॥
भये मुहूर्ता तनय मुहूर्ता। संकल्पा संकल्प प्रसूता॥
वसुके आठौ वसु अवतारा। चन्द्रके कृतिका तनय कुमारा॥
गुरु अपमान करै नृप कोई। तेहिका विपतिभांति बहुहोई॥
एकसमय बासवगुरु आये। इन्द्रसभा आदर नहिं पाये॥
अन्तर्द्धान भये तेहि काला। देखि इन्द्र अतिभये बेहाला॥
यहसुनि शुक्र दैत्य लै धाये। आइ युद्ध करिदेव भजाये॥
ब्रह्मलोक पहुँचे सुर जाई। त्राहित्राहि कहिगिरा सुनाई॥
कहविधि तुमकरि गुरुअपमाना। चहतदेवपति निजकल्याना॥
सुनु सुरेश चहु हरिहर माषै। गुरु करि कृपा ताहि हठिराषै॥
तबलग विश्वरूप पहँ जाई। कारज सिद्धकरौ गुरु पाई॥
सुनिविधिवचन तहां चलिआये। पदगहि निजवृत्तान्त सुनाये॥
वृत्ति पुरोहित निंदित भाई। तदपि बिपतिलखि करबसहाई॥
तब नारायण वर्म पठाई। नेम धर्म विधि दीन्ह बताई॥
तेहिते इन्द्र जाइ रिपु जीते। पाइनि राज सकल दुख बीते॥
यज्ञ करन लागे सुरराजा। विश्वरूप कीन्हो मखकाजा॥
तिनको दैत्य पक्ष ननिहारा। भागमातृमत तिनहि सँभारा॥

सुरपति जानि वज्र कर लीन्हो। रिसकरि विश्वरूप शिरछीनो॥
हत्या नारि वारि तरु भूमी। बांटि बहुरि मखपूरन झूमी॥
त्वष्टा कोप कीन्ह सुत हेता। कीन्ह यज्ञ अभिचार परेता॥
तेहिते प्रकट महाभट भारी। रणदुर्मदवृत नाम सुरारी॥
गरजत प्रलय मेघकी नाईं। तीनिलोक जेहि देखि डेराईं॥
देवन सहित इन्द्र रण कीन्हे। गहिगाहिचरणपटकिमहिदीन्हे॥
छोड़ि इन्द्रपुर खोह लुकाने। सुमिरे हरि सुर बहुत डराने॥
तहँ ततकाल विष्णु चलिआये। ऋषि दधीचि पहँ तुरत पठाये॥
मांगहु अस्थि वज्र बनवाई। जीतहु वृत्रासुर तुम जाई॥
सबसुर मिलि दधीचि पहँ आये। पदगहि सुरपति दशा सुनाई॥
कह मुनि सब तीरथ अन्हवावो। अस्थि सुरेश तबै तुम पावो॥
यह सुनि देव सकल दिशिधाये। तुरतै सब तीरथ लै आये॥
करि स्नान छांड़ि तनु दीन्हो। विशुकरमा बनाइ पविलीन्हो॥
तब सुरपति सब सुर लै सङ्गा। साजिसुभट गजवाजितुरङ्गा॥
वृत्रासुर सब दैत्य हँकारे। लै संग सन्मुख जाइ प्रचारे॥
लरत सुरासुर युद्ध गँभीरा। बरषत अस्त्र शस्त्र रणधीरा॥
विष्णु प्रताप तेज मुनि केरे। भाजे दैत्य फिरत नाहिं फेरे॥
तब वृत्रासुर गदा प्रहारी। सुरपति भुजा काटि महिडारी॥
बाम बाहु गहि परिघ प्रहारो। सुरपति गज समेत महिडारो॥
वृत्रासुर बहु विधि समुझायो। ज्ञान धर्म हरि भजन सुनायो॥
तब सुरेश पुनि गज चढ़ि बीरा। लरनलाग दोउ अति रणधीरा॥
दैत्य बाम कर परिघ उठाई। भुज समेत हरि काटि गिराई॥
तब वृत्रासुर बदन पसारो। सगज सुरेश उदर लैडारो॥
नारायण की कवच प्रतापा। सुरपति दुख न कछू तन व्यापा॥

तासु कोखि फारी सुरनाथा । निकसे भे सब देव सनाथा ॥
लैकर बज्र तासु शिर छीना । कीन्ह सबै प्रभु दुःख बिहीना ॥
वर्षहिं सुमन सकल सुरनारी । जयजय करतसकलमुनिभारी ॥
बाजहिं गगन शंख घरियारा । नचैं अप्सरा करि शृङ्गारा ॥
तेहि अवसर हत्या तहँ आई । सरी मीन सम बहुत बसाई ॥
भाजिचले सुरपति सोइ धाई । मानसकमल लुके सुरराई ॥
तबलग नहुष इन्द्रपद लीन्हा । बैठि सिंहासन शासन कीन्हा ॥
इन्द्रायणिहि भोग के हेता । चाहतनहुष कामवश चेता ॥
शची बृहस्पति सुमिरनकीन्हा । करिगुरुवार बर्त चितदीन्हा ॥
संकट देखि बृहस्पति आये । कहिप्रियवचनशचिहिसमुझाये॥
यतन नहुष हित दीन बताई । शची खबरि तेहिदीन पठाई ॥
ऋषि पालकी बैठि नृप आवै । तब ममसंग भोग सुख पावै ॥
यह सुनि नहुष सप्तऋषि बोला । दुर्वासा सह मचहु खटोला ॥
चढ़िशिबिकासबमुनिमचिआये । सर्प्प सर्प्प नृप वचन सुनाये ॥
कहमुनि सर्प्प होहु नृप जाई । सर्प्पभये तिर्यग गति पाई ॥
तबगुरु ऋषिनसहितमखसाजा । कीन्हविगतश्रम पुनिसुरराजा ॥
गुरु अपमान करै नर कोई । ताकी दशा इन्द्रसम होई ॥
विष्णु मन्त्रकर कहब प्रतापा । बृत्रासुरकर कर्म कलापा ॥
चित्रकेतु राजा यहु भाई । सर्वभूमि कर राज कराई ॥
एक हजार नारि तेहि केरे । पुत्रहीन मन दुःख घनेरे ॥
यक दिन तहां अङ्गिरा आये । मोक्षहेत तेहि ज्ञान सिखाये ॥
सो शुभज्ञान न तेहिमनभावा । तबहि अंगिरा वचन सुनावा ॥
जबलग संसृति ताप न लागै । तबलग कठिन मोह नहिंभागै ॥
जेठी कृतुद्युती तेहि रानी । ताहिप्रसाद दीन्ह मुनि ज्ञानी ॥

तेहिके पुत्र जन्म जब भयऊ। भूपति विविधदान तब दयऊ॥
पुत्र मों नेह बढ़ो नृप केरा। रानी गृह बसि प्रेम घनेरा॥
यहिविधिबहुतादिवसचलिगयऊ। सउतिन मन सुतईर्षा भयऊ॥
गरल बालकहि दीन पियाई। देखि नृपहि भा दुखअधिकाई॥
करत विलाप नृपति बहुभांती। कहिकहि पुत्रचरित गुणपांती॥
तबलग तहँ नारद चलि आये। कहि सुत मुखते ज्ञान सिखाये॥
जहँ जहँ जीव जाय उपजावै। तहँ तहँ मात पिता सोइपावै॥
कबहुँक हम सुत भयन तुम्हारे। कबहुँक तुम सुत भयउ हमारे॥
माया मूढ़ पिता सुत मानै। भ्रमबश जीव ज्ञान नहिंजानै॥
यहकहि जबहिंजीव चलिगयऊ। चित्रकेतु मन विस्मय भयऊ॥
करि तेहि क्रियापरेउ मुनिचरणा। पाहिपाहि संसृति दुखहरणा॥
तब नारद तेहि मन्त्र बतावा। विद्याधर अधिपतिपद पावा॥
श्रीवैष्णव सोइ अति हरिदासा। गौरीशंकर मिले हुलासा॥
शिवपर तेहि दुर्वचन सुनावा। जानिभक्तमन क्रोध न आवा॥
पार्वती तेहि शाप सुनाई। होहु दैत्य दारुण तुम जाई॥
सो सुनि ताहि न कछु मनक्षोभा। चलो नाइशिर क्रोध न लोभा॥
तबशिव प्रियहिबहुत समुझावा। वैष्णव धर्म प्रताप सुनावा॥
यह कहिशिव कैलासहि गयऊ। चित्रकेतु वृत्रासुर भयऊ॥
दितिके तनय हिरणकशिपाही। अरु हिरण्याक्ष बहुतबलताही॥
अरु उंचास पवन तेहि जाये। देवसंग करि जगत पुजाये॥
यह षष्ठम स्कन्द प्रसंगा। सुनै कहै नर करि सतसंगा॥

कुं० परमहंस आश्रम विशद हंस मंत्र जप ज्ञान।
थूल विराट विभूतितुम जानेहु नृपति सुजान॥
जानेहु नृपतिसुजान मोह मद मत्सर त्यागौ।

सब तजि विषय प्रसंग सपदि हरिपदअनुरागौ ॥
रामभजन पण्डित गावत हरिलीला।
श्री भागवत प्रसंग मोक्षप्रद भक्ति सुशीला ॥ १ ॥

इति श्रीराधाविषादमोचनावल्यांरामभजनत्रिवेदीविरचितायांषष्ठस्कन्ध वर्णनोनामचतुरचत्वारिंशत्तमोऽध्यायः ४४ ॥

श्लोक। ऊतिःपञ्चदशाध्यायैः सप्तमेवर्ण्यतेधुना ॥
ऊतिस्त्ववासनाप्रोक्ता तत्तत्कर्मानुसारिणाम् ॥ १ ॥

दो० सुन्दर सप्तमकी कथा भक्ति दान अनुरूप।
श्रीनृसिंह अवतार शुभ सुनौ चरित हरि भूप ॥

राजसूय पितु पिता तुम्हारे। आये नृप मुनि सुहृदहँकारे ॥
पूजे कृष्ण युधिष्ठिर राजा। भाप्रसन्न लखि सकलसमाजा ॥
कृष्ण चरण लखि चैद्य भुवाला। करनलाग निन्दा तेहिकाला ॥
चक्रसुदर्शन तब प्रभु लीन्हा। ताहिमारि आपनपद दीन्हा ॥
सो आश्चर्य युधिष्ठिर पाई। नारदमुनिसन पूछिन जाई ॥
कह नारद जयविजय प्रसंगा। मुनिकी शाप छुटहिहरिसंगा ॥
सुवरणकश्यप सुवरणनयना। दितिके तनयमहाबलअयना ॥
जब हरि सूकर रूप बनावा। हिरण्याक्ष रण जाइ नशावा ॥
तासु बन्धु दुखकीन अपारा। गो द्विज देव धर्म संहारा ॥
मातहि भ्रातृ त्रिया सुत संगा। तिनकह यक इतिहासप्रसंगा ॥
करि प्रबोध कहि ज्ञान सुनाई। कीन्ह बोध वैराग्य देखाई ॥
उशिनर एक भयो क्षितिराजा। रणमा जूझे सकल समाजा ॥
तेहिके मोहवश्य सत नारी। करिविलापतन दशा बिसारी ॥
अथये रवि तन धीर न आवै। यमबालक है गिरा सुनावै ॥
मोहप्रबलता कहि समुझाये। सबके मन विराग उपजाये ॥

मैं बालक तुम थविर शरीरा। मोह वश्य मन धरहु न धीरा॥
कानन गज वृक बाघ न खाहीं। रक्षक सोइ जो मातु उरमाहीं॥
जो तनु प्रिय सोइ आगे सोवै। जीवलागि केहिकारण रोवै॥
ताहि न भेंट रूप नहिं देखा। ब्रह्मअंश आकार न रेखा॥
ताहि वृथा सोचहु सब भारी। मोहवश्य तन दशा बिसारी॥
यक बन बसै कपोत कपोती। भोजन चरन शयन सँगहोती॥
पालहि चिकुला मन चित लाई। अति सनेह ममता अधिकाई॥
तहँ किरात लखि जाल डसावा। चिकुलन कणकेलोभफँसावा॥
देखि कपोतिहि भा दुख भारी। मोह वश्य निजदशा बिसारी॥
बच्चन तीर गई ततकाला। लिपटे पंख बँधे पगजाला॥
देखि कपोत दशा तिन केरी। करत विलाप मोहमति घेरी॥
पछिाणि चिकुलाबिन केहिभांती। रहब कवनविधिदिनअरुराती॥
भयहु मोहिं निर्दयी विधाता। कीन्ह युवापन शरउरघाता॥
यहि विधि करत कपोत विलापा। मारो बधिक बाण गहिचापा॥
दैव प्रबल गति जानि न जाई। टरै न कोटिन करौ उपाई॥
पंथिस्थितं तिष्ठति सोइ पावै। गृहस्थितं बिन भाग्य नशावै॥
जीवै बिन रक्षक जग माहीं। मरणहारकर रक्षक नाहीं॥
यह कहि यमराजा समुझाये। बिगतमोहनिजनिजगृहआये॥
यहि विधि दैत्य मातु समुझाई। तप वन करनलाग सो जाई॥
द्वादश दिव्य वर्ष तप कीन्हा। ऊर्ध्वदृष्टिभुज वारि न पीन्हा॥
इन्द्रादिक विधिलोक सिधाये। तासु तेज बल बरणि सुनाये॥
हंसयान सब सुर लै संगा। अस्थिमात्र देखो तेहि अंगा॥
कह विधि सुनु कश्यपसुतमोरा। मांगहु पुत्र कीन्ह तप घोरा॥
ब्रह्मकमण्डल जल लै डारा। भा तन पुष्ट विनय अनुसारा

पितामहा जो मोहिं वर देहू। मरौं न जगके मारे केहू ॥
तुम्हरी सृष्टि भूमिजल माहीं। भीतर बाह्य मृगा नरपाहीं ॥
तुमसम तीनिलोक ममराजू। करैं लोकपति नित ममकाजू ॥
एवमस्तु कहि पुनि जगदीशा। चलोअसुरनाइसि पदशीशा ॥
इन्द्रासन बैठे सोइ जाई। करै राज शासन अधिकाई ॥
शण्डामर्क शुक्रसुत ज्ञानी। तिनसनपूछि नीतिसबजानी ॥
खारे सिन्धु मिष्ठजल कीन्हो। पृथ्वी अन्त बिनाश्रम दीन्हो ॥
जो कुदृष्टि परनारि निहारै। तेहिका तुरत मारि सोइ डारै ॥
न्याय धर्म पथ त्यागै कोई। राखै दण्ड पुत्र किन होई ॥
लोकपाल बश अनुचर जाके। निशिदिनरहैं तासु रुख ताके ॥
उग्रदण्ड व्याकुल सब देवा। मनसा करैं विष्णुकी सेवा ॥
दीनदयाल देव दुख जाना। तिनके हृदय जाय भगवाना ॥
करि यहु धर्म प्रजाप्रतिपालै। न्याय नेम व्रत नेक न हालै ॥
जब यहुकरै धर्म की हानी। तब मैं बधौं महाबलखानी ॥
यद्यपि यहि ब्रह्मा वर दीन्हे। गो द्विज साधु अवज्ञा कीन्हे ॥
बचिहि न बिना दैत्य रण मारे। असकहि हरिनिजलोकसिधारे ॥
तासु तनय हरिजन प्रहलादा। भजै रामपद शमन विषादा ॥
निशिदिन श्रवणकरै गुणगाना। कीर्तनकरै विगत अभिमाना ॥
सुमिरण करत पुलक तन होई। बन्दन करत शीश धरि सोई ॥
हरिमूरति पूजहिं मन माहीं। चरणकमल हियध्यानकराहीं ॥
हरिको दास अन्य नहिं भेवा। मिलै सन्त पूजै करि सेवा ॥
सन्तन सखा बन्धु प्रिय जानैं। आतम निवेदनकरि सनमानैं ॥
नवधा भक्तिकरै नित सोई। विगत मोह मद भेद न कोई ॥
शण्डामर्क जो पाठ बतावै। पढ़ै सुनै मन एक न आवै ॥

गुरुसुत कहै सुनौ नृप पूता। तुमरेसँग शिशुपढ़त बहूता॥
अर्थ धर्म नृप काम विचारा। ताते सकल स्वार्थ संसारा॥
तेरे मन एकौ नहिं आवै। कहो पुत्र तुमकहँ का भावै॥
कह प्रहलाद मोक्षप्रद स्वामी। हरिकी भक्ति सकलगुणगामी॥
सो उपजी प्रसाद गुरुतोरे। सो दृढ़करौ कहौं करजोरे॥
राज्य कोष अरु सुहृद शरीरा। वृथामोह तेहि बिन मुनिधीरा॥
ताते तत्त्वज्ञान मुनि भाखौ। दासजानि कुलबीच न राखौ॥
यह सुनि शण्डामर्क रिसाना। दैत्यराज हरिकर रिपुजाना॥
चन्दन बन तुम भयहु कुठारा। असकहि करगहि बेंतप्रहारा॥
करगहि राजसभा लैआवा। तासुचरित गुरु ताहिसुनावा॥
पिता बांहगहि हृदय लगाई। लयसुत गोद बहुत समुझाई॥
कह नृप मुनि तुमरे गृह आवै। कहिहरिकथा सुतहि भरमावै॥
कह सुनि जनिअपयश नृप देहू। स्वाभाविक हरिपद यहि नेहू॥
कहनृप कवनशास्त्र सुत भावै। सो पढ़ि सादर मोहिंसुनावै॥
सुनौ तात जग मिथ्या मानो। ज्ञानतत्त्वकछु हियपहिंचानो॥
व्यापक राम रमै जगमाहीं। योगीजन जेहि ध्यानकराहीं॥
वेद सांख्य उपनिषद विचारै। ब्रह्मादिक जेहि अस्तुतिसारै॥
नृपपद तजिजिंहि लगि बनजाहीं। विषयत्यागि तपघोरकराहीं॥
जो जग रचै पालि हरिलेई। स्वर्ग नरक सुख दुःखहि देई॥
जाकी शिव विरञ्चि मुनि देवा। पूजहिंभजहिं करहिं नितसेवा॥
सो हरि मोर सुहृद प्रिय नाथा। पूजौं भजौं चरणधरिमाथा॥
जो चाहो आपन कल्याना। भजहु तात हरिकृपानिधाना॥
यहसुनि सुतहि दीन महि डारी। शत्रुरूप यहि डारब मारी॥
दनुज शस्त्रले हनहु अराती। रक्षाकरहिं विष्णु केहिभांती॥

अस कहि राक्षस विपुलप्रचारे । गहि गहि शस्त्रमरमथल मारे ॥
मन प्रसन्न तन क्षत नहिंआवा । हरिसुमिरण फल प्रकटदेखावा ॥
कहप्रह्लाद भक्तिबल भारी । तजिअभिमतहरिभजहुसुरारी ॥
जीतेहु सकल लोक महिपाला । विषय क्रोधमदकरत बिहाला ॥
जो मम मत उर धरहु नरेशा । विजयतुम्हारिसकलसबदेशा ॥
यह सुनि असुर कोप तब कीन्हा । भूमिखोदाइगाड़ि तेहिदीन्हा ॥
सभामध्य बैठे प्रह्लादा । देखि नृपहि मनभयोविषादा ॥
काष्ठ समूह बीच तेहिजारा । रामराम कहि तहँ पगुधारा ॥
देखि बांधि जल दीन बोराई । फिर आवत बिपदीन्हपिआई ॥
तदपि न मरै सर्प्प बोलवाये । अतिविष मर्मस्थल कटवाये ॥
रामकृपा विष नेक न व्यापा । द्विगजदमन करतकरिदापा ॥
तदपि न मरै शोच जियआवा । शण्डामर्कहि निकटबोलावा ॥
तुमगुरु सुत जानौ सब हालू । पूर्वविपाक सुनाउ दयालू ॥
तुम जय बिजय पुरा हरिदासा । द्वारपाल बैकुण्ठ निवासा ॥
पुत्र सनातन को अवतारा । सोइ प्रह्लाद अवनि पगुधारा ॥
रोंकत शाप तुमहिं इन दीन्हीं । ताते दैत्ययोनि तुम लीन्हीं ॥
तुम्हरी शाप देह इन पाई । ताते भा बिरोध अधिकाई ॥
यहि हित हरिलेहैं अवतारा । तासु हाथ नृप मरण तुम्हारा ॥
शण्डामर्क ताहि समुझाई । पुनि प्रह्लादहि चले लिवाई ॥
सब बालकन पढ़ावन लागे । दैत्यराज जनु सोवत जागे ॥
हरिके बीच भाव नव भांती । तेहिमा बैरभाव गुणपांती ॥
वै इतिराति दिवस नहिं भूलै । वोट कीटवत रूप अमोलै ॥
करिहौं वैर यहै दृढ़ नेमा । मोसन भक्तिहोइ नहिं प्रमो ॥
भावभक्ति एकौ जेहि होई । पावै सांच मोक्षगति सोई ॥

इहां बालकन सकल बोलाये। जब गुरुसुत निजधाम सिधाये॥
कह प्रह्लाद जपौ हरिनामा। विषय शास्त्र नहिं आवैकामा॥
बालअवस्था खेलि नसावै। युवा नारिसँग मन भरमावै॥
वृद्धा पुत्र पौत्र आधीना। मोहवश्य हरिभजै न दीना॥
आधी आयु नींद हरि लेई। आधी विषयन मा चित देई॥
ताते जीव अधोगति पावै। फिरि फिरि जन्मिजन्मिजगआवै॥
भजन प्रताप जीव बरियारा। खुले कपाट स्वर्गकर द्वारा॥
जैसे बालक पालै माता। तैसे विष्णु भक्तकर त्राता॥
कोटिन दैत्यन कीन्ह उपाई। भजन प्रताप दीख हमभाई॥
हमरे गुरु नारदमुनि ज्ञानी। दीन्ह ज्ञान निज सेवकजानी॥
दैत्य सुतन सुनिनिश्चय आई। हरिकर भजन करैं चितलाई॥
शंडामर्क पढ़ावैं जोई। हरिका भजन पढ़ैं नहिंसोई॥
राजासन तिन कहो प्रसंगा। सुनत कोपबश कम्पित अंगा॥
बोलिकही तोहि कठिनकृपाना। निजकर काटिब सुनुअज्ञाना॥
सुमिरहु कहँ रक्षक अब तोरा। मानेहु दुष्ट कहा नहिं मोरा॥
कह प्रह्लाद सकल जगमाहीं। देखु बिचारि कहां हरिनाहीं॥
असकहिखम्भबांधि तेहिदीन्हा। करितब कोप खड्गकरलीन्हा॥
कह नृप हरि हरि करहु पुकारा। खम्भमध्य हरिबसै तुम्हारा॥
जो मैं सत्य विष्णुकर दासा। मनक्रमबचन अपरनहिंआसा॥
तौ यहु खम्भ फारि हरि तोरा। फारहि पेट बचन फुर मोरा॥
यह सुनि दैत्य कोप करिधावा। खम्भसमीप तुरत चलिआवा॥
खम्भ मुष्टि हनि खड्ग उठाई। भै धुनिघोर रही नभछाई॥
खम्भमांझ गरजे हरिघोरा। दैत्य चकितभा सुनिअतिशोरा॥
फाटो खम्भ निकरि हरि आये। भारी नरहरि रूप बनाये॥

जय जयकरत सिद्ध मुनिभारी। अतिविशालतनअतिभयकारी॥
देखि दैत्य निज खड्ग चलाई। तिरछे है प्रभु गये बचाई॥
गर्जिकोपकरि तेहिगहिलीना। सभाद्वार घुटुअन धरिलीन्हा॥
नखन बिदारिनिउदरविशाला। पहिरिनिगले आतकीमाला॥
तासु सिंहासन बैठे फूली। सन्मुख है न सकत कोइभूली॥
गगनमध्य विधि आदिक देवा। बर्षहिं सुमन जनावहिं सेवा॥
बाजहिं तूर्य दुन्दुभी नाना। नाचहिं देवबधू करिगाना॥
अस्तुतिकरहिं सकल सुरझारी। अति कराल हरिरूप निहारी॥
ब्रह्मा लक्ष्मिहिं बोलि पठाई। देखि रूप भय चलीं पराई॥
तब प्रह्लाद तीर बिधि आये। क्रोध शान्त हित तुरत पठाये॥
जाइ निकट तेहिअस्तुतिकीना। शिरपर अभयपाणिधरिदीना॥
तब बिधिजाय निकटशिरनावा। तब नरहरि निजगिरासुनावा॥
असबरदान असुर कहँ दीन्हा। यहतनबचन लागिहमकीन्हा॥
तुम प्रह्लाद संग लै जाई। दैत्यकर्म विधि देहुकराई॥
दै यहि राज्य जाहु निजधामा। इन्द्रादिकन देहु विश्रामा॥
लोकपालनिज निजअधिकारा। करैं सकल सुनिवचन हमारा॥
असकहि विष्णु गये निजधामा। सकललोक पायो विश्रामा॥
जो यह कथा सुनै अरु गावै। हरिके निकट बास सोइ पावै॥
सुन वर्णाश्रम धर्म महीपा। जो करि हरिके बसै समीपा॥
ब्राह्मण क्षत्रिय बिट शूद्राहू। वर्णधर्म कहि हरिपद लाहू॥
आश्रम ब्रह्मचर्य अरु गेहू। बानप्रस्थ संन्यास सनेहू॥
लक्षणतीस जाहि जगहोहीं। उत्तमभक्त गनावौं तोहीं॥
सत्य दया तप शौच तितिक्षा। सम दम सदा अहिंसाइक्षा॥
ब्रह्मचर्य्य स्वाध्यायन त्यागा। गुरुसनसिखिकरिविमलविरागा॥

दो०। शुचि आत्मा अभ्यास गनि वरविचार परिमानु।
शास्त्रज्ञान ज्ञानीपरय परत्रियत्यागीजानु १॥
विद्या पुष्ट बखानिये प्रियवादी शुभसंग।
अल्पकाम सूक्षम बहुत गुण परिपूरण अंग २॥
मातृभक्ति अरु पितुकही गुरुभक्ता जियजानु।
सुरपूजक निद्रास्वलप इंद्रीजित हरिध्यानु ३॥

चौ०। कहबअलक्षनबत्तिसभाखी। राजनसुनहु गुनहु हियराखी॥
कामी क्रोधी क्रिया विहीना। दुर्वादी अतिलोभ मलीना॥
लंपट लज्जा हीन कहावै। विद्या रहित कुरूपबनावै॥
आलस अति निद्रा बहुदोषा। दयाहीन हिंसा अतिरोषा॥
सूम दरिद्री रोगीकूरा। देहिलेहि कुदान आसूरा॥
सुनै न हरिगुण निंदाठानै। अतिअहार हंकार बखानै॥
चुगुली परसंतापी चोरा। अभिजनमद परछिद्र कठोरा॥
चारिउवर्ण वृत्तिमैं गावौं। विलगविलगकरितुमहिसुनावौं॥
ब्राह्मण वर्ण वृत्तिविधि चारी। उत्तम शीलोंक्षण सुखकारी॥
मध्यम जो बिनमांगे जोपावै। अधम जानि धन विप्रबरावै॥
बर्षासन चंद्रा अरु दाना। नेहिस्वल्प निज तेज प्रमाना॥
जांचाएक मध्य धनलावै। स्वल्पौ लखि संतोष बढ़ावै॥
हठकरि ब्राह्मण जे धनलेहीं। तिनकहँ पकरि नरक यमदेहीं॥
संध्याकरि ऋषिऋण निरधारै। छुटै पितृ ऋण पिंडा पारै॥
श्राद्धकिये अरु सुत उपजाये। सुतादान अरु अतिथि जेमाये॥
पूजन नेम जाप मखकारी। छूटि देवऋण होहि सुखारी॥
षटविधि ब्राह्मण कर्म कहावै। वेदपढ़ै अरु द्विजन पढ़ावै॥
दान देहि अरु दानहिलेही। जाप करावै अरु करिदेही॥

क्षत्रिन धर्म कहब नृपनाहू। सुनौसकल तुम सहितउछाहू॥
क्षत्रावृत्ति प्रजापति पाला। षष्ठभाग कर लेहि भुवाला॥
सम दम तप पौरुष अरु वेदा। सामदाम धनुदंड प्रभेदा॥
दान यज्ञ नृपनीति नियाऊ। समरभूमि दृढ़ द्विजपदभाऊ॥
हरिकी भक्ति ज्ञान वैरागा। दानन कृपा लोभभयत्यागा॥
वैश्य बृत्ति उद्यम धन हेतू। गोरक्षण कृषि बणिज समेतू॥
क्रय बिक्रय अरु ब्याजहिलेही। सो धन जाय दान हित देही॥
ब्राह्मण चरण बहुत अनुरागा। बेदशास्त्र व्रत तप शुभजागा॥
शूद्रवृत्ति ब्राह्मणपद सेवा। ईश्वरभक्ति मान मदहेवा॥
करै चाकरी जो धन पावै। सो भोजन करि धर्म बढ़ावै॥
स्त्रीधर्म पर्म पतिसेवा। पति ईश्वरतजि अवर न देवा॥
आश्रम धर्म सुनौ नृप सोई। तेहि बिन किये मुक्तिनहिं होई॥
ब्रह्मचर्य गुरुपद अनुरागा। पढ़ै बेद मद मत्सर त्यागा॥
स्त्रिन लंपट संग बिहाई। बीर्यपात निज लेहिं बचाई॥
भिक्षा मांगि धरै गुरु आगे। करै न बिन गुरु आज्ञा मांगे॥
दण्ड कमण्डल पुस्तकधारी। संध्या मौन ध्यान अनुसारी॥
पढ़ि बिद्या चहुँ घरका आवै। वानप्रस्थ वा बनहि सिधावै॥
गृही अवस्था सम करिनारी। देव पितर ऋषि कर्मसमारी॥
तीरथ वर्त्त नेम जप दाना। पञ्चयज्ञ नित करै सुजाना॥
पुत्रन सौंपि नारि गृह त्यागी। वानप्रस्थ बनबसै बिरागी॥
काल पक्कफल मूल अहारी। करै योग जप तप व्रतधारी॥
करि संन्यास कर्म तजि देही। हरिको ध्यान ज्ञान शुभलेही॥
कर्म बीज भंजन के काजा। लखिसतब्रत त्यागीजगलाजा॥
जब तेहि हंस ज्ञान हिय आवै। परम हंसपद सो नर पावै॥

वर्णाश्रम नारदमुनि गावा। सो नृप सादर तुमहिंसुनावा॥

कुं०। यह सप्तम असकन्ध की बरणी मति अनुसार।
सुने सुनाये नर तरहिं होइ न फिर संसार॥
होइ न फिर संसार भक्ति निश्चय जियआवै।
बाढ़ै ज्ञान बिराग धर्म नर हरिपद पावै॥
रामभजन कविकहै मोहिं दीजै जनि खोरी।
पण्डित लेहिं सँभारि कहौं निजदोउ करजोरी॥

इति श्रीराधाविषादमोचनावल्यांरामभजनत्रिवेदीविरचितायांसप्तमस्कन्ध कथावर्णनोनामपञ्चचत्वारिंशोऽध्यायः४५॥

श्लोक। अष्टमेचचतुर्विंशैरध्यायैमनुवर्णनं।
तत्स्तुतैऋषिदेवेन्द्रैर्मूर्त्तिभिश्चहरेसह॥

दो०। राधा माधव ध्यान धरि गणपति गौरि मनाइ।
रामभजन वर्णन कियो श्रीगुरु आशिष पाइ॥

चौ०। अब अष्टममन्वन्तर गावौं। हरिचरित्र कहि तुमहिंसुनावौं॥
ब्रह्मा बढ़त सृष्टि नहिंजाना। तब हरिको सुमिरन मनठाना॥
सुमिरन भक्ति प्रभाव अपारा। तब हरि आनिलीन अवतारा॥
विधिके अङ्ग फाल दुइ कीना। दक्षिणअंग जन्म मनुलीना॥
बामअंग सतरूपा रानी। लक्ष्मी विष्णु भयेजगआनी॥
एक समय गज ग्राह लड़ाई। तब हरिप्रकट भये तहँ आई॥
सो प्रसंग मैं तुमहिं सुनावौं। सुमिरण भक्ति प्रभाव देखावौं॥
इन्द्रद्युम्न राजा बन जाई। कीन तपस्या अभिमत पाई॥
तहां अगस्त्य गये निःकामा। राजहिउठिनहिं कीनप्रणामा॥
तब करिकोप शाप मुनिदीन्ही। ताते योनि कौंजरि लीन्ही॥
हूहू यक गन्धर्वन राजा। संग लिये अप्सरा समाजा॥

ऋषि अङ्गिरहि देखि मुसकाना। तब दुर्बल शरीर खिसियाना॥
कह मुनि नक्रयोनि तुम पावौ। चक्रघात तनतजि फिरिआवौ॥
हूहू जाइ ग्राहतन पावा। इन्द्रद्युम्न गजराज कहावा॥
सो गजयूथ लिये बहु तेरे। शापवश्य बन फिरत घनेरे॥
आतप लाग बहुत बिलखाना। तृषित यूथ सँग सर नियराना॥
गज उन्मत्त पानजलकीन्हो। भरिभरि सूँड़ि छिरकि तनदीन्हो॥
करिणी कलभ गयंद घनेरे। पानकराइ सकल तेहि फेरे॥
तबलगि तहां ग्राह चलिआवा। गहिपद प्रबलनाग कढ़िलावा॥
सुनि चिकार सकल गजधाये। गहिपद पृष्टि काढ़ि तेहिलाये॥
जलचर ग्राह सहायक आई। भीतर कीन्ह नाग कढ़िलाई॥
गजन काढ़ि फिरिबाहर कीन्हा। जलचर खैंचि डारिजल दीन्हा॥
यहिबिधिदोउमिलिकरत लराई। सघन कमलवन गवा नसाई॥
पुरइनि कमलताल मिलिगयऊ। नीर कीचकर ऊपर भयऊ॥
बहुतकाल खैंचत यहि भांती। कीन्हयुद्ध नहिं बरणिसेराती॥
हारे गज सब बनहि सिधाये। गजपतिहरिसुमिरण मनलाये॥
करमगाह महिका गहिलीन्हो। पूरब जन्म पाप मैं कीन्हो॥
बिनहरिसकल सुहृद अरुज्ञाती। विषय मोहफांसी बहुभांती॥
असकहि कमल तोरिकरलीन्हो। रूपध्यानकर सुमिरण कीन्हो॥
तब मन विष्णु कीन अनुमाना। तपयहिकीन भक्त निजजाना॥
जो करि देर छोड़ावौं येही। बूड़त गज मैं प्रणत सनेही॥
अजामील सुमिरण मन लावा। अरसाकीन्ह न तुरत छोड़ावा॥
असकहि हरि तुरतै उठि धाये। बेगवन्त सँग गरुड़ सिधाये॥
चढ़त न पक्षिराज भगवाना। लखि बिलम्ब गजबूड़तजाना॥
गहि शुण्डा गज जाइ उबारा। लैकर चक्र नक्र मुखफारा॥

नक्रतुरत हूहू तनु पावा । करिस्तुति निजधाम सिधावा ॥
छुअत गयन्द दिव्य तनु पावा । करि अस्तुतिहरिलोक सिधावा॥
कन्दउ तट शिव मूरति राखा । गजमोचनकहि प्रभुअसभाखा॥
कँदऊ क्षेत्र करै असनाना । पूजै शिव मन बच धरिध्याना ॥
सो नर भुक्ति मुक्ति फल पावै । चढ़िबिमान ममलोक सिधावै ॥
असकहि बिष्णुगये निजधामा । सुमिरत नर पावै बिश्रामा ॥
एकबार बलि सजि चतुरङ्गा । धाये दितिकुल कमल पतङ्गा ॥
इन्द्र कुबेर बरुण यम जीते । इन्द्र ब्रह्मपद गये सभीते ॥
ब्रह्मा सकल देव लै साथा । सिन्धुतीर आये सुरनाथा ॥
अस्तुति करत बिष्णु तहँ आये । सिंधु मथन की जतन बताये ॥
देवासुर सलाह पुनि कीन्हा । मंदर गिर उठाइ तब लीन्हा ॥
गिरिके पात कचरि बहु गयेऊ । तब हरिसकलजिआवतभयेऊ ॥
लै मंदर सागर तट राखा । मथिनिसिंधुपियूष अभिलाखा ॥
चौदह रत्न प्रकट तहँ भयऊ । प्रथम गरल शंकर कहँ दयऊ ॥
दैत्यन मद सुर अमृत पिआये । लक्ष्मी कौस्तुभ हरि उरलाये ॥
सूर्यन अश्व ऋषिन कहँगाई । दैत्यन जीति राज्य सुर पाई ॥
तब नारद कैलास सिधाये । बहुबिधिबिष्णु चरिततिनगाये ॥
धृत मंदर कच्छप कर रूपा । धरिहीर पृष्टि सुनौ सुरभूपा ॥
मथिनिपयोधि प्रगट हरिभयऊ । गहिकर कलिसोधन्वंतरिगयऊ ॥
दै देवन भे अंतर ध्याना । दैत्यन छीनिलीन्ह बलवाना ॥
सोलखि बिष्णु मोहनी भयऊ । असुरनसकलमोहितिनलयऊ ॥
कहशंकर हम सब अवतारा । निरखे जहँ जहँ हरितनुधारा ॥
नारिरूप निरखो नहिं भाई । निरखब पुनि हरिसन हठपाई ॥
असकहि शम्भुगये हरिधामा । संग सतीगण निरखनकामा ॥

करिस्तुति निजकाज सुनावा। ताते नाथ लोक में आवा॥
विष्णु कहा मम दरशन पैहौ। जब शङ्कर कैलास सिधैहौ॥
मारग मध्य दीख फुलवारी। ऋतुबसन्त तहँ सुन्दर नारी॥
सूक्षम कटिकठोर कुच भारी। चितवनिललितसदागतिप्यारी॥
कोमल कर कंटक सब अंगा। गहेअन्य कर उड़त पतंगा॥
दाड़िम दशन मन्द मुसकानी। करिकटाक्ष शर हनत सयानी॥
ताहि शम्भुलखि अति हर्षाना। सतिहित्यागितहँकीनपयाना॥

स०। नारिको रूप निहारिपुरारि भलीबिधि सों अरिकाम सताये। छूटे जटा अरु फूट कमण्डल नाग लँगोटन ते भजिआये॥ छूटिपरा डमरू करते अरुमाल सती बिजया बिसराये। बाहुपसारिफँदे बृषते करणी पर मत्तकरीइव धाये॥ १॥ आवत देखि निहंगम शंकर मोहनि कन्दुक नाचि उलारो। धाइगहो कर गेंद उड़ो पट कंचुकि फाटि पयोधर भारो॥ टूटिपरो कटिसूत्र गिरो पट अंग खुले नहिंजात सम्हारो। भाजितमालके ओटलुकी तवशङ्कर सुन्दर रूप निहारो॥ २॥ बृक्ष के ओट गये त्रिपुरारि भजे हरिमोहनिबाहु पसारो। शंकर केश गहे करसे तप डूबिगयो जपयोग बिसारो। अंग प्रस्वेद बिभूति बही शिर चन्द्रमलीन जटा फटकारो। जाइभुजान्तर में गहिकै हरिको त्रिपुरारि लहो सुखभारो॥ ३॥

दो० देखि चतुर्भुज रूप शिव तुरतगये खिसियाय।
कह प्रभु मममाया प्रबल तासों कछु न बिसाय॥

चौ०असकहिबिष्णुगयेनिजलोका। निजगृह शङ्करगयेबिशोका॥
औरउ कथा प्रसंग सुनावौं। हरिअवतार तुमहिं दरशावौं॥
शुक्रबलिहि लै तपहि सिधाये। करितप बलितन तेज बढ़ाये॥

धनु रथ कवच तूण दइ दीन्हे। सुरपति समर जीति तेहि लीन्हे॥
इन्द्र सिंहासन बलिहि निहारी। अनुचितकहि भृगुलीनउतारी॥
शतमख करहु जाय तुमताता। इन्द्र सिंहासन तब सुखदाता॥
अस सुनि गये नर्मदा तीरा। यज्ञ करन लागे रणधीरा॥
पुत्रदशा अदिती मुनिकाना। विष्णु निमित्त पयो ब्रतठाना॥
भा बरदान जन्म हरिलीन्हों। तुरतै बामन बटु तनु कीन्हों॥
सबई यज्ञ जाइ बलियाँचा। पूजाकीन दीन मनराँचा॥
तबहिं त्रिविक्रम भये मुरारी। नापि लीन दुइ पद बिस्तारी॥
तिसरे पद बलि पीठि नपाई। प्रभु पदगहि मन मोदमचाई॥
बलिते लै इन्द्रहि प्रभुदीना। आपन नाम उपेन्द्रहि कीना॥
बामन चरित सुनै नरनारी। तिन कहँ सुलभ पदारथचारी॥
मत्स्यपुराण सुनावौं तोही। जो सुनिसुलभसकलफलहोही॥
कश्यपपौत्र सूर्य के जाये। वैवस्वत नृपनाम कहाये॥
द्राविड़ देश राज्य तेहि कीन्हा। कृतमाला तट तप करिलीन्हा॥
एक दिवस तर्पण के काजा। अंजुलि भरत मत्स्यलखिराजा॥
डारत नृप को बचन सुनावै। रच्छाकरहु जन्तु मोंहि खावै॥
यह सुनि नृपति कमण्डलराखी। अतिसकोचथलअसतेहिभाखी॥
खोदि कुण्ड जलडारि बसाई। मत्स्य तहां नहिं सकतअँबाई॥
तब सरवर नृप लै पुनि डारी। सरवर स्वल्प मत्स्य भै भारी॥
कृतमाला लै बहुरि सिधाये। मत्स्यनरायण बचन सुनाये॥
सतयें दिवस प्रलय जगहोई। बूड़े बिश्व रहै नहिं कोई॥
इहां एक नौका मैं लावौं। बासुकि सन निज शृङ्गबँधावौं॥
तापर सकल बीज नृप आना। चढ़िहौ सप्तऋषिनसहआना॥
मत्स्य संहिता तुमहिं सुनावौं। अपने परे ज्ञान दरशावौं॥

असकहि हरिभे अन्तरध्याना। कीन नृपति जो मत्स्यबखाना॥
प्रलयकाल हरि करत बिहारा। हयग्रीव दानव जिन मारा॥
बेद सप्तबिधि मुखते लीन्हे। ताहिनिपाति बिधिहि प्रभु दीन्हे॥
मत्स्य संहिता सुनै सुनावै। सो बैंकुण्ठ जाइ सुखपावै॥
कुं॰। सुन्दर अष्टमकी कथा नृप मैं बर्णन कीन।
सुने सुनाये नर तरैं होइँ बिष्णुपद लीन॥
होइँ बिष्णुपद लीन बहुरि तेहि जग नहिं आवै।
मन बच क्रम दृढ़ नेम सदा जो हरिपद ध्यावै॥
रामभजन करजोरि रामसन यह बरमांगै।
बाढ़ै भक्ति अनन्त ललकि मनहरिपद लागै॥

इति श्रीराधाविपादमोचनावल्यांरामभजनत्रिवेदिविरचितायां अष्टमस्कन्दवर्णनोनामषट्चत्वारिंशोऽध्यायः ४६॥

श्लोक। त्रिगुणाष्टाभिरध्यायै वैंवस्वतसुतान्वयः।
नवमेकृष्णसतकीर्तिः प्रसङ्गायवितन्वते॥
दो॰। कहब नवम अस्कन्ध की कथा सुखद अबभूप।
सुने सुनाये नर तरैं परैं न फिरि भवकूप॥ १॥
ब्रह्मा के मरीचिमुनि तिनके कश्यप जानु।
तिनके अदिती गर्भते जेठे उपजे भानु॥ २॥
भानु पुत्र बैवस्वतहि मनु कीने भगवान।
तिनके दश लरिकाभये दशोअंग गुणवान॥ ३॥
तिन महँ जेठे अवधनृप महाप्रबल इक्ष्वाकु।
तिनके तीन कुमार भे निमि बिकुक्षि दंडाकु॥ ४॥
निमि तौ मिथिलापुरबसे अवध बिकुक्षि नरेश।
दंडराजकर बनभयो बर्षिबालुका देश॥ ५॥

नृपययाति के सुतभये यदुअणुमीश्वर पूर।
पुरुते तुम्हरो वंश नृप भये सकल रणशूर ॥३०॥
अणुमीश्वर मागधभये अंग कलिंगी बंग।
भोजअंधकुरुकुलसकलजिनकीन्होंहरिसंग॥३१॥
यदुको बँश बहुतुइभवा गनती करी न जाइ।
तेहितेमैं कछु स्वल्पकरिसूरते कहेउ बनाइ॥३२॥
सूरकि पतिनी मारिखा तेहि के दश सुतबीर।
तिनमा श्रीबसुदेवभे कश्यप धरो शरीर ॥ ३३ ॥
कुन्ती श्रुतदेवा भई श्रुत कीरति श्रुति श्रावि।
बहिनी ये बसुदेवकी राजधि देवी भावि॥ ३४ ॥
पत्नी ये बसुदेवकी पूर्वी रोहिणि जानु।
भद्रा मदिरा रोचना इलादेवकी मानु ॥ ३५ ॥
यहि बिधि अष्टादश त्रिया तिनके बहुतकुमार।
जन्मे देवकि आठ सुत सुन्दर तेज अपार॥३६॥
तिनमा श्रीबसुदेवके जन्मे कृष्ण कुमार।
अगजग स्वामी जेठबलप्रभुलीन्हेअवतार॥३७॥
कुं०। रामकृष्ण यश जो सुनै गावै प्रेम समेत।
अरु यदुपुरु शशि सूर्यकुल ताहिलोक हरिदेत ॥
ताहि लोक हरि देत मोह ममता मदत्यागै।
तीनि ईर्षणा तजै भजै हरिपद चितुलागै ॥
पंडित रामभजन मांगत करजोरे।
बसहु निरन्तर राम श्याम तुम मानस मोरे ॥

इति श्रीराधाविषादमोचनावल्यांरामभजनत्रिवेदिविरचितायांनवम स्कन्धकथावर्णनोनामसप्तचत्वारिंशोऽध्यायः ४७ ॥

श्लोक। विश्वसर्ग विसर्गादि नवलक्षणलक्षितं।
श्रीकृष्णाख्यं परंधामजगद्धामनमामतम् ॥ १ ॥
परीक्षितउवाच ॥
दो०। अबमुनिवरपुनि कृष्णयश बरणो सहितबिपाक।
कवन कर्म ब्रजबसि करे मथुरादिक समनाक १
चौ०। कृष्णचरितबरणौमुनिराया। केहिबिधिजन्मलीन्हयदुराया॥
मातृ गर्भ में मोहिं बचावा। द्रोणपुत्र शरघोर चलावा॥
पाण्डव दल रक्षा जिन कीन्हीं। होइ सारथी राखि पतिलीन्हीं॥
श्रीशुकउवाच ॥
विधिधरणी गोलोक सिधाये। देखि अधर्म महा भयपाये॥
अस्तुति करि निज कथासुनाई। कह प्रभु जन्म लेब जगआई॥
तब प्रभु हँसि राधासन भाषा। साथ चलनकर करु अभिलाषा॥
दो०। तुम जन्मौ वृषभानुके बरसाने में जाइ।
कलावती के गर्भ में तेजपुंजको पाइ॥
मैं मथुरा बसुदेव गृह होइ गोकुल को जाइ।
भूमिभारहरि चरितशुभ करिआइब हरषाइ॥
चौ०। अबमैं जन्मकथा हरिकेरी। कहब नरेश मुक्ति हित तेरी॥
भवा जबैं बसुदेव बिवाहू। कंस बहुत बिधि कीन्ह उछाहू॥
देवकबहुविधि दैजो दीन्हों। पठवन हेत कंस सँग कीन्हों॥
भै अकाशवाणी तेहिकाला। तोरशत्रु जन्मिहि यहबाला॥
यह सुनि कंस कृपाण उठाई। करि बिनती बसुदेव बचाई॥
तेहिके पुत्र देन कहिआये। तबै देवकी मन्दिर लाये॥
नारदमुनि मथुरा का जाई। द्रुमिल पुत्र तेहि गये बताई॥
देवकि षष्ठपुत्र तेहिमारे। उग्रसेन बँदिखाना डारे॥

राज मधुपुरी को तेहि कीन्हा । यदुकुलत्रासविविधविधिदीन्हा ॥
भे बलदेव शेश अवतारा । संकर्षणहोइ ब्रज पगुधारा ।
यशुमति गृह माया अवतारा । तब हरि आइ अवनि पगुधारा ॥
भाद्रशुक्ल अष्टमि बुधवारा । अर्द्धरात्रिभा हरि अवतारा ॥
ब्रह्मादिक तब तहँ चलि आये । करि अस्तुतिनिजधामसिधाये ॥

क० । कश्यप ते बसुदेव भये अत्रीभइ देवकराज दुलारी जन्म लियो तिनके गृहमें हरि गोकुल को ततकाल तयारी बसुदेव चले लै कंसते शंकित भादौंमास निशाअँधियारी नीर गँभीर बहै रविनंदिनि हूंकतही तेहिपार उतारी । नन्दकी सेज सोवाइ सुतै औ सुतालै गोद प्रिया पौढ़ारी ॥

दो० । द्वारपाल तब कंससन कहो जन्म शिशु आइ ।
तुरतै सूतीगृह गयो देखी कन्या जाइ १
तब तेहि देवकि गोदते लै पटकी नभ जाइ ।
काल तुम्हारो जग भयो तेहिको करौ उपाइ २
भई सुभद्रा रूप यक अर्जुनकी प्रियनारि ।
दूजे विन्ध्याचल बसी सब जग कह विस्तारि ३
सुनि प्रसंग हरिजन्मतेहि पठये दैत्य बोलाय ।
जन्मे बालक हालके घर घर मारहु जायं ४

क० । घर घर गोपी औ गोपसुनो सुतनन्दकी नारि यशोमतिजायो । सब आये अनन्दभयो मनमें धन धान्य विभूषणपात्र लुटायो । बाजने बाजिरहे ब्रजमें नभदेवन बाजनकी धुनिलायो । नन्द अनन्द कहो नहिं जाय सनातन सोइ जेहि वेदनगायो १ ॥

दो० । बोलि बिप्रवर वेद विधि जातकर्म सब कीन्ह ।
गो हिरण्य तिल धान्य घृत दान द्विजनकहँदीन्ह ॥

असनान सौचारि दशम दिन और सुमंगलि कीन्ह।
कहै सूत मागद विरद गावत गान प्रवीन॥
क०। ब्रजमें सुमृष्ट शिक्कद्वार गृहान्तर चित्रध्वज चैल तोरण पताका फहरातुहै। गोवृष वत्सक लै हरिद्रातैल भूषित कीन्हे दीन्हे बोलावगोप वस्त्राभूषण सिंगारिसाजु समाजु है। कञ्चुकोष्णीषबहु मोलउर मालजामा पहिरसत्र लैकर उपाय नदान नन्दगृह जातु है। गोपी सुमृष्टमणि कुण्डलनिकमाल कण्ठ चित्रवस्त्र कंकण पहिरि पथिशिखावत माल्य वर्षातु है १॥
स०। उरहार लसै कुच कंचुकि में शुभदाड़िम वृन्दक श्रीफल से। श्रुति कुण्डल लोल कपोल छुवैं अधरारस लटकन सों पर सै। नन्दालय गोपिन की अवली बलि गोरस केसरि लै बरसैं॥ श्री कृष्ण के जन्म महोत्सव में तब रामभजन फल पाइ हसैं २॥
दो०। दानमान करि मधुपुरी नन्दनृपहिकर दीन्ह।
वसुदेवहि परितोषि पुनि सुनत तयारी कीन्ह॥
चौ० प्रेषित कंस पूतना आई। जहँतहँ बधि बालक समुदाई॥
अतिबल परम भयंकर घोरा। बालघातिनी चित्त कठोरा॥
ग्राम नगर बहु बालक मारे। सुनु नरेश ब्रजगई सिंगारे॥
कामचारिणी रूप बनावा। केशबद्ध मल्लिका लगावा॥
सूक्षम मध्य पयोधर भारी। रतिसम बृहन्नितब सुकुमारी॥
कंपित करणफूल छबि देई। चितवनि चारु चोरिचित लेई॥
बलु गुस्मित अपांगकरि बाना। ब्रजवासी मनहरि विधिनाना॥
गोपिन लखेहु इन्दिराआई। निज दरशनहित कृष्ण बोलाई॥
अतिसकोच कछु कहि न सेराई। हरिके निकट पूतना जाई॥
देखि तल्प सोये यदुराजा। भस्ममध्य जनु अग्नि बिराजा॥

लीन्ह अनन्त अङ्क में गोरी। सर्परज्जु जिमिभइ मतिभोरी॥
सास्तनगरल नाथ मुखदीन्हा। गहिकुचकलिसप्राण पयपीन्हा॥
अबना पूत पियहु पय मोरा। परी धरणि चिकारकरि घोरा॥

राजोवाच॥

सो०। मुनिवर कहु समुझाइ पूरब जन्मनि कवन यह।
भई पूतना आइ हरिदरशन शुभगति लही॥

श्रीशुकोवाच॥

दो०। दनु कन्या यह शापवश बकी भई नृपनाथ।
पेइ पयोधर तासुहरि तुरतै कीन्ह सनाथ॥

इति पूतनाविपाक॥

चौ०। अबसुनुदशमकथा प्रभुकेरी। कहब नरेश मुक्तिहित तेरी॥
मथुरा जन्मि गोकुलहि गयऊ। गेरह वर्ष बसततहँ भयऊ॥
सो चरित्र नारदमुनि गावा। कालीदह सौभरिहि सुनावा॥
कालीनाग बसै दह माहीं। मुनिकह मोर गुजारा नाहीं॥
यहां कृष्ण लीन्हों अवतारा। दुष्टमारि हरिहैं महिभारा॥
प्रबल पूतनहि मारि गिरावा। तब ब्रजलोग बहुत सुखपावा॥
मोर गरुड़कर बैर अपारा। यहि दहबसि निजकरति गुजारा॥
यहि दह मध्य रहन नहिं पावौं। नहिं मोहिं ठौरकहां मैं जावौं॥
यहि बिधि मनमहँ करतबिचारा। अब प्रभुकृष्ण लीन्हअवतारा॥
मारि पूतनहि निज पद दीन्हों। कालीबहुत शोच मनकीन्हों॥
बहुत रूप धरिब्रज का आवै। कृष्ण नाशअवसर नहिंपावै॥
गरुड़ासन लखि जाइ पराई। तबलग एक मास नियराई॥
जब दिन जन्मऋक्ष प्रभु आवा। नन्द दूध दधि घृत्त मँगावा॥
भँड़वा सकल शकट धरवाये। फिरिसबसुहृदननेवतिबोलाये॥

तेहिनिशि कालीकीन्ह बिचारा। आजु सबनकर करब सँहारा॥
नन्द समेत चौकपर आवै। यशुदा कृष्णहिं दूध पियावै॥
जो दधि दूध पक्व घृत खाहीं। ते बिष वेग मरहिं क्षणमाहीं॥
असकहि घृत दधि दूध जुठारा। हालाहल बिषसम करिडारा॥
तेहिअवसर प्रभुगरुड़ बोलाये। पयदधि घृत नवनीत पियाये॥
पुनि प्रभुमनमहँ कीन्ह बिचारा। बिषहा पात्र नाशकर द्वारा॥
तब प्रभु जाइ शकट निज तोरी। चूरण समसब कीन्हें फोरी॥
पुनि रस नन्द अवर मँगवावा। बिप्र बृन्द सब सुहृद जेंवावा॥

इति शकट विपाक॥

अथ तृणावर्त्त विपाक॥

तृणावर्त्त ब्राह्मण ब्रतधारी। अन्य देव निन्दक अघकारी॥
जब यह देव बिप्र कहुँ पावै। तिनसन हठकरि बाद मचावै॥
दुर्वासासन बाद मचावा। दैत्य होहु यह शाप सुनावा॥
जब मुनि शाप अनुग्रह कीन्हीं। हरिके हाथ मृत्यु कहिदीन्हीं॥
एक दिन यशुदा गोद खेलाये। हरिके भार बहुत श्रमपाये॥
तब धरणीम दीन्ह बैठारी। तृणावर्त्त आवा भयकारी॥
करिधरहट हरिकहँ हरिलीन्हों। नभपथ गयो भारप्रभु कीन्हों॥
ग्रीवा पकरि मारि तेहि डारा। जयति जयतिसुर करतपुकारा॥

अथ कंसमुण्डाविपाक॥

त्रो०। नृपनाथ सुनौ। हरिगाथ गुनौ॥ यह गुप्तकथा। हरिकीन्ह यथा॥ जो बधीखचरी। सो मुनीसगरी॥ होय कंस दुखी। लखि देव सुखी॥ अवतार लियो। यह शोचकियो॥ द्विजरूप करो। ब्रजपाउँ धरो॥ गोकुल पुरमें। यशुदा घरमें॥ जयजीवकरी। तेहि पायँ परी॥ सादर यशुदा। लय कृष्ण मुदा॥ द्विज गोद दयो। तेहि हर्षिलयो॥

द्विजखाहु दही। यह बात सही॥ आनहु जल ठण्ड। गहौ दधि भण्ड॥ चली यशुदा। जल लेन मुदा॥ गहिकृष्ण गले। तब कंस चले॥ गहि कंस शिरं। निज हाथ चिरं॥ दधिभण्ड कियो। तेहि छांड़ि दियो॥ व्याकुल मनमें। लपटे तनमें॥ सदनांगणमें। पटकें दधि में॥ ३॥

दो०। यशुदा देखि कहेउ हँसि ब्राह्मण धीरज हीन।
जबलग आनौ पात्रजल भण्डमध्य मुख कीन्ह॥

स०। कृष्ण छड़ाइ लिये यशुदा अरु कंस भजे शिर भाण्ड न सूझै। व्याकुल कौन दिशा विदिशा निज बातकहै न कही नहिं बूझै॥ धोती कहूं अरु पोथी कहूं कहुं मालपगा उरमाल अरूझै। भग्न कपाट भयो दधिभण्ड गले हरवा जनु श्वान समूझै॥ १॥

दो०। बालकृष्ण बल प्रबल लखि कंसगये निज गेह।
बधकारण अवतार हरि जानि स्वमन सन्देह॥

इति कंसविपाक॥

पहिली वर्ष जन्मदिन आवा। नन्दसुहृद द्विज नेवति जेमावा॥
यशुदा हरिको दूध पिआवै। निरखै मुख छुइ बहुत हँसावै॥
मुख पसारि सब लोक देखाये। यशुमति देखि परम भयपाये॥
लै हरिको पेलना पौढ़ारे। नन्द बोलावन गई दुआरे॥
नन्द यशोमति देखिनि आई। भीतर जीमत बैठ कन्हाई॥
कर मुख धोइ लाइ उरलीन्हे। दूसरि वर्ष चरित ये कीन्हे॥
तीसरिवर्ष गोपिका आवैं। निरखहिंहरिमुखअतिसुखपावैं॥
तिनको यशुमति जब अनखाहीं। लागिहिनजरि बातहँसिकहहीं॥
कारेन नजरि न लागिहि माई। जाहिं घूमि हरि दर्शन पाई॥

बहुत ओरहने के मिस आवैं। यशुदा तिनको बचन सुनावैं॥
रहत सदा गृह लाल हमारे। कसक अलक्षण करत तुम्हारे॥
जो गहि कान्ह इहां फिरि आनौ। तबमें सांचु ओरहनो मानौ॥
फिरी गोपिका घर हरि पाई। दधि मुख भरे पकरितहँ लाई॥
कह यशुमति नहिं कृष्ण हमारे। फिरि निरखहु पति अहैंतुम्हारे॥
देखिनि पति सब गईं लजाई। यशुमति हँसी कृष्णउर लाई॥
चौथी वर्ष चलन हरि लागे। लखि ब्रजवासी भये सभागे॥
कहब मयन्द विपाक बखानी। राम चरित लंकेश्वर हानी॥
रावण अमर हेत मखठाना। तहँगे बालितनय हनुमाना॥
यज्ञभंग रावण नहिं बोलै। महलकपाट बालिसुत खोलै॥
मन्दोदरी कही सुत आवो। अंग न छुवो दोष तुम पावो॥
अंगद गहे बसन के देशा। द्विविदजाय पकरे तेहि केशा॥
फिरि मयन्द कुचपट तेहि फारा। तब मन्दोदरि वचन उचारा॥
अंगद होइ पराजय तोरी। बालक करै शाप सुन मोरी॥
सुनुजड़ द्विविद दैत्य के काजा। मृत्यु तुम्हारि करै फणिराजा॥
सुनु मयंद मैं शाप सुनावौं। तुम पुनि म्लेक्षजन्म जगपावौं॥
दधिमुख ममसुख रहेउ निहारी। अधम पुरुष ताकै परनारी॥
हरिके हाथ दूधदधि खावौ। अरु नवनीत तासुकर पावौ॥
पातक शूद्र होइ तब तोरा। हरिपद जाहु वचनफुर मोरा॥
जब लवकुश सन कीन्ह लराई। अंगद तहां अवज्ञा पाई॥
नरकासुर की द्विविद मिताई। तेहि बलभद्र हाथ गतिपाई॥
भा मयंद यवनासुर वीरा। कृष्णरूप लखि तजो शरीरा॥
श्रीपति खेलत नन्द दुआरे। तहँ दधिमुख हरिजाय निहारे॥
अस्तुति कीन्ह राम तुम स्वामी। भयहु कृष्णहरि अन्तरयामी॥

यह सुनि कृष्ण ताहि लैआये। दूसरि पमरि गुप्त बैठाये॥
यशुदा जाइ मथन दधिलागी। मथनन दीन पानपय मांगी॥
जब पय पियनलाग यदुराई। दूधपात्र लागो उतराई॥
यशुदा जाय दूध सेरवावा। कपिका दधि नवनीति जेमावा॥
देखिहि मात आइ रसथोरा। प्रभुताते भँड़वा सोइ फोरा॥
हरि दधिमुख निजलोक पठाई। ओखरी बैठजाइ यदुराई॥

हरिबन्धन विपाक॥

बांधि बलिहि हरिसर्वसु लीन्हा। बलिकी त्रिया शापतब दीन्हा॥
ताके वचन लागि रघुराई। मेघनाद कर आपु बँधाई॥
फिरि यशुमतिओखरी में बांधा। नलकूबरहि जायप्रभु सांधा॥
ते कुबेर सुत नग्न बिहारा। नारिन संगमुनि जाय निहारा॥
गंगा मध्य देखि मुनि भाषा। होहुवृक्ष तुम शुभ अभिलाषा॥
नारद वचन लागि सुखकारी। यमलाअर्जुन तोरि मुरारी॥

अथ वत्सक विपाक॥

गोपसुतन संग वत्स चरावा। वत्सरूप धरि दानव आवा॥
वत्सासुर को मारि मुरारी। वत्सासुर की शाप उधारी॥
यमुना निकट बकासुर आवा। बकासुहद तेहिकंस पठावा॥
तबहिं बकासुर चोंच विदारी। पूरब जन्म हुऔं अपकारी॥
पंडित ब्रह्मदत्त के चेला। विद्यापढ़ैं करैं हठि खेला॥
पुनि पुनि मुनि नितबोलि पठावै। बिसरि खेलबस बहुत बकावै॥
अज्ञाभंग करत जड़जानी। तबै कोपि बोले मुनिज्ञानी॥
जड़पशु दैत्य होहुदोउ जाई। हारेन तुमहिं पढ़ाइ पढ़ाई॥
दूजे बकवादी बकरूपा। दैत्य होहु दारुण भवकूपा॥
जब यदुबंश कृष्ण अवतारा। तासु हाथ बधहोइ तुम्हारा॥

तेभे वत्स बकासुर आई। तिनहिं नन्द मार्‍यो यदुराई ॥
चौथी वर्ष चरित हरि कीन्हें। सो शुकदेव सकल कहि दीन्हें ॥

अघासुर विपाक ॥

बहुरि अघासुर कथा सुनाई। यक्षरहै दानवगति पाई ॥
शिव तड़ाग में फूल उतारे। शंकर तेहि दानव करिडारे ॥
कृष्णनाश हित कंस पठावा। सर्परूप बृन्दाबन आवा ॥
मुखपसारि बैठो मगमाहीं। बालक वत्स सकल मुखजाहीं ॥
करि प्रवेश हरिताहि सँहारा। सुमन वृष्टि नभभई अपारा ॥

ब्रह्मा विपाक ॥

ताहि मारि यमुनांतट आये। गोपन संग अशन प्रभुखाये ॥
सोलखि विधिहि भवाभ्रम भारी। बालरूप हरिचरित निहारी ॥
यंहिविधि हरि विधिको भरमावा। बालवत्स लै धाम सिधावा ॥
ते तरे रूप कृष्ण तनुधारी। देखि भयो विधिको भ्रमभारी ॥
पुनि ब्रह्मा निजधाम सिधाये। निरखे पुनि पुनि हरिपहँ आये ॥
चतुर्भुजी प्रभुरूप दिखावा। तब विधिहू करमन थिर आवा ॥
करिबिनती निजधाम सिधाये। बालक बत्सक बहुरि पठाये ॥

काली विपाक ॥

कालीदह यमुनाजल श्यामा। कालीदह फांदे घनश्यामा ॥
कालिहि जीति दीप पहुँचावा। करिलीला गोगोप जिआवा ॥
यमुना निर्विषोद हरि कीन्हा। तब ब्रजबासिन को सुखदीन्हा ॥
वर्षाकेलि कीन्ह भगवाना। सरल चरित शुकदेव बखाना ॥

चीरहरन विपाक ॥

जे गोलोक राधिका दासी। जन्मी ते ब्रज कृष्ण उपासी ॥
शरदकाल यमुना तट आवें। शुचि ह्वै कात्यायनिहिं मनावें ॥

होहिं कृष्णपति नित यहु नेमा। हरेवस्त्र तिन को लखि प्रेमा॥
बैठि कदंब कहत गिरिधारी। अनुचितकृतजलमांझ उघारी॥
हरिपहँ जाइ वस्त्रतिन लीन्हा। तिनका रहस केलि वरदीन्हा॥

ब्राह्मणी विपाक॥

ओदन हेत हरि गोप पठाये। द्विजन न दीन्ह घूमिफिरिआये॥
द्विजपत्नी लै हरिपहँ आई। तिनहिं मुक्तिदीन्ही यदुराई॥
पंचम वर्ष कथा यह गाई। छठयें वर्ष भये बनजाई॥
गोपताल बनदेखि लुभाने। धेनुक मारि तिनहिं सनमाने॥

धेनुक विपाक॥

सोयहबलिसुत सहसिक नामा। तपी जपी पंडित अभिरामा॥
ताहि अप्सरा लीन्ह लुभाई। मुनिको शापदेह खर पाई॥

गोवर्द्धन विपाक॥

इन्द्रहेतु गोपन मख ठाना। तिनसों कहीजाय भगवाना॥
गो द्विज अद्रिहेत मखजोगू। करत होय नाना सुखभोगू॥
कृष्णवचनसुनिगिरि द्विजपूजा। करनलगे करि प्रभु वपु दूजा॥
गोवर्द्धन बनि आपु पुजाये। फिरि परिक्रमा सबनकरवाये॥
निज मखभंग देखि सुरसांई। कह मेघन ब्रज देहुवहाई॥
सातवर्ष के भे गिरिधारो। महा बृष्टि सों ब्रजहिं उबारो॥
देखिप्रताप इंद्र खिसिआना। शीशनाइ त्यहि अस्तुतिठाना॥
सुरभीइंद्र तिलक पुनिदीन्हा। कहिगोविन्दगमन तिनकीन्हा॥

प्रलम्ब विपाक॥

पुनि प्रलंब बलभद्र संहारा। रुकुमांगद सोइ अवधिभुवारा॥
सोइवातापि जन्म यह लयऊ। ताहिमारि प्रभुनिजपद दयऊ॥

कु०। जो गुविन्दगिरिधर कहै पावैपद निर्वान।

सुनै प्रेमसन हरिकथा सो नर परम सुजान ॥
सो नर परमसुजान बहुरि यहिजग नहिंआवै।
मनवचक्रम दृढ़नेम सदा जो हरिपद ध्यावै ॥
रामभजन करजोरि रामसन यह वरमांगै।
बाढ़ै भक्तिअनंत ललकि मन हरिपदलागै ॥

इति श्रीराधाविषादमोचनावल्यांरामभजनत्रिवेदीबिरचितायां
दशमपूर्वार्धेअष्टचत्त्वारिंशत्तमोध्यायः॥ ४७ ॥

श्लोक। विश्वसर्गविसर्गादिनवलक्षणलक्षितम्।
श्रीकृष्णाख्यंपरंधामजगद्धामनमामतत्१ ॥

दो०। राधामाधव ध्यानधरि गणपतिगौरिमनाइ।
रामभजन वर्णन कियो श्रीगुरुआशिष पाइ ॥

चौ०। एकादशिब्रतकरिबजराई। निशि उठि यमुनाजाइनहाई ॥
बरुण के दूतपकरि लैआये। तहांजाइ प्रभु तुरतछुड़ाये ॥
बरुण कीन्ह अस्तुति हरि केरी। नंदहि विस्मयभई घनेरी ॥
तब गोपन गोलोक देखावा। सब मिलि परे ब्रह्म लखिपावा ॥
आठवर्ष के भे यदुराई। षोड़श वर्ष राधिका माई ॥
बृन्दावन में गे यकबारा। तहँ प्रभु निज माया बिस्तारा ॥
शारद चन्द्र मरीचि सोहाई। शीतल मन्द त्रिविध बह बाई ॥
फूलें सरसिज गुञ्जत भृङ्गा। नम्रपत्र तरु अरुण सुरङ्गा ॥
कामगीत गायो यदुवीरा। कोउ नारी मन धरत न धीरा ॥
तेहि अवसर बृषभानु दुलारी। सुनिवंशी धुनि बनहिंसिधारी ॥
ब्रह्मा सुतन सहित तहँ आये। करि बिवाह निजधामसिधाये॥
हरिमायाकृत पुर वनमाहीं। इन्द्रलोक जेहि पटतर नाहीं ॥

सुबरण मय गृह शुभ्र विताना। शय्या सुखद विचित्रबिमाना॥
राधा कृष्ण वास तहँ कीन्हों। कोटिन गोपिनको सुखदीन्हों॥
एक दिवस यमुनातट आये। करत बिहार महासुख पाये॥
अन्तरध्यान भये मद देखा। गोपिन मनभा शोचविशेखा॥
लै राधिकहि लोक दिखराये। पुनि यदुपति बृन्दाबन आये॥
हरि बिरहा ब्याकुल मनमाहीं। सकल गोपिका ढूंढ़न जाहीं॥
बन ढूंढ़त तिन राधा पाई। सौभगमद कहि तिनहिंसुनाई॥
यमुना निकट कृष्ण गुणगावा। भे हरि प्रकट श्रवण सुखपावा॥
जलथल रहस कीन्ह यदुराई। सो उछाह मोहिं कहि न सिराई॥
नभ बिमान सुर देविन साथा। तरे गोपिकन सँग यदुनाथा॥
जल थल नभ प्रसून झरिहोई। राधा कृष्ण कहैं सब कोई॥
रहस उछाह शशांक भुलाना। बीतिगये षटमास न जाना॥
करि विहार प्रभु मन्दिरआये। राधा प्रभुसन बचन सुनाये॥
धर्म हेतु प्रभु तव अवतारा। पर त्रिय भोग न कीन्हबिचारा॥
कह प्रभु सकल जीव ममरूपा। आत्माहौ मोहिं नहिं भवकूपा॥
जो तोरे मन शंका आवै। नदीपार तू मुनिहिं जिमावै॥
आत्माराम जो नन्दकुमारा। थाही होहु जाउँ मैं पारा॥
असकहि षटरसमुनिहिंजिमाये। तब दुर्बासा बचन सुनाये॥
जो मैं दूर्वा कीन्ह अहारा। सूखै नदी होहु तुम पारा॥
तब राधा मन गा संदेहू। परमातमा जानिभा नेहू॥
राजन कहब अवर इतिहासा। सादर बरनौ हरिब्रजबासा॥
नन्दादिक अम्बाबन आये। करि उपवास दरश शुभपाये॥
सो निशि नन्दउरगगहिलीन्हा। गोपन त्राहि २ हरिकीन्हा॥
कृष्ण चरण परस्यो तेहि शीशा। भा विद्याधरसुनु अवनीशा॥

देखि अङ्गिरहि सो मुसकाना। शाप ते सर्प भयो अज्ञाना॥
नाम सुदर्शन बिद्याधारी। ताहि तारि दीन्ह्यों गिरधारी॥
शङ्खचूड़ जालंधर भयऊ। हरिकर मरण मोक्षगतिलहेऊ॥
रहते हरी राधिका जाई। तहां ताहि मारयो यदुराई॥
ऋषि मतंग आश्रम पर जाई। बालि दुन्दुभी कीन लड़ाई॥
बालि दुन्दुभिहि जब रणमारा। मुनिके परी रक्तकी धारा॥
बालिहि मुनिवर शाप उचारा। रघुनायककर मरन तुमारा॥
कृष्णरूप हरि दर्शन पावौ। बदलो लै हरिधाम सिधावौ॥
यह तनु छांड़ि बधिकतन पैहै। हमरो शाप बृथा नहिं जैहै॥
जब यदुवंश कृष्ण अवतारा। तासु पाद शर लगै तुम्हारा॥
कृष्णरूप हरि दर्शन पावो। बदलो लै हरि धाम सिधावो॥
दुँदुभि जाइ दैत्य यह होवै। बृषभरूप ब्रजभूमि बिलोवै॥
ब्रज में भय करि है सोइ जाई। मारि ताहि तारहिं यदुराई॥
सो बृषभासुर कृष्ण निपाता। नारद कही कंस सों बाता॥
रामकृष्ण बसुदेव कुमारा। जिन दैत्यनकरकीन्ह सँहारा॥
सुनि तब कंस कोप अतिकीन्हा। शौरिहि मारनहितअसिलीन्हा॥
ताहि निवारि ब्रजहि पगुधारे। कंस शौरि बँदिखाना डारे॥
नारद कही कृष्ण सन जाई। बेगि कंस मारहु यदुराई॥
अस्तुतिकरि बिधि धाम सिधारे। तब ब्योमासुर कंस हँकारे॥
पठवा गोपरूप धरि आवा। खेलत गोपन बहुत चुरावा॥
तिनहिं खोह बिच राखिसिजाई। शिला द्वारदै फिरि तहँ आई॥
मय को सुत पकरयो यदुराई। हांरेके हाथ मुक्ति त्यहि पाई॥
पुनि ब्रज केशी कंस पठावा। अश्वरूप धरि सो ब्रज आवा॥
गर्जा महा प्रलय की नाहीं। रामकृष्ण सन्मुख चलिजाहीं॥

तहां ताहि मारो यदुराई । तासु बिपाक सुनौ कुरुराई ॥
प्रलय काल विधि सोवत पाये । हयग्रीव श्रुति गण हरिलाये ॥
मत्स्यनरायण ताहि निपाता । पाइ वेद यह कहेउ विधाता ॥
वेद विप्रधन जौन चुरावै । सो खलु मुक्ति कबहुँ नहिं पावै ॥
अश्वरूप यहु दानव होई । कृष्ण हाथ पावै गति सोई ॥
सोइ केशी यदुपति रणमारा । कीन्ह बर्ष नव चरित उदारा ॥
दशईं बर्ष कंस गोहराये । चाणूरादि सकल चलिआये ॥
मासचतुर्दशि शिव अनुरागा । कही कंस करिबो हम जागा ॥
तहँ सब भूपति न्यौति बुलावो । मल्ल युद्ध संग्राम करावो ॥
तहँ वसुदेवतनय दोउ आवैं । तिनहिंमारि ममजन सुखपावैं ॥
अस कहि तेहि अक्रूर बुलावा । रामकृष्ण हित ब्रजहिं पठावा ॥
हरिको देखि प्रीति अति बाढ़ी । सजलनयन रोमावलि ठाढ़ी ॥
तब अति कृष्ण कीन्ह सनमाना । पूँछिकुशल तिनसकलबखाना॥
नंदादिक सब गोप बुलाये । चलब मधुपुरी बचन सुनाये ॥
सुनत गोपिकन भा दुखभारी । राधहि मिले जाइ गिरिधारी ॥
शाप प्रसंग सकल भगवाना । कहिकहि बहुतभांति सनमाना॥
चले प्रात रथ चढ़ि यदुबीरा । गोपन तन मन धरत न धीरा ॥
यमुनातट प्रभु करि असनाना । बैठे चरितकीन्ह चहँ आना ॥
तब अन्हाय अक्रूर सिधाये । यमुना मध्य दरश हरि पाये ॥
उभयरूप निरखे सुखकारी । भा अक्रूरहि विस्मय भारी ॥
तबलग नंदादिक सब आये । मथुरहि गये बास सब पाये ॥
भोर भये मथुरापुर देखा । कहि न जात अतिशुभ्रबिशेखा॥
धोबी एक अवधि पुर रहई । सो दुर्बचन सिया का कहई ॥
तेहिते जन्म बहुरि तेहि पावा । कृष्ण ताहि हति लोकपठावा ॥

बसन न दीन्ह कही कटुबानी। पूरण ब्रह्म मनुज करि मानी॥

इति धोबी विपाक॥

अथ बायक विपाक॥

तिरहुत बसि द्विज वस्त्र चुरावा। ताते बायक तनु तेहि पावा॥
तेहि जब हरिके बस्त्र सुधारा। करिपूजन अस्तुतिशुभसारा॥
ताहि मुक्ति दै कृष्णमुरारी। बहुरि सुदामा अस्तुति सारी॥

माली विपाक॥

माला कुसुम शस्त गुहिलाये। रामकृष्ण गोपन पहिराये॥
ताहि मुक्ति दै जग सुखकारी। जाइ त्रिवक्रा नारि सुधारी॥

कुबरी विपाक॥

सो वह शूर्पणखा अघखानी। भई कूबरी मधुबन आनी॥
ताहि कामवर दै यदुबीरा। चंदन अर्पण फूल गँभीरा॥
रंगभूमि आये दोउ भाई। इन्द्र धनुप कर लीन्ह उठाई॥
कृष्ण चढ़ाइ खंड द्वइ कीन्हे। रक्षक मारि तुरत चलि दीन्हे॥
कंस तहां बहु सुभट पठाये। तिनहिं निपाति नंद पहँ आये॥
कंसहिं शोच भयो मनभारी। असगुन भये महाभयकारी॥
होत प्रात सब मल्ल बुलाये। मंचनपर सब जन बैठाये॥
द्वारे कीन्ह कुवलयापीला। महामत्त दुर्मद दुरशीला॥

कुवलयचाणूर विपाक॥

इहां विपाक कहब समुझाई। सुनौ नृपति तुम दृढ़ मनलाई॥
मणिपुर के केदार यक राजा। कीन्हों गुरू मोक्ष के काजा॥
कुवलय नाम विप्र अति लोभी। छलहित रूप बनावत सोभी॥
दान पुण्य नृप करै जो कोई। मूँड़ हलाय बंद करै सोई॥
एक समय देवलमुनि आये। याँचा कीन्ह दान नहिं पाये॥

तब मुनिवर यक बचन सुनावैं। चारिउ बन्धु दैत्य तनु पावैं॥
कुबलय होय कुबलयापीला। दुर्मद दुःसह अरु दुःशीला॥
कृष्णचन्द्र जब तोहिं सँहारैं। दन्त तोरि भल ते तोहिं तारैं॥
नृप हुइहौ मुष्टिक चाणूरा। शलतोशल रण दुर्मद शूरा॥
रामकृष्ण रण करि जब मारैं। चारिउ बन्धु जगत ते तारैं॥

कंसविपाक॥

कंस विपाक सुनौ नरनाहू। बरणौं तुमसन परमउछाहू॥
कंस रहै तिरि तिन को राजा। कालनेमि तप तेज बिराजा॥
तपबल यज्ञ भाग तिन लीन्हों। यज्ञ दान नानाबिधि कीन्हों॥
एक दिवस भृगु कह समुझाई। यज्ञ भाग दिति सुतन दिवाई॥
ते तुम्हारि सब करैं सहाई। देव पंक्ति तव होइ बड़ाई॥
कालनेमि भृगु कहा न कीन्हा। तब मुनिशाप कोपकरि दीन्हा॥
आसुर योनि जन्म त्रयबारा। जो नहिं मानेसि कहा हमारा॥
कालनेमि तेहि शाप सुनाई। तुमहूं जन्म लेहुमहि आई॥
कालनेमि कह शाप उधारौ। हरिके हाथ मृत्यु निरधारौ॥
प्रथमहिं दैत्य जन्म तेहि पावा। बलि सेनापति विष्णु नशावा॥
दूसर जन्म लंक माँ भयऊ। हनुमत लेन सजीवनि गयऊ॥
कालनेमि मगमाँ छल कीन्हा। पूंछ लपेटि पटकि कपि दीन्हा॥
सो यह कंस भयो जगआई। तेहि मख राम कृष्ण चलिजाई॥
द्वारे निरखि कुबलयापीड़ा। टारहु गज देखिय भटक्रीड़ा॥
यह सुनि सन्मुख गज दौरावा। सूँड़िपकरि प्रभु तेहि कढ़िलावा॥
पकरि दन्त तेहि दीन्ह गिराई। मरतै बिप्रदेह तेहिपाई॥
करि अस्तुतिबिधिधामसिधावा। तब यदुवर अंबष्ठ नशावा॥
सो यह शुकसारण मुनिहोई। प्रति दिन बिप्र जिमावतसोई॥

उत्कल दनुज सिन्धुतट वासी। आमिष मिलैगवा अघरासी॥
शुकहि शाप तब मुनिनसुनाई। सो लङ्का जन्म्यो कुरुराई॥
रावणसन रघुवर यश गावा। सोइ अम्बष्ठ जन्मि जगआवा॥
जो समुद्र सोखन के काजा। लीन्हो शर निज रघुकुलराजा॥
तेहि शर उत्कल हति रघुबीरा। तुरतै हरी सिन्धु उरपीरा॥
तासु अनुज षट रामसँहारे। कंस अनुज उपजे बलभारे॥
कुं०। राम कृष्ण भीतर गये धरे कांध गजदन्त।
जे बैठे तेहि सभा महँ निरखत उठे तुरन्त॥
निरखत उठे तुरन्त रूप लखि अतिसुख पावा।
निज निज मतिअनुसार देखिवांछितमनआवा॥
राम भजन कविकहै मातु पितु सुत करिमाने।
योगिन ब्रह्म निहारि शत्रु निज अरिकरि जाने॥९॥

इति श्रीराधाविषादमोचनावल्यांरामभजनत्रिवेदीविरचितायांकृष्णरंग प्रवेशोनामनवचत्वारिंशत्तमोऽध्यायः ४९॥

श्लोक। विश्वसर्गविसर्गादिनवलक्षणलक्षितं।
श्रीकृष्णाख्यंपरंधाम जगद्धामनमामतम्॥
दो०। उग्रसेन बसुदेव तहँ देवक देवकि आदि।
शत्रुभाव निरखहिं सकल मुनिजन पुरुषअनादि॥
चौ०। कहत परीक्षित दोउकरजोरी। कंसजन्म मोहिंकहोबहोरी॥
उग्रसेन बन गये शिकारा। मथुरा द्रुमिल दैत्य पगुधारा॥
उग्रसेन कर रूप बनावा। भीतरमहल द्रुमिलचलिआवा॥
रानिहि द्रुमिलऋतुमती जाना। तासन भोग कामवश ठाना॥
है निर्लज्ज नओढ़ौ रानी। करि रतियुद्ध बहुत हर्षानी॥
द्रुमिल कहा सुन सुन्दरिमोरी। क्षम अपराध बतावौं गोरी॥

हमरे बीर्य प्रबल सुतहोई। तासों जीति सकै नहिं कोई॥
विष्णुहि छांड़ि सकल जे देवा। जीति न सकैं करैं तेहि सेवा॥
असकहि दैत्यरूप देखरावा। रानिहिं छोड़ि द्रुमिलगृहआवा॥
तेहिते कंसराज संसारा। कालनेमि सोइ राजकुमारा॥
ते मधुपुरी जाइ पगुधारे। तिन हित दा बसुदेव निहारे॥
दानव मल्ल बाल शिशु देखी। भा सबके सन्देह बिशेखी॥
दैत्य न दीख प्रबल दोउ भाई। जानिनिमृत्युनिकटचलिआई॥
कह चाणूर सुनौ यदुराई। मल्लयुद्ध मोसन करुआई॥
तव मुष्टिक बलभद्र प्रचारे। भिरे क्रोधकरि दोउ बलभारे॥
शीर्षपात दोउ भुजा लपेटा। ग्रीवअग्र करि पाद झपेटा॥
तल चटपटा हूल उरपाता। मुष्टिप्रहार जानु दोउ घाता॥
तगड़ा बाहुबद्ध अरु लातें। करैं परस्पर दोउ मिलिघातें॥
तब चाणूर मुष्टिका मारी। ताहिपटकि दीन्ह्यों गिरिधारी॥
फिरि मुष्टिक बलभद्र सँहारा। सुमनबृष्टि नभभई अपारा॥
सल तोसल दोउ भिरे बहोरी। चरण पाद दीन्हे कटितोरी॥
चारिउ तन तजि गे सुरलोका। देखि कंसमन भा अतिशोका॥
बाजन तूर्य तुरन्त नेवारे। फिरि निजभाइन सकलहँकारे॥
कह वसुदेवतनय रण मारौं। अरु वसुदेवहि जाय सँहारौं॥
नन्दादिक सब गोप सँहारी। उग्रसेन तुम डारो मारी॥
लूटि फूंकि ब्रज सकल नसावौ। गाई इहां हांकि लै आवो॥
कंस गिरा सुनि जाइ प्रचारे। लै परिघा बलभद्र सँहारे॥
खड्ग उठाइ कंस गण टेरे। गोपन नाशकरो अरि मेरे॥
फिरि बसुदेव निपातौ जाई। उग्रसेन मारौ दोउ भाई॥
लूटि फूंकि ब्रज सकल नसावो। गाई इहां खेदि लैआवो॥

यह सुनि तुरत कृष्ण तहँ धाये। चोटियागहितेहि भूमिगिराये ॥
ऊपर फांदि भूमि कढ़िलावा। कंस मारि निज लोक पठावा ॥
जयति जयति सुर करतपुकारा। वर्षिफूल अस्तुति अनुसारा ॥
नभ अरु भूमि बाजने बाजे। मिलिप्रभुका यदुबंशी राजे ॥
बेरी काटि मातु पितु केरी। मथुरापुरी दुन्दुभी फेरी ॥
तिनको ऊर्द्ध दैहिक करवावा। मामा नारिन पुनि समुझावा ॥
उग्रसेन कीन्हे पुर राजा। भा उपवीत उछाह समाजा ॥
मुनिन समेत गर्गमुनि आये। दीक्षा दीन्ह महा धन पाये ॥
गर्गाचार्य शुक्र अवतारा। कालनेमिकृत भा संसारा ॥
नन्द यशोदा द्विज परितोषे। गोप बंधु कुल दै धन पोषे ॥
विद्या पढ़न गये दोउ भाई। सांदीपन सब दीन पढ़ाई ॥
कांशी चौंसठि दिनकरि बासी। चौंसठि कला पढ़ी अविनासी ॥
गुरु दक्षिणा देन के काजा। गहिगुरुचरण कही यदुराजा ॥
गुरुपत्नी गुरुअनुमति कीन्हो। मरो प्रभास मांगिसुत लीन्हो ॥
सिंधु तीर आये यदुराई। मिलो सिंधु चरणन शिरनाई ॥
पंचजन्य तेहि दैत्य बतावा। ताहि मारि निज शङ्खबनावा ॥
सुतलहि गये शङ्ख धुनि कीन्हा। सादर बलि उठि आगे लीन्हा ॥
पूजन करि अस्तुति अनुसारी। गुरुसुत दे मो कहो मुरारी ॥
बलि प्रसन्न होइ गुरुसुत दीन्हों। रामकृष्ण हरषित होइ लीन्हों ॥
मुरुहि पुत्र दै पुनि दोउ भाई। मधुबन गये भक्त सुखदाई ॥
पूर्व सनातन को अवतारा। उद्धव जन्म लीन्ह संसारा ॥
गेरहीं वर्ष बीति जब गयऊ। बरहीं उद्धवसन प्रभु कहेऊ ॥
गोपी गोप सकल प्रिय मोरे। समुझावहु तुम मोर निहोरे ॥
रथचढ़ि उद्धव ब्रजहि सिधारे। भूषण बसन रूपहरि धारे ॥

नन्द यशोदहि मिले बहोरी। आदर ज्ञान प्रीति नहिं थोरी॥
ज्ञान कथा कहि कहि समुझाये। फिरि उद्धव गोपिन पहँ आये॥
राधा निरखि कृष्ण कर रूपा। सादर आसन दीन्ह अनूपा॥
कह राधिका कहां तुम आये। कह उद्धव मोहिं कृष्ण पठाये॥
उनको कवन काज ब्रजमाहीं। गोपिनबिन प्रभुका कल नाहीं॥
प्रभु तोहिं गोपिन लेन पठाये। तुम्हरे हेत ज्ञान हमलाये॥
जानो कंसहि हतो मुरारी। कुब्री भई प्राणते प्यारी॥
मरिहैं गोपी बिरह सताये। हमहिं लेन हित कृष्ण पठाये॥
कंस पिंड हित हमहिं मँगाये। तब उद्धव उठि पद शिरनाये॥
तव इकभृंग तहां चलि आवा। तासों राधा बचन सुनावा॥
कुब्री कुच कुंकुम पदतोरे। मोक्षै भरी न पदक्षुर मोरे॥
कुंकुम स्रगधरि तुम इत आये। यदुबंशी जगलाज लजाये॥
भ्रमर धोइ मुख तुम इत आवौ। तबमोहिं हरिकेचरित सुनावौ॥
कह उद्धव यह हरिकी पाती। बाँचहु वेगि जुड़ावहु छाती॥
यामें लिखो ज्ञान बैरागा। मन संयम विषयनकर त्यागा॥
सांख्य रीति आतमकर ज्ञाना। अरु अष्टांग योग हरिध्याना॥
निर्णय ब्रह्मजीव कर माया। तेहि जानौ वेदान्त बताया॥
मीमांसा सत्कर्म बतावै। ब्रह्मज्ञान करि जगनहिं आवै॥
परे ते परे परे सत लेखा। तत सत्पूरुष कहत विशेखा॥
जिमि घट मठ नभमें नभव्यापा। तिमि जगमें प्रभुन्याय कलापा॥
यहिविधि घटघटहै गिरिधारी। भक्ति समेत भजौ तुम प्यारी॥
असकहि उद्धव कीन्ह प्रणामा। आये मथुरहि जहँ सुखधामा॥
ब्रजकी सकल व्यवस्था जैसी। उद्धव कही कृष्णसन तैसी॥
तुमरे विरह सकल ब्रजबासी। युगसम दिवस रैनि षटमासी॥

जे गौयें तुम कृष्ण चराई। ते तृण चरैं न विपिन बँबाई॥
हंस करंडव चात्रिक मोरा। शब्द न करैं विरह दुख तोरा॥
सब तरु विपिन फूलफल हीना। पीतपत्र तव विरह मलीना॥
यहिविधि दशाजड़नकी आई। चैतन्यनगति किमि कहिजाई॥
कह प्रभु ये सब जगते न्यारे। व्रजबासी मोहिं बहुत पियारे॥
असकहि प्रभु उद्धव सँगलीन्हा। कुबरी भवन गवन तबकीन्हा॥
कुबरी दीख कृष्णघर आये। लै सादर पलँगा बैठाये॥
करि शृंगार चन्दन घिसिलाई। करिपूजन हँसि गिरा सुनाई॥
निरखत पन्थ रहेउँ दिनराती। अब प्रभु देखि जुड़ानी छाती॥
अब कछुकाल मोर गृह नाथा। बासकरौ मैं होहुँ सनाथा॥
असकहि भोजन रुचिर कराये। लै उद्धव गृह अनत बसाये॥
आंरति साजि गई हरिपासा। करि विहार मन बहुत हुलासा॥
प्रभु कछुकाल बास तहँ कीन्हों। फिरि अक्रूर भवन चलि दीन्हों॥
सुनि अक्रूर तुरत उठिधाये। पूजन करि आसन बैठाये॥
कहप्रभु तुम हस्तिनपुर जाई। लै सुधि सकल पृथा समुझाई॥
मिलि धृतराष्ट्र कहौ सब मोहीं। हैं प्रिय बन्धु निहोरौं तोहीं॥
रथ चढ़ाइ अक्रूर पठाये। निजगृह घूमिकृष्ण फिरिआये॥
हस्तिनपुर अक्रूर सिधाये। मिले सबहिं कुन्ती गृहआये॥
करि आदर सब कथा सुनाई। जो जो क्लेशदीन्ह कुरुराई॥
पुनि धृतराष्ट्र सभा चलिआये। धर्मनीति कहिनृप समुझाये॥
फिरि अक्रूर गये निज धामा। सकल चरित पाये घनश्यामा॥

कुं०। यह हरिद्वादश वर्षकी कथाकही सुखखानि।
पुर्वारध यह दशमको निजमति कहो बखानि॥
निजमति कहो बखानि सुनै जे नर अरु नारी।

हरिचरित्र सुखखानि मोक्ष प्रद अतिसुखकारी ॥
रामभजन कविकहै यथामति हरियश गावा।
मानस सुखद रसाल शास्त्रमत जो सुनि पावा ॥

इति श्रीराधाविषादमोचनावल्यांरामभजनत्रिवेदीविरचितायांदशमपूर्वार्द्धे
वर्णनोनामपंचाशत्तमोऽध्यायः ॥ ५० ॥

श्लोक। जैनीश्रुतंभागवतंपुराणंनाराधितोजैःपुरुषःपुराणः।
हुतंमुखेनैवधरामराणांतेषांवृथाजन्मगतोनराणाम् १॥

श्रीशुकउवाच ॥

दो०। अब नृप तेरहींवर्षकी कथा सुनौ मनलाय।
जाहिसुने सुख ऊपजै पापपहार बिलाय॥

चौ०। अत्रि प्राप्ति रानी तेहिकेरी। कंस मरनलखि त्रास घनेरी॥
मागध जाइ पिता पहँ रोई। तुमरे जियत हमहिं दुखहोई॥
कह मागध बैठहु गृहमाहीं। यादव नाश करौं रणमाहीं॥
अस कहि तेइस क्षोहिणि साजा। लागे बजन जुझाऊ बाजा॥
जाइ जरासुत मथुरा घेरी। चहुँदिशि बजै जुझाऊ भेरी॥
ढोल नफेरि पणव सहनाई। शंख मृदंग तूर्य धुनि छाई॥
गर्जहिं अतिबल शूर घनेरे। चपल तुरंग वेग गतिफेरे॥
बाजैं ताल माल रणकाजा। गज चिक्करहिंचढ़े रण राजा॥
मथुरा खलभल होत घनेरे। कोइ पितु पुत्र मातुकहि टेरे॥
मागध पुर घेरो चहुँ ओरा। अब भा मरण करैं सब शोरा॥
यह अक्रूर कृष्ण लै आवा। राज नाशहित कंस जुझावा॥
मागध दल सागर बरियारा। अस जग शूरको पावै पारा॥
यहिपुर में कोइ बचन न पावै। जरासन्ध यदुवंश नशावै॥

यहिविधि सब व्याकुल पुरलोगा । कीन्ह कृष्ण रणहित संयोगा ॥
कछु यादवदल लै प्रभु धाये । जरासन्ध सन्मुख चलिआये ॥
हल मूसल बलभद्र सिधारा । सन्मुख जरासन्ध ललकारा ॥
रे मम शूर वचन सुनिलेहू । जियत कृष्ण रण जाननदेहू ॥
यह सुनि अस्त्रशस्त्र लैधाये । रामकृष्ण सन्मुख चलिआये ॥
चलैं भुशुण्डि शतघ्नि अपारा । मारु मारु सब करैं पुकारा ॥
बाण त्रिशूल शक्ति गहिधावैं । रामकृष्ण पर कोपि चलावैं ॥
प्रभु शारंग कीन्ह टंकोरा । रिपुदल बधिर भवा सुनिशोरा ॥
कोटि कोटि शरत्यागन कीन्हें । रिपुदल शीश काटि प्रभुलीन्हें ॥
कोउ शिर पाद मध्य भुजदण्डा । कोउ रणशूर होहि शत खण्डा ॥
रुण्ड मुण्ड बिन कोटिन धावैं । मारुकाटु नभ मूढ़ मचावैं ॥
रुण्ड कृपाण लिये करमाहीं । निजपर गनै न मारत जाहीं ॥
कोटिन गज पर्वत से डारे । परे अश्व बहु कृष्ण सँहारे ॥
रण नरशिर कच्छप से लागैं । परी कमल सम सोहैं पागैं ॥
केश सेवार रक्तकी धारा । धनुतरङ्ग दल युग्म करारा ॥
संकर्षण दल हल भरिलेहीं । मुसल प्रहार फोरिसब देहीं ॥
कोटिन घायल करहत डारे । कोटिन मरे मुसल के मारे ॥
जरासन्ध दल करि संहारा । हलधर सन्मुख जाइ प्रचारा ॥
मारेसि गदा माँझ उर माहीं । हलकर्षणकरि बाँधेउ ताहीं ॥
कृष्णं आइ बहुविधि समुझाये । करि विनतीकहिसुहृदछोड़ाये ॥
हरण चहत पृथ्वी कर भारा । आनहिंदल फिरिकरब संहारा ॥
यहि विधि समर सप्तदश कीन्हें । कृष्ण अकेलछांड़ि तेहिदीन्हें ॥
नारद यवनासुर पहँ जाई । युद्ध हेत तेहि दीन्ह पठाई ॥
सुनहु कृष्ण लीला सुख खानी । नृपदर्शन यवनासुर हानी ॥

तीनि करोरि म्लेच्छ सँग लावा। मथुराचहुँ दिशिआनि घेरावा॥
रामहिं पुर रक्षक करिधाये। सिन्धु मध्य पुर रुचिर बनाये॥
आठौ लोकपाल तहँ जाई। शुभ्र द्वारका तुरत बनाई॥
सब यादव द्वारका बसाये। कृष्ण पियादे सन्मुख आये॥
शङ्ख चक्र गदपद्म सुहाये। बनमाला अतिशुभ्र बनाये॥
देखि यवन धावा ततकाला। भजि गिरिवर चढ़िगयेगोपाला॥
गिरि कन्दरा पैठि प्रभु गयऊ। निज पटपीत ओढ़ावत भयऊ॥
अन्तरध्यान भये यदुराई। पाद प्रहार कीन्ह खलजाई॥
उठि मुचकुन्द भस्म तेहिकीन्हा। राजहि कृष्ण दरश तब दीन्हा॥
देवनसन पायहु वरदाना। गुहा मध्य सोवतनहिं जाना॥
तेहि प्रभुकहँ निज कथा सुनाई। अस्तुति कीन्हचरण शिरनाई॥
बदरी बनका ताहि पठाई। फिरि यवनासुर फौज नशाई॥
जरासन्ध पुनि दल लै आवा। विप्र वृन्द सहाय सँग धावा॥
रणतजि प्रभु रणछोर कहाये। भजि दोउ बन्धु प्रवर्षण आये॥
सोइ पर्वत तेहि दीन्ह फुँकाई। गिरिते फांदि गये दोउभाई॥
ब्रह्मलोक गा रैवत राऊ। ब्रह्म सभा कछु होत उछाऊ॥
भये गहरु पूंछो विधि पाही। यह कन्या केहि देउँ बिवाही॥
कहविधि बहुतकाल चलिगयऊ। त्रेताते अब द्वापर भयऊ॥
द्वारावती शेष अवतारा। रामभये बसुदेव कुमारा॥
ताहि बिवाहि जाहु हरिधामा। सोइनृपकीन्ह न कीन्हबिरामा॥
लै रेवती राम कहँ दीन्हीं। दै दायज बिनती बहुकीन्हीं॥
गये द्वारकहि ब्राह्मण आवा। रुक्मिणि कर सन्देश सुनावा॥
चढ़ि रथ कुण्डिन पुर प्रभु आये। चैद्यजीति रुक्मिणि हरिलाये॥
यहि विधि आठ कीन्ह पटरानी। षोड़श सहस भौमहति आनी॥

परीक्षितउवाच ॥

कृष्ण विवाह कथा मुनिराऊ। वरणि सुनावहु सहित उछाहू ॥

श्रीशुकउवाच।

सुनु शिशुपाल चँदेली को राजा। रुक्मी कीन्ह विवाह समाजा ॥
भीषम कही कृष्ण कहँ देहू। यहिको हरिपद बहुत सनेहू ॥
सब बन्धुन के अस मनमाहीं। रुक्मिणि देहु कृष्णकाव्याही ॥
एक समय नारद इतआये। रुक्मिणिचरितसकलमुनि गाये ॥
तुमहो जनक जानकी कन्या। रुक्मिणि भई लोकत्रय धन्या ॥
रघुवर केर कृष्ण अवतारा। करहु विवाह न तोहि संसारा ॥
रुक्मी भीषम कहा न माना। रुक्मिणि बोलि विप्रसनमाना ॥
जाहु द्वारकहि यह लै पाती। अवहिं नव्याहुतीनि दिनराती॥
मोहिंहरिलेहिं आइ यदुवीरा। चौथे दिवस देहरा तीरा ॥
यहसुधि पाइ कृष्ण तहँ जाई। भीष्मक आइ कीन्ह पहुनाई ॥
अति आदर जनवासा दीन्हा। नेगयोग विधिवत सब कीन्हा ॥
पाछे सकल बराती आये। राम आदिलै सकल टिकाये ॥
कुण्डिनपुरजन कृष्ण निहारे। ते सप्रेम सब वचन उचारे ॥
रुक्मिणि योग्य कृष्णवरु भाई। नहिं शिशुपालसुरन दुखदाई ॥
है शिशुपाल बरात गँभीरा। जरासन्ध आदिक जहँ वीरा ॥
कृष्ण विवाह करन नहिं पावे। हमका बहुत शोच मन आवे ॥
सोरह वर्ष ब्रह्म अरु रामा। कोमल वपुन योग्य संग्रामा ॥
वहां पर्वताकार शरीरा। आयेसजि रणहित रणधीरा ॥
कोउकह कृष्ण विष्णु अवतारा। इनहिं जीति कोउपाव न पारा ॥
सत्रह बार जरासुत जीते। फौज नसाइ गये गृहरीते ॥
इहां रुक्मिणी करि शृंगारा। पूजन देवसदन पगुधारा ॥

तहँ शिशुपालहु सुभट पठाये। सजि सजि अस्त्रशस्त्र सबआये॥
राजद्वार अरु देवल पाहीं। बैठनि नग्न शस्त्रकर माहीं॥
गज तुरंग रथ साजु बनाई। चहुँदिशि घेरिरहे समुदाई॥
गरुड़ध्वज तहँ गये तुरन्ता। देखिनि बहुतभीर भगवन्ता॥
देवि पूजि निकरी महरानी। सुमिरिनि कृष्णरूप गुणखानी॥
जगमोहनिचितवनिनिजकीन्हा। चन्द्र समान खोलिमुख दीन्हा॥
चहुँदिशि चितवत वदन उघारे। यहिअवसर कहँ प्राणपियारे॥
सब गिरिपरे नयनशर लागे। निरखो रुक्मिणि हरिरथआगे॥
करिप्रणाम रथचढ़ी तुरन्ता। नृपनमध्य निकसे भगवन्ता॥
लेहु लेहु नृप करत पुकारा। निज दलगे बसुदेव कुमारा॥
साजि साजि सब नरेश तहँ धाये। जरासन्ध आदिक चलिआये॥
रुक्मिणि देखो नृप दल भारी। कृष्णचन्द्र मुख रही निहारी॥
नाथ स्वल्प योधा संग लाये। महाघोर दल नृप सब आये॥
हँसि कह कृष्ण धीर धरु प्यारी। संकर्षण सब हतहिं प्रचारी॥
राम सदृश सत्तरि मम भाई। इनसन अस को लेइ लराई॥
सब नृप करन युद्ध तब लागे। कटे शूर कबन्ध बहु जागे॥
शाल्व अनी बलभद्र नसाई। हतिमुसलन तेहिदीन्ह गिराई॥
दन्तवक्र कटि हलबल डारा। मुसलनहति मूर्च्छित करिडारा॥
जरासन्ध प्रभु व्याकुल कीन्हा। गहिपदताहिपटकिमहिदीन्हा॥
शुकसारण गद फौज नसाई। घायल भये सकल क्षितिराई॥
क्रोधवन्त सब भे यदुबीरा। भजी फौज रण धरैं न धीरा॥
सवन सुनाइ रुक्म प्रण कीन्हों। सँगअक्षौहिणीएक दललीन्हों॥
जीते बिना घूमि घर आवों। तौ मैं भीष्मक सुतन कहावों॥
रथ चढ़ि गयो कृष्ण के तीरा। प्रभु सन कीन्ह युद्ध गंभीरा॥

अस्त्र शस्त्र बहुभांति चलाये। काटि कृष्ण ते सकल गिराये॥
तेहि मारन प्रभु खड्ग उठाई। रुक्मिणि चरण गईं लपिटाई॥
करि अस्तुति निज बन्धुबचावा। रुक्मी मान भंग तहँ पावा॥
दाढ़ी मोछ केश बिन छांड़ो। लागी लाज दुःख मन बाढ़ो॥
तासु फौज बलभद्र संहारा। आये जहँ तहँ कृष्ण उदारा॥
कृष्ण रुक्मिणिहिं बलसमुझाये। सबमिलि बहुरि द्वारकहिआये॥
रुक्म भोजकट नगर बसावा। श्रमबश बहुरि घरहिनहिंआवा॥
इहां कृष्ण कर भयो बिवाहू। कीन्ह सबनमिलि बहुतउछाहू॥

दो०। रुक्मिणि कृष्ण बिवाह की कथा कही सुखखानि।
नृप अब आगे कहब हम अवर बिवाह बखानि॥

इति श्रीराधाविषादमोचनावल्यांरामभजनत्रिवेदीविरचितायांरुक्मिणि कृष्णविवाहोनामएकपञ्चाशत्तमोऽध्यायः॥ ५१॥

श्रीशुकउवाच॥

दो०। सत्राजित रविभक्ति करि लही स्यमन्तक रत्न।
देवसदन बनवाइके पूजी करि बहु यत्न॥

आठ भार सोनो नित देई। दारिद दुख अरिष्ट हरि लेई॥
पूजे बिन अरिष्ट दुख पावै। मणि निजगुणहिंप्रगटदरशावै॥
कृष्ण कही मणि नृप को देहू। जो तुम हमसन करहु सनेहू॥
सत्राजित प्रभु कहा न कीन्हा। बांधि प्रसेन कंठ सोइ दीन्हा॥
बांधि कंठमणि गये शिकारा। सिंह प्रसेनहिं बन संहारा॥
मणिलै चलोजात गिरितीरा। मारिनि जामवान बलबीरा॥
सो मणि लै निजबालकदीन्हा। बंधु शोच सत्राजित कीन्हा॥
मांगी रत्न न भै तेहि दीन्हा। सो यहसकलकृष्ण छलकीन्हा॥

अपयश सुनि प्रभु बनहिं सिधाये। बन महँ मरे प्रसेनहिं पाये॥
साथिन कहँ साखी प्रभु कीन्हे। लै तेहि चिह्न अनत चलि दीन्हे॥
मारे परो सिंह तहँ देखा। पर्वत गुहा जाय प्रभु पेखा॥
साथी सकल द्वार ठढ़िआये। भीतर गुहा पैठि प्रभु आये॥
क्रीड़न करत बाल मणि बांधे। लेन हेत प्रभु गे त्यहि रांधे॥
धत्री बाल चिकार सुनावा। तुरतहि जामवान चलिआवा॥
मल्लयुद्ध त्यहि कीन्ह अपारा। लात दांत तल मुष्टि प्रहारा॥
जीति न सको जानि भगवाना। दै कन्या त्यहि अस्तुति ठाना॥
द्वादश दिवस गये सब आये। बिल प्रवेश कहि सबहि सुनाये॥
ते सब जाइ देउहरा तीरा। पूजत दुर्गहि सकल अधीरा॥
तहँ तब नारि सहित प्रभु आये। मिले सबहि पुर बजत बधाये॥
गौरी जाम्बवती अवतारा। जामवान हिमगिरि बलसारा॥
सत्राजितहि लाज भय आई। जब यहिबिधि प्रभु ते मणि पाई॥
विधिवत सत्यहि दीन्ह बिवाही। दीन्ह रत्नमणि दैजे माहीं॥
सत्राजित सत्यव्रत राऊ। जेहि देखो प्रभु मत्स्य प्रभाऊ॥
जाम्बवती कर कीन्ह बिवाहू। यदुपुर भये सबहि सुख लाहू॥
एकबार हस्तिनपुर आये। रामकृष्ण मिलि सब सुख पाये॥
कृतवर्मा अक्रूर प्रचारा। शतधन्वा सत्राजित मारा॥
सत्या करि बिलाप बहुभांती। तैल नाव धरि हरिपहँ जाती॥
रामकृष्ण यह जानि प्रसंगा। आये गृह सत्या लै संगा॥
शतधनु कृष्ण आगमन जाना। रथ चढ़ि पूरब कीन्ह पयाना॥
पाछे रामकृष्ण तेहि धाये। ताहि जनकपुर निकट नसाये॥
राम जनकपुर का चलि दीन्हों। जनक राज आदर अति कीन्हों॥
सुनि पुनि तहां सुयोधन जाई। गदायुद्ध बलभद्र सिखाई॥

फिरि श्रीकृष्ण द्वारकहि आये। ससुरकर्म सबभांति कराये॥
काशिहि भाजि गये अक्रूरा। द्वारावती उपद्रव पूरा॥
कृष्ण सकल बय वृद्ध बोलाये। पूंछो तिन वृत्तांत सुनाये॥
मणि अर्चन बिन मानसरोगा। पूजे होहिं सकल सुख भोगा॥
अक्रूरहि मणि शतधनु दयऊ। सो मणि लै काशीका गयऊ॥
सुनि प्रभु तब अक्रूर बोलाये। लै मणि पूजि बहुत सुखपाये॥
जो यह कथा सुनै अरु गावै। अपयश तासुनिकट नहिंआवै॥
इन्द्रप्रथ पुनि गे यदुराई। मिले पांडुसुत अति सुखपाई॥
खांडव वन प्रभु जाय चरावा। फिरि मयदैत्यहि जरतबचावा॥
सभा सुधर्मा प्रभु बनवाई। मृगया गये विजय यदुराई॥
यमुना निकट नारि यक देखी। सूर्य्यप्रभा सम रूप विशेखी॥
अर्जुन जाइ कही त्यहि बानी। को तुम कौन पिता सुनुरानी॥
कालिंदी है नाम हमारा। पितासूर्य्य जेहिजगउजियारा॥
विष्णु हेत हम जग तप कीन्हा। सुनि प्रभु तेहि चढ़ायरथलीन्हा॥
उनइस वर्ष कृष्ण जब भयऊ। तेहि विवाह हस्तिनपुर भयऊ॥
तेहि लै कृष्ण द्वारकहि आये। लागे घर घर बजन बधाये॥
बिन्दा अनुबिन्दा द्वइ भाई। हटकिन कुरुपति आयसु पाई॥
मित्रबिन्दा भगिनी तिनकेरी। हरिचरणन पर प्रीति घनेरी॥
जाइ स्वयम्बर प्रभु हरि लीन्ही। सबकी समर पराजय कीन्ही॥
तासु विवाह कीन घर आई। तेहि पितु दैजो दीन्ह पठाई॥
भद्रा पितृस्वसाकी जाई। ताहि विवाहि लीन्ह यदुराई॥
जब प्रभु अङ्गीकार न कीन्हा। नारद बचन मानि तेहि लीन्हा॥
अवध नरेश नग्नजित नामा। तनया तासु रूप गुणधामा॥
सुनि तेहि कृष्ण अवधपुर आये। राजा लै निजधाम टिकाये॥

नग्नजिती देखो हरिरूपा। बीस बर्ष तन शुभ्र अनूपा॥
देव पितर हर सूर्य मनावौं। अस कछु करौ कृष्णपतिपावौं॥
कह नृप कवन हेतु प्रभु आये। अहोभाग्य तव दर्शनपाये॥
क्षत्रिन यांचा गर्हित गाई। तदपि तुम्हैं यांचउँ हित पाई॥
निज कन्या मोहिं देहु बिवाही। सुनि नृपबोले बचन सराही॥
कन्यायोग्य अहौ बरुनाथा। लोकपाल जेहि नावैं माथा॥
जो जग रचि जगमें अवतारे। सो करि कृपा यहां पगुधारे॥
मम प्रण सप्त ऋषभ बलभारे। जिन बहु भूपन प्रथम सँहारे॥
तिनहिं बांधि लावहु जो नाथा। कन्यावरौं चरण धरिमाथा॥
परिकरि बांधि गये यदुराई। पकरिबांधि नृप दीन्ह देखाई॥
नृप समेत हर्षित पुरवासी। निरखन चले सकल सुखरासी॥
भई अवधपुर मंगलखानी। चढ़ी महल निरखैं सबरानी॥
कोइ कह इन गिरिवर कर धारो। इन्द्रमान मथि ब्रजहि उबारो॥
कोउ कह कंस सुभट रणमारो। जरासन्ध रण इनते हारो॥
कुंडिनपुर नृप सकल भजाये। कोउ कह ये रुक्मिणि हरिलाये॥
कोउ कह ये गोलोक निवासी। वेद बिप्रपालक सुखरासी॥
कोउ कहसखि निजपलक न देहू। इनको रूप नयन भरिलेहू॥
धन्य नग्नजित कन्या जाई। जेहि सुन्दर मूरति दरशाई॥
यहि बिधि सकल कहैं पुरलोगा। कीन्हो नृप बिवाह संयोगा॥
कन्यादान कीन्ह नृपनाहू। भयो अवधपुर परम उछाहू॥
दैजो दीन्ह बिदा नृपकीन्हों। तव निज भवनगमनप्रभुकीन्हों॥
मारग चलेजात भगवाना। नृपन युद्धकीन्हे बिधिनाना॥
अर्जुन सब्वरिपाय तहँ धाये। सबन जीति द्वारावति आये॥
जिनके वृषभन सुहृद सँहारे। ते रणतजि निजभवनसिधारे॥

मत्स्यवेध करि सब नृपहारे। तब नरपति मनभये दुखारे॥
यदुपति तब कीन्हों शरघाता। चढ़िकटाह असिमत्स्यनिपाता॥
करि शृङ्गार सखी लै आई। जयमाला प्रभु कहँ पहिराई॥
देखि लक्ष्मण रूप विशाला। कामबश्य कोपे महिपाला॥
कोउ कह छीनि लेब हम भाई। हमरे जियत आन लै जाई॥
कोउ कह मष्ट करो जनि भाखौ। मनकी बात मनै बिच राखौ॥
मत्स्यवेध करिसकेहु न भाई। फिरि अब कहां शूरता पाई॥
साधु भूप घर का चलिदीन्हें। कामी नृपन अस्त्र निजलीन्हें॥
लै लक्ष्मणहिं साजि धनु लाये। नृपन जीति द्वारावति आये॥
इकइस बर्ष भये गिरिधारी। आठ बिवाह किये बरिआरी॥
तिन्हिं कृष्ण कीन्हीं पटरानी। सोरह सहस भौम हतिआनी॥
द्वाविंशति में नारद आये। पूजन करि हरि ढिग बैठाये॥
पारिजात कर सुमन सोहावा। दीन्हों मुनि प्रभु शीशचढ़ावा॥
सो प्रसून रुक्मिणिकर दीन्हों। सत्याभवन गमन मुनिकीन्हों॥
नारद सब बृत्तान्त सुनाये। जेहि बिधि पारिजात लैआये॥
सो रुक्मिणिहिं दीन्ह यदुराई। सत्या कोपभवन सुनिजाई॥
नारद कही कृष्णसन जाई। इन्द्रमातु सन्देश सुनाई॥
नरकासुर कुण्डल ममलीन्हें। मो कहँ ससुर मातु जे दीन्हें॥
इन्द्रके चमरछत्र लै जाई। ताहि मारि मोहिं देहु पठाई॥
यह कहि नारद गे बिधिधामा। सत्याघर आये घनश्यामा॥
कंह प्रभु कवन चूक हमकीन्हा। ताते कोपभवन तुमलीन्हा॥
यहि विधि कहि प्रभु गोदउठाई। बोलत नहिं बहुबिधि समुझाई॥
बोलौ मुख कछु कहौ पियारी। बार बार असकहि गिरिधारी॥
कह सत्या रुक्मिणि गृहजाई। उनहिं मनावहु प्रभु मुसकाई॥

हमरे मात पिता नहिं नाथा। तुम बिन जगको करै सनाथा॥
सबके योग्य पुष्प प्रभु नाहीं। जो दीन्हों रुक्मिणि करमाहीं॥
कह प्रभु शोच प्रिया तजि देहू। पारिजात अपने गृह लेहू॥
असकहिप्रभु तब गरुड़ बोलावा। सत्याकर शृङ्गार करावा॥
सत्या सहित जाय यदुराई। शस्त्र दुर्ग सबदीन्ह नसाई॥
अग्नि दुर्ग जलदुर्ग कराला। चक्र सोकि लीन्हों ततकाला॥
लै प्रभु गदा दुर्गगिरि फोरा। उठि मुरदैत्य कीन्ह अतिशोरा॥
पांच बदन पसारि सोइधावा। गर्जि तर्जि प्रभु आगे आवा॥
प्रभु पर कीन्ह त्रिशूल प्रहारा। लै प्रभु चक्र काटि सोइ डारा॥
तासु शीश सब काटि गिराये। तेहिके सातपुत्र सुनिधाये॥
पीठ चमूपति भौम पठावा। लै गजसेन तहां चलिआवा॥
बाण शतघ्नि भुशुण्डि समूहा। शूलशक्ति गिरि तरुवर जूहा॥
अस्त्रकाटि प्रभु सकल नेवारे। गरुड़ दैत्य गज सेन संहारे॥
तीनि क्षोहिणी बध सुनि काना। चला सेनलै भौम रिसाना॥
गर्जत महाप्रलय की नाईं। कोटि शतघ्नी दीन्ह दगाई॥
तब खगपति नभ पंथ उड़ाना। गिरो तासु दल काल समाना॥
नखन बिदारै चोंचन खावै। पक्षन मारै सैन उड़ावै॥
यहिविधि तासु सेन सब मारी। नरकासुर धावा भयकारी॥
लै तिरशूल कृष्णके मारा। बीचहि गरुड़ तोरि तेहिडारा॥
लैकर चक्र काटि शिरडारा। जयति जयतिसुर करत पुकारा॥
बरषत फूल दुंदुभी बाजी। नृत्यगीत नभ आरति साजी॥
अस्तुति कीन्ह भूमि प्रभुकेरी। पुनि अंगारहि लाई टेरी॥
मोर पुत्र ते को लघु भाई। यहिपर कृपा करहु यदुराई॥
ताहिं राज्यदै दीनदयाला। सोरहसहस मिलीं तहँ बाला॥

सत्याभूमिहि पूंछति बाता। दुष्टपुत्र जन्मेहु किमि माता॥
कह भू सतयुगभे पृथुराजा। मोहिं दुहिनि लैकसनिसमाजा॥
दुहिताभाव मोर नृप राखा। अन्यनृपति पत्नी अभिलाखा॥
केहुकि नारि न केहु कुलजाई। मोहिं पत्नी जग बृथा बताई॥
क्षत्री मृत्युवश्य जग जाये। ते भूपति इति बृथा कहाये॥
सबन कृष्ण अर्क अस लेखा। अमा इन्द्रगृह चलि मैं देखा॥
कुदिनजानि तहँ शची न आई। तासुरूप मैं सेज बिछाई॥
इन्द्रसमेत शयन मैं कीन्हा। इन्द्रते गर्भ जन्मसुत लीन्हा॥
रजस्वला होइ मैं सुत जावा। नरकासुर तेहि नाम कहावा॥
बहुरि इन्द्रसन सुत मैं जायो। तेजवन्त कुज नाम सोहायो॥
तुमहौ सखी मोर अवतारा। पायहु पति अजपम ओदारा॥
तंब प्रभु सोरहसहस बोलाई। करि शृंगार पालकी चढ़ाई॥
यदुपुर तेतरे महल बनाये। तिनमा सब रनिवास बसाये॥
एक मुहूर्त्त सबै त्रिय व्याही। भवा उछाह बहुत पुरमाही॥
सत्यासहित इन्द्रपद गयऊ। अदितिहि लैप्रभु कुंडल दयऊ॥
इन्द्रहि चमरछत्र गज दीन्हे। बास तीनि दिन प्रभु तहँ कीन्हे॥
जब गृह चलन चहत यदुराई। शची बांहगहि देत न जाई॥
भये बिदा खाण्डव बन आये। तहँ नहिं पारिजात प्रभु पाये॥
पुनि प्रभु पारिजात वनदेखा। दिव्य भोग तहँकीन्ह विशेखा॥
विनता तनय तहां पगुधारा। पारिजात लैभये सवारा॥
खत्ररिपाय वासव तहँ जाई। प्रभुसन कीन्हीं बहुत लराई॥
इन्द्रहि जीति द्वारकहि आये। सत्या आंगन ताहि लगाये॥
कल्पवृक्ष तर नारद आये। सत्यहि पुण्यक वर्त कराये॥
दो०। कृष्ण बिवाहनकी कथा सुनत सकल सुखखानि॥

पुत्र करन धन धान्यप्रद तुमसन कीन्ह बखानि ॥

इति श्रीराधाविषादमोचनावल्यांरामभजनत्रिवेदीविरचितायांकृष्णत्रिवाहोनामद्विपंचाशत्तमोऽध्यायः ५२ ॥

दो०। एकवर्ष में नरक हति बसततीनि स्वरलोक।
षड्विंशे प्रभु यज्ञकरि पीछेगे शिवलोक॥

चौ०। एकसमय रुक्मिणिमनमाहीं। भैगलानि मोरे सुतनाहीं॥
कह यदुबीर प्रिया केहिकाजा। मनमहँ शोच कहौ तजिलाजा॥
कह रुक्मिणि प्रभुकरहु उपाई। तुमसम पुत्र चहौं यदुराई॥
तब श्रीकृष्ण सभा चलिआये। सब यदुवंशिन बोलिपठाये॥
सुनुअक्रूर सात्यकी मोरी। गद संकर्षण सुनहु बहोरी॥
सबमिलि पुर में रहेउ सचेता। उग्रसेन वसुदेव समेता॥
पौंड्रक सन है बैर हमारा। तेहिते सब मिलि रहेउ तयारा॥
हम कैलास जाब शिवपाहीं। यहिसम काजमोहिंकछुनाहीं॥
बोलि गरुड़ प्रभु चढ़े तुरन्ता। बदरी बन आये भगवन्ता॥
मिले सकलमुनि अस्तुतिकीन्हा। मनवांछित सबकहँ प्रभु दीन्हा॥
उत्तर दिशि निशिबैठ खरारी। धरुधरु मारुमारु धुनि भारी॥
हाहा हूहू घंटा बाजै। महाघोर धुनि जनु घनगाजै॥
खुदु खुदु खादखाद सुनिकाना। धावत सुभट नजाइ बखाना॥
तबलग प्रभु देखा दलआवै। कृष्णकृष्ण करिकरिगोहरावै॥
दीन दयाल प्रकट तुम होहू। तुलसीपत्र भार दल लेहू॥
शतघट रुधिर विप्रशत लासी। तुमकहँ भेटदेब अविनासी॥
गंगाजल शतघट मँगवाये। तुमरे हेत नाथ हम लाये॥
कोटि दण्डवत करब तुम्हारी। जलदी दरशन देहु मुरारी॥
यहिविधि घंटासुर तहँ आवा। घनघन घंटाकर्ण बजावा॥

बैठे मन्दाकिनि तट आई। पूजनहेत बस्तु मँगवाई॥
चौकादै साथरी बिछावा। शुचिकरितेहिहरिध्यानलगावा॥
करिहरिध्यान जाप तेहिकीन्हों। द्वादश मंत्र जौन शिवदीन्हों॥
करै जाप पुनि पुलक शरीरा। सो चरित्र देखैं यदुबीरा॥
लागि दया प्रभु तेहि पहँ गयऊ। दै दर्शन प्रभु पूंछत भयऊ॥
को तुम इत पिशाच तनुधारी। कृष्णनामलै करत गोहारी॥
कवन कृष्ण ढूंढ़ौ तुम भाई। केहि पूजहु यहकवन सिखाई॥
घण्टाकर्ण बचन तब बोला। सुनहु पुरुष जनि होहुअडोला॥
मैं हौं सब पिशाच दल राऊ। विष्णु भक्तिपर मोर न भाऊ॥
जो मैं बिष्णु नाम सुनि पावौं। कानन घण्टा तुरत बजावौं॥
मनबच कर्म शम्भुकर दासा। सेवन करौं अवर नहिं आसा॥
होइ प्रसन्न बोले त्रिपुरारी। मांगहु इच्छा होइ तुम्हारी॥
तब मैं कहेउँ मोक्ष मोहिं देहू। कह शिव हरिपदकरहु सनेहू॥
बिष्णुभक्ति बिन मोक्ष न होई। ताते यतनकरौ तुम सोई॥
असकहिबिष्णुमन्त्र मोहिंदीन्हों। कहिसब यतन पठै इतदीन्हों॥
तुमका जो न बस्तु प्रिय होई। सादर बिष्णु समर्पौ सोई॥
अब मैं तीनि दिवस व्रतकीन्हों। मांस अहार रक्त नहिं पीन्हों॥
परे बिष्णु लीन्हों अवतारा। यदुकुल आइ हरणमहि भारा॥
कृष्ण बिष्णु माधव यदुराई। जपैजीव सोइ हरिपद जाई॥
असकहि ध्यान करन सो लागा। बहुत प्रेम पुलकित अनुरागा॥
ध्यानगम्य तब भे यदुराई। मनप्रसन्न सुखहिय न समाई॥
तब प्रभु तेहि निज धाम पठाये। अपना कैलासहि चलिआये॥
गौर बर्ण शुभ शैल सुहाई। तेहिपर तप कीन्हों यदुराई॥
कुश पाता समिधै खग लावै। श्वेत मृत्तिका कूटिबनावै॥

पारिजात के सुमन सोहाये । शिवपूजनहित नितखगलाये ॥
चौका आसन देहि बिछाई । तेहिपर ध्यान करै यदुराई ॥
पार्थिव मूरति रोज बनाई । प्राण प्रतिष्ठा करि यदुराई ॥
पूजि जाप करि आहुति देही । सहसनाम अस्तुति करिलेही ॥
बिल्वपत्र शत सहस चढ़ावै । पद्मपुष्प तुलसी अरपावै ॥
करि नैवेद्य सुपारी पाना । पुनि उपवीत बस्त्रगुणनाना ॥
करिपरिक्रमा दण्डवत ठाना । जापयोगश्रुतिबिधिकरिध्याना॥
बारहवर्ष नेम तप कीन्हों । तब शिवहोइ प्रसन्न वरदीन्हों ॥
सुनहु कृष्ण वरदीन्हों तोहीं । त्रियत्रिय प्रतिदशदश सुत होहीं ॥
यक यक कन्या सब त्रिय जावैं । तुमते सकल बहुत सुतपावैं ॥
औरउ कृष्ण आशिषा मोरा । कामदेव होइहै सुत तोरा ॥
भीषम जनक रुक्मिणी सीता । जन्महि मारहि परम पुनीता ॥
तोक बसन्त आदिगण जेते । तासु अनुज होइहैं सब तेते ॥
ब्रह्मा कामतनय जग जावै । तोर पौत्र अनुरुद्ध कहावै ॥
ऊषा सरस्वती कर रूपा । ताहि नारि मिलिहै अनुरूपा ॥
रुक्म पुत्र तनया बिधिनारी । सो अनिरुद्धहि देइ हँकारी ॥
ताके तनय बज्र अवतारा । दक्ष जन्म लेहैं संसारा ॥
रति ऊषा दोउ नारि अयोना । इनके कबौ पुत्रनहिं होना ॥
जाम्बवती के साम्ब कहावै । कार्त्तिकेय दुर्गा सोइ जावै ॥
धरा सत्यभामा जगजाई । मङ्गलआदि पुत्र यदुराई ॥
यमुना कालिन्दी सुत जैहैं । अतिही सुघर श्रवण सुतपैहैं ॥
मित्रबिन्दा गङ्गा अवतारा । तासुगर्भ बसु होहिं कुमारा ॥
भई लक्ष्मणा तुलसी आई । इन्द्रिय देव जन्म तहँ पाई ॥
नगनजीतिकै सूर्य कुमारा । भद्रमती रुद्रन बिस्तारा ॥

तेंतिस कोटि देव तहँ जाई। तुम्हरे बंश जन्मको पाईं॥
जबलग भूमि बसौ यदुराई। देव सकल तव करैं सहाई॥
जब बैकुण्ठ आपु चलि ऐहैं। तुम्हरे सङ्ग देव सब जैहैं॥
अपने लोक बसैं सब जाई। तब सब पुनि यदुवंश नशाई॥
असकहि शम्भु कृष्णसन भाषा। पूरण भै तुम्हारि अभिलाषा॥
जाइ शीघ्र महिभार उतारौ। धर्म्मथापि निजलोक सिधारौ॥
असकहि शिवभे अन्तरध्याना। कुशस्थली आये भगवाना॥
जो यह कथा सुनै अरु गावै। बन्ध्या होय बंशशुभ पावै॥
छत्तिस बर्ष बीति तहँ जाई। यहि बिधिचरित कीन्हयदुराई॥
सैंतिस बर्ष रुक्मिणी गेहू। हास बिलास करत नितनेहू॥
अड़तिस बर्ष रूप हरि केरे। धरिरानिन गृह भोगघनेरे॥
भईं गर्भिणी घर घर नारी। सीमन्तक ब्रतकीन्ह मुरारी॥
तब प्रद्युम्न रुक्मिणी जाये। घर घर मङ्गल बजेबधाये॥
तहँ बसुदेव देवकी जाई। नान्दीमुख बिधिसकल कराई॥
देवकि षष्ठी पूजन कीन्हा। गर्गाचार्य नाम धरिदीन्हा॥
जबलग एक मास नहिंभयऊ। नारद संवर गृह चलिगयऊ॥
तासु मृत्यु कहि रतिहि पठाई। सादर संवर गृह चलि आई॥
संवर ताहि ब्राह्मणी जानी। भोजन हेत ताहि गृह आनी॥
जाइ द्वारका शिशु हरिलाये। संवर डारिसमुद महँ आये॥
मंत्स्य लीलि लीन्हों हरि बेटा। गहि निषाद दे संवर भेटा॥
मत्स्य उदर ते जब रति पावा। सेवाकरि बृत्तान्त सुनावा॥
सुनहु नाथ तुमहौ पति मोरे। रुक्मिणि कृष्ण मातुपितुतोरे॥
संवर है यह शत्रु तुम्हारा। तोहिं हरिआनि समुद्रमें डारा॥
असकहि अस्त्रशस्त्र सिखराये। संवर सनलै युद्ध मचाये॥

संवर मारि द्वारकहि आये। नारद कहि वृत्तान्त सुनाये॥
मिले सबहिं पुर बहुत उछाहू। गतनिधिहोतबहुरिजिमिलाहू॥
पञ्च बर्षके भये कुमारा। करिउपवीत ब्याहुतेहि सारा॥
हायन चौवालिस में आये। रुक्मवती बलसों हरिलाये॥
रुक्मी पूरब जन्म प्रसंगा। सुनु नरेश निजमन करिचंगा॥
शकुनि को पुत्र वृकासुर जाई। कीन्हि तपस्या अतिकठिनाई॥
जाइ केदार मांस निज सोहा। अतिकठोरतन तनिक न मोहा॥
तब प्रभु तहां शंभुचलि आये। मांगुमांगु अस वचन सुनाये॥
कह खल जासु शीश कर धरऊं। ताहि भस्म एकक्षण महँकरऊं॥
पारवती नहिं नहिं असकीन्हा। तबलगु एवमस्तु कहि दीन्हा॥
चाहत पारवती कहँ लेना। शंभु शीश धावा कर देना॥
भजे शंभु नहिं बचत बचाये। तबशिव हरिसुमिरन मनलाये॥
गौरि को रूप विष्णु तहँ जाई। हाव भाव करिलीन्ह लोभाई॥
माथे कर धरि शिवहि नचावौं। तब मैं उनके आसन आवौं॥
मोहिं चहौ नाचहु मम आगे। शिरधरि हाथ लाज मदत्यागे॥
शिरधरिपाणि भस्म होइगयऊ। सोइ कुंडिनपुर जन्मत भयऊ॥
रुक्मी नाम प्रबल हरि देखी। आन कथा नृप सुनहु विशेषी॥
नारद देखि चरित हरि केरे। गृहगृह विविध भांति करि फेरे॥
जेहि जेहि भवनजाहिं मुनिराई। तहां तहां देखें यदुराई॥
मुनिहिंबहुत विस्मय मनभयऊ। तब प्रभुके सन्मुख चलिगयऊ॥
अस्तुतिकरि कहसुनुममस्वामी। तुम सबके उर अंतरयामी॥
कहप्रभु जगव्यापकमोहिंजानौ। मन संदेह नेक जनि आनौ॥
सुनिमुनि तबहिंगये विधिधामा। अर्जुन गये सहोद्रा कामा॥
रूप त्रिदंडी लखै न कोई। निरखत रूप वश्य जगहोई॥

कह विज्ञान कथा सब पाहीं। भोजन हेत सकल लैजाहीं॥
राम एक दिन नेवता कीन्हो। निजगृहलै भोजनशुभदीन्हो॥
देखि सहोद्रा मन मुसुकाई। अर्जुन जानि कटाक्ष चलाइ॥
तबलगि तहां कृष्ण चलिआये। अर्जुन जानि महासुख पाये॥
लै एकान्त दीन्ह रथ आना। अस्त्र शस्त्र दीन्हे धनु बाना॥
पूजन देव सहोद्रा जाई। तहँ अर्जुन रथ लीन्ह चढ़ाई॥
तब बलभद्र कोप करि धाये। परि पायँन श्रीकृष्ण मनाये॥
अर्जुन दुर्योधन के भाई। समलखि दैजो देहु पठाई॥
तब अनिरुद्ध जन्म जग लीन्हा। रामकृष्ण उछाहु अतिकीन्हा॥
अब उन्चास वर्ष चलि आई। साम्ब हस्तिनापुर को जाई॥
होत स्वयंबर कीन्ह प्रवेशा। राज समाज न नेक अंदेशा॥
लै कन्या रथ पर बैठारी। चले बीर सब करत गोहारी॥
भीषम करण आदि सब बीरा। घेरिनि आनि सकल रणधीरा॥
दुइ दुइ शर तेहि सबके मारे। बहुत सुभट रण साम्ब संहारे॥
सबमिलि बांधि ताहि रणमाहीं। लय बरवधू घूमि घर जाहीं॥
नारद वृष्णि सभा में जाई। जांबवती सुत कथा सुनाई॥
भीषम आदि महाभट भारे। साम्ब मान सबके मथि डारे॥
सब मिलि एक संघ बलकीन्हों। तब तिनबांधि सांबकहँ लीन्हों॥
यह सुनि उग्रसेन रिसवाना। कहेउ सबन पर करहु पयाना॥
सब यदुबंशी भये तयारा। रामकही फुर वचन तुमारा॥
मैं तव काज सकल करिआवौं। स्वल्प काजलगि भोजपठावौं॥
यह कहि राम इन्द्रपथ जाई। मिले आनि सब गिरासुनाई॥
उग्रसेन आज्ञा यह भाई। बर दैजो मोहिं देहु पठाई॥
यह सुनि सब कौरव मनमाखें। युद्धहेत अतिकरि अभिलाखैं॥

उग्रसेन यादव लै आवैं । हमहिं जीति वर कन्या पावैं ॥
अस कहि चले कौरवा जबहीं । राम उठाइ लीन्ह हल तबहीं ॥
पुर उत्तर लगाइ जब ताना । गंगा नगर पतति तिनजाना ॥
चरणन परे सकल पुनि आई । वर दैजो सब दीन्ह मंगाई ॥
लय सुत वधू द्वारकहि आये । करि विवाह सबसुहृद जेंमाये ॥

दो० । वर्ष पचास में पुत्र सब लीन्हे कृष्ण विवाहि ।
यथा योग्य तिनके सदन करि राखे पुरमाहि ॥

इति श्रीराधाविषादमोचनावल्यांरामभजनत्रिवेदीविरचितायांदशमउत्तरार्द्धे त्रिपंचाशत्तमोऽध्यायः ५३ ॥

दो० । एक्यावन हायन बहुरि आये व्रज बलदेव ।
बहुत उछाह अनन्दयुत सबहि मिले यदुदेव ॥

बहुत काल बीते प्रभु आये । मातपिता व्रज सुधि बिसराये ॥
यह कहि नन्द नयन भरिवारी । कहौ पुत्र सुख कुशल मुरारी ॥
जबते गे संदेश नहिं आवा । बिसरी मातु भूलि गे बाबा ॥
गोप सकल व्याकुल मन माहीं । बिनप्रभु घरी कलप समजाहीं ॥
राधा की जसि दशा विहाला । बिनहिंकहे भलि दीनदयाला ॥
गोपी सकल विरह हरि केरे । दुर्बल तन मन दुःख घनेरे ॥
गाई निशिदिन रहत अनेरी । तृणजल त्यागि विरह दुखघेरी ॥
वृन्दावन विहंग नहिं बोलैं । जीव जंतु सब दुर्बल डोलैं ॥
तात कृष्ण बिन यह व्रजसूना । जहँतहँ निरखि होत दुखदूना ॥
तब बलभद्र सबहि समुझावा । बसिबसंत हरि चरित सुनावा ॥
एक दिवस यमुना तट आये । गोपिन सहित कृष्णगुण गाये ॥
वरुण वारुणी दीन पठाई । मदवश प्रभु यमुना गोहराई ॥
नहिं आई हल कर्षण कीन्हों । यमुना आइ नीलपट दीन्हों ॥

अस्तुति करिजल कीन्ह प्रवेशा। यहिविधि चरितकियेतवशेशा ॥
बसि दुइ मास द्वारकहि आये। श्रीकृष्णहिं व्रज चरितसुनाये ॥
एक बार यदुवंश कुमारा। गये गहन बन करन शिकारा ॥
तहँयक कूप विलोकिनि जाई। गिरगिटलखितिनकीन्हउपाई ॥
रोदन बांधि खैंचि सब हारे। जाइ कृष्णपद धरितेहि तारे ॥
पूंछत कृष्ण कवन तुम भाई। काकरि पाप दशा यह पाई ॥
वैवस्वत सुत मैं यदुवीरा। दानशिरोमणि अतिरणधीरा ॥
गँगनतारका जेतरे भाई। तेतरी नाथ दीन्ह मैं गाई ॥
एक गऊ दुइ द्विजनक दाना। कीन्हेउँ बिन जाने भगवाना ॥
ते विरोध करि मम पहँ आये। दाता हर्ता वचन सुनाये ॥
असकहि त्यागिगाइ तिनदीन्ही। गिरगिट होहु शापअसदीन्ही ॥
ताते यमपुर का मैं गयेऊ। मोहिं देखि यमनृप असकहेऊ ॥
प्रथम पाप भुगतौ तुम भाई। पीछे पुण्य दरश हरिपाई ॥
सो गिरगिट तनु धरि मैं भोगा। तव दर्शन करि भयउँ निरोगा ॥
असकहि चढ़ि विमान हरिधामा। गा सोइसुनि बोले घनश्यामा ॥
पुत्र प्रजा द्विज दोष बचावौ। तब तुम उभयलोक सुखपावौ ॥
दुर्जर विष द्विज धन जगमाहीं। हरहिं सदाते नरक पराहीं ॥
जो द्विज क्रोध जक्र कटुभाखै। तासुदोष कछु चित्त राखै ॥
असकहि कृष्ण द्वारकहि आये। बावनवर्ष चरित हम गाये ॥
तिरपनवर्ष सभा यकबारा। राजदूत कटु वचन उचारा ॥
जो तुम वासुदेव जगमाहीं। हौं मैं सत्य कृष्ण तुम नाहीं ॥
ताते शंख चक्र मोहिं दीजे। चिह्न उतारि शरण ममलीजे ॥
काशिराजहै मित्र हमारा। मोर प्रताप बिदित संसारा ॥
पौण्ड्रक दूत बचन सुनि काना। हँसी सभा सब प्रभु मुस्काना ॥

देव चीह्नसव नृप को आई । जब रन तासु गिद्ध तनुखाई ॥
असकहि कृष्ण सेन तबलीन्हों । काशीपुरिहि तुरतचलिदीन्हों ॥
पौण्ड्रक काशिराज सजिआये । प्रभुसन दारुण युद्धमचाये ॥
तासु सेन प्रभु करि संहारा । तब पौण्ड्रकसन वचनउचारा ॥
लेहु चक्र जोइ मांगेहु बीरा । चहत चिह्न तजि लेहु शरीरा ॥
असकहि कृष्ण चक्र तेहिमारो । दै निजरूप जगतते तारो ॥
बहुरि कृष्ण यक बाण चलावा । काशिराज शिर काटिपठावा ॥
काशी धरि शर गा प्रभु पाहीं । तब प्रभु घूमि द्वारका जाहीं ॥
काशिराज़ सुत कीन्ह प्रयोगा । कृत्यानल प्रगटिसि जनुरोगा ॥
तेहिसन शंकर वचन सुनावै । यह ब्रह्मण्य निकट नहिंजावै ॥
ताल समान अगिनि तहँधाई । भरसति देश द्वारकहि आई ॥
पुर व्याकुल लखि दीनदयाला । चक्र चलाय दीन्ह ततकाला ॥
लै उड़ाय काशी तेहिडारा । काशी सकल जारिकरिछारा ॥
फेरिसुदर्शन गे प्रभुपासा । चौवनहायन कथा प्रकासा ॥
पचपनवर्ष देवऋषि आये । समाचार सब प्रभुहिं सुनाये ॥
राजसूय मख पाण्डव करि हैं । पूजि तुमहिं पीतरनिजतरि हैं ॥
ताते तुम प्रभु करहु सहाई । तुम सर्वज्ञ चराचर साई ॥
ताही समय दूत यक आवा । दै पत्री नृप कथा सुनावा ॥
जरासन्ध दिग्विजय म हारे । बीससहस बँदिखाना डारे ॥
ते सबनृप प्रभुशरण तुमारी । प्रणतपाल शरणागत हारी ॥
कहप्रभु कहौ नृपन से जाई । कछु दिनगत हमलेब छुड़ाई ॥
राजनकी सुनि दशा बिहाला । उद्धवसन तब कहेउ कृपाला ॥
प्रथमै यज्ञकर्म करवावौं । की शरणागत नृपन छुड़ावौं ॥
उद्धवकहो भीमके हाथा । मागध मृत्यु सुनौ यदुनाथा ॥

हथिनापुर चलि यज्ञकरावौ। तहँ वैरी शिशुपाल नशावौ॥
अससुनि सेनापतिहि बोलावा। सजहु सकलदल तुरतपठावा॥
कृतवर्मा प्रद्युम्न अक्रूरा। गदसात्यकी सांबशुक शूरा॥
उग्रसेन वसुदेव समेता। सबमिलि पुरमा रहेउ सचेता॥
सुनियत शाल्वघोर तपकीन्हा। कामगसौभ ताहि शिवदीन्हा॥
कछुककाल बीते स्वइआवै। सबमिलिलेरहु न कोइभयपावै॥
चले कृष्णबल उद्धव संगा। सबरनिवास सेन चतुरंगा॥
आगे नारद खबरि जनाई। आये रामकृष्ण दोउभाई॥
बंधुन सहित युधिष्ठिर जाई। आगे मिलि गृहगये लवाई॥
यथायोग्य लै सबहि टिकाये। तब दोउ बंधुभवन लैआये॥
कुंतीनिरखि बहुत सुखमाना। आसनदै बहुविधि सन्माना॥
द्रुपदी सहित सहोद्रा धाई। रानिन सकल भवन लैआई॥
सबके बहुत भांति सतकारा। भये बहुत दिन भोग विहारा॥
पंडित बोलि सुदिन बिचरावा। चहुंदिशि चारिउ बंधुपठावा॥
चारि अनी तिनके सँघकीन्हीं। तिनसबदिशाजीतिक्षितिलीन्हीं॥
लै धन सकल नृपतिपहँआये। भीमसेन तब वचन सुनाये॥
मागधछाँड़ि पूर्वदिशि जीते। उद्धवकही गये तुम रीते॥
अर्जुनकृष्ण संग तुमभाई। जरासंध रण जीतहु जाई॥
अर्जुन कृष्ण भीम तहँ गयऊ। विप्ररूप तेहि मांगतभयऊ॥
याचकजानि चीन्हि सोइबोला। तुम क्षत्री मैं दान अडोला॥
जो कोइ मोसन मांगन आवै। देउँ शीशलगु घूमि न जावै॥
अर्जुनकृष्ण भीम तुमजानौ। द्वंद्वयुद्ध चाहत सनमानौ॥
अर्जुन बाल कृष्ण रणछोरा। भीम समासम है बलमोरा॥
असकहि युग्म गदा लै आवा। भीमसेनसन युद्ध मचावा॥

दोनौं प्रबल गदा गहि मारैं। जनु उन्मत्त दंति चिक्कारैं॥
दिन भरिलरैं एक संग सोवैं। ज्ञान कथा कहि रैनि बिलोवैं॥
यहि बिधि सत्ताइस दिन गयऊ। भीमसेन उर संशय भयऊ॥
सोइ रुखजानि कृष्ण तृणलीन्हों। भीम देखाइ फाल दुइ कीन्हों॥
भीम तालदै लीन्ह उठाई। घुटुआ महिधरि दीन्ह गिराई॥
गहिपद पाद एक पदचापा। दुइफर कीन्ह बहुत करिदापा॥
यह पूरवतारक बलवाना। कृष्णनिरखिचढ़िचलोबिमाना॥
देवन सुमन वृष्टि झरि कीन्हीं। कहि जयजयति दुंदुभी दीन्हीं॥
तासु तनय सहदेव बोलाई। ताहि राज दीन्हों यदुराई॥
बंदिन ते सब नृपन छुड़ाये। करि आदर घरघर पहुँचाये॥
लैकर इन्द्रप्रस्थ सब आये। तासु बिजयप्रभु नृपहि सुनाये॥
नेगी एकसहस बोलवाई। ऋषिन निमंत्रण दीन्ह पठाई॥
तेतरेइ राजन पास पठाये। दै पत्रिका घूमि सब आये॥
पुनि सहदेवहि निकट बोलावा। कुरुवंशी सब लेन पठावा॥
अति आदर आये सब भाई। महलन भीतर दीन्ह टिकाई॥
मुनिन योग्य आश्रम बनवाये। करि पूजनलै तिनहिं टिकाये॥
राजन योग्य बितान घनेरे। प्रजाबास कीन्हें बहुतेरे॥
त्रिन योग्य थली बनवाई। सकल लोग तहँ दीन्ह टिकाई॥
दुर्योधनहिं सौंपि धन दीन्हा। दानाध्यक्ष कर्ण नृप कीन्हा॥
अन्नाध्यक्ष भीम बलवाना। अर्जुन शस्त्रधार तहँ ठाना॥
साधुचरण धोवन हरि राखे। अन्य कार्य सब बंधुन भाखे॥
सुबरण हलगहि भूमि बनाई। रची बेदिका मुनिन सोहाई॥
मंडफ शुभ कदली के खंभा। वेद पाठ भा यज्ञ अरम्भा॥
मूंजी कृष्णाजिन नृप धारी। बैठे जाय सहित नृप नारी॥

कह सहदेव प्रथम हरि पूजा। करहु नृपति इनसम नहिं दूजा॥
यहमत मुनि सबके मनभावा। मागधसुतहि सरिछवतावा॥
पूजन करत देखि शिशुपाला। उठभवा रिस कीन्ह कराला॥
जरासन्ध सुत यदु अज्ञाना। तासुगिराकिमिकीन्ह प्रमाना॥
यदु गोपाल सकल गुण हीना। जातिनातगतिरहित कलीना॥
यहि विधि बहु दुर्वचना नावै। हरिके क्रोध नेक नहिं आवै॥
जब प्रद्युम्न जन्म सुनि पावा। पितृस्वसा लैगई बधावा॥
अधि देवी मांगो निज नेगा। शतअपराध क्षमावन भेगा॥
ममसुत मृत्यु कृष्ण कर होई। नारद कही सत्य सब सोई॥
जन्मकाल यहिके भुज चारी। दुइभुज रहीं देखि बनवारी॥
ताते यह प्रतीति मोहिं आई। नेग देहु फूफू घर जाई॥
एवमस्तु कहि दीनदयाला। सहसकटुकभाखितशिशुपाला॥
शतकटु बचन बीति जब गयऊ। तब प्रभु हाथचक्र निजलयऊ॥
तासु शीश काटो भगवाना। तेज निरखिप्रभुबदन समाना॥
सो हिनकश्यप पूरब भयऊ। रावण आनिजन्म जगलयऊ॥
तीनि जन्म द्विजवचन प्रमाना। तिनहिं मारि तारो भगवाना॥

दो०। जरासन्ध शिशुपाल बध राजसूय मख योग॥
चारि बर्ष के चरित शुभ सुनिपावै सुखभोग॥ १॥

इति श्रीराधाविषादमोचनावल्यांरामभजनात्रिवेदीविरचितायांराजसूययज्ञ कथा बर्णनोनामचतुःपंचाशत्तमोऽध्यायः॥ ५४॥

दो०। उनसठि वर्ष में यज्ञकरि दान द्विजन कहँ दीन्ह।
गंगातट करि वस्त्रु नृप बिदा भूप सब कीन्ह॥

चौ०। एकसमयमयसभा सोहाई। बैठे नृप समीप सब भाई॥
वामे द्रुपदसुता शुभराजैं। कृष्ण सहित जनु इन्द्र बिराजैं॥

तेहि औसर कुरुपति तहँ आये। शतभाई संग साजु बनाये॥
थल महँवस्तर सकल समेटा। जलमहँ गिरे बूड़िगा फेटा॥
द्रुपदी भीम ताल हँसि दयऊ। अंधके अंधकही सुत भयऊ॥
सो सुनि दुर्योधन रिसिआना। नयन लालकरि कीन्ह पयाना॥
कृष्णहि हर्ष नृपतिअति शोका। सभा उदास भीमकीन्होंका॥
बैर सुयोधन सन नहिं नीका। अनरथ भवानाश सबहीका॥
यहि बिधि कहत सकल संसारा। कृष्ण चलनकर कीन्ह बिचारा॥
जब पुरबाहेर गये गोपाला। फरके अशुभ अंग तेहिकाला॥
उहां शाल्व द्वारावति जाई। बर्षि धूरि बहु शिखर गिराई॥
बर्षै इहां रक्त की धारा। सूझि न परै कीन्ह अंधियारा॥
व्याकुल भये सकल पुर लोगा। कीन्ह कृष्णसुत रण संयोगा॥
एक दिशा गदसारण धाये। सात्यकि एकदिशाचलिआये॥
एक दिशा सेनापति धावा। दिशियक रण प्रद्युम्न मचावा॥
चहुँदिशि शाल्व बिमान भ्रमावै। दृश्यअदृश्यनकोउ लखिपावै॥
शाल्व वंश यदुबंशिन केरा। यहि बिधि दारुण युद्ध घनेरा॥
घूमत शाल्व मंत्रि रण धावा। गदामारि प्रद्युम्न गिरावा॥
तब दारुकसुत रथ लै भागा। गै मूर्च्छा रुक्मिणि सुतजागा॥
लज्जित ह्वै तेहि जाय निपाता। पहुँचे यदुवर होत प्रभाता॥
षोड़श बाण सेन भरडारा। निश्चय करि सब सेन सँहारा॥
अन्तरध्यान सो ह्वै कर आवा। पुरुष रूप ह्वै बचन सुनावा॥
कृष्ण देवकी मोहिं पठावा। पिता तुम्हार शाल्व हरिलावा॥
बहुरि शाल्व माया निज कीन्हों। प्रभुहि देखाइ काटि शिरदीन्हों॥
सब बसुदेव दशा यह देखा। सबके मनभा शोचबिशेखा॥
तब प्रभु करदै सबहि नेवारा। ताको शीश काटि महिडारा॥

करि जयजय सुर वर्षहिं फूला। नाचहिं देवबधू अनुकूला॥
भये द्वारका मंगल भारी। दान देहिं यश गावहिं नारी॥
रानिन साथ राम गृह आये। सुनि प्रसंग हरिको उरलाये॥
साठिवर्ष के जब प्रभु भयऊ। दन्तबक्र रण हित चलिगयऊ॥
महा पर्बताकार शरीरा। गदाभार शत अतिरणधीरा॥
सुनहु कृष्ण मातुल के पूता। कीन्ह मित्र अपकार बहूता॥
मित्रनारि हरि मित्रहि मारे। शाल्व मित्र तुम रण संहारे॥
मित्र हमार प्राण प्रिय भाई। ताते युद्ध करौ इत आई॥
सुनि अस कृष्ण गदा लै धाये। दन्तबक्र सन युद्ध मचाये॥
तेहि यक गदा कृष्ण उरमारी। बहुरि कौमुदी कृष्ण प्रहारी॥
मस्तक फाट गिरो महिमाहीं। तबहि बिदूरथ सन्मुख जाईं॥
कंह दुर्वचन चर्म असि लीन्हें। असि लै कृष्ण फालदुइ कीन्हें॥
कुम्भकरण लीन्हों अवतारा। दन्तवक्र भा अति बलसारा॥
भयो बिदूरथ खर अवतारा। तिनहिं मारि जगते प्रभु तारा॥
पुनि तिनकी प्रभु सेन सँहारा। गये द्वारकहि कृष्ण उदारा॥
चढ़ि बिमान सुरतहँ चलिआये। बर्षिसुमन हरिके गुणगाये॥
इकसठि वर्ष द्रौपदी टेरा। कृष्णजाइ तेहि दुःखनिवेरा॥
बासठिवर्ष रुक्म चलि आये। बसिरुक्मिणिगृहअतिसुखपाये॥
निज पौत्रिकादेन कहिगयऊ। कृष्णबरात सजावत भयऊ॥
नेग योग करि सब यदुराई। अनिरुद्धहि प्रभु चले लिवाई॥
नृत्य गीत उत्साह घनेरे। गये भोजकटपुर हरिप्रेरे॥
भा अनिरुद्ध रुक्मघर व्याहू। कीन्हकृष्ण तहँ बहुत उछाहू॥
रुक्मी बलछलि पांसेनमाहीं। डारेमारि तहां बलताहीं॥
लै सुतवधू द्वारकहि आये। नितनव मंगल होत बधाये॥

रुक्मीनाम प्रबल हरि देखी । आन कथा नृपसुनहु विशेखी ॥
शंकरभक्त बाण बरिआरा । तासन लरिकोउ पाव न पारा ॥
तेहि शंकरकी पूजा कीन्हीं । तेहिका सहसबाहु शिवदीन्हीं ॥
शोणितपुर शुभभवन बनाये । पारवती शिव तहां बसाये ॥
पूजन करत गिरा तेहिभाषा । तुमसन युद्ध मोरिअभिलाषा ॥
भार समान सहस भुजदीन्हा । कोउ नहिंमोर सामनाकीन्हा ॥
कह शिव लैके केतु टँगावौ । गिरैतभुज कृन्तन अरिपावौ ॥
ऊषातासु सुता एकबारा । पारवती अस्तुति अनुसारा ॥
जो प्रसन्नमोहिं यह बरलाहू । पुरुषभोग फिरि होइबिवाहू ॥
प्रथमस्वप्न पति देहु देखाई । एवमस्तु मुनि निजगृह आई ॥
सोवत तेहि अनिरुद्ध निहारी । नाथ नाथ कहि उठीपुकारी ॥
लेखाचित्र सखी चलिआई । स्वप्नकथा तेहि ताहि सुनाई ॥
चित्रलिखा तेहि ताहि देखाई । सोपुनि अनिरुद्धहि हरिलाई ॥
ऊषा सेज दीन्ह पौढ़ारी । सो निज भवनगई तबनारी ॥
तिनसन ऊषा कीन्ह बिहारा । भोग चिह्न लखिभवाप्रचारा ॥
सुनि बाणासुर महल सिधावा । देखिपुरुष मन रोष बढ़ावा ॥
यहि बांधौ अनुशासन दीन्हा । तब अनिरुद्ध परिघकर लीन्हा ॥
मारिखेदि दीन्हे सबयोधा । बाणासुर पकरोकरि क्रोधा ॥
जब अनिरुद्ध बांधि लैगयऊ । तब ऊषहि दारुण दुखभयऊ ॥
खबरि द्वारकहि दीन्ह पठाई । तब श्रीकृष्ण खबरि तेह पाई ॥
तहँ दल साजिगये यदुवीरा । शोणितपुर घेरो रणधीरा ॥
बाण क्षोहिणी द्वादश लावा । तेहिसन लरे सात्यकी बावा ॥
शिवसन कृष्णकीन्ह संग्रामा । कूष्मांड सन हलधररामा ॥
सांब स्वामिकार्त्तिक सनजूझा । गणपति सन प्रद्युम्नअरूझा ॥

प्रथमफौज सब कृष्ण भजाई। तब शिव बाणवृष्टि झरिलाई॥
घायल भूप गणेश पराने। कूष्मांड मुसलार्दित माने॥
नंदी भृंगी गये पराई। शिखीकुमार टारि लैजाई॥
जृंभकशर ब्याकुल वृषकेतू। दीनछांड़ि ज्वरअति दुखहेतू॥
छुटो कृष्णज्वर शिवज्वरहारा। तब हरिकी अस्तुति अनुसारा॥
कहप्रभुज्वर प्रसंग जो गावै। तासु निकट ज्वर कबहुँनआवै॥
बलिसुत निजदल बिचलतजाना। धनुष पनच कीन्हीं संधाना॥
गरुड़ध्वज दल ब्याकुल कीन्हा। तब प्रभु कोपि शरासनलीन्हा॥
भुजन समेत तासु धनु काटे। दिशि अरु विदिशिभूमितलपाटे॥
तब शिवशंकर अस्तुति कीन्हीं। द्वै हैं चारिभुजा कहिदीन्हीं॥
करि विवाह बहु दायज पाई। निजपुर हरषि गये यदुराई॥
जो यह कथा सुनावै कोई। श्रोतहि बक्तहि हरिपद होई॥
पचपन बर्षगये यहि भांती। करत बिहार जात दिनराती॥
जब पांडवन भयो बनवासा। दुर्य्योधन पठये दुर्बासा॥
तब प्रभु जाइ अन्न जलखाई। दुर्बासा मुनिगये अघाई॥
साठि हजार शिष्य लै भागे। रक्षा करन कृष्ण तहँ लागे॥
रक्षा करत रहे बन माहीं। वर्ष त्रयोदश यहि बिधिजाहीं॥
भवा चहहि अभिमन्यु बिवाहू। कीन्ह भलीबिधि कृष्णउछाहू॥
पैंसठि वर्ष भये प्रभु आये। दुर्य्योधन बहुबिधि समुझाये॥
जब तेहि प्रभुकी कही न मानी। पाँचग्राम तक देन न भानी॥
बिदुर आनि बहुबिधि समुझावा। दुर्य्योधन कटुबचन सुनावा॥
बिदुर तीर्थयात्रा कहँ गयऊ। उद्धव बिदुर समागम भयऊ॥
बानर द्विविद रैवतहि जाई। बलदाऊ सन कीन्ह लड़ाई॥
ताहि मारि जगते प्रभु तारा। संकर्षण के चरित अपारा॥

दो०। पैंसठि बर्ष गये प्रभु कीन्हे चरित अपार।
सुने सुनाये नर तरहि होइ न फिरि संसार॥

इति श्रीराधाविषादमोचनावल्यांरामभजनत्रिवेदीविरचितायांपंच
पंचाशत्तमोऽध्यायः ५५॥

दो०। छाछठि बर्ष भये प्रभु सब यादव लै साथ।
कुरुक्षेत्र आये तहां देखे सब यदुनाथ॥

चौ०। नंदादिकहरिदरशनपाये। गोपिन सहित कृष्ण पहँआये॥
पूछी कुशल सुआसन दीन्हा। आदर बहुत भांति प्रभुकीन्हा॥
अवधराज कौरव सब आये। द्रुपदआदि दरशन हरिपाये॥
नारदादि मुनिगे प्रभु पाहीं। व्यासादिकजेद्विज क्षितिमाहीं॥
प्रजा लोग हरिदरशन कीन्हे। करि अस्नान दान सबदीन्हे॥
रानिन सहित नृपति तहँ जाई। उग्रसेन कीन्हीं पहुनाई॥
कुन्ती गन्धारी तहँ आई। बधुन सहित देवकि पहँ जाई॥
पूछि कुशल आदर तिनकीन्हों। दै कछु नेग बिदा करिदीन्हों॥
देवकि रोहिणि और यशोदा। कहि न जात जस मचाप्रमोदा॥
बइनो पचहँड़ि बस्त्र मँगाये। दीन्ह देवकी यशुमति पाये॥
उग्रसेन गोपन धन दीन्हें। कहि प्रिय बचन बिदासबकीन्हें॥
यादव सकल द्वारकहि आये। कीन्हें हरिबहुचरित सोहाये॥
बहुरि हस्तिनापुर हरि गयऊ। बीस बर्ष पाण्डव सँग रहेऊ॥
जब पाण्डवन भवा बनबासा। तब प्रभु सब कहँ कीन्हसुपासा॥
एक वर्ष अभिमन्यु बिवाहू। तहँ कीन्हों प्रभु बहुत उछाहू॥
एक बर्ष कुरुपति समुझाये। द्वारावति जन दरशन पाये॥
तीन बर्ष उद्वेग बिताये। सब मिलि कुरुक्षेत्र चढ़िआये॥
एक बर्ष भारत रण गावा। बिंशति सब कर कर्म करावा॥

वर्ष उनासी के यदुराई। भीषम पिता परमगति पाई॥
असी वर्ष प्रभु फिरि गृह आये। सब रानिन प्रभु भोग कराये॥
तबलगि तीर्थाटन करि रामा। नैमिषकृत करिआये धामा॥
फिरि श्रीकृष्ण गजाहै जाई। पार्थहि श्रीपति यज्ञ कराई॥
यज्ञ तीनि हयमेध कराई। बंश नाश अघ सकलनशाई॥
भे सत्तासी गृह प्रभु आये। यहि विधि पृथ्वीभार नशाये॥
पूरण ब्रह्म देवकी जाना। कहप्रभुसनमन करिअनुमाना॥
गुरुसुत आनि दक्षिणा दीन्हीं। विद्या सुफल तातकी कीन्हीं॥
जे षटपुत्र कंस मममारे। तिनहिं तात मैं चहत निहारे॥
तब प्रभु रथ चढ़ि बलि पहँ आये। सुतलजाइ निज शंख बजाये॥
मिले आइ बलि पूजा कीन्हीं। अस्तुतिकरि निजनाथहिचीन्हीं॥
माँगे मातु पुत्र तहँ पाये। षट भ्राता लै मातु मिलाये॥
देखि देवकी अति सुखपावा। तिनहिंबहुरि निजदूधपियावा॥
करि परणाम ब्रह्मपुर गयऊ। देवकिमन तब बिस्मयभयऊ॥
यहि बिधि चरित करत यदुराई। नब्बे वर्ष बीति तब जाई॥
एकबार तहँ अर्जुन आये। बसि द्वारका बहुत सुखपाये॥
उग्रसेन की सभा सोहाई। नाम सुधर्मा अतिसुखदाई॥
निज निजआसन सब यदुबंशा। हास नृत्यतहँ होत प्रसंशा॥
छत्र मुकुट चामर बहु सोहै। देखि सभा सुरपति मन मोहै॥
बैठे रामकृष्ण तहँ जाई। अर्जुन सहित नृपहि शिरनाई॥
द्वारावती विप्र सुत जावा। मृतक बिलोकि तहां लैआवा॥
सभा सुधर्मा बालक राखा। अतिकटुबचननृपतिद्विजभाखा॥
लोलुप सकल बसैं पुर माहीं। कुशस्थली कोउ क्षत्री नाहीं॥
आठ पुत्र जेहि विधि ममभयऊ। रक्षाकरन न कोउ चलिगयऊ॥

यह सुनि अर्जुन उठे बिचारी। ब्राह्मण बचन न कहत सँभारी॥
जहां धनुषधारी कोउ होई। तेहि समाज असकहै न कोई॥
ब्राह्मण सत्य बचन ममपानी। अबकी पुत्र न होइहि हानी॥
कही बिप्र मिथ्या जनि भाखौं। ईश्वर निदरि मान मनराखौं॥
रामकृष्ण प्रद्युम्न कुमारा। इनते कवन जगत बरियारा॥
देवकि पुत्र सुतल ते लाये। तिनके आगे गाल बजाये॥
अर्जुन कही सत्य प्रण मोरा। देहौं आनि पुत्र मैं तोरा॥
द्वारावती न मैं यश लेऊँ। अनल प्रवेशि छांड़ि तनुदेऊँ॥
सुनि बिश्वास द्विजहि तबआवा। त्रियसन बिजय प्रसंग सुनावा॥
तिसरी बर्ष जन्म सुत जाना। जाइ ताहि अति बचनबखाना॥
अर्जुन सूतीगृह चलिआये। शरपंजर करि कोट बनाये॥
तेहिदिन पुत्र सदेह नशावा। ब्राह्मण कहि दुर्बचन सुनावा॥
अर्जुन लाज भई अति भारी। संयमनी यमपुरी निहारी॥
सकल लोक लोकेशन गेहा। मिलो न अर्जुन मन संदेहा॥
बिजय हेत द्वारावति आये। जरन हेत दृढ़ चिता बनाये॥
तब श्रीकृष्ण पार्थ समुझाई। बिप्रपुत्र हम देब मिलाई॥
रथ चढ़ि बिजय लीन्ह बैठारी। पश्चिम दिशिकों चले मुरारी॥
सात सिंधु सब द्वीपन धाये। लोकालोक नांघि प्रभु आये॥
सूझ न आपन हाथ पसारा। आगे चले सुदर्शन द्वारा॥
सप्त पताल प्रविशि प्रभु जाई। अति प्रचंड तहँ प्रभा देखाई॥
अर्जुन देखि सहमि तब गयऊ। तबहि कृष्ण समुझावत भयऊ॥
दर्शन महा बिष्णु के कीजै। द्विजके पुत्र आनि सब दीजै॥
पहुँचे शेशलोक प्रभु जाई। शोभा शारद कहि सकुचाई॥
मणिमय फणा मण्डली सोहै। उपमा बरणि सकै कवि कोहै॥

शेश तुल्य बैठे द्विज राजैं। आयुध सहित अष्टभुज भ्राजैं॥
मकराकृत कुण्डल श्रुति माहीं। कीटमुकुट नहिं जात सराहीं॥
लक्ष्मी वामें करत प्रकाशा। दहिने भृगुपद रुचिरविलासा॥
अस्तुति करत बेद प्रभु केरी। नृत्य अप्सरा करत घनेरी॥
रथते उतरि कृष्ण तहँ जाई। जयतिजयति अतिगिरासुनाई॥
तब कह बिष्णु कृष्ण बहु काला। बसत भये महि दीनदयाला॥
अबं गोलोक बास प्रभु कीजै। शीघ्र भूमि बिनभार करीजै॥
कही कृष्ण सब भार उतारा। रहो एक यदुबंश हमारा॥
तेहिके अन्त जाब निज लोका। बिप्रहि करहु नाथ बिन शोका॥
तुम्हरे दरश हेत मँगवाये। बिप्र पुत्र ममगण हरिलाये॥
तिनहिं मँगाइ कृष्ण लै आये। अर्जुन बहुतभांति सुखपाये॥
भये छानबे द्विज सुत पावा। सत्तानबे सुदामा आवा॥
तंदुल लै निधि तेहि प्रभु दीन्हा। अपनेसदृश मित्रनिजकीन्हा॥
यकदिन सभा बैठ यदुबीरा। दुर्बासा तहँ गये अधीरा॥
देखि कृष्ण दर्शन तिनकेरी। पूछी कुशल कीन्ह कत फेरी॥
कह दुर्बासा नृप दुइ भारी। तिन यहदशामोरि करिडारी॥
जटा उखारि कमण्डल फोरा। फारो अजिन मेपला तोरा॥
कुशिकबंश यक नृप शिवदासा। सेइके शंकर परमहुलासा॥
होइ प्रसन्न शिव दुइ सुत दीन्हें। डिंभक हंस नाम तेहि कीन्हें॥
मित्र जनार्दन द्विज लै संगा। आये पुहकरलग चतुरंगा॥
ध्यान योग तप जप मोहिं देखी। राजपुत्र उर कोप बिशेखी॥
साठि सहस शिष्यन संगलीन्हें। प्रजा हमारि नाश तुम कीन्हें॥
इनते कोटिन पुत्र उपाई। तब मम होइ सृष्टि समुदाई॥
तुम सब मिलिके करहु बिवाहू। गृह बसि होइ बहुत सुखलाहू॥

तब मैं कहेउ बृथा गृह बासा। विषयभोग नहिं मोहिंसुपासा॥
अगजग नाथ कृष्ण अवतारा। तिनहिंभजे फिरि नहिं संसारा॥
तुमहूं सदा कृष्ण गुण गावो। बसि बैकुंठ बहुत सुखपावो॥
यह सुनि कोप कीन्ह दोउ भाई। जटा नोचि उत दीन्ह बहाई॥
शिष्य। सहित कृष्ण बैठारे। भोजन दीन्ह दीन्ह सुखसारे॥
डिंभक हंस जनार्दन टेरा। जाहु द्वारकहि कारज मेरा॥
राजसूय पितु यज्ञ करावो। तहां सकल निज सुहृदबोलावो॥
नेवता देश देश मम जाई। नृपन जीति करलेव मँगाई॥
पांडव कृष्णहिं लीन्ह बोलाई। सकल वस्तुतिन दीन्ह मँगाई॥
सबकी शुश्रूषा सोइकरिहैं। चरण धोइ निज माथे धरिहैं॥
तिनतें सकल काम करवाई। बहुरि द्वारकहि देव पठाई॥
सहस भार सोइ लवण भराई। दधि घृत रत्न बस्तु समुदाई॥
सहित कृष्ण तुम इत लै आवो। मोर काज सबभाँति करावो॥
द्वारावती जनार्दन आये। मनप्रमोद हरि दर्शन पाये॥
करि आदर पूजन प्रभु कीन्हा। बैष्णव विप्र जानि सुखदीन्हा॥
सभा सुधर्मा बैठे जाई। तबहिं जनार्दन कथा सुनाई॥
यादव सुनत हँसे सोइ बाता। बोले सकल मुनिन सुखदाता॥
निज दल लै पुहकर चलिआवै। जीतै हमहिं तबै कर पावै॥
साधु अवज्ञा जो फलहोई। सो हम देब ताहि सब सोई॥
तुम ममभक्त परमप्रिय भाई। हंस डिंभ कहँ देहु पठाई॥
अस्तुति कीन्ह जनार्दन आये। सब नृपते बृत्तान्त सुनाये॥
द्वादश क्षोहिणि दललै धावा। पुहकर प्रभुसन युद्ध मचावा॥
उग्रसेन बसुदेव समेता। यादव लड़िकर भये बिचेता॥
कुम्भकरण नाती तहँ जाई। सकल यादवन फौजभजाई॥

हलकटिगहि मारो तेहिरामा। डिंभक संग कीन्ह संग्रामा॥
हंस कृष्ण दोउ रण बरिआरा। लरैं समर वरषै शरधारा॥
तब प्रद्युम्न तासु दल मारा। सात्यकि राक्षस सकल सँहारा॥
तासु समय शम्भुगण आये। करिप्रहार रण शाम्बुभजाये॥
लड़त दोउ गोवर्धन आये। तहँ व्रजबासिन अतिभयपाये॥
एक मास रणकरि मन हारे। यमुना जल घुसिगये प्रचारे॥
दोउ शिवलोकहि गये तुरन्ता। शापमोक्ष कीन्ही भगवन्ता॥
दुर्वासा कैलाशहि आये। हंसडिंभ ते जान न पाये॥
तब मुनि शाप कोप करिदीन्हा। तेहितेजन्म नृपति गृहलीन्हा॥
जो यह बांचै बांचि सुनावै। पुत्र पौत्र धन धान्यहि पावै॥

दो०। यहि बिधि चरित करत हरि नव नब्बे गतवर्ष।
गोवरधन पर बास करि गोपन दीन्हीं हर्ष॥

इति श्रीराधाविपादमोचनावल्यां हरिवंशकथायांषट्त्रिंशत्तमोऽध्यायः ५७॥

दो०। तब प्रभु मथुरहि आइके सकल बसाये देश।
व्रजवासिन सुखदेइ करि पुनि पुर कीन्हप्रवेश॥

जब श्रीकृष्ण अनत चलिजाहीं। नारिन पल युगसरस सेराहीं॥
दिन नहिं चैन रैनि नहिं सोवैं। कृष्णनाम जपि बिरह बिलोवैं॥
कहैं परस्पर हरि गुण गाथा। देखि कृष्ण सब होहिं सनाथा॥
जब प्रभु सांझ सभा ते आवैं। आगे चलि निज माथ नवावैं॥
पूजन करि निज सेज बिछाई। चरण धोइ तांबूल खवाई॥
व्यञ्जन चमर वर आरति करहीं। प्रभु मुख निरखि हर्ष हियभरहीं॥
शुचि रुचि भोजन प्रभुहि कराई। दै तांबूल सेज पौढ़ाई॥
सेवन करहिं सकल यहि भांती। जात न जानहिंदिनअरुराती॥
ब्रह्ममुहूर्त्त उठहिं यदुराई। रानिन बिरह सहो नहिंजाई॥

करि स्नान दान जप होमा। ब्रह्मध्यान पूजहिं रवि सोमा॥
विप्रवृन्द भोजन करवाई। करि शृङ्गार देहिं बहुगाई॥
दासी दासन करि शृंगारा। भोजन कहि जाहिं दरबारा॥
सूर्यपर्व जानी यदुराई। खबरिनन्द कहँ दीन्ह पठाई॥
सो सुनि नन्द सकल बृजटेरे। चलहुतीर्थ जनिआनहु बेरो॥
कही राधिका सखिन बोलाई। चलौ दरश करिकै यदुराई॥
गोप सकट रथ साजि अनन्ता। कुरुक्षेत्र कहँ चले तुरन्ता॥
यहँ यदुबंशी सजि रथयाना। कुरुक्षेत्र कहँ कीन्ह पयाना॥
पहुँचे कुरुक्षेत्र सब लोगा। उतरे जहँ तहँ निज योगा॥
कुरुक्षेत्र सब करि अस्नाना। द्विजनबिबिधिबिधिदीन्हेदाना॥
आये उग्रसेन दरबारा। मुनिगण नृपति सुहृदसहदारा॥
कृष्ण दरश करिभये सुखारी। जन्म सुफल मानो नरनारी॥
रुक्मिणि सभागईं सबरानी। आदरकरिबहुबिधि सनमानी॥
कुंती सँग पांडव रनिवासा। मिली देवकी अधिक हुलासा॥
यहिबिधि सब आये रनिवासा। सबहिन सूक्षम दीखप्रकासा॥
निरखहिं सकल कवन यतआवे। सूर्य सरिस निज प्रभादेखावे॥
होइ सिय रूप संग सत नारी। तेजवंत नहिं सकहिं निहारी॥
भासत यह बिमान केहिकेरा। मणि मुक्ता जहँलगे घनेरा॥

क०। सुवरण केवार वज्र देहरी विद्रुम मणिकील फूलिओप झराग मणि जड़ाईहैं। हरित मणि बंदनवार किमार और पारल कै झुलकै झालरी लगीं मुक्तानकी स्वहाईहै॥ चांदनी पट वश पटलागे आसपास दरदामरि किनार दारदरस चंद्र चंकासी दर साईहै। कहैं राम भजन योगीएक सत संग राधामहरानीजूको बिमान सकल रानिन दरसा इतिहै १॥

स० । ध्यान छुटेमुनि सिद्धनके नहिं जंगमयोग समाधि लगावैं । निर्गुणते सरगुण मनजाई विहाय विराग सोई मनभावैं ॥ ज्ञानिन ज्ञान तजो तेहिको बेहाल भये जगजे लखि पावैं । निरखै रांनीसबैयह कौनबिमान चढ़ीइतकौ चलिआवै १ ॥

चौ० । तहँकोउ कहीराधिकाआवै । बड़ी भाग्य जो दर्शन पावै ॥

क० । नाक न बेसरि जड़ित चुन्नी चन्द्रकेसरि स्फटिमणिठोरवा टोरवा वज्र की स्वारी है। लखि मुख ललकै झलक कपोलन पर झलकै नयन में कज्जल रेख भौंहन बीच कारी है । लटन गज मुक्तासीपी सूकर अहि युक्ता मानौ हंसबाहन निज वह समारी है ओढ़े चित्रसारी वृषभानकी दुलारी गोलोक रहनहारी गिरधारी की पियारी है १ ॥

चौ० । यहसुनि सबरानी उठिधाई । करिपूजन सादर लै आई ॥
दीन्ह सुआसन कहि मृदुबानी । इनमा कवन राधिका रानी ॥
एकते एक रूप सबकेरे । लखिलखि बिस्मय होय घनेरे ॥
गोपिन नयन शयन जबकीन्हा । राधहि सबन उपायन दीन्हा ॥
पूछी कुशल राधिका रानी । तुमरे दरश भये अघ हानी ॥
सोरह सहस आठ पटरानी । बिलगबिलग सब मिलिसनमानी ॥
मिली राधिका सासुन जाई । मणिन हारदै पायँ लगाई ॥
सासुन बहुत निछावरि कान्हीं । अपनी चीज कछुकतिनदीन्हीं ॥
बहुरि सुभद्रहि निकट बुलावा । मणिमय चन्द्रहार पहिरावा ॥
दासीदास राधिका टेरे । तिनहिं बिभूषण दीन्ह घनेरे ॥
कुन्ती द्रुपदी आदिक रानी । दै दै अमित वस्तु सनमानी ॥
लरिका सकल राधिका टेरे । वस्त्र विभूषण दीन्ह घनेरे ॥
पुत्र बधुन गहने पहिराये । अरु नित नूतन बसन सोहाये ॥

बिटियन दें जो दै सनमानी। बोली बहुरि राधिका रानी॥
केहि बिधि केहिकर भवाविवाहू। कहौसकलजिमिजिमिहरिलाहू॥
कह रुक्मिणी हमहिं हरिआनी। जीते सब नृप शारँग पानी॥
यहिविधि सब निज कहो विवाहू। सुख उछाहु हरिदर्शन लाहू॥
मिले नन्द वसुदेवहि आई। नन्दहि मिले राम यदुराई॥
यशुमति कृष्ण राम उरलाये। नेत्रन जल दोउ सींचि जुड़ाये॥
देवकि रोहिणि लीन यशोदा। किमि बरणौं जिमि भवाप्रमोदा॥
गोपिन सकल दरश हरिपायो। गहिगहिसबनिजहृदयलगायो॥
फिरि बसुदेवहि यज्ञ कराई। किये बिदा सब नृप यदुराई॥
सुहृदसकल निजनिजगृहगयऊ। नन्द कृष्णसन भाषत भयऊ॥
तुम्हरो बिरह न मोहिं सतावा। राधा कहिकहि चरित सुनावा॥
अब अवलम्ब न कोइ ब्रजमाहीं। तुमबिनब्रजसोहातमोहिंनाहीं॥
कह प्रभु तुम पुनि ब्रजका जाई। भजहुकछुकदिनमोहिंमनलाई॥
दिव्य बिमान पारषद लावैं। ब्रजबासी मम धाम सिधावैं॥
गाई सब गोलोक सिधै हैं। बनके जन्तु मुक्त होइजैहैं॥
जन्म भूमि दर्शन मम करि हैं। ते नर बिना सरम भवतरि हैं॥
यह सुनि ब्रजबासी सँग लीन्हें। नन्द बहुरि ब्रजका चलिदीन्हें॥
कुशस्थली आये यदुबीरा। करत चरितधरिमनुज शरीरा॥
पंचादिक शतवर्ष बिताये। तबलग ब्रह्मादिक चलिआये॥
अस्तुति करत सकल सुरनारी। बर्षि फूल गावत सुर नारी॥
तब विधि प्रभु सन बचन उचारे। ममहित नाथ अवनि पगुधारे॥
भूमि भार अलख हरि लीन्हों। धर्मथापि जगयशनिजकीन्हों॥
अब निज लोक बसहु प्रभु आई। सत्य ब्रत निज जन सुखदाई॥
जब जब होइ धर्म की हानी। तबतब जन्म लेहु जग आनी॥

धरणी हित बराह तनु लीन्हा। मत्स्य वेद रक्षा तुम कीन्हा॥
भक्त हेत नरहरि तनु लीन्हा। सुरन हेत बामन तनु कीन्हा॥
पितु हित परशुराम तनु धारो। अधम छत्र हति भार उतारो॥
जग तारण हित अवध नरेशा। भयेहुनाथतुम शमन कलेशा॥
रावण मारि स्वयश विस्तारा। अब प्रभुफिरिलीन्हेहुअवतारा॥
बसुधा सकल भार बिन कीन्हा। बरणाश्रम न थापिजग दीन्हा॥
तव यश गाइ गाइ नर तरि हैं। जे सुनिहैं ते नहिं भ्रम परि हैं॥
जब निज लोक जाहु यदुराई। कलियुगराजकरिहि जगआई॥
कलियुग धीरवंत नर सोई। तुम्हरे चरण जासु रति होई॥
योग यज्ञ व्रत नेम बिचारा। तव पद रति सबको फल सारा॥
बिना भक्ति नर सोहत कैसे। सब शृंगार बसन बिन जैसे॥
भक्ति भाव एकौ जेहि होई। तुम्हरे लोक बसै नर सोई॥
यहिबिधिस्तुति करि बिधिगयेऊ। यदुकुल जन्म बज्र तब लयेऊ॥
प्रभु अनुरुद्ध पुत्र सुधि पाई। बहुत संपदा दीन्हि लुटाई॥
बहुतक दान द्विजन कहँ दीन्हे। याचकसकल अयाचक कीन्हे॥
खबरि पाइ तहँ मुनि चलिआये। गर्गादिक अति आदर पाये॥
पुत्रको नामकर्ण मुनि कीन्हा। लिख पत्रिका बज्र करि दीन्हा॥
यद्यपि सब यदुवंश नसाहीं। इनकी मृत्यु तदपि जग नाहीं॥
मथुरा पुरी राज्य जे करिहैं। यहु यदुवंश जक्त बिस्तरिहैं॥
अस कहि बहुत दक्षिणा पाई। निजनिज भवनगयेमुनिराई॥
यहि बिधि चरित करत यदुराई। बीति गई शत बर्ष सवाई॥
यहु नृप दम चरित्र हरिकेरा। स्वल्प कहेउ मैं रहइ घनेरा॥
शेष गणेश शारदा गावैं। कहैं वेद पै पार न पावै॥
जो सन सम दिवस केहि भांती। तेहरि गुण किमिबरणिसेराती॥

कुं०। हरिचरित्र वर्णन कियो राधा कृष्ण मिलाप।
कहैं सुनैं ते नर तरैं होइ न जग संताप॥
होइ न जग संताप पाप यह सुनतै भागै।
बाढ़ै ज्ञान विराग भक्ति हरि पद अनुरागै॥
राम भजन सुख खानि मोक्षप्रद मानस गावा।
निज मति के अनुसार गाइवर बांछित पावा॥

इति श्रीराधाविषादमोचनावल्यांरामभजनत्रिवेदिविरचितायां
दशमस्कन्धकथावर्णनोनामसप्तपंचसप्तमोऽध्यायः॥ ५७॥

दो०। एकादश की शुभ कथा सुनौ नृपति चितु लाइ।
कहब सांख्य बेदांत मत अरु बैराग्य लखाइ॥

चौ०। भृगु दुर्वासादिक मुनि धीरा। बसे जाइ पिंडारक तीरा॥
हरि दरशन हित मन सुखमानै। हरिको भजन नित्य उठिठानै॥
एक दिना यदुवंश कुमारा। सब मिलि पिंडारक-पगुधारा॥
शाम्बु गर्भिणी रूप बनावा। सबमिलिजायमुनिनदरशावा॥
हरि इच्छा बलिष्ठ कुरुराई। तुमसी मति सबके उर आई॥
चाहत कीन्ह करावै सोई। यह मत गुप्त जाने कोइ कोई॥
करि प्रणाम पूंछत कर जोरी। पुत्र कि कन्या जन्महि गोरी॥
दुर्बासा कह गर्भ बनावै। वंश नाश हित मुसलहि जावै॥
सुनिमुनि शाप बिकल सबभयेऊ। छोरत लोह मुसलगिरि परेऊ॥
सो लय राज सभा तिन धरेऊ। ताहि रेति चूरण करिदयऊ॥
सिंधु मांझ सब दीन्ह डराई। रेत जामि गोंदी होइ जाई॥
शेष लोह मछरी तहँ खाई। बधिकमारि तेहिनिजगृहलाई॥
मछरी ओदर लेइ सो पात्रा। बधिक बाण मुखमें लगवावा॥
सुनि मुनि शाप द्वारका बासी। मन सोचत पर बहुत उदासी॥

तब लगि तहँ नारद चलि आये। लय बसुदेव पूजि बैठाये॥
तुम्हरे सदृश साधु घर आवै। पाप नाश करि पुण्य बढ़ावै॥
परम भागवत तुम मुनि ज्ञानी। भगवत धर्म कहौ जन जानी॥
सों सुनि नारद मुनि हर्षाना। बहु बिधि भगवत धर्म बखाना॥
श्रवण करै हरि चरित सोहाये। हिय धरि मनन करै चितुलाये॥
ताहि भागवत उत्तम मानौ। बिष्णुकोदासविष्णसमजानौ॥
जो हरि चरित कहै अति प्रेमा। मन प्रसन्न गदगद उर नेमा॥
महा भागवत तेहि तुम जानौ। पावो जहां ताहि सनमानौ॥
जो सुमिरै हरि दिन अरुराती। हरि मय लखइ चराचर जाती॥
सो अनन्य भागवत कहावै। बड़े भाग्य जाके ग्रह आवै॥
जो द्विज बिष्णु भक्त नित सेवै। चरण धोइ चरणोदक लेवै॥
उत्तम भक्त भागवत सोई। तेहि संगति उत्तम सोइ होई॥
जो पूजय सुर गुरु हरि संता। भाव प्रेम युत उर भगवंता॥
सो बसुदेव भागवत जानौ। बिष्णुकोभक्तबिष्णु सममानौ॥
चर अरु अचर बिष्णु सम मानै। करै वन्दना भेद न आनै॥
हरिके दास को दास बतावै। सेवन करत लाज नहिं आवै॥
निशि बासर हरिकीर्तन गावै। सो बैष्णव भागवत कहावै॥
बेद शास्त्र पाठक कर संगा। तीर्थाटन हरि भक्त प्रसंगा॥
नेम. अचार ज्ञान युत जोई। ताको संग करत है कोई॥
सो बसुदेव भागवत जानौ। तासों जनि दुराउ उर आनौ॥
धन गृह सुत आदिक प्रिय जेते। हरिहि समर्पय सब लय तेते॥
जे भागवत धर्म हम भाखे। नारायण मुखते सुनि राखे॥
औरउ एक प्रसंग सुनावौं। परम भागवत संग लखावौं॥
मनु के पुत्र प्रियव्रत राजा। तिनके सुत अनिंध्र बिराजा॥

ब्रह्मा चिट्ठी पूर्व पठाई। तप छोड़ाइ तेहि राज्य कराई॥
नाभि तासुसुत यज्ञ कराई। बरदै जन्म लीन्ह अरिआई॥
ऋषभदेव हरिभा अवतारा। हरिके भे शत एक कुमारा॥
तिनमें एक्यासी द्विज भयेऊ। नवनव द्वीप राज्य पद लयेऊ॥
ज्येष्ठे भरत बसे अज नाभा। नव भागवत भक्ति कर लाभा॥
अव्याहत गति तीनों लोका। स्वेच्छा गति मदमोहनशोका॥
कविहरि अन्तरि भे मुनि नामा। पिप्पलाद पर बुद्धि निकामा॥
अबिरहुत अरुई मिल कहावे। कर भाजन चामस जग भावै॥
ये नव मुनि निमि यज्ञ सिधाये। करि पूजन आसन बैठाये॥
तिनते सुनो भागवत ज्ञाना। गे हरिपद चढ़ि उत्तम याना॥
अस कहि नारद गे विधि धामा। मन बसुदेवलीन बिश्रामा॥
द्वारावती चरित हरि कीन्हों। फिरि निजलोकजानमनदीन्हों॥
एक दिवस राधासन भाखा। करु गो लोक जान अबिराखा॥
वर्ष पचीस शाप के पारा। तुमका बसति भाइ संसारा॥
तुम राधे निज लोक सिधावो। मैं यदुवंश नाश करिआवो॥
विप्र शाप यहि कुलका लागी। आइबसपदि जगत हमत्यागी॥
यह सुनिभाषत चढ़िसखिसाथा। चली कृष्ण पद नाइनिमाथा॥
राधा जब गोलोक सिधाई। तब आठो रानी बोलवाई॥
तिनपर कह प्रभु करहु तयारी। निजनिजलोकबसौचलिप्यारी॥
विप्र शाप यदुवंश नसै है। द्वारावती बूड़ि जल जैहै॥
मैं पूरुब रावणकुल मारा। विश्रव मुनि मन दुःखअपारा॥
मोर वंश जेहि कीन्ह उजारा। सो कुलसहित होइ संहारा॥
राखौ इतनिज निज प्रतिबिम्बा। जेहि जगबसे लाभनहिंकिम्बा॥
यह सुनि रुक्मिणि चढ़ीविमाना। गइ बैकुण्ठ करति हरिध्याना॥

भूमि प्रवेश कीन्ह सतिभामा। जाम्बवती दुर्गा निजधामा॥
कालिन्दी यमुना जलजाई। चित्र बिन्दु गंगाजल आई॥
भई लक्ष्मणा तुलसी सोई। नग्नजिती बिरजा कहै कोई॥
भद्रा वेदमती जगहोई। निज निज लोक गई सबसोई॥
तब प्रभु उग्रसेन समुझाये। विगत मोह निजधाम पठाये॥
उद्धव आइगये तेहिकाला। प्रभुवियोग लखि बहुतबिहाला॥
कह उद्धव तब दोउ करजोरी। सुनहु नाथ विनती यकमोरी॥
भोजन सैन संग नित करऊँ। तवरुख लखि आज्ञा अनुसरऊँ॥
नाथ साथ मोकहँ लैलीजै। तब निज लोक पयाना कीजै॥
सुनु उद्धव दुराउ नहिं राखौं। अबध्यानात्मज्ञानतोहिंभाखौं॥
सनक सनन्दन सनत्कुमारा। विधिसनयकदिनबचनउचारा॥
तुम मम पिता सिखावन हारे। मनभ्रम हरिमोहिं करहु सुखारे॥
चित्तबीच गुण बसत हमारे। गुणके बीच चित्र बिस्तारे॥
बिलगबिलग किमिहोइ बिधाता। तब तजि विषय ब्रह्म सुखराता॥
यह सुनि विधिहि भयो भ्रमभारी। कर्म क्षिप्त मति सगुण हमारी॥
निर्गुण प्रश्न कहौं केहि भांती। जल पै समगुण चित्र सँघाती॥
सो मैं यतन कतेया पावौं। कवनभांतिचितगुणबिलगावौं॥
सोचत मनमें बहुत बिधाता। तब हरिचरण जाइ चितराता॥
हंसरूप उद्धव मैं कीन्हों। तुरतै विधिको दर्शन दीन्हों॥
पुत्रनसहित कीन्ह परणामा। को तुमकवनकहौ निजनामा॥
तब मैं कहेउँ सुनहु विधि ज्ञानी। यहुतोहिं भरमबस्तु बहुमानी॥
एक पदारथ यहि जगमाहीं। तुम मम ये वै बहुत सराहीं॥
यहै मोरिमाया विधि जानौ। एक बस्तु नाना करिमानौ॥
प्रथमें महातत्त्व मैं भयऊ। फिरि अभिमतत्रयरूपहिलयऊ॥

तैजश तामस औ वैकारी। तिनते मैं यह सृष्टि सँभारी॥
तैजसदेव भये दश आई। इन्द्रिन वैकारिन ते जाई॥
तामसते नभ आदिक भयऊ। नभते जन्म पवन पुनि लहेऊ॥
पवनते अग्नि लीन्ह अवतारा। अग्नितेजजलप्रवाह विस्तारा॥
जलते पृथिवी बिरंचि सोहाई। विषय सुनौ तुम मनचितलाई॥
शब्द अकाशते उत्पति भयऊ। पवन शब्द स्पर्शहि लयऊ॥
अग्नि स्पर्श शब्द आरूपा। विषय वृद्धि समुझहु सुरभूपा॥
शब्द स्पर्श रूप रसनीरा। भूरसगंध रूप शब्द समीरा॥
तैजस रविदिग दस्रहुतासन। वरुण इन्द्र यम हरिकमलासन॥
सहित औषधी जे दश भयऊ। इन्द्रिनमांझ बैठि सुखलहेऊ॥
नेत्र श्रवण नासा मुख तालू। त्वचपद बाहु लिंग गुदहालू॥
गेरहों मन इन्द्रिन कर राजा। बुद्धि सचिवसँगविषयसमाजा॥
अहंकार सेनापति बीरा। जेहिसन्मुख कोइ धरै न धीरा॥
काम क्रोध मद मोह प्रलोभा। लै सँग मल्ल चमूपति शोभा॥
सुनु विधि जे माया उपजाये। मेरे अंश जन्मि जग आये॥
विद्या एक अविद्या दोई। ममस्वरूप जानौ विधि सोई॥
माया तीनि पुत्र उपजाये। सत रजतम मम अंश सोहाये॥
ज्ञानरूप सतगुण हरिजानू। कर्मरूप रजविधि पहिंचानू॥
मोहरूप तम रुद्र कहावै। तासों विषय बहुत मनआवै॥
विद्या तनय ज्ञान वैरागा। निर्गुणमत सतपद अनुरागा॥
सुनु विधि युग्मरूप मम जानू। ईश्वर जीवरूप पहिंचानू॥
जीवनभेद चराचर दोई। तहँ चैतन्य जानि गतिहोई॥
थावर सूक्षम अन्तर ज्ञाना। तिनते जंगम अधिकसयाना॥
जंगम जाति जाति में भेदा। विषयी ज्ञान मोह भय खेदा॥

क्षुद् तृद् भय अपदन के होई। पदचर अधिक कामरिससोई ॥
क्षुट तृद् काम क्रोध भयमोहा। लागै चतुष्पाद के छोहा ॥
ये सब द्विपदन के पुनि होही। अरु मद मत्सर इरषा कोही ॥
द्विपदनमा कोइ होहिं सयाने। वर्णाश्रम धर्महिं पहिंचाने ॥
कोइ कोइ तिनमा ज्ञानहिं जानै। लौकिक कर्म ज्ञान करिदानै ॥
तिनमा कोउ बिज्ञान निधाना। मम मायाकृत जग पहिंचाना ॥
गुण निर्गुण स्वरूप मम जानै। सब जग ब्रह्मरूप पहिचानै ॥
दो०। गुण निर्गुण दोउ रूप मम समकरि जानै जोइ।
तेहि विज्ञानी जानिये मुक्तरूप नर सोइ ॥

इति श्रीराधाविषादमोचनावल्यांरामभजनत्रिवेदिविरचितायांएकादशस्कन्धे अष्टपंचाशत्तमोऽध्यायः ॥ ५८ ॥

दो०। अवगुण चित विवरण सुनौ सर्व ऋषय चितलाय।
हंसरूप जेहिते कियो पय जलसम बिलगाय ॥
चौ०। आतमज्ञान लखैं नर तेऊ। गुण अरु चित्त बिलग करभेऊ ॥
मायारूप अवस्था आवै। तनुकी नव विधि बेद बतावै ॥
मनकी मोह अर्थ भ्रम तीनी। जानौविधि तुम त्रयगुण भीनी॥
बुद्धि अवस्था तुमहि बतावौ। गुणते चित्त तुरत बिलगावौ ॥
माया गुण आवरण कहावै। अरु विक्षेप वेद बुध गावै ॥
जब विज्ञान बुद्धि संग पाई। आतमरूप लखै मनुलाई ॥
गुण आवरण करै विक्षेपा। तब चित भर्म होइ गुण लेपा ॥
ताकी तुम कह यतन बतावौ। औषधि पुष्ट प्रगट दरसावौ ॥
जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति कहावै। तिनमहँ विमल तुरीया आवै ॥
मायाकृत जे तीनौ जानौ। तिनतेपरे तुरीया मानौ ॥
मन बुधि चित्त तुरीया राखै। कबहुं न करै गुणन अविलाखै ॥

चित चैतन्य ब्रह्मयुत होवै। निर्गुण जीव गुणन मल धोवै॥
जैसे नीर क्षीरयुत होई। पियै हंस पय त्यागइ सोई॥
यहिते हंसरूप मैं कीन्हो। आइ चित्तगुण विवरण कीन्हो॥
सुतनसहित विधिको समुझावा। मैं उद्धव बैकुण्ठ सिधावा॥
गुण विक्षेप त्यागि ममरूपा। लखौ तो छूटिजाइ भव कूपा॥
बिना बिराग मोक्ष नहिं जाई। गुरु बिन ज्ञान विराग न भाई॥
दत्तात्रयी विष्णु अवतारा। चौबिस गुरुकरि ज्ञान सम्हारा॥
कुरंग मातंग पतंग भृंगा। मीना हता पाप विषय प्रसंगा॥
एक एक विषय एकके लागै। मृत्युवश्य होइ जड़ तनु त्यागै॥
ते सब विषय मनुज कह भाई। तासु व्यवस्था किमि कहिजाई॥
मम कुल आदिभये यदुराजा। कीन्ह यज्ञ लय विप्र समाजा॥
तेहि औसर दत्तात्रयि आये। सहितसमाज नृपति शिरनाये॥
आसन दै पूंछी कुशलाता। कुशल प्रश्न निरखेहु यह गाता॥
पूंछत यदु बिचरत जगमाहीं। बालक इव कछु इच्छा नाहीं॥
को तव गुरू ध्यान कस लीन्हा। जो अवधूतरूप यहु कीन्हा॥
जो मुनि कही सुनावौ तोहीं। उद्धव तुम अतिशय प्रियमोहीं॥
एक पतंग प्रथम गुरु कीन्हा। तासों रूप विषय सिखी लीन्हा॥
जरै रूप लखि अनल पतंगा। करिणी भोग किये गज भंगा॥
सुनिके शब्द कुरंग नसावै। सूंघत गन्ध भृंग बधिजावै॥
ज़िह्वारस सुख मत्स्य नशाई। पांचौ विषय परम दुखदाई॥
मुनिवर पांच गुरू पै कीन्हे। मतलय त्यागि विषय सब दीन्हे॥
सूर्य्यहि गुरुकरि सिख्यो विरागा। रस स्पर्श दोपकर त्यागा॥
चन्द्रकला समजानि अवस्था। पवन सदृश निबन्ध व्यवस्था॥
सिखि पयोधि निर्मल गम्भीरा। नभ स्वक्षता सिखी मुनिधीरा॥

सूरति सिखी कनेरे केरी। सिखी अजगरी वृत्ति घनेरी॥
मोह कपोत कपोती केरा। लोभ मक्षिकन तास निबेरा॥
कृष्णामास चोच खग हानी। लोभक दर्प भये अपमानी॥
बिन संग्रह मधुहा गुरु कीन्हो। कन्य संख कलह तजि दीन्हो॥
परगृह बास सर्प्प की नाई। मकरी इव गृह बिरचि नसाई॥
निजतनु गुरु स्वभाव बरिआरा। बालकवत विचरै संसारा॥
कीटये सकृत भये तेहि रूपा। आसा त्याग पिंगलहि भूपा॥
ये चौबिस गुरु शिक्षा लीन्हा। यदुका जाइ ज्ञान मुनि दीन्हा॥
राज भोगतजि वन यदु बीरा। भजि ममपुरगे छांड़ि शरीरा॥
अब तोहिं कीन्ह ज्ञानकर लाहू। छांड़ि मोह बदरीबन जाहू॥
उद्धव हरिहि दण्डवत कीन्ही। हरि मूरति निजहियधरिलीन्ही॥
प्रभु वियोग मन पुलक शरीरा। छोड़ि चले यम धरत न धीरा॥
धरिधीरज बदरी बन आये। नरनारायण दरसन पाये॥
इहां कृष्ण यादवन बोलाये। तहँ बलभद्र आदि सब आये॥
तिनका बहुत भांति उपदेशा। फिरि प्रभुकह जनिकरहु अंदेशा॥
यदुकुल सकल देव तुम जाये। मोरे अंश प्रगट महि आये॥
निज निजलोक बसहु सब जाई। भजहु मोहिं अधिकारहि पाई॥
रथ तुरंग गज बाहन साजा। चलहुसकलमिलिसाहितसमाजा॥
पंचक्षेमन्तक चत भरि रामा। कीन्हो तरपण भृगुपति जामा॥
तहँ स्नान दान सब देहू। शाप दोष निज निज हरिलेहू॥
बसि प्रभास कछुदिन सुख पावौ। पुनिसबनिजनिजधामासिधावौ॥
यह सुनि सकल प्रभातहि आये। करि स्नान दान मनभाये॥
करि मदपान जुद्ध तिन कीन्हे। रणसन्मुख निजतन तजिदीन्हे॥
लय गोदी तिन कीन्ह प्रहारा। लगत शरीर भये दुइ फारा॥

सेतुकि उग्रसेन बसुदेवा। देवकृत वर्मादिक जेवा॥
ते सब हरि बैकुण्ठ पठाये। ब्रह्मलोक अनिरुद्ध सिधाये॥
लय रति साथ प्रद्युम्न भुवाला। कामलोक पहुंचे ततकाला॥
शेषलोक बलभद्र सिधाये। गे सब देव जहांते आये॥
कृष्णद्वार कहि दारुक प्रेरा। कहि सब खबरि तुरत रथफेरा॥
इहां कृष्ण पीपर तर आये। पद्मासन करि ध्यान लगाये॥
गये बाली जन्म बहेलिआआवा। मुसल शेष तेहि बाणचलावा॥
प्रभुपद पद्मबीच सोइलागा। रूपदेखि तेहि भयउ विरागा॥
प्रभुपहँ जाइ चरण शिरनावा। ताहिकृष्ण निजधाम पठावा॥
तबलगि तहँ पुनि दारुक जाई। रोदन करत चरण लिपिटाई॥
कहप्रभु तुम वैकुण्ठ सिधावो। ममपारषद वृथा भय पावो॥
रथलै दारुक जबै सिधाये। ब्रह्मादिक सुर प्रभुपहँ आये॥
सुमन वृष्टि करि स्तुति ठाना। तबभा भास्वत प्रगट विमाना॥
कोटि सूर्य सम देखि प्रकासा। देवनमन अतिभयो हुलासा॥
तापर गोपी गोप बिराजैं। आदि शक्तिराधा तहँ भ्राजैं॥
बैठ सिंहासन उठि यदुराई। आरति कीन्ह राधिका माई॥
वरषन सुमन सकल सुरलागे। अस्तुतिकरत सकलअनुरागे॥
तब प्रभु निज गोलोक सिधाये। करिदरशन सुरनिजगृहआये॥
हरि निरजाजान सुनैनरनारी। बढ़ै पुण्य शुभहोय सुखारी॥
तब अर्जुन सब लय रनिवासा। बज्र सहित सब गये प्रभासा॥
देखि मृतक सब कीन्ह बिलापा। हा पतिसुतकरकरहिंबिलापा॥
भई सतीनिज पति सँग लागी। अर्जुन दीन्ह सबनकहँआगी॥
सबके कर्म पार्थ तब कीन्हों। बहुविधिदानद्विजनकहँदीन्हों॥
दासीदास खजाना लाये। बज्र सहित हस्तिनपुर आये॥

अर्जुन गये युधिष्ठिर पासा। दुर्बल तनमन बहुत उदासा॥
करत प्रणाम चित्त थिर नाहीं। कह नृप कवन सोच मनमाहीं॥
की गोद्विज सुरबालक नारी। रक्षा कीन्ह न बहुत दुखारी॥
की याचकहि दान नहिं दीन्हों। की सुरसाधु अवज्ञा कीन्हों॥
की कहुँ युद्ध पराजय पाई। की दुखभा बिछुरे यदुराई॥
पूँछत नृप मुख आव न बाता। कहत बचन अतिशय बिलखाता॥
धीरज धरि बोले सुनु भाई। कालप्रबल गति जानि न जाई॥
जिनके बल सुरेश हम जीते। शिवपर अस्त्र लीन्ह रणहींते॥
जेहि बल मैं बिराटपुर गाई। कौरव दलहि जीति लै आई॥
जेहि बल मैं भारत रण कीन्हों। सोइप्रियमित्रहमहिंछलिलीन्हों॥
प्रभु परिवारहि लिय इतजाता। कोलन लूटि लीन्ह मोहिंताता॥
सोंइ गांडीव चाप सोइ बाना। सोइ मैं रथी बिना भगवाना॥
असकहि अर्जुन मूर्छित भयऊ। नृपउठाइ बहुबिधि सिखदयऊ॥
मथुरा वज्र राज करवाई। हस्तिनपुर तोहिं दीन्ह रजाई॥
कुन्ती हरिकर ध्यान लगाई। गइ बैकुण्ठ परमगति पाई॥
तब पांडवा महापथ गयऊ। हरिके लोक महासुख लहेऊ॥
जहँ एकादशं कथा सुनाई। जो नर सुनै सो हरिपद जाई॥
दो०। भक्ति ज्ञान बैराग्य दृढ़ श्रोतहि वक्तहि होइ॥
मनके सब अभिलाषनर सुनतै पावै सोइ॥ १॥

इति श्रीराधाविषादमोचनावल्यांरामभजनत्रिवेदिविरचितायांएकादशस्कन्दकथावर्णनो नामएकोनषष्टितमोऽध्यायः॥ ५९॥

दो०। राधामाधव ध्यानधरि गणपति गौरि मनाइ।
रामभजन बर्णन कियो श्रीगुरु आशिष पाइ॥
चौ०। द्वादश कथासुनौ कुरुराई। सुनतै पाप पहार बिलाई॥

सत्य शौच क्षम दया सुधर्मा। हरिसँग गये आयुबल कर्मा॥
कलि महँ केवल धन कुलवाना। सोइ गुणवंत सोई यशवाना॥
कलि स्त्री दुर्बल पति त्यागै। धन बलवंत जानि अनुरागै॥
ब्राह्मण धर्म कर्म नहिं जानैं। सूत्रदेखि तब द्विज पहिंचानैं॥
चपल बचन सोइ पंडित होई। वेद शास्त्र पूँछै नहिं कोई॥
निर्धन जन करि साधको बेषा। करहिं दंभ मन कपट बिशेषा॥
कलि स्नान करै नित जोई। कहत अचारी तेहि सब कोई॥
कछुक बिवाह होइ सनमाना। कछु दिनगये होइ अपमाना॥
जे रचि नर निज केश बनावैं। ते जग सुन्दर बहुत कहावैं॥
यशको अर्थ धर्म नर करहीं। करैं पुण्य निजमुख अनुसरहीं॥
जेहि बल होइ नृपति सोइ होई। जाति पांति पूँछै नहिं कोई॥
वारबार कलि परै अकाला। लोग बिभुक्षित फिरैं बेहाला॥
अल्प मेघ महिं बीज न जावैं। आधि ब्याधि चिंता नरपावैं॥
स्वल्प आयु बपु बहुत अहारा। भोग बैर निद्रा मदसारा॥
सुनुनृप कलियुग हरिगुणगाना। करै सोई जग बहुत सयाना॥
सतयुग ध्यान यज्ञ व्रत त्रेता। द्वापर पूजन प्रेम समेता॥
कलिमां प्रबल भक्ति हरि भावा। करै न कलियुग दोष सतावा॥
जब कलियुग अधर्म बढि जावैं। कलकी हरि अवतरि महिंआवैं॥
सम्भलदेश विप्र की कन्यां। तासुगर्भ जन्महिं प्रभु धन्या॥
सैंधव अश्व होइ असवारा। तब पापिन कर करहिं संहारा॥
धर्म बढ़ाइ अधर्म दुरावै। कोटिन जग महँ म्लेक्ष नसावै॥
प्रभुकी अंग राग की बासू। लागत निर्मल करत हुलासू॥
तब सतयुग ब्यापै जग माहीं। निर्मल थूल प्रजा होइ जाहीं॥
जबते कृष्ण गये निज लोका। तबते कलि ब्यापो जग शोका॥

वापी शांतनु के भाई। चन्द्र वंश सोइ देइ चलाई॥
रुतते चन्द्रबंश फिरि होई। अभय बसै बदरीबन दोई॥
ारिउ युग के अंतर आवै। नित्य नित्य सब कहँ दरसावै॥
न्द्रिय मन निर्मल जब जानै। बर्तमान सतयुग तब मानै॥
ान ध्यान तपमें रुचि जानी। सतयुग अंतर प्रगट बखानी॥
र्म काम रज रुचि लखि पावै। त्रेता अंतर ताहि बतावै॥
ोभ मान मद दंभहि देखौ। द्वापर वृत्ति ताहि करिलेखौ॥
ाया नृत तंद्रा अरु हिंसा। शोक बिषाद मोह कल किंसा॥
ाहिते नृप हरि सुमिरण करहू। हरिको रूप आनि हियधरहू॥
ुरि माया नहिं व्यापिहि तोहीं। सुनि भागवत भागवत होहीं॥
अजर अमर निर्मल पद पावै। पुनियाहिजगतजन्मिनहिंआवै॥
ऋषि मृकंड सुत अतितपकीन्हो। तपबलकाम जीति तिन लीन्हो॥
र नारायण तहँ चलि आये। मांगहु बर जो तुमहिं सोहाये॥
ाया देखन को मन कीन्हा। गे प्रभु एवमस्तु कहि दीन्हा॥
लत प्रभंजन मेघ अपारा। गिरन लागि महि मूसरधारा॥
ूड़ो जगत समुद्र तोराना। प्रलयकाल भा मुनि उतराना॥
मत फिरत अक्षयवट हेरा। निरखो शिशु एक तेज घनेरा॥
टके पत्र शयन कर सोई। श्वास लेत मुनि भीतर होई॥
ािशु उदर देखो जग नाना। सजल नदीलखि निज स्थाना॥
ोड़त श्वास जलधि पुनि जाई। बारबार इमि जल उतराई॥
.स्वइ रूप ध्यान जब कीन्हा। तब हरि निजमाया हरिलीन्हा॥
िज आसन बैठे मुनि जाई। हरि मूरति कर ध्यान लगाई॥
ार्वती शंकर तहँ आये। बहुत भांति करियत्न जगाये॥
्तुति करि पूजन मुनि कीन्हा। है प्रसन्न तब शिव बरदीन्हा॥

अजर अमर करि दीनदयाला। कैलासहि आये ततकाला॥
प्रलय कल्प पुनिपुनि जगमाहीं। होहिंनृपति नहिं बरणि सेराहीं॥
नित्य एक नैमित्तिक दोई। प्राकृति प्रलय तीसरो होई॥
आत्यन्तिक चौथो नृप जानो। यहिविधि चारिप्रलय तुममानो॥
जहँ भागवत कथा मैं गाई। मोक्ष हेतु मैं तुमहिं सुनाई॥
यहि संसार सिन्धु की नावा। सुनैं ते तरैं करहिं हरिभावा॥
यह नारद मम पितहि सुनाई। सोइ भागवत चारिफलदाई॥
कहिहैं सूत ऋषिन पर सोई। नैमिष वन समाज शुभ होई॥
जामय आदि अन्त हरि रूपा। बरणि सुनाय तरहिं सुनुभूपा॥
अबतुमनृप हरिध्यान लगावो। जेहि जगबहुरिजन्मि नहिंआवो॥
जो तक्षक काटै नृप तोहीं। छुटै देह अपमृत्यु न होहीं॥
जयजयकरहिंसकलमुनि भारी। उठिराजा स्तुति अनुसारी॥
बजैं दुंदुभी बरसैं फूला। देव बधू नाचैं अनुकूला॥
नृप समेत मुनिमंडल जेता। पूजे सब शुक प्रेम समेता॥
सब साष्टांग दंडवत कीन्हीं। पुनिपरिक्रमाचारिकरिलीन्हीं॥
पढ़त कृष्ण यश बारंबारा। मुनिशुकदेव तबहिंपगुधारा॥
सूत ऋषिन पर कही बहोरी। सुनिभागवत प्रीति नहिं थोरी॥
जब शुकदेव बनहिं चलिगयऊ। तब तक्षक महि आवत भयऊ॥
मिलिमारग कश्यपमुनि भाखा। नृपहिदशनजनिकरुअभिलाखा॥
दशतै निर्विष नृप करिदेऊ। मंत्रभाव प्रगट करिलेऊ॥
कह तक्षक धन लेहु मुनीशा। ब्राह्मण बचनकरौ जनिखीशा॥
दसौं बृक्ष तुम देहु जिवाई। मंत्र परीक्षा पावहु भाई॥
दशतै बृक्ष सूखि जब जाई। मुनि मंत्रनते फिरि हरिआई॥
तब कश्यपहि दीन्ह धन भूरी। जानो मुनिहिं सजीवनमूरी॥

तब कश्यप निज भवन सिधाये। तक्षक तब राजा पहँ आये ॥
विप्ररूप पद काटेहु जाई। हरिपद गये नृपति हरषाई ॥
तब जनमेजय तासु कुमारा। सर्पाहुति मखकीन्ह अपारा ॥
जरै न तक्षक इन्द्र बचाये। विप्रन नृपसन बचन सुनाये ॥
कह नृप इन्द्र सहित हुति देहू। मन्त्रप्रभाव प्रकट करिलेहू ॥
तक्षक इन्द्र सहित नभ आये। तबहिं देवगुरु बचन सुनाये ॥
अनुचित कहि रक्षा मुनि कीन्हीं। नृपकरि क्रियातिलांजलिदीन्हीं ॥
जनमेजय आये निजगेहा। भे सब नाग विगत संदेहा ॥
जो यह कथा सुनै अरु गावै। सुख संपति नानाविधि पावै ॥
होइ निष्पाप विष्णुपद जाई। सो शौनक हम कथा सुनाई ॥

कुं०। श्रीभागवत सुनै नर पावै पद निर्बान।
तातै मनवच कर्म ते सुनिये कथा सुजान ॥
सुनिये कथासुजान ज्ञान उत्तम जग पैहौ।
जेहिजगकरि सुखभोग बहुरि हरिकेपदजैहौ ॥
रामभजन मनभाव रामपद हृदय मनावै।
हरियश विमलउदार भजनहित यहुवरपावै ॥

इति श्रीराधाविषादमोचनावल्यां रामभजनत्रिवेदिविरचितायांद्वादशस्कंद कथावर्णनोनामषष्ठितमोऽध्यायः ६० ॥

शौनकउवाच ॥

श्लोक ॥ व्यासशिष्यमहाभाग सर्वज्ञोसिकृपानिधे ॥ प्रश्नानामुत्तरंब्रूहि ज्ञातुमिच्छामहेवयं॥ १ ॥ काराधामहामायाह्याद्याविश्वस्यकारिणी ॥ गोलोकवासिनीसाक्षात् कृष्णार्द्धाङ्गसमुद्भवा॥ २॥ कश्चकृष्णःपरब्रह्म यस्यमायाजगत्त्रयं ॥ चकारसोपिनन्दगृहेजन्म परःपुमान ॥ ३ ॥ कोनन्दःतस्यकाभार्य्या वसुर्द्रोणधरात्मा ॥ को

यंनन्दोविशालाक्षः श्रीदामाकश्चयःपुरा॥ ४॥ सुबलोकृष्णसेना
नी द्वारपानांमहाबलः॥ सुबुद्धिर्वेदस्वेतद् दशधाज्ञानलक्षणः॥५॥
ज्ञानद्धाराणिसर्वाणि कथयस्वमहामुने॥ कामुक्तिर्विषयत्यागो बन्धो
विषयसंग्रहः॥ ६॥ कःस्वर्गस्तृष्णयाहीनो नरकस्तृष्णाप्रवर्द्धकः॥
कश्चसंसारकृद्रूपाखण्डोमोक्षदाश्रुतिः॥ ७॥ अहिंसास्वर्गदाप्रो
क्ता नरकदानारिसंगता ॥ जागर्तिकोविवेकीयो सुखंशेतेचयोग
तः॥ ८॥ यस्याशाजीवनमृतो निराशोह्यमरोनरः॥ कःपाशोमम
तामानो मोहनीप्रमदासुरा ॥ ९॥ महान्धोमदनासक्तो मृत्युःको
ऽप्यजपःस्कृत॥ हितसाक्षिकोगुरुः प्रोक्तःशिष्योहिगुरुभक्तिमान्॥
१०॥शत्रवश्चेन्द्रियाण्येव जीत्वातानिसुखीनरः॥ दीर्घरोगीभवेत्स
क्तोज्ञानंभवमहौषधम्॥ ११॥किमस्तिभूषणंशीलं पुनीतश्चमनोजयं॥
१२॥ त्यजेच्चकनकङ्कांतां सेव्यमाशुगुरोर्वचः॥ ब्रह्मप्राप्तेश्चकोहे
तुः सत्सङ्गोदान्ततोषवान्॥ १३ ॥ सन्तःसन्तिकेलोके वीतरागाः
विमोहकाः॥ दयालवःक्षमायुक्ताः तत्त्वनेष्टाशिवात्मकाः॥ १४॥
कोज्वरःप्राणिनाञ्चिन्ता मूर्खोयोनविवेकवान्॥कर्तुंयोग्याचकाभक्तिः
जीवनंदोषवर्जितम् ॥ १५॥ साविद्याब्रह्मगतिदाबोधः कोयंयमु
क्तिदः॥ लाभश्चस्वात्मविज्ञानो जयश्चापिमनोजयं॥ १६॥ महा
शूरतरःकोस्ति नविद्धोकाममार्गणे॥ प्राज्ञोधीरश्चकोलोके न स्त्रीन
यनमोहितः॥ १७॥ किंविषश्चविषयायुक्तं दुःखीपापीसुखीजपी॥
धन्यःपरोपकारी यः सपूज्यस्तत्त्वदृष्टवान्॥ १८॥ सर्वकालेनकिं
कार्य्यं स्नेहंपापंप्रयत्नतः॥ किंविधेयंसुपुण्यंवा पठेत्स्तोत्रञ्चभाक्तितः॥
१९॥ संसारस्यजटाकावाह्य विद्याविषयात्मिका॥ मूकोवक्तिनयो
ग्यंयो वधिरस्तच्छृणोतिन॥ २०॥ नविश्वासोहिकुत्रास्ति नारी
षुरम्पटेषुत्र॥ तत्त्वमेकंपरंकित्रा शिवश्चाप्यद्वयंवद ॥ २१॥ हरिं

कस्यास्तिशरणं सचार्य्याचपुनःपुनः ॥ हरेश्चापिकंसारेः पूजनंवि
धिपूर्वकं॥ २२॥ केशत्रवःकामक्रोधलोभानन्दन्तितृष्णकाः॥ कैर
सूर्यत्रिलोकेषुविषयैर्दुःखदायकाः॥२३॥दुःखंपरस्त्रीसम्बन्धंदेयंकिम
भयंसदा॥ कुतःसर्वभयंनास्तिमुक्तिःसाहरिसेवनात् ॥२४॥ ममता
मण्डनंकिंवासुखस्यसाक्षरंतथा॥सत्यंभूतहितन्नाम सुखमात्मविमर्श
नम् ॥ २५ ॥ हरिसेवाकुतोयाति शास्त्रवृद्धगुरोर्वशात ॥ कृतान्ते
चागतेकार्य्यं चिन्त्यंपादाम्बुजंहरेः॥ २६ ॥ केसन्तिदस्यवोलोके
वासनाख्याःमहाबलाः॥ सभायांशोभतेकास्विन्मातेवचप्रविद्यका॥
२७॥ सदाकस्माद्भयंकार्य्यं दोषाल्लोकभयात्तथा ॥ कौबन्धूपित
रौकौवा सहायोविपदांहरिः॥ २८॥ बुद्धयाबोध्यंपरंकिंवा शिवंज्ञा
तेनकिंभवेत् ॥ ब्रह्मणिब्रह्मसायुज्यं दुर्लभंगुरुमेवच॥ २९ ॥ पुन
श्चकिंसतांसङ्गो ततोब्रह्मविचारणम् ॥ सर्वत्यागश्चात्मबोधो दुर्ज
यंचमनोजयम् ॥ ३०॥ पशूनांचपशुःकोय आत्मशास्त्रंविनानरः॥
धर्म्मंनकुरुतेसोपि धर्मशास्त्रस्यपाठकः ॥ ३१ ॥ किंचलंधनमायु
श्च दानंतचसुपात्रके॥ प्राणात्ययेनकर्तव्यं मलिनंतत्त्वदर्शिभिः॥
३२॥ किंविधेयंशिवस्यार्चा कर्मकिंयद्धरेःप्रियम् ॥ अनिशंचिन्त
नीयंकिं मिथ्याभूतांचसंसृतिम् ॥ ३३॥ प्रश्नोत्तरंज्ञानविरागयोः
शुभंभक्तेसुताभ्यांकथितंशुभप्रदम् ॥ क्रीडरन्व्रजेभक्तिसमंसुबुद्धिस्त
थाविरक्तिःपशुपालरूपवान् ॥ ३४ ॥

इति श्रीराधाविषादमोचनावल्यांरामभजनत्रिवेदिश्रीकन्दरागदस्थायिविर
चितायांप्रश्नोत्तरनामषष्टितमोध्यायः ६० ॥

सो० तोखनसिंह है नाम सोमवंश में अवतरेउ॥
बसत कल्लुवाग्राम तिन की सम्मति से छपेउ॥

श्रीमद्वाल्मीकीयरामायण भाषा किताबनुमा कागज़ रस्मी ५) व कागज़ गुन्दा ६)

पूरे सातोंकाण्ड अयोध्यापाठशाला के तृतीयाध्यापक पण्डित महेशदत्त कृतभाषा—यह वही पण्डितजी महाराजहैं जिन्हों ने पहले देवीभागवत और विष्णुपुराण का उल्था कियाहै दो भागों में याथातथ्य सुगम रीति से परिपूर्ण श्लोकके अनुसार हुआ है कोई शब्द भी छूटने नहीं पाया और श्लोक के जानने के लिये अंकभी लगादिये हैं कि भ्रम न पड़े अक्षर टैपके बहुत पुष्ट हैं अबकी बार बड़ी होशियारी से छापीगई है ॥

तथा पत्रानुमा क़ीमत १५)

विदितहो कि यह पत्रानुमा बाल्मीकीयरामायण जोकि अबकी बार मालिकमतबा ने छपवाकर प्रकाशितकी है वह बहुतही अनुपम होकर सन्दर्शनीय है कि जिसका भाषानुवाद धनावली ग्रामनिवासि रामचरणोपासि पण्डित महेशदत्त ने किया व जिसका संशोधन भी संस्कृत प्रतिसे उन्नाम प्रदेशान्तर्गत गुण्डाग्रामनिवासि पण्डित सूर्यदीन जी ने किया है इसमें प्रत्येक श्लोकों का अर्थ अन्वय रीतिसे कहागया व प्रत्येक पदों व अक्षरों का जैसा अर्थ होना चाहिये था वैसाही हुआ है यद्यपि मुम्बई आदि नगरों में इसके बहुत से अनुवाद हुये हैं तौ भी वह इसके समान नहीं होसक्ते हैं क्योंकि उक्त नगरों के छपेहुये अनुवादों में कहीं २ अन्वय रीति से अर्थ मिलता व कहीं २ मनमाना देख पड़ता है इस भेदको विद्वान् लोगही समझसक्ते हैं इस हमारे अनुवाद में शुद्धता, छपाई, रोशनाई, कागज़आदि बड़ी सफ़ाई के साथ में हैं इसकी सरल हिन्दी भाषा सर्वदेशवासियों के समझ में आसक्ती है जिसकी भूमिका सकलजनतोषिका बनी है व जिसके प्रत्येक सर्गों का सूचीपत्र भी बहुतही उत्तम रचायाहै केवल इसीसेहीं सर्व साधारणजन रामायण की पारायण बांच सक्ते हैं—इसकी उत्तमता लेखनी से बाहर है अहो ग्राहकगणो ! इसके ख़रीदने में विलम्ब मतकरो क्योंकि विलम्ब होने में सिवाय पछिताने के और कुछ हाथ नहीं लगता है आशाहै कि सर्व महाशयजन अवश्यही इसको देखेंगे और इसकी एक २ प्रति ख़रीदकर अपने घरको सुशोभित करैंगे अग्रे किमधिकं बहुज्ञेष्वित्यलम् ॥